यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र
२८६८
१२४
सपना
राजपाल एण्ड सन्ज दिल्ली-6

मूल्य	चार रुपए
प्रथम संस्करण	सितम्बर १९५९
प्रकाशक	राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली
मुद्रक	हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली

मैं इतना ही कहूंगा

'सपना' मेरा नया उपन्यास है।

इस उपन्यास की रचना जीवन के नए पहलुओं के अध्ययन के आधार पर की गई है। उपन्यास सत्य घटनाओं पर आधारित है कल्पना का सम्बल कला-पक्ष को सुरक्षित करने के लिए लिया गया है।

उपन्यास मनोवैज्ञानिक है उन अटूट मानवीय सम्बन्धों का दिग्दर्शन कराता है जिन्हें हम चाह कर भी नहीं तोड़ सकते भूलकर भी नहीं भूल सकते। उन सम्बन्धों के साथ हमें किसी न किसी रूप में जुड़ा ही रहना पड़ता है चाहे प्यार से अथवा घृणा से।

महान् उपन्यासकार शरत्चन्द्र ने एक स्थान पर लिखा है जो चले गए हैं जो सुख-दुख से परे हैं, इस सृष्टि का देना-पावना चुकाकर जो लोकांतरित हो गए हैं उनकी इच्छा उनकी चिंता उनका निर्दिष्ट पथ का संकेत ही क्या बहुत बड़ी चीज है और जो जीवित हैं व्यथा-वेदना से जिनका हृदय जर्जरित है उनकी आशा उनकी कामना क्या कुछ भी नहीं? मृत की इच्छा ही क्या सदा के लिए जीवित का पथ रोके रहेगी? तरुण साहित्यकार तो केवल इसी बात को कहना चाहते हैं। उनके विचार, उनके भाव अधगत यहां तक कि अन्यायपूर्ण भी लग सकते हैं लेकिन अगर वे नहीं बोलते हैं तो बोलेगा कौन? मानव की वासना नर-नारी की नितान्त गूढ़ वेदना का विवरण वे नहीं प्रकट करेंगे तो करेगा कौन? मनुष्य को मनुष्य पहचानेगा कैसे? वह जीवित रहेगा कैसे?

ऊपर के कथन में मानव आत्मा के शिल्पी का तरुण साहित्यकारों को एक आह्वान है और उस आह्वान पर मैं कहां तक अग्रसर हुआ हूं आप ही निर्णय करेंगे।

बीकानेर

—यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

मै इतना ही कहूगा

सपना' मेरा नया उपन्यास है।

इस उपन्यास की रचना जीवन के नए पहलुओ के अध्ययन के आधार पर की गई है। उपन्यास सत्य घटनाओं पर आधारित है, कल्पना का सम्वल कला-पक्ष को मुखरित करने के लिए लिया गया है।

उपन्यास मनोवैज्ञानिक है उन अटूट मानवीय सम्बन्धों का दिग्दर्शन कराता है जिन्हें हम चाह कर भी नही तोड सकते, भूलकर भी नही भूल सकते। उन सम्बन्धो के साथ हमें किसी न किसी रूप में जुडा ही रहना पडता है चाहे प्यार से अथवा घृणा से।

महान उपन्यासकार शरत्चन्द्र ने एक स्थान पर लिखा है जो चल गए हैं जो सुख-दुख से परे है, इस सृष्टि का देना-पावना चुकाकर जो लोकान्तरित हो गए हैं, उनकी इच्छा उनकी चिंता उनका निर्दिष्ट पथ का सकेत ही क्या बहुत बडी चीज है, और जो जीवित हैं व्यथा-वेदना से जिनका हृदय जर्जरित है उनकी आशा उनकी कामना क्या कुछ भी नहीं? मृत की इच्छा ही क्या सदा के लिए जीवित का पथ रोके रहेगी? तरुण साहित्यकार तो केवल इसी बात को कहना चाहते हैं। उनके विचार, उनके भाव प्रसगत यहा तक कि अन्यायपूर्ण भी लग सकते हैं लेकिन अगर वे नही बोलते हैं तो बोलगा कौन? मानव की वासना नर-नारी की नितान्त गूढ वेदना का विवरण वे नहीं प्रकट करेंगे तो करेगा कौन? मनुष्य को मनुष्य पहचानगा कसे? वह जीवित रहेगा कसे?

ऊपर के कथन में मानव आत्मा के शिल्पी का तरुण साहित्यकारा को एक आह्वान है और उस आह्वान पर म कहाँ तक अग्रसर हुआ हूं आप ही निर्णय करेंगे।

बीकानेर

—यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

परिणय की शुभ एव मादक मधुर स्मति मे नरोत्तम का अग-अग प्रफुल्लित हो रहा था। जीवन के गौण पक्षों में नवीन आनद और उल्लास की शक्ति का सचार हो गया था। इधर उसे अपना जीवन उल्लासमय होते हुए भी विजन प्रान्तर-सा नीरस लग रहा था। यौवन का एकाकीपन अब उसके लिए असह्य हो उठा था।

दिन के कोलाहलमय वातावरण में वह अपने गाव के न्यारे पानी के कुए के पीपल के नीचे मधुर कल्पनाओं का वितान बुना करता था और रात के समय तारों की फीकी झिलमिलाहट के तले मधुर स्वप्न की मृग-मरीचिका के पीछे बेतहाशा भागा करता था। उसे न तो अब मित्र अधिक अच्छे लगते थे और न ही घर। वह एकांत चाहता था ऐसा एकात जहां वह अपनी भावी दुलहिन के बारे में निश्चित होकर सोच-विचार कर सके। उसके मित्र उसकी इस एकांतप्रियता का मजाक उड़ाया करते थे। उसके घरवाले इस प्रकार की अतमुखता को बुरा लक्षण समझते थे। यदा कदा वे इसके बारे में हल्की चर्चा भी कर लिया करते थे।

उस रात आकाश-गंगा के आसपास प्यासे मृग-शावकों की भाति बादल के टुकड़े तर रहे थे। मन्दिरों में देव-दर्शन की अन्तिम झाकिया हो रही थी। दूर नरोत्तम के घर से थोड़ी दूर पर सिद्ध बाबा वियान" धूनी में आग प्रज्वलित किए प्रवचन कर रहे थे। कभी-कभी उनके तेज स्वर की भनक नरोत्तम के कानो में पड़ जाती थी।

और नरोत्तम सोच रहा था मेरी दुल्हिन का रूप रग अच्छा है सुनते हैं कि स्वभाव की भी वह बड़ी मधुर है। मै उसे शहर ले जाऊंगा उसे पढ़ाना ही रहूगा समस्त दकियानूसी बधनों का तोड़ डालूगा फिर आनद ही आन" ! मगल मगल महा मगल !

अपने दो मंजिले मकान की छत पर वह लेटा हुआ था। उसके पास उसकी

दो छोटी बहिनें तथा एक भाई शायद हुआ था। अभी उसे व यहां नहीं सब रहे थ
वह इस रात पर अकेला ही सोना चाहता था। गहरी शून्यता और कल्पना के र
बिरंगे पंख—इसके अतिरिक्त कुछ नहीं चाहता था वह।

वह उस ओर उसने अपनी दृष्टि दूर तक फैलाई। गांव के जमींदार भी हैं
के अलावा उस सभी पर ऐसे सब जैसे व बसुधरा के मन पर फैले हों और
भी अपनी परम पीड़ाजनक अवस्था में।

वह कुछ देर तक वहीं खड़ा रहा। सोचता रहा कि किस अवधूत ने इस
को सोने की चिड़िया कहा? यहां तो पूरी तरह से लोहा भी नहीं है। सच
जाए तो यह कंगाल देश है।

नूपुरों की छुम-छुम ने उसका ध्यान भंग कर दिया। उसने इस ध्वनि को
बिना ध्यान दिए ही अपने आपसे कहा भाभी भैया के पास जा रही है। इन द
की अच्छी जोड़ी है। भाभी महामूर्ख और भैया जड़ भरत। मैंने तो कभी उ
कमरे में हंसी की आवाज तक नहीं सुनी। कैसे रात गुजारते हैं ये दोनों?
तो और, जैसे ही भाभी और भैया कमरे में पहुंचते हैं वैसे ही वे दीपक बुझा
हैं। मां कहती है कि अच्छे और सजीले लड़कों के ये ही गुण होते हैं। उसे मौन
आ गई। आंखों में भावुकता भरी प्रसन्नता नाच उठी उस भया सुमति की सि
सिहरन के साथ कह रहा था कि सुमति अभी तक तो मन अपनी घरवाली का
भी अच्छी तरह नहीं देखा है तू बता न यार वह कैसी है? सुमति ने चटकी
हुए कहा कि तेरी यह गोरी चिट्टी है और नाक-नाक का नक्शा भी अच्छा है
जान" के अतिरेक में डूब गए। लेकिन भाभी जरा चतुर है। कल ही तो
खड़ी-खड़ी घूंघट में से एक आंख से भैया को देख रही थी। उस झांकती एक
जीवन की अपरिसीम प्रीति की सृष्टि थी। पर मैं इन सभी रूढ़ियों और
मुक्त हो जाऊंगा। और यह सब आखिर है क्या? क्या गांव का इन
से उद्धार नहीं हो सकता? आखिर पति-पत्नी का भी अपना स्वच्छंद जीवन

नरोत्तम ने गहरी सांस ली। कहीं से उल्लू पंख फड़फड़ाता गुजरा।
चमगादड़ ने भी एक पलंग नरोत्तम के पास से लिया। नरोत्तम बिस्तरे पर
लेट गया। कल्पना की उड़ानें समस्त मनन में व्याप्त हो रही था।

स्वप्निल वातावरण में मस्त नरोत्तम लम्बे-लम्बे सास ले रहा था। धीरे धीरे गहरी नींद में निमग्न हो गया।

सहमा भाभी ने हड़बड़ाकर उसे जगाया। वह डर से काप गया। बोला क्या है भाभी!

अभी-अभी सुमति आया था कह रहा था कि सूबाराम के छोटे लड़के राजिया लाश खेत में मिली है।

राजिया की लाश! हठात् उसने कहा और उसकी आंखें भर आईं। वह की ओर भागा।

खेत में उदास वालें सिर झुकाए खड़ी थी। हवा थम गई थी। सारा वातावरण था। लगता था जैसे सब रो रोकर थक गए हैं।

नरोत्तम भीड़ को चीरता हुआ घटनास्थल पर पहुंचा। राजिया का शव पड़ा। एक चाकू उसके पेट में लगा था और दो गले में। एक चोट बड़ी निर्ममता कि उसके कलेजे पर लगाई गई थी। वह खून से लथपथ राजिया को देखकर स उठा। आदमी आदमी का इतनी बुरी तरह मार कैसे सकता है? उफ! कौन वह सकता कि आदमी आदमखोर का बच्चा नहीं है?

तभी राजिया की मां विकराल बनी आ गई। दूर से उसका रूप ऐसा लगता जैसे कोई पिशाचिनी हो। नग्न छाती अस्त-व्यस्त धोती बिखरे बाल और सिर निरन्तर पीटती चीखती। लोग उसे समाल रहे थे पर वह समाल नहीं समल थी। 'राजिया रे! बेटा राजिया!

करुणा और मातृत्व से भीगी उस मां का हृदय असीम के अन्तराल को दहला था। वह आई। राजिया की लाश से लिपटकर चिंघाड़ पड़ी। उसका अंग अंग प्रतिमा के लहू से लाल हो गया। उसके चेहरे पर करुणा का सागर लहरा रहा था। रोते रोते वह बोली छिनाल तू अपने बेटे को खाती! ए मागफूली तू अपने ईं को मरवाती! मेरे बेटे को अपने यार से क्यों मरवाया! ए राम मारी तू खुद नहीं मर जाती!

वह उठी। उसने गांव के चौधरी के पास जाकर तीखे स्वर में कहा आप ते है कि मेरे बेटे को किसने मरवाया है? इसकी भाभी ने, इसकी छिना

भाभी न !

उपस्थित लोगों में गहरा सन्नाटा छा गया। सबमें जड़ता छा गई।

राजिया की मां बोल रही थी कल यह लोगों से यही सब कह रही थी। उसे सन्दूक की तरह भर रही थी कि वह राजिया को अपने रास्ते से हटा दे। हे राम, मैं मर गई ! राजिया रे बेटा राजिया !

नरोत्तम को लगा कि उसके तन को एक सहस्र बिच्छू डंक मार गए हैं। वह पीड़ा से तिलमिला उठा। भय से उसका रोम रोम सिहर उठा।

पुलिस आ गई। उसने लाश को अपने कब्जे में कर लिया। भीड़ छंट गई। नरोत्तम मन मारकर अपने चिरपरिचित पीपल के नीचे बैठ गया। उसके आगे नाच उठे—राजिया उसकी जवानी खून छुरा और घाव।

वह तड़प उठा। उसकी समग्र चेतना खून छुरा और घाव पर केन्द्रित हो गई। नरोत्तम के ललाट पर पसीना आ गया। वह अपने आपसे कह उठा 'आदमी का सबसे बड़ा शत्रु आदमी के सिवाय और दूसरा कोई नहीं है।

सुमति ने आकर पूछा 'भैया इस तरह मन मारकर क्यों बैठे हो ?

सुमति राजिया को किसने मारा ?

'भाभी ने।

'क्यों ?

उसकी भाभी के कहने पर। तुम्हें नहीं मालूम है भैया राजिया की भाभी बड़ी छिनाल है। जब उसका रिश्ता राजिया के भाई से तय हो रहा था सभी गांववालों ने राजिया की मां से कहा था कि राजिया की मां तुम्हें बाद में पछताना पड़ेगा। यह घराना अच्छा नहीं है। पर राजिया की मां ने सस्ता सौदा देखकर कानों में उंगली डाल ली। पांच सौ रुपयों में बेटे को ब्याह लाई। सुमति उसके पास बैठ गया 'भैया तुम्हें क्या बताऊं। यह राजिया की मां है न बड़ी लोभिन है अपनी बेटी के पूरे तीन हजार रुपये लिए और बेटे को पांच सौ में ब्याह लाई। कहा है सो ठीक ही कहा है

'सस्ता रोवे बार-बार और महंगा रोवे एक बार।

'राजिया का भाई क्या करता है ?' नरोत्तम ने हठात् पूछा।

बाकी है, उसे पूरा करता है। बीवी कमाकर लाती है और खुद खाता है। और वह बचारा करे भी क्या ? उसकी घरवाली बडी विकट है। जतर मन्तर जादू टोना और मूठ चलाना, सभी कुछ तो जानती है। उसकी सास डायन है। हर महीन एक न एक बच्च खा जाती है। और तो और अपनी बडी बनी क पति को उसन मूठ स मरवा दिया। अब उसे रुपया नी थली की तरह रखती है। अब तुम्हा बताओ कि एसी हालत में राजिया का भाई बचारा क्या करे ? वह लहगे का नाडा बन गया है। पर राजिया को यह सब अच्छा नहीं लगता था। आखिर आदमी की भी अपनी कोई गरत होती है। वह अपन सामन अपनी इज्जत को लुटते नहीं देख सकता। राजिया आदमी का बच्चा ठहरा। उसन भाभी को पहल समझाया बाद में टाका और अ त म उसन भाभी को भला बुरा कहना शुरू कर दिया। कल रात भाभी न सागा को बुलाकर समझा दिया और रातोंरात सांगा न राजिया को ।

म कहता हू कि उस औरत को काटकर खेत में गाड देना चाहिए, नालायक बदमाश । नरोत्तम उत्तजित हो गया।

भया यह औरत जात ही एसी होती है। एक कहावत है कि त्रिया चरित्र न जान कोय पती मारकर सती होय। यह तो राजिया था यदि उसका खसम भी जरा गडबडी करता तो वह अपन हाथ से उसे भी अफीम खिला देती।

नरोत्तम स्वभावत बडा ही डरपोक और भावुक प्रवृत्ति का था। नारी की निदयता देखकर उसका मन विचित्र उधड़-बुन में लग गया। सुमति उसे भावमग्न देखकर चलता बना।

वही एकात। वही शू यता।

पीपल के पत्तों की हल्की-हल्की खडखडाहट।

धूल के उडते हुए कण।

विचारों का सघर्ष।

कितनी बरहमी स राजिया को मारा गया है। यह सागा कौन है ? और वह हठात् उठकर फिर सुमति की ओर भागा 'सुमति, अरे ओ सुमति उसन जोर स पुकारा।

सुमति वहीं पर रुक गया। पेड़ की छाँह के नीचे एक खटिया पड़ी थी। सुमति उसपर बैठ गया और उसके पास जिज्ञासु नरोत्तम।

'क्या बात है भैया?' सुमति का स्वर गंभीर था।

'यह सांगा कौन है?'

'अरे इसको तू नहीं जानता?' सुमति के मुख पर ऐसे भाव आए जैसे उसे नरोत्तम के प्रश्न पर बड़ा आश्चर्य है, 'मीना दादी का बेटा। बेचारी मीना दादी भी उसकी करतूतों से बड़ी दुखी है। बचपन में सांगा बड़ा दब्बू था और किसी से झगड़ा फसाद नहीं करता था। हमलोग जब खेलते थे तब वह चुपचाप बैठा रहता था। इसका बाप डाकुओं के दल का सरदार था। कभी-कभी छुप छिपकर घर आता था। मीना दादी देवी रूप है। उसका पति जितना लूट-खसोट करके लाता था वह सब मीना दादी को दे जाता था। कब और कहाँ वह आता था यह आजतक कोई नहीं जान सका। अंग्रेज सरकार के गोरे सिपाही कई बार यहाँ आए पर सांगा के बाप को नहीं पकड़ सके। सुनते हैं कि उसे दुर्गा माई का वरदान था कि वह कुत्ते की मौत नहीं मर सकता। मरेगा तो शेर की मौत ही।

अंग्रेजी सरकार ने हमारे ठाकुर (जमींदार) को तंग करना शुरू किया। बेचारा ठाकुर सहदेवसिंह बहुत ही सीधी प्रकृति का मनुष्य था। जीवन में उसने शायद ही झूठ बोला हो। गाँव के किसानों को वह अपना पुत्र समझता था और उनपर अत्यन्त कृपालु रहता था। यही कारण था कि उसकी माली हालत अत्यन्त साधारण रहती थी। लगान कोई दे तो अच्छा और न दे तो अच्छा। लेकिन उसने कभी भी शक्ति का प्रयोग नहीं किया। यही कारण था कि उसके सगे-सम्बन्धी पीठ के पीछे उसे नपुंसक कहते थे।

सांगा का बाप दिन-दहाड़े डाके डालता था। उसका आतंक और डाकेजनी दिन प्रतिदिन बढ़ती गई। एक दिन अंग्रेजी सरकार ने आकर उससे माँग की कि या तो ठाकुर सा धीरसिंह धाड़ेती को पकड़कर दें अथवा हम उसे जमींदारी से बेदखल कर देंगे। लाचार ठाकुर को मीना दादी के पास जाना पड़ा। मीना दादी स्वयं शेरनी थी। ठाकुर को सम्बोधित करती हुई बोली 'भाई सा, आपकी ठकुराई में क्या पड़ा है? सांगा का बाप अमीरों को लूटता है और गरीबों को देता है, यह एक

का सुख लकर वीम को बाटता है। म उन्हें पुण्य के काय के लिए रोक नहीं सकती।

'बस इसके बाद बड़ी मछली छोटी मछली को निगल गई। नदी का अस्तित्व सागर में विलीन हो गया। चूहे को सांप खा गया।

'जब खीवसिंह को यह मालूम हुआ कि उसकी खातिर ठाकुर की जागीर चली गई है तब उसे हार्दिक सताप हुआ।

रात के गहरे अधकार में वह मत्युजय बनकर गांव आया। ठाकुर से मिला और उस आश्वासन दिया कि वह उसका पालन-पोषण करेगा। उसकी कन्या की शादी स लकर उसके लड़के की शिक्षा तक का वह प्रबध करेगा।

इसके बाद वह मीना के पास आया।

/ साल-साल दो-दो साल बीत जाते थ पर खींवसिंह कभी भी अपनी पत्नी के पास रात में नहीं आता था। मीना भी अजीब प्रकृति की औरत थी। दाम्पत्य-सुख स वंचित रहकर भी उसे कोई पीडा और कोई शिकायत नहीं थी बल्कि वह दिन प्रतिदिन अपने पति के प्रति अधिक कोमल और श्रद्धावान् होती जा रही थी। उसके अतम् में उसका पति किसी देवता से कम नहीं था।

उस दिन मीना न पति के चरणों में सिर रखकर नमस्कार किया। पौराणिक दत्य-से विशाल और बलिष्ठ खींवसिंह न गुड़िया-सी मीना को आलिंगन में जकड लिया। मीना की आखें बरबस भर आइ।

'तुम रोती हो?' खींवसिंह न कोमल स्वर में पूछा।

' 'नहीं तो।' आसूभरी मुस्कान के साथ मीना न उत्तर दिया।

'झूठ बोलती हो।' खींवसिंह न उसे अपनी बाहों में भर लिया —'सागा कहां है?'

'सो गया है।'

'मैं जब कभी भी आता हूं तब तुम उदास क्यों हो जाती हो! तुम्हारी चच लता और तुम्हारी बातें मूक-सी क्यों जाती हैं!'

मीना न भावपूर्ण दृष्टि से अपने पति को देखा। मुस्कान के कारण उसका चेहरा खिल उठा। शात स्वर में बोली 'जब आप आते ह तब मुझे इतनी खुशी इतनी खुशी होती है कि म यह तय नहीं कर पाती कि आपको क्या कहूं और क्या न कह

और इसी कशमकश में होता यह है कि आपको कुछ भी नहीं कह सकती।

उल्लू की घू घू ने सौवसिंह का ध्यान क्षण भर के लिए भंग कर दिया। उसने खिड़की की राह उल्लू की ओर देखा। पड़ोसी के मकान की छत की दीवार पर उल्लू बैठा बड़ा अपना गोल-मटोल सिर नचा रहा था।

सौवसिंह ने अपनी बन्दूक सम्भाली और उल्लू को निशाना बनाना चाहा पर मीना ने उसे रोक दिया।

'इस मूक पक्षी को। क्या मार रहे हो ?'

यदि तुम कहती हो तो लो इसकी जान बख्श देता हूँ पर ये उल्लू होते बहुत बुरे हैं।

आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

मेरा तो भगवान् के सिवाय यहां कोई भी नहीं बिगाड़ सकता। और हां मैने ठाकुर का सारा प्रबन्ध कर दिया है।

यह बेचारा इसीके काबिल है।

और तेरे लिए यह हार लाया हूँ। सौवसिंह ने हार को उसकी आंखों से छिपाते बांकपनी मूंछों से आह्लाद व मुस्कान से चमक उठे। लो उन्हें अपने हाथों से ही पहना देता हूँ।

सौवसिंह ने हार पहना दिया।

मीना की आंखों में एक बार फिर आंसू ढलक पड़े।

सोना की माँ तुम मुझे दुखी लगती हो। मेरा यह काम तुम्हें पसन्द नहीं है ?

मैं हर रोज माता भवानी से यही विनती करती हूँ कि वह आपको इस काम में सफलता दे। गरीबों का जिस काम में भला हो वही काम राजपूती धर्म का है। फिर पति परमेश्वर होता है और उसकी आज्ञा, उसका काम नारी के लिए मान्य है।

तभी बन्दूक की आवाज सुनाई पड़ी। आवाज के साथ बाबा विद्यानन्द ने घर में प्रवेश किया सौवसिंह भागिए गोरे गांव में घुस आए हैं।

बाबा पिछले दरवाजे से भाग गए।

सौवसिंह ने अपनी बन्दूक सम्भाली।

'आप पिछले दरवाजे से जाइए। मैं और सांगा गोरों को रोकते हैं। मीना ने दुनाली संभाली और सांगा को पुकारा 'उठ ओ सांगा आ सांगा !

''क्या है मां ?

पिस्तौल संभाल।

'क्यों ?

तेरे बाप पर आफत आ पड़ी है। जल्दी कर।

पर मुझे ।

' इसमें छह गोली हैं बस मेरे साथ दागता जा। यदि आनाकानी की तो मैं तुझे भुरता बना दूंगी।

'सांगा ने पिस्तौल संभाल ली।

'दोनों ओर से बन्दूकों की आवाज हुई।

सीवसिंह दस ही मिनटों में सांडनी पर सवार होकर चम्पत हो गया। उसके जाते ही मीना ने दोनों हथियारों को घास के ढेर में छुपा दिया। सांगा को कहा, 'जाकर सो जा।

सांगा जाकर सो गया। गोरों ने डरते-सहमते मीना के घर में प्रवेश किया। पूछताछ की पर मीना ने साफ शब्दों में कह दिया कि वह डाकुओं के बारे में कुछ नहीं जानती। हां वे उस जंगल की ओर जरूर गए हैं। उस गोरे साहब ने माना को कहा कि यदि वह अपने पति को पकड़वा दे तो उसे सरकार बहुत बड़ा इनाम देगी। इसपर मीना ने आहत सापिन की तरह फुफकारकर कहा कि अपने ललाट की बिन्दी के बदले वह अपना सब कुछ दे सकती है।

गोरा चुप हो गया। उसे लगा कि यहां के पति और पत्नी में किसी प्रकार का होड़ नहीं है अपितु एक भक्ति है श्रद्धा है एक अटूट विश्वास है।

'उस दिन के बाद हम सबने सांगा में एक परिवर्तन देखा। अब वह शेर की तरह दहाड़ता था जो कोई उससे अकड़ता उसे पीट देता था। धीरे धीरे वह हमारा लीडर बना गया।

'इसी तरह दस साल गुजर गए। सांगा का बाप गोरों की गोलियों से मारा गया पर उसकी लाश आज तक नहीं मिली। इसलिए मीना दादी सदा सुहागिन

बनी हुई है। उसका विश्वास है कि उसका स्वामी एक न एक दिन जरूर आएगा। वह मरा नहीं है वह भय वश्तर इन गारे बच्चों के पीछे लगा हुआ है।

पर जिस दिन अपने बाप की मृत्यु के समाचार सोना न सुने उसी दिन से वह अपने को राणा सागा घोषित करके गाव पर शासन करने लगा। लेकिन उसमें और उसके बाप म यही बुनियादी अतर था कि उसका बाप गरीबों की रक्षा और पापियों का सफाया करता था पर वह गायवालों की बहू बेटियों पर बुरी नजर रखता है।

तभी तो मीना दादी उस अपना बटा नहीं कहती और बेचारी वह गांव की उतनी ही सेवा करती है जितनी वह मानायक दुष्टता करता है।

इसके बाद नरोत्तम काफी देर तक किसी गहरे विचार में तल्लीन बठा रहा। सुमति इधर-उधर की बातें करता रहा। और फिर कब गया इसका भी उसे पता नहीं चला।

नरोत्तम की मन स्थिति बडी अशान्त और उद्विग्न थी। चूंकि वह स्वभाव स डरपोक प्रकृति का था अत वह 'नारी इतनी कठोर और नारी इतनी पाशविक' याद करके भयभीत हो रहा था।

दोपहर की धूप जब चढ़ने लगी तब नरोत्तम अपने घर की ओर रवाना हुआ। उसका बदन टूट रहा था और उसे लग रहा था कि उसके कदमो में इतनी शक्ति नही है कि वे द्रुतगति से उठ सकें। उसकी इच्छा हो रही थी कि वह इस पीतल के नीरव और निस्तब्ध वातावरण के नीचे पडा रहे। और यदि उसे भूख विचलित नहीं करती तो वह वहीं सोया रहता—सारे दिन।

घर पहुचकर दनिक कार्यक्रम से निवृत्त होकर उसने खाना खाया। उसकी मा न गभीरतापूर्वक पूछा तुमने अपने लिए कपडे बना लिए होग ?

हा।

देखो मने विवाह की तिथि तय कर ली है। अगली चतुर्थी का मुहूर्त है। तुम अपने मित्रों को बुलाना चाहो तो बुला सकते हो।

'मेरा कोई भी मित्र आने वाला नहीं है।

'पहल तो तुम हर रोज अपने मित्रो के बारे में कहा करत थ और आज एका

एक इरादा कम वदल लिया ? उसकी मा की आखो म हल्का आश्चय था।

एमे ही। उसन मा की ओर विना देखे ही अनिच्छा से कहा।

अब समभी तू समझता है कि तेरी बहू मूख होगी पर एसा नही है। वह लाखों म एक है। जसा रग वसा गुण। इस बार तेरी मा न दीपक लकर ही बहू ढूढी है। अच्छे खानदान की फशन वाली ऊची एडी की चप्पल पहनन वाली मेम साहव ! कहते-कहते मा प्रसन्नता से हस पडी। उसकी आखो में आनद की ज्योति विकीण हो उठी जो तुरन्त गभीरता में वदल गई, जसे वह अपन पुत्र की चिरायु की शुभ कामना कर रही है।

नरोत्तम वहा से उठा और ऊपर के कमरे की ओर वढा। सीढ़ियो के वीच ही भाभी मिल गई। भाभी के होंठो पर मुस्कराहट थी। नरोत्तम को रोकती हुई वह वोली क्यो वबुआ जी व्याह के वाद आप हमें भूल तो नही जाएग ?

नरोत्तम को भाभी का मजाक इस समय अच्छा नही लगा। एकाएक उसकी दृष्टि उसके चेहर पर गई। वह कांप उठा। जिस पावन मुख पर वह शुचिता व दिव्यता के दशन करता था, उसपर वासना और अतृप्ति के साया को लोटते देख सिहर उठा।। ||||||||

राजिया और भाभी य दो शब्द तुरन्त उसके मन में काट की चुभन की पीडा और भय का सचरण करन लग। वह तिक्त स्वर में वोला अभी मुझे मजाक अच्छा नही लगता है, भाभी जी।

क्यों वबुआ जी, क्या इतना जल्दी ही हमसे किनारा करन लग ?

किनारा ? वह अपन आपसे बोला। वह हठात उदास हो गया। उस अपनी आदरणीय व पूजनीय भाभी के मन में खोट के दर्शन हुए। वह एकदम भल्ला उठा 'म कहता हू कि मुझ मजाक पसद नही है छोडिए मेरा रास्ता।

इतना कह उसने जसे ही अपनी भाभी की ओर देखा उसका मुह सफेद हो गया। उसका हाथ यत्रवत् हटा। तभी उसकी मां न नीच स पुकारा क्या बात है नरू ?

कुछ नही। कहकर वह आग वढा पर एक बार सन्दिग्ध दृष्टि से उसन भाभी के चेहरे की ओर पुन देखा। उस लगा कि उसके डाटने को भाभी न महसूस कर लिया

है। यह आन्तरिक अपमान से तिलमिला रही है। उसकी आंखों में रोष की स्फुलिंग ज्वलित हो गई है।

वह आकर बिस्तर पर पड़ गया। भाभी के भयानक चित्र उसके मानस पटल पर विभिन्न रूपों में अंकित होने लगे। उसे लगा कि उसकी भाभी अपमान की आग में जलकर विद्रोह की पुतली बन गई है। घृणा का सागर उसके अन्तस् में घुमड़ रहा है तभी तो उसकी आंखें लाल हो गई थीं—उस समय।

उसके अंग अंग में सिहरन सी दौड़ गई। दुश्चिन्ताओं के कारण वह चपल हो उठा। चूंकि वह सदा से बड़ा कायर प्रकृति का रहा था उसके मस्तिष्क में यह विचार हठात् आगए कि क्या अपमान की पराकाष्ठा पर उसकी भाभी उसकी भी हत्या नहीं कर सकती?

तब उसके मन में नई जिज्ञासा का प्रादुर्भाव हुआ। वह अपने आपसे कह उठा 'वह जाकर राजिया की भाभी को देखेगा वह कैसी है?

गांव के पश्चिमी छोर पर जो तालाब था उसके ईशान कोण पर राजिया का घर था वह एक गुप्तचर की तरह उधर गया। दोपहर की चिलचिलाती धूप में तालाब के किनारों पर गांव के कई बालक-बालिकाएं खड़े थे। उनके हाथ गोबर से भरे थे। तालाब से पानी पीने वाली गायों का वे गोबर इकट्ठा करते थे और धूप में जितने भुगने वाले होते थे उतने हिम्मत कर लिए जाते थे।

नरोत्तम को पलभर के लिए उन बालकों व बालिकाओं ने कुतूहल भरी दृष्टि से देखा फिर वे पुनः अपने कार्य में निमग्न हो गए।

वह पीपल के गट्टे पर बैठ गया। ठीक उसके सामने राजिया की भाभी रहती थी। थोड़ी देर बाद राजिया की भाभी बाहर कूड़ा फेंकने आई। एक अपरिचित को बैठा देखकर पूछ बैठी 'कहां से आए हो भैया!

'बाहर से।

'पाहुन हो?

'नहीं यहां तो मेरा अपना घर है। मैं गोपालप्रसाद का लड़का हूं। उसने नम्रता से उत्तर दिया।

'यहां क्या बैठे हो छोटे पंडित? भाभी ने उदास स्वर में पूछा।

'ऐसे ही !'

तेरी कुछ खातिर करू, पर क्या करू उस मुए सागा ने आज मेरे जवान देवर पर घात कर लिया है उसकी आखों में आसू आगए। वह आसुओ को पोंछती हुई बोली देखो न छोटे पडित लोग व्यर्थ में मुझे बदनाम करते ह कि मन राजिया जी को मरवा दिया। भला म क्यों मरवान लगी ? मुझे वह कांटा थोड ही लगता था। सच म उसे हृदय से चाहती थी, हृदय से।

नरोत्तम न देखा कि राजिया की भाभा अपनी साडी के छोर से अपनी आखें पोछ रही ह। आखो में आसू थे या नहीं यह वह बिलकुल नहीं जानता पर वह सिसकिया जरूर ल रही थी।

नरोत्तम कुछ नही बोला। वह वहा से उठकर चल पडा। तालाब में बाबा जी लगोटा पहन स्नान कर रहे थे। उसे देखत ही एक बार तो नरोत्तम यह सोचकर झेंप गया कि अवश्य बाबाजी सोचग कि वह भी राजिया की भाभी से सम्बध बढान लगा है पर बाबाजी न उसके विचार को निर्मूल कर दिया। वे सव्यग्य मुस्कराकर घुटनी भरते हुए बोल देखा रे छोटे पडित कलियुग की लीला देवर प घात करवाकर घडियाली आंसू बहा रही है भाभी। बडी जालिम है यह तिरिया राम बचाए इससे। हरे-हरे ।

बाबा जी कपड निचोडन लग।

नरोत्तम वहां से चला। थोडी देर पहले उसके मन में राजिया की भाभी के प्रति जो समवेदना जाग्रत हुई थी वह पुन लुप्त हो गई। उसन उसके अपूर्व सौन्दय पर जो शील का आवरण देखा उससे उसे विश्वास हो गया था कि लाग सत्य को नहीं अनुमान को पकड रह ह और अनुमान कभी भी सही नहीं होता। पर बाबा जी ने उसकी क्षणिक दृढता को फिर छिन्न-भिन्न कर दिया। उसका मन उडने लगा।

उसके मन में भांति भांति के विचार उठन लगे। उसकी भाभी भी सुन्दर है। और आज उसन उसका अपमान कर दिया कहीं वह भया के काना को न भर दे ? नहीं-नहीं उसे भाभी का अपमान नहीं करना चाहिए था। औरत की जात। इस तरह वह दुष्कल्पनाओ में गोते खाता रहा। अपने आपको पीडित

भरता रहा। उस प्रभाव-सा भी एक कहानी याद आई। उसमें एक स्त्री का अजीबोगरीब चरित्र चित्रित किया गया था कि एक भद्र महाशय को एक साधारण स्त्री किस तरह उल्लू बनाकर ठगती है। वैसी ही एक दूसरी कहानी थी जिसमें दो सहृदय मित्रों की मित्रता एक की चरित्रहीन पत्नी किस कलात्मक ढंग से तुड़वाती है। यहीं तक नहीं यथार्थ दुनिया में भी सहस्रों ऐसी घटनाएँ घटित होती हैं। घर के टुकड़े औरतों की कलह के बिना हो ही नहीं सकते। शरत्चन्द्र का सम्पूर्ण साहित्य ही तो नारी-चरित्र की विविधताओं से भरा है। — नारी दशा

और तनमन के मन में सहस्र स्त्री-मुख नाच उठे।

स्वप्न क्षण उसके ललाट पर उभर आए थे और जब वह अपने घर के पास पहुंचा तब वह बहुत उद्विग्न हो चुका था। घर के द्वार पर ही उसे अपनी भाभी मिल गई। हमेशा की तरह आज उसकी भाभी कमल की तरह खिलकर मुस्कराई नहीं बल्कि नाक भौं सिकोड़कर एक कोने में दुबक गई। उसके भावों में उपेक्षा के दर्शन स्पष्ट हो रहे थे।

उसकी उपेक्षा ने उसके भय को और विचलित कर दिया और वह ज्यों ही बिस्तर पर पड़ा वैसे ही उसके मन में नया सन्देह एकाएक पैदा हुआ 'कहीं भाभी ने भैया को गलत रूप में बात बनाकर कह दी तो अनर्थ हो जाएगा। ये मूर्ख अत्यन्त सन्देही होते हैं।

वह अधिक उद्विग्न हो उठा। क्योंकि वह बचपन से ही छोटी-छोटी घटना से तुरन्त विचलित हो उठता था अतः इस समय वह विभिन्न कल्पनाओं के सहारे अपने आपको स्वयं ही पीड़ित कर रहा था।

चिन्ताओं के आवर्तन में उसे गहरी नींद आ गई।

सन्ध्या को जब उसकी आंख खुली तब उसने अपने आपको कुछ स्वस्थ पाया। उसे लगा कि दिन के पूर्व जो उसके मस्तिष्क में हथौड़े चल रहे थे अब थम हो गए हैं। तब उसने अपने आपको धिक्कारा 'मैं आवश्यकता से अधिक सोचने लगा हूं। मेरी भाभी कितनी भोली और दयालु है वह भला किसीको मरवाने की सोच सकती है? पर उसकी हिम्मत तो अभी तक भैया को देखने तक नहीं हुई है। रही राजिया की भाभी उसका खानदान ही नीच है उसकी मां स्वयं

हत्यारिन है जरायम पेशवर है कठोर है निदयी है दुष्ट है। और इसी प्रकार राजिया की भाभी का भला-बुरा कहकर उसने अपनी आत्मा को सतोष दिया।

हाथ-मुह धोकर वह गांव के बाहर सूने जगल की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसे भाभी मिली जिसे उसने देखा तक नहीं। गाव के पूर्वी छोर पर एक 'नाथ' परिवार रहता था। यह परिवार अन्तकान का सीधा (मरने पर जो चावल आटा दाल घी इत्यादि दिया जाता है उसके लिए यह शब्द राजस्थान में प्रयोग किया जाता है) एव मतक के पीछे दस दिन भोजन लिया जाता है उसपर अपना जीवन-निर्वाह करता है। चूकि हमेशा कोई मरता नही अत इस परिवार के मर्द मजदूरी भी करते हैं।

जब भाभी को अपनी विचारधारा का केन्द्रबिंदु बनाकर नरोत्तम उस परिवार की झोपड़ी के आग से गुजरा तब एक साठ साला बुड्ढा निश्चित होकर मोती चूर के लड्डू खा रहा था और उसके पास एक पाच-छ साल का बच्चा बैठा हुआ ललचाई दृष्टि से उस बुड्ढे को देख रहा था।

पूव विचारों पर क्षणिक आवरण-सा पड गया नरोत्तम के। वह ध्यानपूवक उस बच्चे को देखने लगा।

बच्चा भूखा था और बुड्ढा भी। बच्चे की आखों में मांग थी और बुड्ढे की आखों में बेफिक्री। उसका मुह बहुत ही जल्दी-जल्दी चल रहा था जैसे उसे इस बात का भी भय है कि उसके भीतर का आदमी कहीं पिघल न जाए और यह बच्चा पास छोकरा उसके लड्डुओं का बटवारा न करा ले।

तभी उस छोकरे ने शंकित होकर चुपचाप उस बुड्ढे की ओर अपना हाथ बढ़ा दिया। उसकी दृष्टि बुड्ढे की ओर न होकर आकाश की ओर थी। बुड्ढे ने भी हद का पाजीपन किया। वह मुह से कुछ नही बोला। उसने बडी नाटकीयता से उसके हाथ को नीचा कर दिया और फिर वक्रिक होकर खाने में लग गया।

बच्चे की आखो की करुणा बढ रही थी और उसकी लम्बी सास इस बात की साक्षी थी कि अब उसकी आशा का अन्तिम छोर आ चुका है।

बुड्ढे ने अन्तिम कौर लेकर कमण्डल को तोडकर बनाए हुए खप्पर को उस

बिच्छू के डन से अधिक पीडाजनक उसे अपनी भाभी का स्पर्श लगा। वह हाथ छुडाकर दूर खडा हो गया।

नरोत्तम तुम मेरा फिर अपमान कर रहे हो।'

अपमान म तेरा नहीं तू मेरा कर रही है। भाभी होकर अपनी प्रतिष्ठा का ख्याल नहीं करती ? जरा सोचो तो भाभी ससार क्या कहेगा भतव्य क्या कहेगा ? वह रुआसा हो उठा।

'मं कुछ नहीं समझती, जब म मूख थी तब तुम मुझे व्यथ की नारी समझकर उपेक्षा कर दिया करते थ और अब नतिकता और मर्यादा की दुहाई देन लगे हो आखिर मेरा प्यार तुम कसे तृप्त करोग ?

'ममत्व से भिगोकर।

ऑल नॉनसेंस।

नरोत्तम चुप।

भाभी रोने लगी।

तभी बुर्का लगाए एक व्यक्ति ने प्रवश किया। उसके हाथ में पिस्तौल थी। उसने काला सूट पहन रखा था।

आगन्तुक ने कहा हलो डियर तुम्हारी आँखों में आसू ? क्या बात है ? उसका सम्बोधन नरोत्तम की भाभी के लिए था।

प्रिय यह नादान आदमी हमसे लव' करता है। हमारा अपमान करता है।

नरोत्तम सिर से पाव तक काप उठा। काटो तो खून नही। वह आवेश में चीख पडा मन उसका अपमान नही किया यह मेरी भाभी है, मा है पूज्य है।

पर उस आगन्तुक ने कुछ नही सुना। उसन लपककर नरोत्तम का गला पकड लिया। नरोत्तम समले इसके पहल ही उस आगन्तुक न दो गोलिया दाग दीं। नरोत्तम चीखकर गिर पडा।

जब वह गिर गया तब वह आगन्तुक उसके पास आया। उसन अपना बुर्का उतारा। नरोत्तम न बुझती नेत्र-ज्योति से उसकी ओर देखा 'भया भया' कहकर चरम दुख को अन्तर में बसाए वह तडप-तडपकर कह उठा मा मझे भया न मार डाला मां मुझ भैया ने मार डाला मा मां मा !

तड़पते सिसकते और रोते नरोत्तम की आंख खुल गई।

भयानक स्वप्न टूट गया।

रात के रंग के मखमली आकाश में हीरे-मोतियों की तरह छोटे-बड़े तारे चमक रहे थे।

नरोत्तम ने भयभीत दृष्टि से अपने चारों ओर देखा। न कोई भाभी थी और न भैया। वही उसका परिवार और गहरी शून्यता।

पर नरोत्तम की दशा बड़ी विचित्र थी। उसने एक बार भाभी के कमरे की ओर देखा। वहां गहरा सन्नाटा था।

भोर का तारा इधर उदय हुआ उधर नरोत्तम व्यथा से विचलित और भय से आक्रान्त होकर घर से बिना कुछ कहे-सुने चल पड़ा। घर से निकलने के पूर्व उसे अपनी मां का ममता भरा चेहरा जरूर याद आया था पर भाभी द्वारा उसकी हत्या करने का जो निर्मूल सन्देह था वह उसे वहां से भगाए लिए जा रहा था। वही स्वप्न वही बर्छेवाला आदमी गोली और मृत्यु! उसे बार-बार याद आ रहे थे। फिर राजिया और उसकी भाभी?

उसके कदम शहर की ओर बढ़े।

'नारी के चरित्र का कोई विश्वास नहीं।' यह विचार उसके मस्तिष्क में सत्य की तरह पुनः गूंज उठा। उसका मन अपनी इस दुनिया से बेतहाशा भाग रहा था।

सवेरा होते होते वह शहर के स्टेशन पर आ पहुंचा। स्टेशन के एक ओर ग्रामीण लोग साफा बिछाकर सो रहे थे और दूसरी ओर कुछ ग्रामीण स्त्रियां भी पोटली की तरह पड़ी हुई थीं।

वह चुपके से गाड़ी पर बैठ गया।

बार-बार वह शंकित होकर स्टेशन के दरवाजे की ओर देख लेता था कि कहीं उसके घर वाले तो नहीं आ रहे हैं?

जब गाड़ी चलने को तैयार हुई तब सहसा उसके मस्तिष्क के अभय-कोमल कोने में यह विचार उठा 'उस बेचारी लड़की का क्या हाल होगा जो अपने मेंहदी भरे हाथ को लेकर दुलहिन बनने के मधुर-सुघर स्वप्न देख रही है।' तभी इंजिन ने सीटी दी और गाड़ी की कर्कश आवाज में उसके विचार खो गए।

२

सन् १९४७ का समय।

दंगों से आक्रांत और भयभीत यात्री। सनसनीखेज हृदय विदारक समाचार। आदमी क्या शैतान तक उन लोमहर्षक घटनाओं को सुन-सुनकर भयभीत हो रहे थे।

ऐसे समय नरोत्तम फर्स्ट क्लास के पास वाले एटेंडेंट कम्पार्टमेंट में बैठा था। न उसके पास टिकट और न उसके पास सामान। पानी भी पीना चाहे तो उसे नल पर जाकर पीना पड़ता था और खाने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। उसके ठीक पास वाले डिब्बे में कोई सेठ-सेठानी बैठे थे। एक मिल के स्वामी और प्रसिद्ध प्रतिष्ठित व्यापारी। बंगाल में उनकी एक मिल थी और भी कई छोटे-मोटे उद्योग धन्धे। अभी वे पति-पत्नी अपने बड़े लड़के की सख्त बीमारी का समाचार पाकर इस संकट काल में कलकत्ता जा रहे थे।

उन्हें किसी भी वस्तु की जरूरत पड़ती तो वे सीधा नरोत्तम को कहते कि भाई जरा सुनना एक गिलास पानी तो ला दो जरा एक पान ले आना। चूंकि सेठानी पान में जर्दा खाती थी इसलिए उसे हर स्टेशन पर नरोत्तम से अनुनय करके पान मंगवाना पड़ता था। कभी-कभी सेठानी स्वयं अपने पर झल्ला पड़ती थी। उसके झल्ला पड़ने का तात्पर्य स्पष्ट था कि वह पानदान लाना क्यों भूल गई? एक तो डबल पैसा लगता है और दूसरा इतनी दिक्कत उठानी पड़ती है। फिर वह उस वैद्य पर गुस्सा हो उठी जिसने उसके फूलते शरीर को देखकर यह सलाह दी कि वायु-विकार को रोकने के लिए तम्बाकू खाना अति उत्तम रहेगा। धत् तेरे की यह सब कोई बात है रोग की दवा नया रोग बन जाए!

और वह सेठानी इन सभी बातों से उद्विग्न होकर सेठजी को उलाहना दिया करती थी आप ऐसा लबर वैद्य लाए लिए जिसने मुझे तम्बाकू का दास बना दिया।

/ शाम होने पर सेठानी का ध्यान नरोत्तम पर गया। वह उसके बारे में कुछ जानना चाहती थी। आखिर यह है कौन? जो बेचारा दिन भर उनकी चाकरी

बजाता रहा है ? तब उसने सेठजी को हिदायत दी कि इसबार वह उसे यह सब पूछ-कर पता लगाए। कहीं नीच जाति का हो गया तो कम से कम उसे तो वष्णव धर्म के अनुसार प्रायश्चित्त करना पड़ेगा ही। /

और नरोत्तम एक अजीब ही उलझन में उलझ गया। वह सोच रहा था कि वह घर से भाग आया। लोग उसके बारे में क्या-क्या अटकलबाजियां लगाएंगे। उसकी मा रो रोकर बेहाल हो रही होगी। पर उसका बाप जरूर गुस्से में उबल कर कहता होगा कि मरन दो साले को भाग गया तो खुद व खुद वापस आएगा। मेहनत करके कमाना हसी-खेल नहीं। जरा ठोकरें खाने दो अपन आप अकल ठिकाने पर आ जाएगी। और वे जरूर मेरी मां पर गर्म होते होंगे। कहते होंगे कि बना लिया वरिस्टर कलक्टर! इंगरेजी पढाएगी गांव के किसान को साहब बनाएगी, बना लिया ?

तब मां का हृदय दुख से तड़प उठेगा। वह सज्ञाहीन होकर अनन्त पीड़ा में सुल गन लगगी। ममत्व के फूल की पखुडियों को लक्ष्यकर सभी लोग कस-कस के नोचेंगे। वह दृश्य कितना मर्मान्तिक होगा।

'मां-मां-मा ! वह मन ही मन बोला। उसका गला भर आया। उसकी आखों से आसू वह निकले। तब उसे अपनी भूल स्मरण हो आई कि वह आवेग में एक निराधार भय के झपेट में सब बन्धन तोडकर क्या भाग आया ? ओह यह भय कितना भयकर होता है। मन में जागता है तब मन वाज पक्षी की रफ्तार से उड़ता है।

उसन अपनी आस्तीन से अपनी गीली आखें पोछीं और स्थिर होकर बैठ गया। समीप के एक मुसाफिर ने स्नहसिक्त स्वर में पूछ लिया 'क्यों भाई तुम्हारा भी कोई सम्बन्धी हिन्दू मुसलमानों के दंगे में मर गया है ?

दगा !

वह काप उठा। उसकी चेतना के नेत्र खुल गए।

अब उसे अपने आपपर क्रोध आने लगा। वह इस नाजुक समय में कहां जाएगा ? उसन बड़ी भारी ग़लती की कि वह घर से भाग आया। इस ससार में वह सर्वथा सम्बलरहित है। वह जहा भी जाएगा उसे अपनत्व भरी दृष्टि से देखने वाला कोई नहीं मिलगा। वह अकेला है, नितान्त अकेला।

थोड़ी देर रोन के बाद जब उसका मन हल्का हो गया तब वह स्वस्थ होकर बठ गया और अपने पड़ोसी से दगों के बारे म बातचीत करन लगा। उस मुसाफिर न बताया कि हजारों हिन्दू मुसलमान मारे गए हैं। खून की नदियां बह गई हैं इन्सानियत खत्म हो रही है। उस व्यक्ति ने अन्तिम बार कहा इसमें न तो हिन्दू का दोष है और न मुसलमानों का। भाई समय ही ऐसा आ गया है। क्या आजादी क्या गुलामी कुछ समझ में नहीं आता। मुझे तो एक चीज दिखाई पड़ती है—आदमी का खून लाल खून! गाड़ी रुक गई थी।

वह मुह धोन के लिए नीचे उतरा कि उसे सेठजी न पुकारा। उसने सुना नहीं। वह मुह धोकर वापस आया तब सेठजी ने जोर स पुकारकर बुलाया। वह डिब्बे में चला गया चुपचाप खड़ा हो गया।

भया तुम कौन हो! सेठानी मधुरता से बोली।

'ब्राह्मण!

क्या करते हो?

कुछ नहीं।

'कुछ नहीं क्यों भाई क्या नौकरी नहीं करते? सेठजी ने बीच में विस्मय से पूछा, इस जमाने में एक मिनट भी बकार नहीं रहना चाहिए।

नरोत्तम चुप हो गया।

खाना खा लिया?

नहीं।

क्यों?

मेरा सारा सामान स्टेशन से किसीन चुरा लिया है।

राम राम, कसा जमाना आ गया है? ईमानदारी किसीमें रही ही नहीं। अच्छा भया यह पानी की झारी भर ला और फिर हमारे साथ आकर खाना खा ले।

नरोत्तम झारी लकर चला गया।

सेठानी ने सेठ को समझाया, 'रात को इसे अपन पास ही रख लीजिए। दगों का जमाना है कहीं रात बरात कुछ हो गया तो काम आएगा।

सेठजी ने उसका कहना मान लिया।

जब नरोत्तम लौटकर आया तब सेठजी ने गहरी आत्मीयता का परिचय दिया। सेठजी ने पोपला मुह हिलाकर कहा 'भैया तू डर नही, ससार में जब किसीका कोई नहीं होता है तब भगवान उसका हो जाता है। तू फिकर मत कर रात भर हमारे पास ही रहना। ले खाना खा ल।

नरोत्तम ने कोई उत्तर नहीं दिया वह सिसक पडा।

अरे जवान होकर रोता है छि छि यह तो भाई तूने औरतों वाली बात कर दी क्यू लिछमी ?

और क्या आसू तो औरत जात की आखों में हर घडी रहते है। मद तो हिम्मत से काम लेते ह। ले खाना खा ल।

हालाकि दुख नरोत्तम के हृदय में घुमड रहा था फिर भी भूख का अपना बिल कुल अलग अस्तित्व था जो उसकी सारी व्यथाओं पर अपना पृथक प्रभाव पूण रूप से जमा बठा। वह खाना खाने लगा उसे सारी आपदाओं के बीच भूख सबसे बड़ी पीडा है।

अभी वह पहला कौर भी नहीं लन पाया था कि उसे अपनी मा की स्मृति आ गई। उसकी आखें भर आइ। सेठानी जरा लम्बे स्वर में बोली वाह रे वाह क्या तू कमाने के लिए परदेस जा रहा है ? औरतों की तरह बात-बात पर रोता रहेगा तो परदेश का कष्ट खाक उठाएगा।

सेठजी भी बोल पड़े तू काम धंधे की चिंता फिकर मत कर म तुझे अपने पास रख लूगा। कितना पढ़ा लिखा है ?'

बी० ए का इम्तिहान देकर आया हूं।

फिर बस हमारे छोरों को पढ़ा दिया करना। बस, अब तो राजी है न ? सेठ ने एक विचित्र तरह की मुद्रा बनाई जो अप्रिय होते हुए भी अपनापन बता रही थी।

नरोत्तम ने अपनी स्वीकृति द दी। डूबते को तिनके का सहारा मिल गया। सेठ-सेठानी भी खुश हो गए।

और रात पर गहरा सन्नाटा छा गया।

कई ऐसे स्टेशन थे। जहा जान माल का अधिक खतरा बना था पर सेठजी के कथनानुसार कि मैंने हनुमान बाबा के सवा पाच रुपये का प्रसाद बोला है इसलिए बिना विघ्न-बाधा के हम कलकत्ता पहुच जाएगे और वे सब सकुशल कलकत्ता पहुच गए। बाद में सेठजी काम में अधिक व्यस्त हो गए इस कारण प्रसाद भी करना भूल गए।

४

तोरा शुनिस नि कि शुनिस नि तार पायर ध्वनि
एजे आसे आसे आसे।
युग युग पल पल दिन रजनी
से ज आसे आसे आसे।

सुघर यौवना के सुमधुर कठ से निकला हुआ यह 'रवीन्द्र-सगीत सुबह सुबह नरोत्तम को जगाता था। नरोत्तम एक जम्हाई लेकर जैसे ही उठता वैसे ही उसकी दृष्टि सामने वाले उस मकान पर जा पड़ती जहा अभी-अभी नया किरायेदार ब्रजबिहारी चक्रवर्ती आया था।

नरोत्तम उठा और उसने चुपके से सदा की भांति उस दुमजिल पुराने मकान पर दृष्टि डाली जो जगह-जगह टूट गया था पर मकान-मालिक हरिदास राम इतना कजूस था कि मकान की मरम्मत भी नही करा रहा था। जिस किरायेदार को कोई मकान नहीं मिलता था वह इस छोटे-से घर में आकर रहता था। बेचारा ब्रजबिहारी अभी-अभी धनबाद से आया है। रेलवे का नौकर है आफिसर से खटपट हो जाने के कारण उनकी बदली कलकत्ता कर दी गई जिससे बेचारे की बसी बसाई गृहस्थी को उजाड़कर यहा आना पड़ा।

चक्रवर्ती को आए अभी दो सप्ताह हुए थे। इस बीच नरोत्तम की उससे एक बार भेंट हुई। बात कोई विशेष नहीं हुई थी यही पड़ोसी के नाते अभिवादन

नहीं नहीं। वह कटता हुआ बोला।

'नहीं' नहा' अब नहीं चलगी। बस रात का खाना यहीं पर खाना होगा। सवेरे-सवेरे इधर-उधर मुह मारते रहिएगा। सठानी न मुस्करा अर दिया।

बात यह है कि एक दिन का यह काम नहीं है। हर रोज की बात ठहरी और हर रोज के लिए यह बात बड़ी बुरी लगती है।

सठानी का चहरा गभीर हा गया। उसकी आखों में ममत्व उमड़ पड़ा। अत्यन्त धय स बोली जब तुम मुझ अपनी मा समझत हो तब इस प्रकार का परायापन कैसा? तुम्हे तो इस अपना घर समझना चाहिए। बस मरा हुक्म है रात का खाना तुम्ह यहीं खाना होगा।

नरोत्तम स्वीकृति देकर घर आया।

स्नान आदि स निवृत्त होकर सौलिए को सुखान के लिए ज्योही बरामदे में आया त्योंही चक्रवर्ती न नमस्कार किया।

शर्मा साहब इधर आपके दर्शन ही मुश्किल हो रह ह। क्या आप हमसे रुष्ट ह?

आकस्मिक अपनत्व न पल भर के लिए नरोत्तम को आश्चय म डाल दिया। नमस्कार-अभिवादन के बाद वह कृत्रिम मुस्कान लाकर बोला एसा तो नहीं है चक्रवर्ती मोशाय म तो दिन भर अपन कमरे में पड़ा रहता हू अथवा पुस्तकालय तथा पिक्चर देखने चला जाता हू। यहा पर मेरा मिलना-जुलना बड़ा सीमित है। कुछ म स्वभाव से भी एकातप्रिय हूं।

मैंने इधर आपको दखा नहीं। पड़ोसी होने के नाते स्वाभाविक सहानुभूति व जिज्ञासा से अपन आपको वचित नहीं रख सका अत आज पूछन का साहस कर बठा।

कोई बात नहीं कहिए कुछ आज्ञा कीजिए। वह कामन स्वर म बोला।

दोनों मकानों के बीच जो तीन फुट की गली पड़ती था उसस गुजरते यात्री पल भर के लिए उनपर दृष्टि डालकर आग बढ जाते थे। नरोत्तम को बिलकुल चुप दखकर चक्रवर्ती बोला आपसे [illegible] काम है। दो मिनट देंगे?

अवश्य आइए! उसन अल [illegible] गा।

नमस्कार।

यह सुघर यौवना भी और कोई नहीं उसकी पुत्री इन्दिरा थी। ग्रेजुएट होने के साथ-साथ उसने अन्य बंगाली लड़कियों की तरह रवीन्द्र-संगीत का सुन्दर अभ्यास कर लिया था और हर सुबह उसका सुमधुर कंठस्वर नरोत्तम के लिए अमृत से कम नहीं था।

इन्दिरा अपने संगीत में तन्मय थी और नरोत्तम जाली की ओट से उसे अभी देख रहा था।

इधर नरोत्तम को कलकत्ता आए एक वर्ष पूरा होने जा रहा था। इस बीच उसने अपने घर वालों को दो ही पत्र दिए थे अपनी कुशलता और विवाह न करने के बारे में। इसपर उसकी मंगेतर तारिणी का पत्र आया था कि यदि वह उससे विवाह नहीं करेगा तो वह आजन्म कुंवारी रहेगी। नरोत्तम ने इस पत्र को धमकी समझकर कोई प्रत्युत्तर नहीं दिया क्योंकि नारियों के प्रति उसके मन में जो धारणा थी, उससे यह निर्विवाद सोचा जा सकता है कि अर्थहीन सन्देह और भय के कारण उसका दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं हो सकता।

उसका परिवार इस कारण उससे बड़ा ही असंतुष्ट था। चूंकि उसने साफ़-साफ़ लिख दिया था कि यदि उसपर विवाह के लिए अधिक दबाव डाला गया तो वह कहीं और भाग जाएगा। लाचार सबको मौन धारण करना पड़ा।

उसको हमेशा की भांति छुपकर देखकर नरोत्तम नीचे उतरा और दैनिक कार्य क्रम से छुट्टी पाकर वह सेठ माधोदास के यहां जा पहुंचा।

दो-तीन लड़के पहले से ही तैयार थे उन्हें पढ़ाकर वह ज्योंही वापस आने लगा, त्योंही सेठानी ने मुस्कराकर कहा मास्टर जी कल से आपको सीता को भी संभालना पड़ेगा आजकल अनपढ़ लड़कियों की शादी हमारे समाज में नहीं होती। पता नहीं आजकल के इन छोकरों को लड़कियों की पढ़ाई लिखाई से क्या मिलता है?'

संभाल लूंगा पर माता जी, मैं इस सन्ध्या के समय पढ़ाने आऊंगा। एक साथ इतने बच्चों को पढ़ाना मेरे लिए संभव नहीं है।

कोई बात नहीं। कहकर सेठानी जाने लगी। लेकिन फिर एकदम घूमकर बोली, सुनिए मास्टर जी अब आप रात का खाना भी यहीं खाया कीजिए।

नहीं नहीं। वह कटता हुआ बोला।

'नहीं नहीं अब नहीं चलेगी। बस रात का खाना यहीं पर खाना होगा। सवेरे-सवेरे इधर-उधर मुंह मारते रहिएगा। सेठानी ने मुस्करा भर दिया।

'बात यह है कि एक दिन का यह काम नहीं है। हर रोज की बात ठहरी और हर रोज के लिए यह बात बड़ी बुरी लगती है।

सेठानी का चेहरा गंभीर हो गया। उसकी आंखों में ममत्व उमड़ पड़ा। अत्यन्त भाव से बोली जब तुम मुझे अपनी मां समझते हो तब इस प्रकार का परायापन कैसा? तुम्हें तो इसे अपना घर समझना चाहिए। बस, मेरा हुक्म है रात का खाना तुम्हें यहीं खाना होगा।

नरोत्तम स्वीकृति देकर घर आया।

स्नान आदि से निवृत्त होकर तौलिए को सुखाने के लिए ज्योंही बरामदे में आया त्योंही चक्रवर्ती ने नमस्कार किया।

शर्मा साहब इधर आपके दर्शन ही मुश्किल हो रहे हैं। क्या आप हमसे रुष्ट हैं?

आकस्मिक अपनत्व ने पल भर के लिए नरोत्तम को आश्चर्य में डाल दिया। नमस्कार-अभिवादन के बाद वह कृत्रिम मुस्कान लाकर बोला, ऐसा तो नहीं है चक्रवर्ती मोशाय मैं तो दिन भर अपने कमरे में पड़ा रहता हूं अथवा पुस्तकालय तथा पिक्चर देखने चला जाता हूं। यहां पर मेरा मिलना-जुलना बड़ा सीमित है। कुछ मैं स्वभाव से भी एकांतप्रिय हूं।

मैंने इधर आपको देखा नहीं। पड़ोसी होने के नाते स्वाभाविक सहानुभूति व जिज्ञासा से अपने आपको वंचित नहीं रख सका अतः आज पूछने का साहस कर बैठा।

कोई बात नहीं, कहिए कुछ आज्ञा कीजिए। वह कोमल स्वर में बोला।

दोनों मकानों के बीच जो तीन फुट की गली पड़ती थी, उससे गुजरते यात्री पल भर के लिए उनपर दृष्टि डालकर आगे बढ़ जाते थे। नरोत्तम को बिलकुल चुप देखकर चक्रवर्ती बोला आपसे विशेष काम है। दो मिनट देंगे?

अवश्य, आइए! उसने अत्यन्त मधुरता से उत्तर दिया।

कसे होगी ? अपराध तो है उन बुद्धिवादियों का जो इस प्रकार गलत परम्पराओं धारणाओं और व्यवस्था को कायम रहने का प्रोत्साहन देते हैं। वे क्या नही यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाते ? वे क्यों नहीं कहते ह कि हम यह ह ? हमारी असलियत यह है। पर सामाजिक मान प्रतिष्ठा उन्हें दुर्बल किए हुए ह। वे भी उसी जमात में शामिल हो जाते ह, जिसमें सिद्धान्तहीन व्यक्ति प्रश्रय पाते ह।'

नरोत्तम आवश्यकता स अधिक गभीर हो गया। उसके स्वर में तनिक क्षोभ था। वह बोला म आपसे कहता हू कि आप इस समाज-व्यवस्था को ही समाप्त करके अपने दायरे को इतना विस्तृत क्या न कर लें कि हमारे सम्बन्ध वसुधैव कुटम्बकम् की ओर बढ़ते जाए। उदाहरणाथ एक बगाली एक मद्रासी से अपने वैवाहिक सम्बन्ध क्यों नहीं स्थापित करता और एक राजस्थानी एक गुजराती को अपना भाई क्या नही समझता ? समस्या यह है कि हम बहुत व्यापक रूप में सोचते ह, और अत्यन्त सकुचित रूप से कार्य करते ह।

हां-हां' वह टूटते हुए स्वर में बोला।

'प्रत्यक समाज का प्रत्येक व्यक्ति इस सत्य को अस्वीकार नही कर सकता। वह आवश्यकताओं को महसूस करता है पर उनके अनुकूल कदम नही उठा सकता। तब कहना पड़ता है कि प्राचीनता के प्रति रूढ़ियों के प्रति हमारे मन की गहराई में अनिवाय सम्मोह है और उसे तोड़ते हुए हमारे मन में भय जागता है।'

चक्रवर्ती चुप हो गया। कुछ देर बाद वह पराजित होकर बोला, म समझता हू कि हमारे समाज की सबसे उपेक्षित प्रताड़ित और पीड़ित युवती अन्त में सभी मानदडों की अवज्ञा करके शेप प्रश्न' की कमल' बन जाएगी। प्रत्यक बात के प्रति उसमें गहरा विद्रोह होगा।

एसा भी सभव है। नरोत्तम अपने शब्दा पर जोर देकर बोला।

इन्दिरा न अपने बरामदे से ही बाबा' को आवाज दी।

लीजिए, अर्जेंट तार आ गया है दफ्तर की फाइलें प्रतीक्षा कर रही होंगी। और फिर वह हसकर उच्च स्वर में बोला आया इन्दिरा।

फिर आगे बात नहीं बढ़ी।

चक्रवर्ती ने उठते-उठते कहा देखिए आप मेरी प्राथना पर कान लगाइएगा।

यह उससे आप ही पूछ लीजिए, मैं उससे कह दूंगा कि वह आपसे मिल ले। वैसे स्वभाव की वह बड़ी अच्छी है।

नहीं नहीं उन्हें कहने की कोई जरूरत नहीं। आप पूछकर बता दीजिए।' उसने तनिक व्यग्रता से कहा।

नहीं नरोत्तम बाबू इसका मतलब तो यह है कि आप कुछ दिन मुझपर विशेष ध्यान देना नहीं चाहते। पर मैं आपको स्पष्ट रूप से बताना चाहता हूं कि मैं बहुत ग़रीब हूं। यह जो आप शालीनता और ठाट देख रहे हैं सब कागज के घर के समान हैं। उसका स्वर रुद्ध हो गया बिटिया के विवाह के लिए दहेज चाहिए, दहेज के बिना सुशिक्षित और सुशील वर नहीं मिलता? सच कहूं हमारा बंगाली समाज अर्थहीन प्रतिष्ठा के पीछे भाग रहा है। यहां की युवतियां अन्तर्गृह में जल-जल कर अपने को समाप्त कर रही हैं। अनमेल विवाह भिन्न रुचि का वर। दुलहिन दुबली तो वर मोटा! एक अजीब सम्बन्ध! फिर भला उद्धार कैसे होगा? आपने शरत् को पढ़ा होगा। नारी के जीवन की पीड़ा के क्या सभी रूप आप उस महान कलाकार में नहीं देखते? देखते हैं पढ़ते हैं और वाह-वाह करके मन को सान्त्वना दे देते हैं। पर केवल वाह-वाह से सुफल की प्राप्ति की आशा नहीं की जा सकती। आवश्यकता है उस महान कलाकार द्वारा चित्रित नारी पात्रों के प्रति गहरी समवेदना और सहृदयता प्रदर्शित करने की उसके अनुकूल वातावरण और समाधान प्रस्तुत करने की। पर ऐसा होता कहां है और न होने के अभाव में हमारा बंगाली समाज बहिर्जगत से प्रगतिशील प्रतीत होकर भीतर भीतर खोखला होता जा रहा है। जब तक मनुष्य को आन्तरिक शांति प्राप्त नहीं होगी तब तक शर्मा साहब! वह सही शब्दों में अपने को 'सिवलाइज्ड' व 'कलचर्ड' नहीं कह सकेगा।

नरोत्तम ने उत्तर में कहा बात केवल आपके समाज तक नहीं है। भारतवर्ष का सारा ढांचा ही दो रूपों में विभक्त है। हमारे यहां के व्यक्तियों की एक विशेष विचारधारा रही है कि अपने आपसे छल करना। क्षुधा से पीड़ित होकर अपने आपको भोजन किया हुआ बताना। मांगकर वस्त्र पहनकर भी डींग हांकना कि मैंने फलां मित्र को एक सूट यूंही दे दिया। लेकिन मुझे उन व्यक्तियों से ज़रा भी शिकायत नहीं। यदि वे ऐसा न करें तो उनकी अपरिसीम तृष्णा की अनन्त भूख शांत

कैसे होगी ? अपराध तो है उन बुद्धिवादियों का जो इस प्रकार ग़लत परम्पराओं, धारणाओं और व्यवस्था को कायम रहने का प्रोत्साहन देते हैं। वे क्या नहीं यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाते ? वे क्यों नहीं कहते ह कि हम यह ह ? हमारी असलियत यह है। पर सामाजिक मान प्रतिष्ठा उन्हें दुर्बल किए हुए ह। वे भी उसी जमात में शामिल हो जाते ह, जिसमें सिद्धान्तहीन व्यक्ति प्रश्रय पाते ह।

नरोत्तम आवश्यकता से अधिक गंभीर हो गया। उसके स्वर में तनिक क्षोभ था। वह बोला म आपसे कहता हू कि आप इस समाज-व्यवस्था को ही समाप्त करके अपने दायरे को इतना विस्तत क्या न कर लें कि हमारे सम्बन्ध वसुधैव कुटम्बकम्' की ओर बढ़ते जाए। उदाहरणार्थ एक बगाली एक मद्रासी से अपना वैवाहिक सम्बन्ध क्यों नहीं स्थापित करता और एक राजस्थानी एक गुजराती को अपना भाई क्यों नहीं समझता ? समस्या यह है कि हम बहुत व्यापक रूप में सोचते ह और अत्यन्त सकुचित रूप से कार्य करते हैं।

हाँ-हाँ' वह टूटते हुए स्वर में बोला।

'प्रत्येक समाज का प्रत्येक व्यक्ति इस सत्य को अस्वीकार नहीं कर सकता। वह आवश्यकताओं को महसूस करता है पर उनके अनुकूल कदम नहीं उठा सकता। तब कहना पड़ता है कि प्राचीनता के प्रति रूढ़ियों के प्रति हमारे मन की गहराई में अनिवार्य सम्मोह है और उसे तोडते हुए हमारे मन में भय जागता है।

चक्रवर्ती चुप हो गया। कुछ देर बाद वह पराजित होकर बोला 'म समझता हू कि हमारे समाज की सबसे उपेक्षित प्रताड़ित और पीडित युवती अन्त में सभी मानदडों की अवज्ञा करके शाप प्रश्न' की कमल' बन जाएगी। प्रत्येक बात के प्रति उसमें गहरा विद्रोह होगा।

'ऐसा भी सभव है। नरोत्तम अपने कथन पर जोर देकर बोला।

इन्दिरा ने अपने बरामदे से ही बाबा को आवाज दी।

लीजिए, अर्जेन्ट वार आ गया है दफ्तर की फाइलें प्रतीक्षा कर रही होंगी। और फिर वह हसकर उच्च स्वर में बोला आया इन्दिरा।

फिर आगे बात नहीं बढ़ी।

चक्रवर्ती ने उठते-उठते कहा, देखिए आप मेरी प्रार्थना पर कान लगाइएगा।

अच्छा तो यही होता कि आप स्वय उससे मिल लेते।

नही नहा चक्रवर्ती मोशाय इसकी कोई आवश्यकता ही नही है। आप उसे उनकी रुचि का पता लगाकर मुझे बता दीजिए, बस।

जसी आपकी आज्ञा म ही पूछ दूगा।

चक्रवर्ती चला गया।

नरोत्तम सामने की मेज पर पाव फलाकर विचारमग्न-सा बठ गया। हालांकि उसने चक्रवर्ती को स्पष्ट शब्दो म कह दिया था कि वह इन्दिरा से मिलना नहीं चाहता पर थोड़ी देर बाद उसे अपने आपपर क्रोध आया कि वास्तव में वह नारी के नाम से बहुत अधिक घबरा जाता है। तब उसे यह भी याद आया कि कभी-कभी सेठजी की नातिनें उससे हसी-मज़ाक कर लती ह तब वह चाहकर भी उत्तर नही दे सकता। वह इतना निर्बल और डरपोक क्यो है? सकोच केवल उसे ही क्यो? और भी तो युवक ह? वह गभीर हाकर सोचने लगा—अपनी इस दुबलता पर।

तब उसने मन ही मन यह निणय किया कि वह कल इन्दिरा से प्रथम भेंट करेगा। उसके स्वभाव स परिचित होकर उससे होटल या किसी अच्छे रेस्तरा म मिलेगा। बातचीत करेगा फिर उससे गहरी मित्रता कर अपने एकात को समाप्त करेगा। प्राय सभी विद्वानो का कहना है कि एकात और अन्तमुखता जीवन को पीड़ा की ओर ल जाती है।

लेकिन वह एसा कुछ भी नही कर सका। चक्रवर्ती के दफ्तर जाते ही जब इन्दिरा ने उसके कमरे में प्रवेश किया तब उसे लगा कि उसका अग प्रत्यग जड़ हो गया है। उसकी प्रखर बुद्धि अपग हो गई है। वह नमस्कार करना चाहता था पर नही कर सका। बड़ी मुश्किल से उसने उसे कुर्सी पर बैठने का सकेत किया।

नरोत्तम बाबू क्या मेरा आगमन अशुभ वेला में हुआ है? उसने बैठते ही पहला प्रश्न किया।

नहीं तो। उसने व्यग्रता से कहा।

फिर आप घबरा क्या रहे हैं?

नहीं नही एसी तो कोई बात नहीं है। उसके स्वर में कपन था।

इन्दिरा के अधरों पर मुक्त हास्य बिखर गया। वह दृष्टि को नरोत्तम पर जमाती

हुई बोली 'बाबा कह रहे थे कि आप बड़े प्रतिभाशाली एवं प्रभावशाली व्यक्ति हैं पर आप तो स्वच्छंदतापूर्वक बोल भी नहीं सकते। खैर, मैं भी आपकी आलोचना प्रत्यालोचना करने बैठ गई। मुझे तो अपने प्वाइंट पर आना चाहिए। अपने आंचल के एक छोर को जिसमें उसकी चाबियों का गुच्छा बंधा था, हाथों में लेकर वह चाबियां गिनने लगी। गिनती गिनती बोली बात यह है नरोत्तम बाबू मैं पढ़ाने का काम पसंद करूंगी। यदि आप तीन-चार ट्यूशन दिला दें तो उत्तम रहेगा। एक बात मैं अपनी सहूलियत के लिए और कहना चाहूंगी कि किशोर व युवतियों के ट्यूशन की अपेक्षा मैं बच्चों के ट्यूशन करना अधिक पसंद करूंगी। ममत्व से पढ़ाने में जो आनंद आता है वह स्नेह और प्यार से पढ़ाने में नहीं।

नरोत्तम नीचा दृष्टि किए सब सुनता रहा। थोड़ी देर पूर्व की सभी योजना ताश के महल की तरह तहस-नहस हो गई—रेस्तरां की बात मित्रता की बात, सभी कुछ! रह गई एक अजीब-सी कशमकश।

अच्छा मैं चलती हूं नमस्कार। वह तुरन्त वहां से चल दी।

नमस्कार। कहकर नरोत्तम ने ज्योंही सिर ऊंचा किया, त्योंही इन्दिरा कमरे के बाहर चली गई। नरोत्तम को लगा कि वह उससे जरूर नाराज होकर गई है। किसीके स्वागत में साधारण शिष्टता का ध्यान न रखना बड़ी अभद्रता है आगन्तुक का अपमान होता है, और फिर उस आगन्तुक का जो पहली बार उसके यहां पाहुना बनकर आया है। अरे उसे तो चाय बिस्कुट का प्रबन्ध करना चाहिए था। यदि वह ऐसा नहीं कर सका तब कम से कम उसे जाने के लिए तो अवश्य पूछना चाहिए था। पर वह इतना घबरा क्यों गया? तब उसे अपने आपपर ग्लानि हुई। वह सिर पकड़कर बैठ गया।

तब उसके मन में आया कि वह इसी समय चलकर उससे क्षमा-याचना करेगा। अपनी अभद्रता के लिए खेद प्रकट करेगा। फिर उसने सोचा कि अभी नहीं। अभी उसका मूड अच्छा नहीं होगा। वह सांध्य बेला उसको पुकारकर उसे स्पेशल चाय बनाकर पिलाएगा और तब उससे क्षमा मांगेगा।

थोड़ी देर बाद उसने अपना यह भी विचार बदल दिया। एकांत में वह कहीं बिगड़ गई तो? बड़ी हिम्मतवाली है। तब नरोत्तम को राजिया की भाभी अप्रत्या

चित याद हो उठी। वह भी तो इतनी ही हिम्मत के साथ उससे पहले पहल वार्ता लाप करने लग गई थी।

तब उसने निश्चय किया कि वह चक्रवर्ती के सामने ही इन्दिरा से क्षमा मांगगा। पिता के समक्ष अमूमन लडकियां मर्यादाहीन नहीं होतीं वह आलोचकों की भांति नहीं चीखतीं और उपदेशक की भांति सूत्रों में बोलने का प्रयास नहीं करतीं। उस समय उनमें प्राय साधारण नारी के गुण मौजूद रहते है। और कुछ यहां की युवतियां भावुक होती ही अधिक है। पल-पल में रूठना राजी होना, रोना-हसना! वह इंदिरा को कहगा कि तुमने भी तो अशिष्टता की है। पूरी बात किए बिना ही, नमस्कार का प्रत्युत्तर सुने बिना ही तुम भी तो भाग गई। ऐसा क्यो? यह भी तो भारी अशिष्टता है असभ्यता है। उसे भी मुझसे क्षमा मागनी चाहिए।

काफी देर इस तरह की बातो में बिताने के बाद उसने सामने के बरामदे की ओर दो-तीन बार ताका भी पर उसे इन्दिरा कही भी दिखलाई नहीं पड़ी। वह विशेष चिन्तित हो उठा। उसने सोचा कि इस समय तो वह प्राय' बरामदे में बैठी गृहस्थी का काय करती रहती है। आज उसकी अनुपस्थिति न उसके सन्देह को और बल दे दिया। उसे महसूस हुआ कि वह उससे जरूर नाराज है।

वह पुन' बिस्तरे पर आकर पड गया। कुछ देर बाद उसके स्मृति-मन्दिर में वही स्वर गूज पड़ा—'तोरा शुनिस नि कि शुनिस नि तार पायर ध्वनि'—वह मुग्ध हो गया। इन्दिरा उसके पास खड़ी नहीं रही हो किन्तु जब वह लौटी थी तब उसकी पगध्वनि उसके कानों में क्यों नहीं पडी। उसकी पगध्वनि पावन अमृत की तरह होगी अवश्य होगी। उसका हर कदम पृथ्वी पर फूल की भांति पड़ता होगा जरूर पड़ता होगा। जिस रूप की छटा को वह अपने मुख पर दीप्त कर रही है, वह छटा अलौकिक है। उसका मन उसका मन ! वह विह्वल हो गया। उसके कानों में वही गीत गूजने लगा 'तार पायर ध्वनि' ।

मधुर स्मृतियों से थककर वह उठा और खाना खाने के लिए भोजनगृह की ओर चल पड़ा। इस भोजनगृह में मारवाड़ी भोजन बनता था। साधारण तो नहीं उच्च मध्य वर्ग के मारवाड़ी प्राय इसी भोजनालय में खाना खाते थे। बड़ा बाजार की गली में बसा यह भोजनालय कलकत्ता में बड़ा प्रसिद्ध था। इसलिए कभी-कभी

उसकी मारवाड़ी मुनीमों से भेंट हो जाती थी एक-दो उसके साधारण मित्र भी थे। क्योंकि वह एकांतप्रिय था अत उसकी मित्रता किसीसे भी गहरी नहीं हो सकी।

भोजन से निवत्त होते ही भवरीलाल आ गया। वह उसके गांव का रहनेवाला था। दोनो गाव के स्कूल में साथ-साथ पढे भी थे पर यहा वे अत्यन्त साधारण रूप से मिलते थे। बात कुछ तो करनी चाहिए, इसलिए वे कभी-कभी बचपन की घटना को बडी सक्षिप्तता में दुहरा लिया करते थे। आज भी वैसी ही चर्चा रही।

भोजन करके नरोत्तम घर आ गया। हरिसन रोड से वह कहानी का एक मासिक पत्र खरीद लाया। समय काटन के लिए इन पत्रों में काफी मनोरजक सामग्री मिल सकती है, एसा उसका विश्वास था।

वह पलग पर लटकर कहानिया पढ़न लगा। कभी-कभी उसे सनसनीखेज व भूत प्रेतों की कहानिया बडी ही दिलचस्प लगती थी और वे उसे आशातीत सतोष दिया करती थी।

आज भी वसा हो हुआ।

वह कहानियों की रोमाचकारी घटनाओं मे अपनी अन्तर्बाह्य स्थिति को भूल गया। पढ़ते-पढ़ते उसको नींद आने लगी। तभी सेठजी के बलिया जिले के दरवान ने द्वार खटखटाया। वह अपने हाथ में एक पत्र लाया था उसे देकर उसन सेठजी की आज्ञा सुना दी कि इसका जवाब आज शाम तक मिलना चाहिए। नौकर वापस चला गया।

पत्र खुला था।

प्रिय मास्टरजी,

की मिल में हमें एक अच्छी मिस्ट्रस की जरूरत है, जो बगाली के माध्यम स पढ़ा सके। यदि आप उचित व्यवस्था कर सकें तो अति उत्तम रहेगा अन्यथा एक सक्षिप्त विज्ञापन बनाकर 'अमृतबाजार पत्रिका व आनद बाजार पत्रिका' में भेज दें। मिस्ट्रेस का बगालिन होना अच्छा रहेगा।

—रामोदास

बिल्ली के भाग्य से छींका टूट गया।

५

सन्ध्या-वेला।

धुएं से विषाक्त वातावरण। दफ्तर से लौटते हुए हारे थके बाबू।

कोलाहल, अशांति और व्यग्रता।

चक्रवर्ती घर लौट रहा था। उसके हाथ में सब्जी का थैला था। हरे प्याज पत्ते के बाहर झलक रहे थे। एक चप्पल का फीता टूट जाने के कारण वह अपने पांव को घसीटता हुआ उठा रहा था।

सदा की तरह उसने घर की मुख्य ड्योढ़ी से ही स्नेह भरे स्वर में पुकारा "इन्दिरा ओ बेटी इन्दिरा।"

"आई बाबा।" इन्दिरा ने उत्तर दिया।

पढ़ने की पुस्तक को रखकर नरोत्तम उठा और कपड़े पहनकर जल्दी-जल्दी सेठजी की बाड़ी की ओर चला।

घर से निकलते ही चक्रवर्ती ने आंखें मटकाकर इन्दिरा को थैला पकड़वाकर पूछा "क्यों नरोत्तम बाबू, कुछ हमपर भी ध्यान दिया, हम बड़े संकट में हैं। जरा तहकीकात दिखाइएगा।"

नरोत्तम उसके समीप आ गया था।

गंभीरतापूर्वक बोला "बात यह है कि मैं इसके बारे में वापस आकर बातचीत करूंगा। अभी मैं जरा जल्दी में हूं।"

"कोई बात नहीं।" चक्रवर्ती ऊपर चला गया। नरोत्तम सेठजी के घर की ओर।

वहां से निवृत्त होकर एवं भोजन करके नरोत्तम नौ बजे वापस घर लौटा तो चक्रवर्ती उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसने बरामदे में कुर्सी डाल ली थी और वह नंगे बदन था। उसकी पहनी हुई लुंगी भी एक-दो जगह कट गई थी। पान अधिक चबाने के कारण उसके होंठों पर लाल रंग की पपड़ी जम गई थी।

नरोत्तम को देखते ही चक्रवर्ती ने तनिक तेज स्वर में पुकारा "नरोत्तम बाबू, इधर आएंगे या मैं उधर आऊं?"

"आप ही इधर आ जाएं, जरा एकांत रहेगा।" नरोत्तम ने देखा कि इन्दिरा

नीची नजर किए हुए चुपचाप गम्भीर मुद्रा में बैठी है। उसके बालों की एक लट उसके ललाट पर झूल रही है जिससे वह बडी भोली लग रही है। वह ध्यानमग्न होकर देखता रहा—'सौंदर्य कितना सहज और दुर्लभ है।

चक्रवर्ती ने उसके मन की बात को पहचानकर या यूं ही कहा हो पता नहीं पर नरोत्तम को लगा कि चक्रवर्ती को उसका इस प्रकार इन्दिरा को घूरना अपमानजनक महसूस हुआ होगा। इसीलिए उसकी दोनों आंखों में अपमानजनक लज्जा उभर आई।

चक्रवर्ती बोला आपके यहां ही अच्छा रहेगा वैसे इन्दिरा आपसे बहुत डरती है। इतना कहकर चक्रवर्ती ने मुस्कराकर इन्दिरा की ओर देखा।

वह शरमाती है। इसीपर नरोत्तम मन ही मन विचारता रहा। वह विचारा सघर्ष के कारण अपने कपड़े भी नहीं बदल सका। विमूढ़-सा कुर्सी पर बैठ गया। उसने पल भर के लिए सोचा कि जो युवती मुझसे आकर स्वच्छन्दतापूर्वक यहां मिल सकती है वह सकोचशील कैसे हो सकती है? नारी और नारी का चरित्र उसके सामने नाच उठा।

चक्रवर्ती ने आते ही मुस्कराकर कहा इन्दिरा कहती थी कि मैं नहीं शर्माती बल्कि नरोत्तम बाबू शर्माते हैं। दोपहर में मैं उनके यहां गई थी तो उन्होंने मेरा बड़ा अपमान किया। क्या अतिथि के साथ इस प्रकार का सलूक किया जाता है? मैं पहली बार उनके यहां गई और पहली बार ही आतिथ्य से वंचित रखी गई। शायद यह अवश्य किसी उजड्ड गांव की सभ्यता होगी। नहीं तो भला वे साधारण शिष्टता का व्यवहार तो करते?

चक्रवर्ती हल्के उपहास से कहता गया और नरोत्तम निरुत्तर सुनता रहा।

जब चक्रवर्ती बिलकुल चुप हो गया तब नरोत्तम ने आहिस्ते से गर्दन उठाकर कहा आज मैंने सेठजी से बातचीत की थी।

'उन्होंने क्या कहा?

उन्होंने सारा का सारा मामला मुझपर छोड़ दिया है। नरोत्तम ने क्षण भर के लिए अहम् भरी दृष्टि चक्रवर्ती पर डाली।

'फिर हमारी सहायता कर ही दीजिए। यह दरिद्रावस्था और अभाव की पीड़ा

मब मसह्य होती जा रही है। माप सोचिए न नरोत्तम बाबू कमी-कमी छोटी छोटी वस्तु के लिए मपनी इच्छा को मारना पड़ता है। मुझे मपने लिए दुख नहीं होता पर बच्चों के लिए मुझे हार्दिक सन्ताप होता है। बन्दिरा की छाप।
सुनदा ने घनबाद से लिखा है कि मुझ एक शांति निकेतन की बनी साड़ी खरीदकर भेजिए। भाजकल सभी लड़कियां वहीं की बनी साड़ी पहनकर माती हैं। मा
माप ही बताइए, नरोत्तम बाबू एक मच्छी साड़ी के लिए म उसकी मभिलाषा का मन्त कैसे कर सकता हू। फिर लड़की पराया धन होता है। माज नहीं तो कल वह हमसे विदा होकर ससुराल चली जाएगी। तब केवल उसकी स्मृति ०५। में मकित रहेगी। चक्रवर्ती का गला भर माया।

उसकी मांखें सजल हो गई। स्वर में वेदना का पूरा प्रभाव था। वह मप दृष्टि को दूर-दूर तक फलाता हुमा बोला (सभी लोग कहते हैं कि लड़कों पर मधिक स्नेह प्यार, करुणा दया रखो मौर मेरा विचार है कि लड़कियों पर, क्योंकि बेचारी य लड़कियां ही परिवार के समस्त मोह-बन्धन छोड़कर नये घर हें सदा-सदा के लिए चली जाती हैं। वहां वे नये प्यार की सर्जना मौर स्थापना करती हैं जीवन को नये साचे में ढालती हैं। नया गृह-निर्माण करती हैं, नय सम्बन्ध बनाती है, कहने का तात्पर्य यह है कि उस नये घर में सभी कुछ य नया बनाती हैं मौर उस नयेपन में यदि उन्हें मपन पीहर की सुध हो एक मधुर मौर मानंदित स्मृति हो तभी मां-बाप का जीवन सफल होता है। वह क्षण भर रुककर बोला माप ही कहिए किसीकी बेटी मपनी सहेली के साथ यह कहलाए कि मेरे बाबा मौर मेरी मां को जाकर कहना कि मुझे मपने घर की मौर मापकी याद बहुत माती है मैं मापको क्षण भर के लिए नहीं भूल सकती तब जरूर उस लड़की की मां की मांखों में मांसू मा जाते होंगे मौर बाप का दिल भर माता होगा। यहीं माकर मा मौर बाप का जीवन सफल होता है। \

नरोत्तम को लगा कि इस व्यक्ति के मन्तर में भावना का एक तूफान है जिसे वह किसीके समक्ष निकालना चाहता है, पर परिस्थिति इतनी जटिल है कि निकाल भी नहीं सकता। जब निकालता है तब कुछ भी दुराव नहीं रखता।

बात यह है चक्रवर्ती बाबू पोस्ट भी मच्छी है हेडमिस्ट्रस की, तनख्वाह भी

गभग १५० रुपय होगी।

फिर मेरी ओर से आप फाइनल कर लीजिए। १२० रुपये तनख्वाह से हमारी छोटी-मोटी आवश्यकताएं पूरी होन के बाद हम कुछ बचा भी सकेंगे।

'पर एक नई समस्या और खडी हो गई है।' नरोत्तम ने तनिक गम्भीर होकर कहा।

'क्या ?' चक्रवर्ती को धक्का-सा लगा।

'उसे बाहर जाना होगा। हमारे सेठजी की कलकत्ता के बाहर 'मिल' है, वहा बच्चों को पढ़ाने के लिए एक हेडमिस्ट्रस की जरूरत है।

'बाहर !' चक्रवर्ती गभीर हो गया।

मेरे ख्याल से इन्दिरा को पूछना अधिक उचित होगा। यदि वह बाहर जाना चाहती हो तो आपको भी कोई एतराज नहीं होना चाहिए। बस वह जगह कलकत्ता से थोडी ही दूर है।

फिर भी अकेली ।'

अकेली कैसे उस मिल में अस्सी प्रतिशत बगाली काम करते हैं। स्कूल में ही क्वाटर दिलवा दूगा। आप निश्चिन्त रहिए वहा वह बडी प्रसन्न रहेगी। फिर आपको सुनन्दा का विवाह भी करना है उसके दहेज का प्रबन्ध करना है ऐसी हालत में एसा बढ़िया अवसर नहीं खोना चाहिए। खर आप इसपर गभीरता पूवक सोच लीजिए।

चक्रवर्ती चला गया।

नरोत्तम फिर अध्ययन में तल्लीन हो गया।

६

कुछ दिनों बाद—

सवेरे-सवेरे ही तारिणी का एक्सप्रेस-पत्र मिला। तारिणी नरोत्तम की मगेतर

थी। आज एक साल पहले उसका एक पत्र आया था कि यदि वह शादी करेगी तो केवल उससे ही अन्यथा वह कुवारी ही रहेगी आजन्म विवाह नहीं करेगी। पर नरोत्तम को विश्वास था कि यह केवल धमकी है। न तो नारी आजन्म कुवारी ही रह सकती है और न उससे ब्रह्मचर्य पालन ही सम्भव है। वह एक न एक दिन प्रकृति की स्वाभाविक माग—काम से पीड़ित व सन्तान की तीव्र इच्छा के वशीभूत होकर अपना समर्पण साधारण से साधारण व्यक्ति को कर देती है। क्या तारिणी भी कुछ दिनों बाद अपना इरादा नहीं बदल देगी? जरूर बदलेगी। तन मन सर्वस्व तुम्हारा' कहने वाली युवतियां शनै शनै अपने प्रेमी को भूलकर पति की अर्चना म लग जाती ह। फिर आजन्म व्यथा कौन सह सकती है?

लेकिन आज उसका पत्र पुन पाकर वह विस्मय-विमूढ़ हो गया। तारिणी ने बहुत लम्बा पत्र लिखा था। पत्र की लिखावट बड़ी सुन्दर थी। कागज भी अच्छे नीले रंग का लगाया हुआ था।

उसने पत्र को खोलकर पढ़ना शुरू किया।

श्री नरोत्तम बाबू

प्रणाम!

अन्त करण म एक अमानुषिक पीड़ा एक वर्ष से निरन्तर सचरण करती रही नारी का मान कहिए या हठ, पर मन यह निश्चय कर लिया था कि म आपको भविष्य में कभी भी पत्र नहीं लिखूंगी। एक ही मनुष्य यदि बार-बार समर्पण करता है तब उसका स्वाभिमान पगु हो जाता है, यही विचारकर म पूरे वर्ष भर अन्तर्दाह में जलती रही। वह दु ख मेरे विगत जीवन की शून्यता का सम्बल था स्मृतियों का जगमगाता अखण्ड दीया!

मने बी० ए पास कर लिया है। लेकिन मुझे उसकी प्रसन्नता नहीं है। आप सोचकर लिखिए कि यदि एक स्त्री का विवाह बिना किसी असाधारण कारण के रुक जाता है तब उसके चारों ओर का वातावरण कैसा बन जाता है? विषम वातावरण और लाछनाओं व कटूक्तियों के तीव्रतम प्रहारों ने मुझे कुछ काल के लिए उद्भ्रान्त बना दिया था। मेरी समझ में नहीं आया कि हमारे समाज में नारी की प्रतिष्ठा व व्यक्तित्व इतना निम्न क्यों है कि साधारण से साधारण घटना

उसपर सदिग्धता का गहरा आवरण डाल देती है। किसीने आपपर दोषारोपण नहीं किया अपितु मेरे चरित्र के बारे में ही मेरे आसपास क लोगो ने विचित्र-विचित्र भ्रातिया फलाईं। म यह सभी सहिष्णुता की साकार प्रतिमा बनकर सहती रही। उन्हें क्या कहती ? दु ख तो इस बात का था कि मने विवाह के पहल न कभी आपको देखा और न आपसे किसी प्रकार की बातचीत ही की। निराधार राय म आपके बारे में नही दे सकती। अत म बिलकुल चुप रही और मने इन सभी भ्रान्तियों का सही समाधान अब शेष के रूप म यही निकाला है कि मेरा ब्याह केवल आपसे हो अन्यथा म आज म कौमाय-व्रत का पालन करू।

मैं यह भी समझती हू कि यह प्रतिज्ञा बहुत कठोर है। लकिन इस देश की नारी का एक यह भी गुण है कि वह अभिशाप को श्रेष्ठ वर के रूप म ग्रहण करके शेष जीवन व्यतीत कर देती है। मन ऐसी विधवाओ को देखा है जिन्होंने दयाहीन नियति की क्रूरता को ही कोमलतम स्पश मानकर श्रम की कठोरता में अपने आपको तन्मय कर वर्ष पर वष बिता दिए हैं। पुरुष-ससर्ग क्या है यह या तो वे पूर्वजन्म में भोगकर आई थी अथवा वे अगले जन्म में भोगेंगी। फिर भी वे चारित्रिक दुर्बलता का शिकार नही हुईं। प्रचड तेजस्विनी तार्किक गार्गी का उदाहरण मेरे समक्ष है।

मेरा विश्वास है कि हर नारी एक जसी नहीं होती उसक जीवन का उद्देश्य एक नही होता उसके रास्ते एक नही होते, सभी कुछ भिन्न होता है। साम्य है तो पचतत्त्व के भौतिक शरीर के निर्माण में। लकिन यह साम्य व्यथ है। अत म आपसे प्रार्थना करूगी कि अब आपन अच्छी तरह विवाहादि के बारे में सोच लिया होगा और अब मेरे जीवन की साथकता भी आपको प्राप्त करन में ही है। यदि इसपर भी भाग्य-विडम्बना ने मेरा साथ नहीं छोडा तब मुझे सभी अभावो को सवस्व मानकर शष जीवन घोर एकाकीपन में बिताना होगा। मेरे लिए अन्य पुरुष से विवाह करना सवथा असभव है। इसे मेरा हठ समझिए या प्रतिज्ञा अथवा प्राथना।

मां का गत सप्ताह देहांत हो गया है। ममताहीन होकर म अधिक दुखी हो गई हूं। आज का आंसू पोछने वाला भी कोई नही है। आचल का छोर पवन में लहराता किसीकी प्रतीक्षा करता रहता है और आसू कपोलों पर ढुलककर अस्तित्व

हीन हो जाते हैं। यहां कविता की भाषा स्वतः ही फूट पड़ी है।

ऐसे सकट के समय में क्या आप अपने विचार बदलकर मेरे हाथ पीले नहीं करेंगे ? मैं आपको स्पष्ट लिखना चाहती हूँ कि मेरा कोई अपराध है तो उसपर प्रकाश डालिए, मेरे चरित्र में कलक अपयश और दुष्टता के धब्बे हों तो उन्हें बताइए व्यर्थ ही मेरे जीवन को पीड़ित मत कीजिए।

पत्र की प्रतीक्षा में—

—तारिणी

नरोत्तम के मस्तिष्क में इस पत्र ने गहरी प्रतिक्रिया की। वह काफी देर तक चुपचाप बिस्तरे पर पड़ा रहा।

इधर उसके कानों में इन्दिरा का रवीन्द्र-संगीत भी नहीं पड़ रहा था। वह चली गई थी। मिल के कामगरों के बच्चे इन्दिरा के कार्य और शिक्षण-पद्धति से बड़े संतुष्ट थे। बच्चों में उसका प्रभाव एक मां से कम नहीं था। बच्चे उससे बहुत हिलमिल गए थे।—ऐसा पत्र द्वारा इन्दिरा ने उसे सूचित किया था।

वह अकेला बिलकुल अकेला था।

उसके हृदय में बार-बार तारिणी के प्रति मृदुल भाव उठते थे। वह नारी अर्थहीन संयम में जीवन के स्वाभाविक सुख-दुख से वंचित हो जाएगी एक दुराशा की तीव्र उत्कंठा—'शायद नरोत्तम अपने विचार बदल दे'—उसे तात्पर्यहीन पीड़ा में जलाती रहेगी। मनुष्य का महानतम जीवन निरुद्देश्य समाप्ति की ओर अग्रसर होता जाएगा। इसका जिम्मेवार होगा वह, केवल वह।

वह बहुत उद्विग्न हो गया।

वह उठकर बरामदे में आया और पुकारने लगा चक्रवर्ती बाबू चक्रवर्ती बाबू।

चक्रवर्ती घर में नहीं था अतः उसकी पत्नी आकर बरामदे में खड़ी हो गई। हल्के स्वर में बोली वे तो सब्जी लेने गए हैं कहिए कुछ काम है क्या मैं उन्हें कह दूंगी।

बात यह है भाभी मुझे एक कप चाय चाहिए, यदि आपको बनाने में कष्ट न हो तो बना दीजिए।

ममी वनाकर भेजती हू। कहकर चक्रवर्ती की स्त्री भीतर चली गई। नरोत्तम ममृत बाजार पत्रिका' पढ़ने लगा।

योड़ी देर के बाद चक्रवर्ती का लड़का मुन्नू चाय लकर भा गया। नरोत्तम ने उसके हाथ से चाय लकर चूमा क्यों रे खोखे (लड़के) तेरी इन्दिरा दीदी की कोई चिट्ठी माई है ?

हां।

क्या लिखा ?

कुछ नहीं।'

क्या कहा, कुछ नही झूठ वोलता है ? वता तेरी दीदी वहा खूब मानन्द में तो है ?

हां।

'यहां भाएगी ?

नहीं। दीदी वहां काज करन लग गई है। वावा कहता था कि वह बहुत टका (रुपया) कमाती है।

'मच्छा।

उसने भांखें फाड़कर खूब नाटकीयता से सिर हिला दिया। नरोत्तम ने उस गोद में उठाकर उसके मुख को भाकुल चुम्बना से भर दिया। मुन्नू नाराज हो गया। बिगड़ता हुमा वोला छि' छि. छि' चूम लना मुझे मच्छा नहीं लगता।

क्यों ?

'धत्। नहकर मुन्नू भाग गया।

नरोत्तम फिर समाचारपत्र पढ़ने लगा। एकाएक उसकी दृष्टि एक न्यूज पर पडी। माधो क्लॉथ मिल में हड़ताल। गत दो दिन से माधो मिल में मजदूरो ने हड़ताल कर दी है। हड़ताल का कारण—मजदूरा को वोनस का न मिलना है। ' भजदूरों की शिकायत है कि मिल के मनेजिंग डायरेक्टर ने गत साल उन्हें जो माश्वासन दिया था कि मगली बार उन्हें दो साल का एक साथ वोनस दिया जाएगा, मब उसे वे देने में मानाकानी कर रहे हैं तथा फीटर मतुल घोष का मशीन में हाथ कट जाने के कारण उसके परिवार को माहवारी मदद तथा वड़ी रकम की मन्तरिम

हीन हो जाते हं। यहां कविता की भाषा स्वतः ही फूट पड़ी है।

एसे सकट के समय में क्या आप भपने विचार बदलकर मेरे हाथ पीले नहीं करेंगे ? मे आपको स्पष्ट लिखना चाहती हु कि मेरा कोई अपराध है तो उसपर प्रकाश डालिए, मेरे चरित्र म कलक अपयश और दुष्टता के धब्बे हो तो उन्हें बताइए, व्यर्थ ही मेरे जीवन को पीड़ित मत कीजिए।

पत्र की प्रतीक्षा में—

—तारिणी

नरोत्तम के मस्तिष्क में इस पत्र ने गहरी प्रतिक्रिया की। वह काफी देर तक चुपचाप बिस्तरे पर पड़ा रहा।

इधर उसके काना में इन्दिरा का रवीन्द्र-सगीत भी नहीं पड़ रहा था। वह चली गई थी। मिल के कामगरों के बच्चे इन्दिरा के काय और शिक्षण-पद्धति से बड़ सतुष्ट थे। बच्चों में उसका प्रभाव एक मां से कम नहीं था। बच्चे उससे बहुत हिलमिल गए थ।—एसा पत्र द्वारा इन्दिरा ने उसे सूचित किया था।

वह अकेला बिलकुल अकेला था।

उसके हृदय में बार-बार तारिणी के प्रति मृदुल भाव उठते थे। वह नारी अथ हीन सयम में जीवन के स्वाभाविक सुख-दुख से वचित हो जाएगी एक दुराशा की तीव्र उत्कठा—'शायद नरोत्तम अपने विचार बदल दे'—उसे तात्पर्यहीन पीड़ा में जलाती रहेगी। मनुष्य का महानतम यौवन निरुद्देश्य समाप्ति की ओर अग्रसर होता जाएगा। इसका जिम्मेवार होगा वह केवल वह।

वह बहुत उद्विग्न हो गया।

वह उठकर बरामदे में आया और पुकारने लगा, चक्रवर्ती बाबू चक्रवर्ती बाबू।

चक्रवर्ती घर में नहीं था अत उसकी पत्नी आकर बरामदे म खड़ी हो गई। हल्के स्वर में बोली वे तो सब्जी लने गए ह कहिए कुछ काम है क्या म उन्हें कह दूंगी।

बात यह है भाभी मुझे एक कप चाय चाहिए, यदि आपको बनाने में कष्ट न हो तो बना दीजिए।

अभी बनाकर भजती हू। कहकर चक्रवर्ती की स्त्री भीतर चली गई। नरोत्तम अमृत बाजार पत्रिका पढ़ने लगा।

थोड़ी देर के बाद चक्रवर्ती का लडका मुन्नू चाय लकर आ गया। नरोत्तम न उसके हाथ से चाय लेकर चूमा, क्यो रे खोखे (लड़के) तेरी इन्दिरा दीदी की कोई चिट्ठी आई है ?

हा।'

क्या लिखा ?

कुछ नहीं।

क्या कहा, कुछ नहीं झूठ बोलता है ? क्या तरी दीदी वहा खूब आनन्द में ता है ?

'हा।

'यहा आएगी ?

नही। दीदी वहा काज करन लग गई है। बाबा कहता था कि वह बहुत टका (रुपया) कमाती है।

'अच्छा।

उसन आंखें फाड़कर खूब नाटकीयता से सिर हिला दिया। नरोत्तम न उसे गोद में उठाकर उसके मुख को आकुल चुम्बनों स भर दिया। मुन्नू नाराज हो गया। बिगड़ता हुआ बोला छि छि, छिः चूम लना मुझे अच्छा नहीं लगता।

क्यों ?

धत्। कहकर मुन्नू भाग गया।

नरोत्तम फिर समाचारपत्र पढ़न लगा। एकाएक उसकी दृष्टि एक न्यूज पर पड़ी। माधो क्लॉथ मिल में हड़ताल। गत दो दिन से माधो मिल में मजदूरो ने हड़ताल कर दी है। हड़ताल का कारण—मजदूरों को बोनस का न मिलना है। मजदूरों की शिकायत है कि मिल के मनेजिंग डायरेक्टर ने गत साल उन्हें जो आश्वासन दिया था कि अगली बार उन्हें दो साल का एक साथ बोनस दिया जाएगा अब उसे व देन में आनाकानी कर रहे हैं तथा फीटर अतुल घोष का मशीन में हाथ कट जाने के कारण उसके परिवार को माहवारी मदद तथा बड़ी रकम की अन्तरिम

सहायता भी नहीं दी जा रही है। जब तक हमारी ये मागें स्वीकृत नहीं की जाएगी, हम अपना संघर्ष जारी रखेंगे।

नरोत्तम काफी देर तक उसपर विचार करता रहा।

७

बच्चों को पढ़ाकर ज्योंही नरोत्तम उठा सेठानी ने आकर कहा मास्टर जी, आपको बुला रहे हैं।

नरोत्तम सेठजी के पास गया। इधर सेठजी का शरीर वायु के कारण दिन प्रतिदिन फूल रहा था। पेट रामलीला के हास्य अभिनेता की तरह आगे बढ़ आया था और इसी प्रकार पेटानंद न और मेहरबानी की तो एक दिन सेठजी का उठना बैठना मुश्किल हो जाएगा। अब डाक्टरों की सलाह के बाद आजकल उन्होंने सवेरे का खाना बिल्कुल बंद कर दिया है तथा शाम को बहुत कम भोजन करते हैं।

संतरे के रस का गिलास खत्म करके सेठजी बोले, मास्टरजी, जमाना बड़ा खोटा आ गया है। सत्य-धर्म पृथ्वी पर से उठ रहा है। देखिए मजदूरों ने हड़ताल कर दी है, मिल बंद है।

नरोत्तम कुछ नहीं बोला।

'देखिए न मास्टरजी महीने की महीने तनख्वाह देता हूं हर साल तरक्की देता हूं फिर भी हड़ताल फिर भी धीरे काम। हे राम कैसा जमाना आ गया है। कौन अब मिल-कारखाने खोलेगा ?

बात यह है सेठजी ! नरोत्तम गंभीर स्वर में बोला पुराना जमाना गया, सो गया। अब हमें नई परिस्थितियों को नये ढंग से सोचना होगा। मजदूरों के अधिकारों को मारना तो दूर रहा, अब आपको उनके अधिकारों की रक्षा भी करनी होगी। जिन्हें आप सांप कहते थे उन सांपों को दूध पिलाकर बड़ा भी करना होगा क्योंकि मजदूर जाग गया है, अब वह इस प्रयास में लगा है कि उत्पादन के सभी साधनों पर हमारा अधिकार हो जाए। ऐसी विकट परिस्थिति में उनका शोषण

उनके जागरण में नये आह्वान का काम करेगा। इसलिए मेरी राय है कि आप उनकी मांगों को स्वीकार कर लीजिए और समझौते की नीति को अपनाकर कुछ उनको झुका लीजिए और कुछ खुद झुक जाइए।

यह नहीं हो सकता। म नये मजदूर रख लूगा यहां बकारो की कमी नही है। सेठजी ने उछलकर कहा।

इससे संघर्ष बढ़ जाएगा खून की नदियां बह जाएगी मिल महीनो बन्द रहेगी और अन्त में हार भी आपकी ही होगी। वह दृढ़ता से बोला।

सरकार हमारे साथ है।' सेठजी ने अधिकार के साथ कहा।

नरोत्तम गंभीरता से बोला सरकार खुद मजदूरों के सामने सिर झुकाती है। रेलवे-मजदूर के ज़रा-से नोटिस पर सरकार को दिन के तारे दिखलाई पड़ने लगते ह सेठजी! वह विनम्र होकर बोला, म आपका अहित नही चाहता इसलिए मने आपके सामने सत्य को रख दिया। यह सत्य कटु ज़रूर है पर आपके लिए अधिक लाभप्रद है।

लेकिन इतना रुपया एक साथ देना भी संभव नही है।

यह दूसरी बात है इसपर समझौता किया जा सकता है। उन्हे उचित और विश्वस्त आश्वासन दिया जा सकता है। संघर्ष बढ़ाने से हम कोई फ़ायदा नही होगा सेठजी। इस युग का यही महामंत्र है कि समझौता कीजिए।

तब ?

आप खुद जाइए और मजदूरो को आश्वासन दीजिए। एक बात का ख्याल रखिए, कि कहीं आपका ही कोई अधिकारी उन्हें भड़का तो नहीं रहा है। कभी-कभी ऐसा होता है कि कुछ अफ़सर मजदूर-मशीनरी के पीछे काम करने लगते हैं। वे इन हड़तालो से भी अधिक भयंकर होते ह ऐसा मेरे अध्ययन का विश्वास है।

सेठजी को नरोत्तम की बात जची। उन्होने उछलते हुए कहा मास्टरजी आपको भी हमारे साथ चलना होगा।

म चलकर क्या करूगा ?

चलना होगा मजदूरों को आप ही समझा सकते ह। ये बड़े उद्दण्ड और उत्तेजक हो रहे ह। कहीं गुस्से में आकर मुझपर हमला कर बैठे तो ? सेठजी के

फला एसा नहीं करेगा तो म अपने प्राण त्याग दूगा। सामूहिक हित में इस प्रकार के मात्मपीड़क हठ चल सकते हैं पर वयक्तिक मामलो में इस प्रकार के हठयोग का कोई स्थान नहीं है। उसने यह भी निश्चय किया था कि वह तारिणी को लिखेगा कि मेरी सहानुभूति तुम्हारे प्रति है पर म अभी अपन किसी भी काय का कोई भी अन्तिम निर्णय नहीं ल सकता। अभी मेरी मन स्थिति विवाह आदि विषयों पर स्वस्थ रूप से सोचन लायक नहीं हुई है। तुम आजन्म कुवारी रहोगी—इस प्रकार का निणय सवथा बुद्धिहीनता का सूचक है। जीवन के महापथ में मनुष्य सदा इतने शीघ्र किए गए निणयो पर कायम नहीं रह सकता। तुम्हें पुन इसपर सोचना समझना चाहिए। शादी विवाह के मामलों में केवल हमारा निर्णय ही नहीं चलता प्रारब्ध भी अपना काय करता है। अत कहीं ऐसा न हो कि तुम हठ ही हठ में अपने जीवन को नरक-सा यातनामय बना डालो। म तुमसे प्रार्थना करूगा कि तुम अत्यन्त सावधानी से कोई निणय किया करो। मेरा अनुराग तुम्हारे साथ है।

पर जब वह पत्र लिखने बठा तब कुछ और ही लिख गया। क्योंकि उस पत्र में उसे अपना उपदेश अपने विचारो की पराजय के रूप में जान पड़ा। कुछ हद में वह पत्र उसे मर्यादाहीन भी लगा। अत उसने शीघ्रता स तारिणी को इतना ही लिखा—आपका पत्र मिला में अभी विवाह आदि विषयो पर सोचने में असमर्थ हू। आप अपना निणय बदल दें यही उत्तम रहेगा। मे आजकल कलकत्ता से बाहर हू।

—नरोत्तम

तृप्ति के आगमन न उसके ध्यान को भंग कर दिया। वह आई और अपनी आन्त के अनुसार उसने बड़ी सहज भावुकता से नरोत्तम को देखा और बोली बड़ो दा चा।'

उसने चाय के प्याले को मेज पर रखा और चली गई।

नरोत्तम को उसका भोला मन बहुत ही प्रिय लगा। इतना पवित्र है उसका मुख जितना देवता का। उसन मन ही मन उसके बारे में कई बातें एक साथ सोच डालीं।

'बड़ो दा चाय खा ली ? म प्याला लने आई हू।

तृप्ति तेरा बावा घर पर है ?

हां सो रहे हैं।

जब वे जग जाए तो उन्हें कहना कि नरोत्तम दा न हाट चलने के लिए कहा है।

तृप्ति न केवल गदन हिलाकर स्वीकृति दे दी।

लगभग एक घटे के बाद जसे ही कपड़े पहनकर नरोत्तम अपने क्वाटर से बाहर निकला, वस ही तृप्ति भी अपनी चार सहेलियों के साथ उसे अपने क्वाटर के सामन बठी मिल गई। उस देखते ही वह हाठों में हसी दबाकर बोली 'बाबा रे बाबा, वो बड़ा बाबू नहीं मोटा सेठिया आ गया है। तब तक नरोत्तम उसके पास आ गया था। वह तेज स्वर में बोली, अरी रोहिणी, वह कागज का टुकड़ा उठा नहीं तो मोटा सेठिया गुस्सा हो जाएगा। क्यों बडो दा आपनार माथा पोका खेयचे। (आपके सिर पर कीडा काटता है) जो नित्य नये कानून बना डालते हैं।

वास्तव में नरोत्तम खुद उन मजदूरो की गहरी आत्मीयता प्राप्त करने के लिए सड़क पर किसी भी कूडे को उठाकर नियत स्थान पर फक देता था उसके इस रवैय से सभी लज्जावश कूडा फेंकने में सफल हो गए थे। तृप्ति उसके इस रवैय से बडी तग थी। उसका सरल चचल स्वभाव स्वच्छन्दता को प्यार करता था। वह जहां खाती थी वहीं फेंक देती थी। लकिन जब से नरोत्तम आया तब से उसकी इस प्रकार की अनुचित स्वतत्रता पर प्रतिबध लग गया। इसी कारण उसने नरो त्तम को चिढ़ाने के लिए इस वाक्य की रचना कर डाली और जहां कहीं वह नरो त्तम को मिल जाती वह अपन बालो को खुजलाकर बडे ही नाटकीयता से मधुर स्वर में किसी और को सम्बोधित करके कह उठती आपनार माथा पोका खयच।

और तब नरोत्तम उसे कृत्रिम रोष से डांट देता।

लकिन जसे ही तृप्ति उसके कमरे में आती थी वसे ही वह इतनी गंम्भीर बन जाती थी कि नरोत्तम की इतनी भी हिम्मत नहीं होती कि वह उसे कुछ कहे-सुन। फिर भी वह तृप्ति के बारे में जरूरत स अधिक सोचा करता था। विचारों को बार बार रोकन पर भी वे तृप्ति के चारों ओर कद्रित हो जाते थ।

हाट से लौटने पर नरोत्तम जसे ही अपन क्वाटर में आया वस ही तृप्ति न

प्रवेश किया। उसने लाल किनारी की धोती पहन रखी थी और उसका ब्लाउज भी अधिक कीमती नहीं था।

उसने नीची गर्दन किए हुए कहा बड़े दा आपको हेड मास्टरनी जी बुलाती हैं।

कौन हेडमास्टरनी ? अनजान बनकर नरोत्तम ने पूछा।

आप नहीं जानते वह तो आपको खूब पहचानती है। कहती थी कि आप महिलाओं से भी अधिक शर्माते हैं। इतना कहकर वह खिलखिलाकर हँस पड़ी। नरोत्तम झेंप गया। तृप्ति चली गई।

नरोत्तम ने कपड़े बदलकर स्कूल की ओर प्रस्थान किया। रास्ते में मुनीम हर प्रसाद मिल गया।

और नरोत्तम बाबू क्या हाल चाल है ? मुनीम ने नमस्कार करके पूछा।

अच्छा है आप ही बताइए कोई नई बात ?

क्या कहूँ नरोत्तम बाबू आप जानते हैं कि यह मनेजर गुपचुप पता बना रहा है। किसी भी तरह सेठ जी से कहकर इसका बिस्तरा गोल करा दीजिए। फिर, वह आह छोड़कर बोला, आप ठीक कहते थे नरोत्तम बाबू कि यह मनेजर मुझे उखाड़ने में लगा हुआ है पर मैं भी कुछ कम नहीं हूँ। खुद मम्मा पर इसे साथ लेकर। बार-बार मेरे काम को चक करता है जैसे मैं कोई चोर हूँ।

मेरी समझ में सेठजी के सच्चे शुभचिन्तक आप ही हैं। आप नहीं होते तो क्या वह हड़ताल का मामला सुलझ जाता ?

कतई नहीं। आपसे क्या छिपाऊँ यूनियन का जो सेक्रेटरी है न, अपनी कई चाय पी चुका है और फिर खिलाया-पिलाया अपना असर लाता ही है।

तभी वह तुरन्त राजी हो गया।

हाँ। जरा सेठजी को कहकर उस मैनेजर का बिस्तरा गोल करवा दीजिए। अपनी तो बस यही छोटी-सी इच्छा है।

इस बार मैं आपकी जरूर सिफारिश करूँगा।

राम राम।

राम राम।

मुनीम के जाते ही नरोत्तम को हँसी आ गई। वह अभी पाँच कदम ही चला

या कि मैनजर श्री गुलाटी मिल गए। नरोत्तम ने हाथ मिलाकर किनककर बोले
'आपके काम से मजदूरों में काफी सतोष है।

'मैं कुछ काम नहीं करता हू मिस्टर गुलाटी इन मजदूरों को अपने अफसरों से
कभी भी बधुत्व नहीं मिला था मैंने उन्हें भाईचारा दिया अपने में और उनमें जरा
भी भेद नहीं समझा बस यही बात काम कर गई।

मजदूरों की साइकोलॉजी का समझना आसान थोड़े ही है।

'नहीं गुलाटी साहब ! बिलकुल आसान है। ससार के किसी प्राणी की मन
स्थिति का अध्ययन करने में हमें समय भले ही लग जाए पर मजदूरों का मनो
विज्ञान तीन ही शब्दों में समाप्त हो जाता है—रोटी आवश्यकता की पूर्ति और
बधुत्व।

'गुड आइडिया। गुलाटी साहब उछल पड़े और क्या समाचार है। सेठ जी
की चिट्ठी आई ?

उनकी चिट्ठी मेरे पास बराबर आती रहती है। आप जानते ही हैं कि मेरा
उनका घरेलू सम्बन्ध है।

कोई विशेष बात ।

नहीं, सिर्फ मुनीम !

गुलाटी साहब भड़क उठे यह बिलकुल वाहियात आदमी है। पहले हड़ता
लियों को भड़काया, मुझसे कहा कि इनकी बातें किसी भी सूरत में नहीं मानी जाएं
और बाद में जैसे ही सेठ जी आए वैसे ही गिरगिट की तरह रंग बदल गया।
गुलाटी साहब ने लम्बा सांस लिया मैं कहता हूं कि जब तक इसकी यहां से बदली
नहीं होगी तब तक इस मिल का उत्पादन नहीं बढ़ेगा।

क्यों ?

क्या बताऊं नरोत्तम बाबू यह सदैव मजदूरों को भड़काता रहता है।

अच्छा।

मैं कसम खाकर कहता हूं कि परसों ही वह यूनियन के सेक्रेटरी को कह रहा
था—नरोत्तम बाबू सफेदपोश हैं और मैनेजर पूरा चार सौ बीस—तभी तो मैं उसके
हर काम पर कड़ी नजर रखता हूं वर्ना यह रिश्वत ही रिश्वत में कोठियां खड़ी

प्रश्न किया।

'पुलिस ने भी उसकी भाभी से ऐसा ही प्रश्न किया था पर उसने इसका स्पष्ट उत्तर नहीं दिया। उसने इतना ही कहा कि मैं अपने देवर को बहुत प्यार करती हूं। जिस प्रकार एक अबला माँ अपनी सन्तान की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व विसर्जन कर देती है उसी प्रकार मैंने अपने देवर पर अपना सर्वस्व विसर्जन कर दिया है। मुझे उसके नेत्रों का एक अश्रु भी अपने जीवन से कीमती लगता था। उसने चाय के पानी को चूल्हे पर से उतारकर कहा 'नारी के मन की थाह पाना सहज नहीं है। वह मिटना जानती है।

'इन्दिरा सुमन नारी के चरित्र के एक पक्ष का उदाहरण देकर उसे 'देवी रूप' में स्थापित कर दिया है पर मेरे गाँव में एक अत्यन्त सुमुखी भाभी ने अपने देवर को अपने प्रेमी के द्वारा हत्या करवा दी। मैंने उस देवर को अपनी आँखों से देखा था जिसका कोमल तन खजरों की चोटों से वीभत्स हो गया था। आदमी की इतनी घिनौनी हत्या मैंने कभी नहीं देखी थी।

इसका कोई आन्तरिक कारण होगा। इन्दिरा ने सफाई पेश की।

तो तुम्हारी घटना का भी कोई विशेष आन्तरिक कारण ही होगा। एक भाभी अपने देवर के लिए इतना बड़ा त्याग कभी नहीं कर सकती!

'पुरुषों को सदा नारियों की महानता पर सन्देह रहा है।

नहीं ऐसी कोई बात नहीं है। बिना कारण कोई कार्य नहीं होता। जब कारण है तब उसके पीछे अवश्य कोई पृष्ठभूमि होगी। मेरे विचार से उस भाभी को अपने देवर से वासनायुक्त प्रेम था।

छि छि छि! चाय के प्याले को हाथों में लिए इन्दिरा आई और घृणा भरे स्वर में बोली, आप सचमुच बड़े कठोर हैं। स्त्री जाति के पवित्र अनुराग पर इस भांति कलंक लगाते आपको कुछ विचारना चाहिए। कदाचित आपने उस भाभी के बयान नहीं पढ़े हैं?

बयान मैंने नहीं पढ़े हैं। उसने बिलकुल सच कहा।

फिर आपने उस बेचारी पर चरित्रहीनता का लांछन कैसे लगा दिया? उस भाभी के बयानों के एक-एक शब्द से सत्य और करुणा टपकती है। मेरा पक्का

विश्वास है कि उसने अपने देवर के जीवन निर्माण के लिए इतना बड़ा त्याग किया था।

पर उसका देवर तो खुद उसे इस काय के लिए विवश करता था। इन्दिरा इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उसकी भाभी स्वय आतरिक रूप मे अपने आपसे असृप्त थी। यह कटु सत्य जरूर है पर यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि उसकी भाभी का अपने देवरके साथ अनुचित सम्बन्ध था। मर्यादाभाव के कारण उस देवर ने उस अनुचित सम्बन्ध को विकृति का रूप जरूर प्रदान कर दिया जिसे सामाजिक मान्यता नहीं मिली हुई है। सामाजिक मान्यता के परे किसी भी काय को हम प्रतिष्ठा की दृष्टि स नही देखते और जब वह हमारे समक्ष प्रकट होता है तब हम उसके कर्ताओं के प्रति भयानक घृणा का प्रदशन करते ह। घृणित जीवन की पीडा से छुटकारा पाने के हेतु कर्ता एक दूसरे पर बुरे से बुरा आरोप लगाते है। एक दूसरे को नीच से नीच बताने का प्रयास करते ह। यही हाल इन भाभी देवर का है। फिर भाभी को इस प्रकार का गलत प्रोत्साहन अपने देवर को देना भी नही चाहिए। उसे कुछ उचित व्यवस्था करनी चाहिए थी। नरोत्तम चुप हो गया। वह एकटक इन्दिरा को देखने लगा। चाय ठडी हो रही थी। इन्दिरा अज्ञात सिहरन की तीव्र अनुभूति को विस्मृत करने के लिए कह उठी चाय पीजिए ठडी हो रही है।

नरोत्तम न चाय जल्दी जल्दी पी ली।

सुनदा की कोई चिट्ठी आई? नरोत्तम ने बात को बदला।

कल ही आई थी। इन्दिरा ने प्याला रखते हुए कहा।

उसके लिए किसी श्रेष्ठ वर का प्रब ध हुआ?

'नहीं तो!

प्रयत्न तो जारी होंगे?

हां, कल ही बाबा का एक खत आया था उसम गोपाल नामक किसी लड़के का जिक्र है। सुनते हैं कि लड़का बी० ए० में पढ़ता है और शीलवान और गुणी भी है।

इन्दिरा एक बात तुमस पूछना चाहता हू यदि तुम बुरा नही मानो तो?' उसने विनम्र शब्दों में कहा पर उसकी आखो में भावी आशकाजनित भय था।

कहिए। इन्दिरा की नितान्त साधारण मुद्रा थी।

तुम्हारा बाबा कहता था कि इन्दिरा का विवाह हो गया है ?

जी ! उन्होंने सत्य कथा कही।

फिर तुम माग में सिन्दूर क्यों नहीं डालती ?

वसे ही।

सिन्दूर का न डालना एक सुहागिन के लिए बड़ा अमगलकारी होता है। उस पावन अनुष्ठान के प्रति भी अन्याय होता है जहा तुमने अपने पति को अपना देवता स्वीकार किया है।

उस क्षण भर के अनुष्ठान की प्रतिष्ठा के लिए मने तपस्विनी-सा जीवन बिताया है। समिधा की तरह अपनी आत्मा को जलाया है। समिधा जसे ही सुलग कर बुझने लगती है वसे ही उसमें घी की आहुति देकर पुन प्रज्वलित कर दिया जाता है ठीक यही हाल मेरा है। आखिर मुझे इस अर्थहीन पीड़न में जलना स्वीकार नही हुआ तब म सिमट सिकुड़ कर स्वय में लीन हो गई।

कविता तनिक दुष्कर होती है। उसका अभिप्राय भी स्पष्ट रूप स समझा नही जाता। मुझ इस बात का उत्तर दो कि तुम्हारा पति कहां है ?'

मन अपने पति को छोड़ दिया है। वह दृढ़ता स बोली।

क्यो ? नरोत्तम की आखें फट-सी गईं।

क्योंकि उसने मेरे साथ एसा ही किया।

नरोत्तम के मन पर भयकर आघात लगा। वह कुछ देर तक बालक की तरह जिज्ञासापूर्ण भोले दृष्टि स उस देखता रहा। इन्दिरा के मुख पर अनन्त करुणा की रेखाएं उभर आइ। नत्रों से निराशा का सागर लहरा उठा। विगलित स्वर में बोली म मर्मान्तक और निरादरपूर्ण पीड़ा को अधिक काल तक नही सह सकती। पीड़ा की भी एक सीमा होती है। उस पीड़ा की सीमा का उल्लघन मनुष्य को अपनी स्वाभाविकता स विलग कर देता है। तब वह धीरे-धीरे अपने आपस सम झौता करता है। जब वह अपने आपसे पूर्ण समझौता कर लेता है तब वह दूसरों की पराधीनताजनित पीड़ा लेने को तयार नहीं होता। मरे स्वामी ने मुझे बहुत पीड़ा दी इतना सताया की मरी आंखों के अश्रु तक सूख गए। तब लाचार मने

अपने आपको ढढ बना लिया। बात यह है कि शरत की 'सुभदा' और पुराणो की 'प्रियवदा' म नहीं बन सकती। मेरी नारी अपना 'स्व' नहीं मिटा सकी।

क्या तुम इसपर विस्तृत रूप से प्रकाश डाल सकोगी?' नरोत्तम न पूछा हालाकि इस प्रकार का अत्यन्त व्यक्तिगत गुह्य प्रश्न पूछने का मुझ अधिकार नहीं है।

'अधिकार और अनधिकार की कथा छोडो, पहले तुम भोजन कर लो इसके बाद तुम्ह सारी कथा सुनाऊगी।'

बंगाली समाज में रहते-रहते नरोत्तम की घ्राणेन्द्रिय मछली की दुर्गंध को सुगध समझने लगी थी। अब उसे तली हुई मछली देखकर उबकिया नही आती थीं। फिर भी सस्कारवश वह मछलिया को खा नहीं सकता था।

इन्दिरा न रेऊ मछली पकाई थी। वसे उसे झींगा मछली भी पसद थी लकिन अतिथि के लिए वह अच्छे स अच्छा खाना बनाना चाहती थी। लकिन जब नरोत्तम ने उसे बताया कि वह मछली नही खा सकता तब उसे बडा विस्मय हुआ। वह ललाट पर वल डालती हुई बोली, क्यो?

अरे यह भी कोई खाने की चीज है। म खा लू तो मुझ कै हो जाए। नरोत्तम ने जरा उपहास से कहा।

'पहले थोडी चखकर दखिए तो सही। सच मानिए, मत्स्य भोजन अत्यन्त सुस्वादु होता है।

नरोत्तम को घृणाजनित झपकपी हो गई, नहो, नहीं, म एसी दुष्ट कल्पना भी नहीं कर सकता।

विचित्र मानुस है, मने कितने चाव से बनाई है।

/ वास्तव में यह मनुष्य जाति में आदिम युग की बबरता का अश है कि मछली मुर्गा मास आदि खाता है। अई, उस जमाने में आदमी इतना सभ्य नहीं बना था, खती-बाड़ी के बारे में उसका ज्ञान शून्य के बराबर था लकिन अब तो आदमी काफी सुसंस्कृत-सुसभ्य हो गया है। तब इस प्रकार का दानवी भोजन हमारी मनुष्यता में अन्तर्हित जगलीपन का सूचक है।/

इन्दिरा खिलखिलाकर हस पड़ी, यदि मनुष्य मुगिया के अडा का तथा

मछलियों भी नहीं खाता तो आज आपको इस संसार में मनुष्य की जगह मुर्गे और पानी की जगह मछलियां नजर आतीं।

हो सकता है पर मुझे निरामिष भोजन ही पसंद है।

तब तो मुझे आपके लिए कुछ मिठाई मंगवानी होगी। मैं यह जानती तो आपके लिए स्पेशल चीज बना देती। खैर मैं हाट से कोई चीज मंगवा देती हूं।

'नहीं-नहीं इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। मैं भात और दाल खा लूंगा मेरे लिए इतना ही पर्याप्त है।

दोनों ने भोजन किया पर इन्दिरा कुछ असंतुष्ट दिखाई पड़ रही थी। भोजनोपरान्त दोनों आमने-सामने बैठ गए।

इन्दिरा ने काफी देर मौन रहकर कहना शुरू किया—

'मेरे शैशव की किलकारियां हमारे मां और बाबा के जीवन का महा आनंद था। इकलौती पुत्री होने के कारण मुझे अत्यन्त लाड़-प्यार से रखा जाता था। मेरी हर जिद् पूरी की जाती थी। मुझे मेरा बाबा इन्दु कहा करता था।

जब मैं स्कूल जाने लगी तब मेरे एक भाई हुआ। मां का प्यार बंट गया पर बाबा मुझे पूर्ववत् ही प्यार करते रहे। वैसे ही हमारे बंगाली समाज में लड़कियों के प्रति स्नेह अधिक मात्रा में रहता है। इसके पीछे साइकोलॉजी क्या है मैं नहीं जानती।

जब मैं आठवीं जमात में पहुंची तब सुनन्दा उत्पन्न हो गई थी और मेरा छोटा भाई राजू अनंत की महागोद में सो गया था। मुझे मेरे भाई की मृत्यु का महा संताप था। मैं तीन चार दिन तक उन्माद-ग्रस्त-सी रही। पर जो चला गया, वह चला गया वह लौटकर नहीं आ सकता। आगमन और गमन एक स्थिति-विशेष है। दर्शन की इन्हीं शाश्वत बातों को बार-बार सुनकर मैंने भी अपने मन को समझा दिया। संतोष दे दिया।

मेरा प्यार सुनन्दा की ओर उमड़ पड़ा।

मैं जिस स्कूल में दाखिल हुई थी वह ईसाइयों का स्कूल था। वहां की लड़कियां काफी फैशन वाली थीं। हमेशा नये-नये वस्त्र पहनकर आती थीं मैं उन्हें देख-देखकर अपने बाबा से लड़ती झगड़ती रहती थी। चूंकि घर के खर्च में वृद्धि

हो गई थी मत मर बाबा मेरी प्रत्यक माग को पूण करने में असमथ रहत थ। मुझ स्कूल में हीनता स पीडित होना पडता था। म बहुत ही वचन रहती थी। मझे लगता था कि इस स्कूल की सारी छात्राओ में सबसे गरीब म ही हू। तब मरी प्रवत्ति कुलाचें भरने लगी। मरे पास अपनी छह साड़िया थी म इस बात की कोशिश करती थी कि दिन भर में इन छहो को बदल-बदलकर पहन लू। अब म एसा ही करती थी। अपने वग में रुज लिपिस्टक व कघी भी रखने लगी। इतना कुछ होन पर भी मुझ असतोष सताया करता था।

मटिक उत्तीण करते-करते मेरी मित्रता एक क्रिश्चियन छात्र रोमी स हो गई। वह मुझे बहुत अच्छा लगता था। उसमें साधारण क्रिश्चियनों का भाति ईसा के प्रति अध विश्वास नही था और न ही वह मौजूदा ईसाइयत को मानवी प्रेम स सर्वोपरि ही मानता था।

'उसका कहना था कि कोई भी धम जब अपन अनुयायी बनान लगता है तब उसे सत्ता और आतक का सहारा लेना पड़ता है, तब उसे तलवार और गोली को साधन बनाना पड़ता है। आज विश्व क किसी भी धम में सहिष्णुता नही है, अत उसका सभी धर्मों स विश्वास उठ-सा गया था।

लकिन मटिक पास करत ही मरे जीवन में एक नया युवक आया सुबोध। वह मेरा कालज का सहपाठी था। हम दोना का प्रम-व्यवहार बढ़ा। विवाह होना निश्चय हो गया हालाकि वह काफी धनी था पर जसा कि प्रम ऊच-नीच को स्वीकार नहीं करता हमारा विवाह हो गया।

हम हनीमून मनान के लिए दार्जिलिंग गए।

'महीना भर हमन खूब आनद स बिताया। सुबोध हर क्षण मुझमें डूबा रहता था।

सुबोध शराब पीता था। उसकी यह आदत मुझ जरा भी पसद नहीं थी पर उसका कहना था कि स्त्री-सुख शराब के बिना अधूरा है। जब मन विरोध किया तब वह मुझस कुछ रुष्ट-सा हो गया। मन भी अपने मन का समझा लिया कि चलो अपना अपना शौक है। यदि यह सुरा-पान को ही वरदान मानता है, तो म विरोध करके क्यों न ग्वा उत्पन्न करू?

लेकिन हमारे यहां से रवाना होने के दो दिन पहले एक भयंकर दुर्घटना घटी।

उस दिन आसमान स्वच्छ नहीं था। हल्की-हल्की सावन की पावन बूंदों का वपण हो रहा था। कभी-कभी कोई चिड़िया चक-चक करती अपने पंखों को खोलती समेटती आकाश में उड़ती दिखलाई पड़ जाती थी।

सुबोध आधे घंटे का कहकर गया सो आया ही नहीं।

सन्ध्या के बाद रात्रि का आगमन हो गया।

मैं प्रतीक्षा करती-करती थक गई थी। झल्लाकर मैं बिस्तरे पर पड़ गई और मुझे नींद आ गई।

लगभग दस बजे मेरी आंखें खुलीं।

कमरे में घुप अंधेरा था। मुझे प्यास इतने जोर से लगी थी कि मैं हठात् दौड़ कर गुसलखाने की ओर गई। दूर से देखती हूं—गुसलखाने का दरवाजा बन्द है और उसमें प्रकाश हो रहा है। उसके पास ही पानी घर था। मैं पानी पीने लगी। मुझे लगा कि गुसलखाने में दो आदमी बातें कर रहे हैं।

मेरे तन-बदन में आग लग गई।

पति को परमेश्वर, आराध्य, सर्वस्व के विशेषणों से युक्त करके अपना नारीत्व सतीत्व सौंपनेवाली पत्नी के प्रति इतना पीड़ित छल मैं सह न सकी। स्वामी ही पत्नी की अर्चन-सर्जन की प्रतिमा है और वह पति उस पत्नी की आत्मा को अपने दुश्चरित्रता के बाणों से बेधकर छलनी बना दे उस पवित्र अनुष्ठान की समस्त प्रति आर्थी को भुलाकर अग्नि के यज्ञ की आहुतियों को सम्पूर्ण रूप से निरर्थक साबित कर दे और फिर नारी पर एकाधिकार की बात करे मुझे सर्वथा अन्याय लगा।

मुझे सुबोध की प्यार भरी बातें बार-बार याद आने लगीं। उन बातों में गहरा अपनत्व, मित्रता प्रतिज्ञाएं, पवित्रता, अटूटता सब कुछ था। लेकिन आज ! मैं अपने उस दुख का वर्णन भाषा में करने में सर्वथा असमर्थ हूं। मैं रात भर रोती रही। सुबोध ने मुझे कई बार पूछा भी था पर मैंने उसे कह दिया कि वह मुझे छुए नहीं। यदि वह मुझे स्पर्श करने का प्रयास करेगा तो मैं पहाड़ से कूदकर आत्म हत्या कर लूंगी। सुबोध डर गया। उसे महसूस हो गया कि इन्दिरा को उसके पाप

के रहस्य का पता लग गया है।

दूसरे दिन म वहा से कलकत्ता आ गई।

'मने अपने श्वसुर-सास को सारी बातें बता दीं। उन्होंने तुरन्त सुबोध को मार दिया। इसपर सुबोध वहा स भाग गया। क्योंकि उसके पास काफी रुपया था। एक-दो-तीन वष बीत गए। उसका कोई पता नहीं लगा। म पतिहीन होकर बहुत दुखी रहने लगी। मेरे अन्तर की घृणा और गहरी होती गई। इधर मेरी सास अब मुझे ही भला बुरा कहने लगी। वह अपने बेटे के भाग जाने का दोष सीधा मुझपर लगाने लगी। अन्त में मुझे उनसे लडना पडा। लाचार म अपने मके आ गई। मेरे पिता को इस बात का बड़ा दुख हुआ पर होनी किसीके वश की नहीं।

'लगभग पाच वष बाद सुबोध का मेरी सास के पास पत्र आया।

मन सोचा कि अब वह मेरे यहा आएगा पर वह नहीं आया। बाद में उसने अपने किसी मित्र द्वारा मुझे जलाने के लिए यह कहलवाया कि वह पटना में किसी लड़की से प्यार करता है। मेरी आत्मा जल उठी। आखिर मेरी सहिष्णुता की भी कोई सीमा है। मने निणय कर लिया कि अब म उन पापियों से जरा भी सम्बन्ध नहीं रखूगी। बाबा ने कई बार कहा पर में अपने हठ पर अडी रही। परिणाम यह निकला कि हमारा सम्बन्ध दिन प्रतिदिन समाप्त होता गया।

लेकिन सौभाग्य की बात कहिए कि उस युवती ने सुबोध के साथ छल कर लिया। वह मेरी तरह सीधी और भोली नहीं थी। मेरी महत्त्वाकांक्षाए सुबोध को देखकर कुलाचें भरने लगी थी और मैं सुबोध की बनकर अपने को सौभाग्यशालिनी मा मानती थी पर वह युवती सुबोध के मन के पाप से पूर्व ही परिचित हो गई। तब सुबोध को महसूस हुआ कि जीवन में धन के अलावा भी एक वस्तु है, वह है मनुष्य की चतुराई। उस युवती ने सुबोध को खूब उल्लू बनाया।

'तब सुबोध एक बार मेरे पास समझौते की भावना लेकर आया। मने उसे साफ शब्दों में कह दिया कि तुम्हारा और मेरा कोई सम्बन्ध नहीं।—तुम ही बताओ नरोत्तम! वह भाव-विह्वल होकर बोली 'क्या म पालतू वारांगना हू जो समय समय पर दुष्ट मनुष्यों स समझौता किया करू। मेरा नारीत्व अहम् और शील इस प्रकार की जघन्य मनोवृत्ति से समझौता नहीं कर सके। सुबोध ने उस समय अपने

सभी दुर्गुणों को छोड़ने की सौगन्ध भी खाई पर मैं अपने इरादे पर अटल रही। मैंने हृदय से उसे त्याग दिया था। क्योंकि मैं अन्तर से उसे घृणा करने लगी थी। मुझे सभी व्यक्तियों ने समझाया प्रलोभन दिया धमकाया पर सब व्यर्थ। मैं अपने हठ पर अड़ी रही। मुझे भय था कि इस बार सुबोध मुझे प्यार के बहाने मृत्यु की गोद में सुला देगा। ऐसे उच्छृङ्खल प्रवृत्ति के आदमियों का कोई भरोसा नहीं।

तब सुबोध को अपने पाप काटने लगे और जब मैंने यह ईश्वर की परीक्षा दी तब मुझे रोमी ने एक दिन होटल में चाय पीते हुए बताया कि सुबोध साधु होकर कहीं दूर, बहुत दूर विदेश चला गया है। उसके सन्यासी होने का सारा दोष मुझपर लगाया गया। कदाचित् वह मुझे पाकर, अपनी वासना की तृप्ति के बाद यदि साधु हो जाता तो मुझे कितनी मार्मिक पीड़ा होती। आह कितना पशुवत् प्राणी है वह।

यही मेरी कहानी है। उसके बाद मैंने बी० ए० किया और तुम्हारी कृपा से यहां हूं। सुनन्दा का विवाह हो जाए इसके बाद मैं एक बार रोमी से मिलूंगी। उससे भेंट किए हुए बहुत अर्सा हो गया है। वह आदमी बड़ा अच्छा है। अत्यन्त भावुक और सहृदय है। उसमें मनुष्यता कूट-कूटकर भरी है।

नरोत्तम चुपचाप सुनता रहा। जब इन्दिरा एकदम चुप हो गई तब वह भय भीत-सा नमस्कारकर अपने क्वाटर की ओर चल पड़ा।

रात की चिड़िया कभी-कभी बोलकर उसका ध्यान भंग कर देती थी। हवा के कारण नारियल के पेड़ों के पत्ते खड़-खड़ की आवाज कर रहे थे। शून्यता के कारण हवा की सांय-सांय स्पष्ट रूप से सुनाई पड़ जाती थी।

नरोत्तम द्रुतगति से कदम बढ़ाता हुआ जैसे अपने क्वाटर के समीप आया, वैसे ही उसकी दृष्टि अपनी घड़ी पर गई—ग्यारह बज गए थे।

वह अपने दरवाजे पर खड़ा होकर जब से चाबी निकालने लगा। तभी उसे किसीका अत्यन्त हल्का स्वर सुनाई पड़ा—आपनार आमाय पोका खेयचे। शब्द एकाएक अलग-अलग, रुक रुककर बोले गए थे। नरोत्तम ने गर्दन घुमाकर देखा—तृप्ति थी।

तृप्ति गर्दन नीची किए बार-बार इस वाक्य को दोहरा रही थी।

सात दिन के बाद। रात्रि-वला।

तप्ति के रूप की स्निग्ध-ज्योति नरोत्तम क मानस क तिमिर लोक में विकसित होने नगी। विगत दिवसों की घटनाओं के कारण उसका मन पुन उद्विग्न रहने लगा था। वह इन्दिरा को घातक समझता था। उसका अपना निणय था कि पति को साधु बनवाने की सारी जिम्मेदारी इन्दिरा की है। उसे इतनी जल्दबाजी से काम नही लेना चाहिए था। क्या पता उसनें शराब पीकर जघन्य कृत्य किया हो। आखिर पुरुष पुरुष होता है, जीवन से खेलता ही आया है। लकिन इन्दिरा को सभी आगत मगलों को छोडकर वहां से अकेली नहीं भाग आना चाहिए। तब परिणाम में सुबोध को साधु बनना पडा। एक भय जो नरोत्तम को नारी की ओर से मिला था, वह पुन सजग हुआ और उसे भयभीत और आतंकित करने लगा।

आज दोपहर को इन्दिरा न उसे बुलवाया था। उसने ताड के रस के गुलगुल बनाए थे। नरोत्तम के लिए ताड के गुलगुल नई चीज थी। फिर भी वह नही गया। उसन कहलवा दिया कि उसके पेट में दर्द है।

पर स ध्या के झुटपुटे में जब वह नदी के किनारे शीतल मंद पवन का आनद ले रहा था तब एकाएक उसकी भट इन्दिरा से हो गई। वह उसे देखकर बगलें झाकने लगा।

इन्दिरा सव्यग विनीत स्वर में बोली आपके उदर का दद कसा है?

'ठीक है मालूम नहीं वह दद कसा था? तूफान की तरह आया और वैसे ही चला गया। वह मन्दहास के साथ बोला।

वह दर्द किसीका अपमान करने के लिए उगा था। मुझे हार्दिक दुख है कि आपन न आकर मुझे बडी ठस पहुचाई। पता नही आपका अपनत्व जड़ से अलग हुई लता की भाति इतनी जल्दी कसे सूख गया?

नहीं नहो ऐसी कोई बात नही है।

बात नही है फिर सात दिन तक सूरत क्यों नहीं दिखाई? एसा मरा अपराध क्या था? आप समझते हैं कि पति के मामल में मैं अपराधो हू तो मैं आपको कहूगी

कि आप सत्य और न्याय दोनों के प्रति अन्याय कर रहे हैं। पति के मन में यदि पाप नहीं होता तो वह अपने अपराध को स्वीकार कर प्रायश्चित्त करता पर उसने तो उल्टा हठयोग का सम्बल लिया भागा दौड़ा, भटका और एक और नारी को अपने प्रेमजाल में फंसाकर उसका भी जीवन उसने सवनाश की आग में झोंकना चाहा। पर उसने सुबोध के सयमहीन मन के अन्तर की गहराइयों के छद्म सत्य को भ्रम की चरम सीमा के पहले ही पहचान लिया और वह नारी बरबाद होने से बच गई। अब बताइए ऐसे पुरुष को किस तरह क्षमा किया जा सकता है ?

नरोत्तम इतनी देर चुप रहा। नदी के किनारे उछलते हुए मेंढक को देखकर वह बोला ऐसी दुर्बलताएँ पुरुषों में प्राय होती ह पति की अर्द्धांगिनी का एक यह भी कर्तव्य है कि वह अपने पथभ्रष्ट पति को उचित पथ बताए। वह उचित व सुपथ की पाथय बने। लेकिन तुमने हिन्दू विचारधारा पर कुठाराघात किया है।

मैंने हिन्दू धर्म पर कुठाराघात किया है, यह सही है, पर यदि हिंदू धर्म की सनातन परम्परा पाप की आधारशिला पर है तब मुझे इसपर कुठाराघात करने में जरा भी सकोच नहीं है। आप बताइए नरोत्तम बाबू, एक पत्नी इसी प्रकार परपुरुष के साथ पापाचार करती हुई मिल जाती तो उसका पति उसे क्षमा कर देता ? मेरे विचार से आप उसका पति और समाज उसे काले वस्त्र पहनाकर घर से बाहर निकाल देते।

नरोत्तम कुछ बोला नहीं।

आप चुप क्यों हैं ? मैंने अपने अपराधी पति का त्याग कर दिया इससे आप मुझसे घृणा करने लगे और मेरे पति ने मेरे आत्मविश्वास और नारीत्व का महादान लेकर मुझपर मेरे नारीत्व पर दारुण घातक प्रहार किया वह क्षम्य है ?

'लेकिन तुमने यह सब प्रतिहिंसावश किया है। तुम सुबोध को तनिक भी प्यार नहीं करती थी। जब एक स्त्री किसीकी सम्पत्ति को देखकर उसकी ओर आकर्षित हो तब उस स्त्री के आकर्षण को प्यार कहा जाएगा या स्वार्थ ? और तुम्हारे मन में तन मन में सम्पत्ति का आकर्षण ही मुख्य था ताकि तुम अपनी महत्त्वाकांक्षाओं के महल को अपनी इच्छाओं के मुताबिक सजा सको।

मेरे अनुराग के प्रारम्भ में अवचेतन रूप में इस भावना की अवश्य प्रधानता

रही थी। पर बाद में और विवाह के पश्चात म सुबोध को सावित्री की पुनीत भावना लकर पूजती थी। सत्यवान यदि दुश्चरित्र होता तो सावित्री उसे यमराज के मृत्युपाश से छुड़ाने में सर्वथा असमर्थ रहती। फिर जब पति ने मेरे साथ जरा भी न्याय नहीं किया म उसपर करुणा क्यों उडलू ? सतियों की भांति म अपने पति को कन्धों पर विठाकर वेश्या के कोठे पर नहीं ल जा सकती और न ही मुझमें भगवान श्रीकृष्ण की रानियों की तरह इतनी सहिष्णुता है कि मेरा पति मेरे समक्ष धर्माडम्बर का जाल रचाकर परकीया स प्रेम कर। म इस दारुण दुख और अपरिसीम यत्रणा स पागल हो उठी। मेरा मन इतना बचैन रहने लगा कि मुझे कुछ भी प्रिय नहीं लगता था। तब मुझ रोमी अग्रत्याशित मिला। रोमी मुझे धैर्य देता या सांत्वना देता या असीम अनुराग देता था। म तुम्हें कहती हू कि स्वामी के भागने के बाद मुझे जिन जिन विपत्तियों का सामना करना पड़ा जिन-जिन लाञ्छनों को सुनना पड़ा उस समय यदि रोमी मुझ बच नहीं बचाता तो मैं आत्म हत्या कर लेती। उसका स्वर उत्तप्त होगया लोग अब भी मुझ ही अपराधिन बताते है जबकि मैं बिलकुल निर्दोष हू। सच यह है कि अभी तक हमारे समाज में नर के समक्ष अभागिन नारी ही अधिक दोषों की पुतली कहलाती है।

वह चुप हो गई। नदी के उस पार से उठता अन्धकार फलता जा रहा था। उस पार के हस्पताल क तोरण-द्वार की बत्ती जल गई थी।

इन्दिरा न विगलित स्वर में पूछा 'नरोत्तम बाबू क्या आप मुझे अभी भी अपराधिन समझते हं ?

'मैं समझता हू कि तुम कभी भी सुखी नहीं होओगी और न ही तुम्हारा अन्य साथी तुमसे सुख-सचय कर सकगा। तुममें 'परिवर्तन' या यों कहू नवीनता के प्रति तीव्र मोह है। तुममें घृणा भरी हुई है, तुममें नारी जाति की न तो श्रद्धा है न सहिष्णुता ही। यदि यह सब होती तो तुम अपने पति को कदापि नहीं छोड़तीं। यह आदत तुम्हारा अवश्य दुखान्त करेगी। नरोत्तम उसकी ओर बिना देख यत्रवत् बोला।

वह घृणा से भर उठी। चीखती हुई बोली तुम चाहते हो कि म सुबोध का अत्याचार सहकर महान नारी की सज्ञा स विभूषित होती। म एसा नहीं

कर सकती थी। मुझमें इतनी क्षमता नहीं थी, समझे। ✓

नरोत्तम को उसकी उत्तेजना अच्छी नहीं लगी। वह भी गुस्से में भर आया एसा नहीं कर सकती तो फिर मुझे अपनी मित्रता से मुक्त करना होगा। क्या तुम्हें रोमी के अलावा कोई भी ऐसा बंगाली या हिन्दुस्तानी युवक नहीं मिला जिससे तुम अपना सम्बन्ध स्थापित करतीं जो तुम्हें दुख के समय सांत्वना देता?

और वह ईसाई धर्म का फरिश्ता अवश्य तुमसे प्रेम करेगा। तुम्हारी मित्रता को छलेगा। एक साधारण पुरुष की घृणा नरोत्तम में चीख उठी।

अब समझी तुम्हारी जलन का सम्बन्ध मुझसे नहीं, उस कृपालु रोमी से है। तुम बिलकुल संकीर्ण वृत्ति के मनुष्य हो।

तुम छलना हो।

तुम। तभी इन्दिरा को लगा कि उस फलते हुए अन्धकार में कोई मनुष्य आकृति उनकी बातें सुन रही है। वह एकदम ठिठक गई। उसकी आँखें भर आई। वह सिसकती हुई बोली, अब मैं यहां नहीं रह सकती मैं कल ही यहां से त्याग-पत्र देकर चली जाऊंगी।

वह सीधी अपने क्वाटर में आ गई।

नरोत्तम अपने क्वाटर की ओर गया। उसके मस्तिष्क में विचार घुमड़ घुमड़ रहा था। उसकी नस-नस में अजीब वेदना का संचार हो रहा था। उसे लगा कि इन्दिरा के चरित्र पर केवल कलंक के काले-काले धब्बे हैं।

क्वार्टर के सामने पहुंचते ही तृप्ति ने आकर कहा 'बड़े दा तुम्हें बाबा बुला रहे हैं।

नरोत्तम उसके साथ भीतर गया। सामने ही सेन साहब की विधवा बहू मिल गई। इधर तीन वर्ष पूर्व सेन साहब के एक लड़के का मलेरिया द्वारा देहान्त हो गया था बहू रोहिणी अपना वैधव्य घरेलू काम-काज में व्यस्त होकर बिता रही थी। नरोत्तम को देखते ही उसने हल्का-सा घूंघट खींच लिया। नरोत्तम को उसके मुख पर दिव्यता के दर्शन हुए। नारी का यह शांत और पवित्र रूप उसे हृदय से प्यारा था।

दादा नमस्कार।' रोहिणी ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया।

क्यों वह प्रसन्न हो न ?

सदा वह ऐसा प्रश्न पूछकर बहू क मन को दुख पहुचाता था। वह जानता था कि 'प्रसन्नता' का नाम सुनकर रोहिणी को असीम दुख होता है। विधवा के जीवन में प्रसन्नता कहा ? पर वह सदा ऐसी भूल कर बैठता था। तुरन्त सम्भलता हुआ नरोत्तम बोला, 'बहू चाय पिलाओगी ?

हा दादा, तुम कहो तो कुछ आलू भी तल लाऊ।

तृप्ति को इसपर मज़ाक सूझा। हसती हुई आखें मटकाकर बोली इनके लिए मछली तलकर ले आओ। बडो दा मछली के लिए बड लालायित रहते ह।

धत् पगली। नरोत्तम न उसे डाटा।

तृप्ति सहमकर वहीं खड़ी हो गई।

सेन साहब हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे। उनकी तलवार कट मूछें थी और वे अपन बातों को इस ढग स सवारते थे जिससे उनकी बाई ओर एक बीणा बन जाती थी।

नरोत्तम को देखते ही वे मुह से हुक्का निकालकर बोल आइए नरोत्तम बाबू, बठिए।

नरोत्तम एक दीघ सांस छोडकर बठ गया। सन साहब कहन लगे आपके आन से यह मजदूरों की बस्ती प्यार और स्नेह की छोटी-सी जगती हो गई है राग-द्वेष जड से जा रहा है। आपके प्रति मजदूरों की गहरी आस्था और विश्वास बन रहा है पर ।

उन्होंन हुक्के की नली मुह में डाल लिया। आंखों में प्रश्न की गम्भीरता चमक उठी जसे वे कुछ कहते-कहते रुक गए हों।

आप चुप हो गए सेन बाबू ?

तृप्ति तू जा दस दो कप चाय लाना साथ में थोड़ा-सा आलू भाजा भी। खाली चाय इस समय अच्छी नहीं लगेगी।

तृप्ति के होंठों पर मुस्कान नाच उठी। वह समझ गई कि बाबा उस वहां से हटाना चाहते हैं। वह अपनी धोती क छोर को कमरबद की तरह कसकर बांधती हुई उठ खड़ी हुई। उसके जाते ही सन बाबू फीकी मुस्कान लाकर विनम्र स्वर में बोल तृप्ति आपका बडा ध्यान रखती है दिनभर चर्चा करती रहती है। मने उस

समझाया अब तुम बच्ची नहीं हो ज्यादा उनकी चर्चा न किया करो, लोग सुनेंगे तो क्या कहेंगे ?

नरोत्तम की आंख झुक गई।

सेन बाबू बात को उड़ाते हुए बोले 'बड़ी जरूर हो गई है पर नादान है। वे तपाक से स्वर को बदल बैठे बैठिए न नदी के किनारे से आते ही कहने लगी कि 'बाबा आज वहां पर नरोत्तम बाबू और हेडमास्टरजी आपस में झगड़ रहे थे। क्या यह बात सच है ?

जी ! नरोत्तम तुरन्त संभलकर बोला, जी नहीं।

देखिए नरोत्तम बाबू आप यहां के आफिसर ठहरे आपकी हर बात का अच्छा या बुरा प्रभाव यहां के व्यक्तियों पर पड़ सकता है। कहीं कुछ गड़बड़ (गड़बड़) न कर बैठिएगा। आपको यहां सम्मान से रहना चाहिए।

यह मैं भली भांति जानता हूं मुझे अपनी आबरू बहुत प्यारी है। किसी विषय पर वाद विवाद करते-करते हम दोनों उत्तेजित हो गए थे।

फिर भी नदी का किनारा वाद विवाद का स्थान नहीं है।'

शायद स्थान के निर्वाचन में हम जरूर गलती कर बैठे पर आप निश्चित रहिए कि ऐसी-वैसी कोई बात नहीं होगी। उसने थूक निगलकर कहा फिर यह कल त्याग-पत्र देकर जा रही है।

क्या ?

मैं क्या जानूं ?'

तृप्ति एक कप चाय और एक प्लेट में आलूभाजा लेकर आ गई थी। उसने चाय नरोत्तम को दी और नरोत्तम ने सेन साहब की ओर बढ़ा दी। सेन साहब बोल पड़े अरे पीजिए न, यह नटखट चिरैया अभी दूसरा प्याला भी ले आती है।

तभी तृप्ति एक कप चाय और ले आई।

फिर भी आपको इसपर गंभीरतापूर्वक सोचना चाहिए। बिना कारण उसका यहां से चले जाना कहां तक उचित है ?

उचित अनुचित देखना मेरा काम नहीं। वह चली जाना चाहती है तो जाए, उसकी कोई दूसरी बहिन आ जाएगी।

तृप्ति द्वार पर खड़ी-खड़ी उनकी बातें सुन रही थी। उसे नरोत्तम की बाता में सत्य का प्रभाव लगा। मन ही मन तप्त स्वर में चीख पड़ी झूठे कहीं के हेड मास्टरजी से अनुराग करके अब बन रहे हैं, और यह हेडमास्टरनी बाबा रे बाबा, अपने स्वामी का परित्याग करके आई है। देखो न कलमुहीं को उस बेचारे को साधु बनाकर छोड़ दिया। हे दुर्गा मां हे काली मा! तृप्ति को महसूस हुआ कि जैसे यह औरत औरत नहीं, नरक की यक्षिणी है जिसे पाप-पुण्य का भेद मालूम नहीं। जो पातिव्रत्य धर्म पर ज़रा भी विश्वास नहीं रखती।

वह प्रकट रूप में सुनकर बोली बाबा हम शहर कब चलेंगे ?

प्रश्न बाबा से किया और देखा नरोत्तम की ओर। तृप्ति को लगा कि नरोत्तम बाबू के मुख की कांति स्याह पड़ गई है उसपर उदासी की घटाएं छा गई हैं क्योंकि उन्होंने झूठ बोला है इसलिए वे आत्मवंचना की आग में झुलस गए हैं।

अभी तू जा देख एक कप चाय और न ला। सेन बाबू बोले।

नहीं-नहीं मैं अब खाना खाऊंगा। नरोत्तम बोला बेचारा मुनीम अपनी स्त्री से कितने स्नेहभाव से भोजन बनवा कर लाता है।

क्यों नहीं बनवा कर लाएगा। सोचता है कि एक न एक दिन नरोत्तम बाबू मनेजर की जगह मुझे दिला ही देंगे। कहकर सेन बाबू हंस पड़े। नरोत्तम ने भी उनका साथ दिया।

बात का सिलसिला टूट गया था।

क्षण भर के लिए एकदम खामोशी छा गई थी।

तृप्ति ने भी प्रवेश करते हुए कहा बाबा भाभी नरोत्तम बाबू को बुला रही है।

कह दो कि आ रहे हैं। सेन बाबू नरोत्तम की ओर उन्मुख होकर बोले कल वह कह रही थी कि उस नरोत्तम बाबू को देखकर अपने संझले भैया की याद हो आती है। उसका भैया हैजा में मर गया था। सेन बाबू का गला भर आया।

नरोत्तम उठकर रोहिणी के पास आया। पूछ बैठा क्या बात है रोहिणी ?

बात कुछ नहीं है, अगले बुधवार को मेरे संझले भैया का कार्तिक का श्राद्ध है उसके सी० दास की रसमलाई बहुत पसंद थी आप कलकत्ता से मंगवा दीजिए न ?

लड़की अत्यन्त ही सुशील और शर्मीली है। इसका हृदय जल की तरह निर्मल है। देखना काली माई की कृपा से यह अत्यन्त सुन्दर वर और घर पाएगी।

अब भक्तिन बेचारी छाती पर पत्थर बांधकर नदी में डूब मरेगी। कहकर तृप्ति भाग गई।

भक्तिन बड़बड़ाती रही अनर्गल प्रलाप करती रही।

नरोत्तम हंस पड़ा कैसी विचित्र लड़की है!

धीरे धीरे पाव उठाकर तृप्ति ने गृह प्रवेश किया।

नरोत्तम कुल्ला कर रहा था। वह चाय टेबल पर रखकर प्रतिमा की भांति मौन खड़ी हो गई।

नरोत्तम भी कुल्लाकर बैठ गया। कुछ बोला नहीं।

चाय ठंडी हो रही है। तृप्ति ने कहा।

होने दे।

क्यों?

तूने भक्तिन को क्यों छेड़ा? उसने डांट भरे स्वर में कहा।

कहां? वह बिलकुल अनजान बन गई।

नल पर!

बाबा रे बाबा। उसने आंखें फाड़कर अपने कान पकड़े 'मैंने तो भक्तिन को कहा कि बेचारी पिपीलिका (चीटी) की हत्या न कर, वह इसपर बिगड़ पड़ी। बनती है भक्तिन और करती है जीव हिंसा।

'तू बड़ी नटखट है। कभी भक्तिन तुझे पीट देगी समझी

ऊं हूं। तृप्ति ने घृणा से मुंह बिचका दिया।

नरोत्तम चाय पीकर मुस्काने लगा। तृप्ति हाथ में प्याला लिए खड़ी रही।

जाती क्या नहीं?

क्या मास्टरजी सचमुच जा रहे हैं? उसने प्याले पर दृष्टि जमाकर पूछा।

क्यों?

यों ही पूछ रही हूं।

क्यों ?

वह तो बहुत अच्छा पढ़ाती है।

तृप्ति की आंखों में हिंसा चमक उठी। कुछ बोली नहीं। कदमा को भारी रूप से पटकती हुई चली गई।

नरोत्तम कुर्ता पहनकर इन्दिरा की ओर चला। रात भर वह इन्दिरा से न मिलने के कई बार अपने आपसे प्रण कर चुका था। पर वे सारी भीष्म प्रतिज्ञाएं सवेरे के प्रवाह में इस तरह लुप्त हो गईं जिस तरह अंधेरा लुप्त हो गया था। अन्तर्द्वन्द्व के थपेड़ों में अनिर्णीत सा वह इन्दिरा के यहां जा पहुंचा।

इन्दिरा विभूतिभूषण वन्द्योपाध्याय का 'आरण्यक' गल्प पढ़ रही थी।

पांवों की आहट सुनकर उसने अपनी दृष्टि उठाई। नरोत्तम को देखकर बोली आइए नरोत्तम बाबू आपके लिए चाय बनाऊं ?

उसकी कोई आवश्यकता नहीं है मैं चाय पी चुका हूं। वह कुर्सी पर बैठ गया।

'चाय आपको पीनी होगी अन्यथा मैं अपना अपमान समझूंगी।

फिर पिला दो अपमान करने मैं नहीं आया हूं।

चाय बनाते बनाते इन्दिरा ने कहा मैंने त्याग-पत्र लिख लिया है आप जाते समय लेते जाइएगा। अब मैं यहां रहना नहीं चाहती। जब मन को आनंद नहीं फिर कुछ करने से क्या लाभ ?

नरोत्तम कुछ देर तक विचार करता रहा। नील गगन में गिद्ध ऊंची उड़ान भरता हुआ उड़ रहा था। उसपर दृष्टि जमाता हुआ वह बोला मेरी समझ में नहीं आता कि तुम शीघ्र ही भावुक क्या हो जाती हो। मैं तुम्हें यह चाय तुम्हारे लिए नहीं बल्कि सुनदा के लिए दिलवाया है। सुनदा के लिए अच्छा वर तुम लोग तभी पा सकते हो जब कि तुम्हारे पास वर को खरीदने के लिए पैसा हो।

इन्दिरा प्यालों में चाय डाल रही थी। उसके चेहरे पर रूखापन आ गया। प्याला साथ में लिए हुए वह आई और उन्हें मेज पर रखती हुई बोली सुनदा के वर के लिए मैं अपमानित जीवन क्यों गुजारूं ? फिर क्या वह विवाहित होकर प्रसन्न रह सकती है ? मैंने भी विवाह किया था। सोचा था—स्त्री बनकर मैं अपने सुहाग के सुन्दर शृंगार में सुख और संतोष का जीवन यापन करूंगी पर मिली

बन्धनहीन व्यथा ही।

बात यह है इन्दिरा कि तुममें श्रद्धा की जगह तर्क अधिक है। तर्क मनुष्य को प्रयोग की ओर घसीटता है और प्रयोग हमें प्रमाण से परिचित करा देता है। प्रमाण से परिचित होने के बाद मनुष्य का अहम् अपना अलग अस्तित्व बना लेता है। यह अस्तित्व किसीका अनचित अधिकार स्वीकार नहीं करता किसीका अनुचित हस्त क्षेप नहीं चाहता तब सम्बन्धों के बीच विष-लहरी उत्पन्न हो जाती है। चूंकि तुमने बाद में अपने पति को देवता के रूप में स्वीकार कर लिया था लेकिन तुम इन सब विचारों से शून्य तो नहीं थीं। और होना यह चाहिए कि स्त्री अपने स्वामी के प्रति तर्क के बजाय श्रद्धा अधिक रखे। मैं कदाचित ठीक सोचता हू कि सुनदा अपने वर को केवल वर के रूप में स्वीकार करेगी। वह आज्ञाकारिणी वधू बनकर जाएगी और अपने स्वामी के चरण-कमलों में सर्वस्व विसर्जन करके अपनी इस देह के कर्तव्य को सफल बना लेगी।

यदि ऐसा न हुआ तो ? उसके स्वर में भय था।

ऐसा ही होगा। चक्रवर्ती बाबू कह रहे थे कि सुनदा पूर्ण भारतीय है। उसमें आज की युवतियों-सी तनिक भी उच्छृंखलता नहीं है। वह पति के समस्त अपराधों को क्षमा करके केवल उसकी अर्चना करेगी उसके सुख में केवल सन्तोष को ग्रहण करेगी और दुःख में दुःखहारिणी बनकर अपने पति को सुख पहुचाएगी। मैं तुमसे प्रार्थना करूंगा कि सुनदा के भविष्य के लिए तुम्हें यह कदम नहीं उठाना चाहिए, फिर तुम्हारी अपनी इच्छा।

इन्दिरा निरुत्तर रही। उसकी पलकों में सावन उमड़ पड़ा।

नरोत्तम चाय के प्याले पर दृष्टि जमाता हुआ बोला रोमी तुम्हारा कहीं नहीं जाएगा। वह ईसाई है वह तुम्हारी प्रतीक्षा करेगा। उनका जीवन भारतीयों की भांति सत्रह वर्ष से प्रारम्भ नहीं होता शायद पचीस से प्रारम्भ होता है, इस लिए तुम उसकी ओर से निश्चित रहो।

इन्दिरा जल उठी नरोत्तम बाबू! भविष्य में आप रोमी का जिक्र न करें। वह मेरा मित्र है और मैं बार-बार कहूंगी कि वह मेरा मित्र ही रहेगा। उसके स्वर में जलजला-सा था।

नरोत्तम खड़ा हो गया।

जाते जाते बोला मैं एक दिन के लिए कलकत्ता जा रहा हूं कोई काम है?

नहीं।

१२

कलकत्ता पहुंचकर नरोत्तम सबसे पहले सेठजी के घर गया। मिल के बारे में कई बातें करके तथा वहां से भोजन करके वह सीधा चक्रवर्ती के यहां पहुंचा।

चक्रवर्ती घर नहीं था पर चक्रवर्ती की बीवी ने नरोत्तम को चाय पीने का आग्रह किया। अधिक टाल मटोल वह नहीं कर सका। बैठ गया।

सुनंदा जल्दी से चाय बना ला देख तेरे नरोत्तम दादा आए हैं। चक्रवर्ती की पत्नी का स्वर गहरी आत्मीयता से ओत प्रोत था। फिर वह नीचे की ओर जाकर कुछ क्षण के बाद लौटी। उसके हाथ में दोना था। उस दोने में चार पेड़े थे। पेड़ों को प्लेट में रखती हुई चक्रवर्ती की पत्नी बोली नरोत्तम बाबू आप सीधे यहीं आ जाते यह घर पराया थोड़े ही है। हम अपनी सामर्थ्यानुसार आपकी खातिर कर देते।

बात यह है कि सेठजी ने इस उजड्ड बस को रास्ता दिखाया है। अतः पहले उनका ही हक हो जाता है। फिर सेठानी जी मां से कम ममतावाली नहीं हैं। उनका अनुरागभरा आग्रह मैं कैसे अस्वीकार कर सकता हूं?

चक्रवर्ती की बीवी ने पेड़ों की ओर संकेत करके कहा 'आप इन्हें खाइए, तब तक सुनंदा आपके लिए चाय बनाकर लाती है।

इनकी क्या जरूरत थी? मैं अभी खाना खाकर ही आ रहा हूं। उसने एह‍सान भरे स्वर में कहा।

'फिर भी एक-दो तो खाइए। उसने आग्रह किया।

बड़ी मुश्किल से नरोत्तम ने दो पेड़े खाए। तब तक चाय बनकर आ गई। दो मार-सलोने हाथ सजीव ढंग से प्याला पकड़े हुए बढ़े। कल्पना निर्मित मूर्ति को प्रत्यक्ष

देखने के लिए नरोत्तम के मन में कई सकल्प-विकल्प उठ रहे थे। वह कसी है क्या उसकी आकृति है कसी उसकी आखें हैं कसे उसके बाल है इत्यादि।

सुनदा न चाय रख दी।

नरोत्तम न चाय उठाकर शकित होकर धीरे धीरे गदन उठाई।

उत्फुल्ल पारिजात की भाति चित्ताकपक आनन।

उसने शाति का सास लिया।

सुनदा अपन दादा को नमस्कार करो। मा न सुनदा को आज्ञा दी।

सुनदा ने नीच झुककर नरोत्तम की चरण-धूलि लेनी चाही पर नरोत्तम स्नहातिरेक होकर बोल पडा अरे अरे यह क्या करती हो सुनदा! बस हो गया नमस्कार, उठो। पर सुनदा ने उसकी चरणरज ले ही ली।

पढ़ाई कैसी चल रही है? नरोत्तम ने दूसरा प्रश्न किया।

अच्छी।

अरी तुम खड़ी क्यों हो, बैठो न। शर्माती हो। मेरे सामन शर्मान की क्या बात है? मैं तो तेरा दादा हू न?

चक्रवर्ती की वहू भी अब चुप नहीं रह सकी। अपने सिर के आचल को व्यवस्थित करती हुई बोली बैठ जाओ न!' फिर अपनी दृष्टि को दौडाकर बोल पडी 'दोनो बहिनों में कितना अन्तर है। एक अभिमान के पीछे सवस्व त्यागन वाली और दूसरी श्रद्धा और भक्ति क अलावा कुछ जानती ही नहीं।

नरोत्तम के मन में आया कि वह एक बार इन्दिरा को कटु आलोचना कर दे पर कहा उसकी कटु बातों से इन्दिरा का अनिष्ट न हो जाए, यह सोचकर वह बोला नारी सदा श्रद्धा की प्रतिमा रही है, अभिमान, रोप और कलह उसके जीवन को अन्तहीन दुख दे जाते हैं। सुनदा को मेरा आशीर्वाद है कि वह सुयोग्य नारी बन। अपने पति को अगोचर शक्ति की तरह बलवान मानकर उसकी अचना में अपनी समस्त सजनाओं को लगा दे।

सुनदा की आंखें तरल हो गइ।

मैं जाऊ दादा।

नरोत्तम ने धान की महक में पलत हुए मिट्टी स सन शाश्वत ग्रामीण सौंदय को

भरी दृष्टि से देखा। उसे आशा देना चाहता था पर शब्द कंठ में ही घुटकर रह गए।

सुनदा चली गई।

वह कुछ देर तक सुनदा के भोलपन के बारे में विचारता रहा और अंत में बोला भाभी सुनदा का विवाह अब तुम्हें कर ही देना चाहिए। यह अवस्था विवाह आनंद की है।

बस रुपयों का बदोबस्त होते ही वर के घर वालों से बातचीत कर ली जाएगी। उन्होंने एक लड़का देखा भी है।

भगवान करे आपकी मनोकामना शीघ्र पूरी हो जाए।

इसके बाद नरोत्तम वहाँ से चला आया।

कलकत्ते के विभिन्न मित्रों से मिलकर वह रसमनाई लेकर सध्या की गाडी से पुन मिल रवाना हो गया।

१३

मिल से दूर सवड़ और जंगली बलों के वन में एक प्राचीन काली मैया का मन्दिर है। यहाँ के निवासियों के इसके बारे में भिन्न भिन्न मत हैं और ये ही भिन्न भिन्न मत व्यापक रूप पाकर किंवदन्तियाँ बन गए हैं। कुछ व्यक्तियों का कहना है कि मन्दिर के आगे जो पोखर है उसमें से यह मूर्ति निकली है और कुछ का कहना है कि कोई योगी हिमालय से चलकर यहाँ आया था और उसने अपनी अजय शक्ति से इस मूर्ति की प्रतिष्ठा की थी और कोई-कोई तो यहाँ तक भी कह देता है कि नदी के उस पार एक दत्त महाशय की कोठी थी। यह दत्त परिवार बहुत धनी था। कलकत्ता में उस परिवार के मुखिए का अच्छा-खासा व्यापार था। वे जहाँ तहाँ से वेश्याएँ लेकर यहाँ आते थे और खूब आमोद प्रमोद करते थे। उन्होंने धीरे धीरे पैसों के बल पर घर की बहू-बेटियों पर भी हाथ डालना प्रारम्भ किया। आखिर एक रात स्वयं काली माई रौद्र रूप धारण करके आई और पाप को निमूल

नरोत्तम ने उसे पैनी निगाह से देखा। वह सिर झुकाए खड़ी थी। उसकी मुखश्री अन्तस् के भय के कारण धूमिल पड़ गई थी।

तू बार-बार यह क्या पूछती है?

नहीं तो।

'तो क्या तुझे यह मास्टरनी अच्छी नहीं लगती? सभी तो यह कहते हैं कि इन्दिरा दीदी बहुत अच्छी है।

अच्छा पढ़ाती जरूर है पर ' यह कहती-कहती चुप हो गई।

'पर क्या?

'उस दिन नदी के किनारे आप कह रहे थे कि उसने अपने पति को छोड़ दिया है। उसने भयभीत होकर डरते डरते कहा।

क्या बकवास करती है? नरोत्तम गुस्से में भर उठा आजकल तेरी जबान कची की तरह चलने लगी है। खबरदार जो अब से किसीको इस प्रकार का झूठ कहा तो। उसका स्वर नितान्त नरम हो गया, अरी पगली उस दिन हम किसी और के बारे में बातचीत कर रहे थे। तुम्हारी इन्दिरा दीदी के बारे में नहीं।

तृप्ति को नरोत्तम का डांटना अच्छा नहीं लगा। उसकी आँखें तुरन्त सजल हो उठीं। बोली आप भी मिथ्या भाषण करने लगे बड़े दा।

और वह बिना उत्तर सुने ही चली गई।

उस दिन नरोत्तम के मन में विलक्षण विचार तृप्ति को लेकर उठते रहे। उसे लगा कि तृप्ति उसपर सर्वस्व निछावर करना चाहती है पर यह सब कहना उसके लिए अत्यन्त दूभर है। यदि ऐसा नहीं होता तो वह इन्दिरा से घृणा नहीं करती। तृप्ति यहां से उसके जाने की कामना नहीं करती।

सन्ध्या होते ही वह अपने क्वार्टर को इस उत्तेजित विचार को लेकर आ रहा था कि वह इन्दिरा से व्यावहारिक सम्बन्धों के अलावा कुछ भी सम्बन्ध नहीं रखेगा मन के तमाम बन्धनों को तोड़ देगा पर ज्यों ही सन्ध्या को अपने में समेटता हुआ अन्धकार बड़ा बने ही उसका मन दुर्बल हो गया। और रजनी का चूनर जब तारों से भर गया तब वह इन्दिरा के अभाव में तड़पने-सा लगा। तुरन्त उसने कुर्ता पहना और इन्दिरा के यहां पहुंच गया।

इन्दिरा लेटी-लेटी गुनगुना रही थी। नरोत्तम को देखते ही बोली कलकत्ते से आकर अब मिलन आए है नरोत्तम बाबू ?

सेठ जी ने कुछ आवश्यक काय दे दिए थ उन्हे सभालने में ऑफिस में पूरा दिन बीत गया।

बाबा से मिले थे ?

नही।

कहने वालों ने ठीक ही कहा है कि गरीब स क्सा नाता रिश्ता ? उसने एक नि श्वास लिया।

क्यो ? वह विस्मित हो गया तुम्हारे घर गया था। सुनदा से मिला था। बडी भोली और सुशील है वह। सच कहता हू कि जो व्यक्ति उसस विवाह करेगा वह बडा भाग्यशाली होगा।

फिर आप क्यो नही कर लते ? इन्दिरा बिना सोचे बोली।

म छि छि तुम भी कभी-कभी कैसा भद्दा मजाक कर लिया करती हो। वह तो मरी छोटी बहिन है। म तो सदा ईश्वर से यह प्रार्थना करता हू कि उस श्रेष्ठ वर मिल ताकि उसका जीवन असतोष में न बीते।

मा न क्या कहा ? इन्दिरा न बात का एकदम बदला।

तुम्ह आशीर्वाद दिया है। सुनदा तुम्हे बहुत याद करती है। उस तुम्हारे दशना की तीव्र लालसा है।

वह बडी भोली है। इन्दिरा ने अपने आपसे कहा।

गहरी मूकता छा गई।

दोनों अपन अपने विचारों में तन्मय थे। एकाएक नरोत्तम जान क्या सोचकर बोल उठा, इन्दिरा यदि अभी सुबोध आ जाए तो ?

इन्दिरा चिहुक उठी तुम बडे विचित्र हो जो वस्तु कल्पनातीत है उसे याद करके व्यथ का रोमाच क्यों किया करते हो ? अभी यह प्रश्न पूछ रहे हो, और थोड़ी देर बाद यह पूछोगे कि बताओ न इन्दिरा कि अगर म अभी मर जाता तो ?' वह छटपटा उठी मनुष्य भी कितना विचित्र स्वभाव का होता है। दुख न है तो उसकी कल्पना कर सता है सुख न मिल तो सुखद स्वप्नो में खो जाता है। पर इन सबसे

समय के अपव्यय के अलावा और क्या हो सकता है ?

नरोत्तम ज़रा भी उत्तेजित नहीं हुआ। साधारण स्वर में बोला निराधार कल्पना के सहारे उड़ना मेरा काम नहीं। मैने सुबोध को तुम्हारे घर देखा था।

क्या कहते हो ?

ठीक कहता हू और तुम्हारी मा ने उसका अपूर्व स्वागत किया था। मै भी उससे विशेष रूप से प्रभावित हुआ। कितनी शालीनता और सज्जनता थी उसके मुख पर।

इन्दिरा जल उठी। होंठ को काटती हुई बोली 'अब वह दुष्ट पुन मुझे प्राप्त करने की फिक्र में है पर मै उसको देखना भी नही चाहती। यदि वह मां को अपनी निर्दोषिता के कई प्रमाण देकर यहां आ भी जाए तो मै उसे धक्के मार कर निकाल दूगी। उत्तेजना के कारण उसके स्वर में कंपन आ गया था जो व्यक्ति सदा किसी न किसी रूप से अपने स्नेहभाजन को ठगता रहा हो उसे कैसे प्यार किया जा सकता है।

आखिर वह तुम्हारा स्वामी है। नरोत्तम ने सयत होकर कहा।

अब वह मेरा स्वामी नही है। मै उससे नाममात्र का रिश्ता भी रखना पसन्द नहीं करती। वह मेरा कोई नही है। वह क्रोध में निश्चल होकर बैठ गई।

नरोत्तम हस पड़ा। उसकी बमौके की हसी के कारण इन्दिरा काप उठी। झल्लाकर बोली मुझे तुम व्यर्थ ही क्यो सताते हो। मै उस व्यक्ति के कारण बहुत दुखी हूं। मेरा महत्वाकांक्षी जीवन नरक की ज्वालाओं में झुलस कर रह गया है और एक तुम हो जो मुझे बार-बार पीड़ा दिया करते हो कैसे निदय प्राणी हो ? वह फफक पड़ी।

मै इसलिए हसा कि उसने आत्महत्या कर ली। वह उसकी बात अनसुनी करके बोला।

किसने ?

सुबोध ने। वह तुरन्त बोला मै तुमसे मजाक कर रहा था कि तुम्हारे हृदय में उसके प्रति तनिक भी करुणा है या नही ?

उसने आत्महत्या कर ली ?

हा ।

'ग्रोह यह बहुत बुरा हुग्रा । उसने ग्रात्महत्या क्यो कर ली क्या उस सम्पूर्ण रूप से निराशा हो गई थी ? पत्नी से परित्यक्त पति ग्रन्त में ग्रपन पाप का प्राय श्चित्त इस प्रकार करते है ? वह भावातिरेक म ग्रागई नरोत्तम बाबु वह बहुत सरल हृदय था । यदि नारियो के प्रति उसकी वासना स्वतन्त्र न होता तो वह एक सफल गहस्थ बन सकता था । इन्दिरा की ग्राखें भर ग्राइ । लकिन उसका ग्रत मुझे उन परित्यक्ताग्रो की याद दिला रहा है जो पति से विलग हो जान के बाद इसी प्रकार ग्रपन पाप जीवन का ग्रत करती है । भगवान उसकी ग्रात्मा को शाति दे । ग्रौर उसने ग्रपनी ग्राखो के ग्रासुग्रों को पोंछना चाहा । तभी नरोत्तम हस पडा ।

'बात क्या है नरोत्तम बाबू ?

म तुम्हे पहचानने की कोशिश कर रहा था। सुबोध बाबू तो ग्राजकल घोर ग्ररण्य में ग्रघोर तपस्या कर रहे होग।

मुझे इस प्रकार का बहूदा मजाक पसद नहा है। वह चिढ गई।

न सही। उसने ग्रपन कन्ध बिचका दिए ग्रौर मुस्कराता हुग्रा चला ग्राया।

१४

उसके ठीक एक सप्ताह बाद जलती दोपहरी।

सुप्ति स्कूल से भागकर इमली के उस पड़ के पास गई जिसक बारे में कई बुढ़ियाग्रों न कह रखा था कि उसपर देवता का वास है। इन्दिरा का वहां स न जाना ग्रौर नरोत्तम का उससे हमशा की तरह मिलना ग्रब उस सह्य नही हो रहा था। उसे महसूस होता था कि नरोत्तम बाबू उसे बच्ची समझते ह ग्रौर उसकी बातो को हवा में रूई के गाल की तरह उड़ा देते हैं। इस बात की उसके मन में यह प्रतिक्रिया हुई कि वह दवी शक्ति द्वारा इन्दिरा को वहां स भगाने की कामना करने लगी।

उसने वृक्ष को तीन बार नमस्कार किया और ध्यानमग्न होकर इन्दिरा के वहाँ से तुरन्त चले जाने की कामना की।

वहाँ से उठकर वह सीधी वापस स्कूल आई।

इंदिरा बच्चों को पढ़ा रही थी। तृप्ति को देखकर बोली "कहाँ गई थी ?"

"नदी के पास।" वह कुछ देर चुप रहकर बोली।

"क्यों ?"

"एक काम था।"

"क्या काम था ? इस समय क्या डूबने गई थी ?" उसने तेज स्वर में डाटा। उसकी आंखों में क्रोध उभर आया था।

सब छात्र खिलखिलाकर हंस पड़े।

तृप्ति जल भुन गई।

"भविष्य में बिना पूछे कहीं भी नहीं जाओगी।" इन्दिरा ने मेज पर हाथ पटककर कहा "मेरी आज्ञा का उल्लंघन करोगी तो दुख पाओगी।"

"ठीक है।" और तृप्ति ने अपनी पोथी और स्लेट लेकर व्यग्रता से आंखों में आंसू भर कहा। "मुझे अब नहीं पढ़ना है नहीं पढ़ना है।" और वह तीर की तरह कक्षा से बाहर निकल गई।

सब देखते रहे।

इन्दिरा ने उसी समय श्रीमती सेन को बुलाकर कहा "आपको अपनी बेटी पर अधिक ध्यान देना चाहिए। आज दोपहर की जलती धूप में तृप्ति नदी की ओर गई थी। उस सुनसान बीहड़ में कहीं कुछ अनिष्ट हो गया तो बदनामी सबकी होगी।"

श्रीमती सेन ने भी दुख प्रकट करके कहा "पता नहीं यह छोकरी मानती क्यों नहीं ? छोकरी पर कभी किसी प्रकार का झूठा ही कलंक लग गया तो बड़ी मुश्किल होगी।"

"आप जरा उसे काबू में रखा कीजिए। अब वह नादान नहीं है और आज का जमाना बस जमाना ही है।"

श्रीमती सेन कुछ नहीं बोलीं।

इन्दिरा उसको सावधान करती हुई बोली 'इस समय लड़के और लड़कियों का हृदय भावना प्रधान अधिक हो रहा है। जब विचारों पर भावना का गहरा आवरण पड़ने लगता है तब प्राणी जरूर कोई न कोई गलती करता है। क्योंकि भावना की पिपासा सहज में शांत नहीं होती। यदि तृप्ति ने किसी लड़के में आकर्षण पा लिया है ।

बीच में ही श्रीमती सेन उतावली से बोली नहीं-नहीं वह इतना साहस नहीं कर सकती। आयु के लिहाज से वह बड़ी जरूर हो गई है पर है अभी वह बच्ची ही। म उसे समझा दूंगी आप चिंता न कीजिए।

इन्दिरा के चुप होने पर श्रीमती सेन कुछ देर तक वहीं खड़ी रही फिर वहां से इन्दिरा को बिना नमस्कार किए ही लौट आई। लगता था कि उसके मन पर किसीने भारी पत्थर रख दिया है।

तृप्ति घर में बिस्तरे पर पड़ी हुई थी। उसने अपनी आंखें बन्द कर रखी थीं। मां कब आई उसने ध्यान नहीं दिया।

श्रीमती सेन न उसे पुकारा तृप्ति !

तृप्ति ने कोई उत्तर नहीं दिया।

छोकरी क्या गूंगी हो गई है !

तृप्ति ने गुस्से में कहा 'क्या है ?

नग्न पर क्यों गई थी ?

प्रार्थना करने के लिए।

किसको प्रार्थना ?

इमली के पेड़ पर बने देवता को।

क्या ?

इन्दिरा दीदी की बुद्धि को ठीक करने के लिए।

'मतलब ?

मा तू नहीं जानती इन्दिरा दीदी ने अपने पति का छोड़ दिया है !

श्रीमती सन पर वज्रपात हो गया। विस्मय से आंखें फाड़कर वह बोली यह क्या कह रही है ? तून यह सब कहां सुना ?

अपने कानों से सुना इन्दिरा दीदी के मुह से सुना। उसने चलते हुए स्वर में होठ काटकर दृढ़ता से कहा।

चुप !' श्रीमती सेन ने उसे डांटा तू बिलकुल पगली है इस प्रकार का प्रलाप नही करना चाहिए।

तृप्ति ने सावधान होकर कहा म झूठ नहीं बोलती। इन्दिरा दीदी नरोत्तम दा का कह रही थी। और मा अब म उसके स्कूल नही जाऊगी। वह मुझे जरा भी अच्छी नहीं लगती। म सच कहती हू तुम्हें कि एक न एक दिन मेरा उससे झगड़ा हो जाएगा। म उसे पीट दूगी समभी। कहते-कहते उसकी आखें भर आईं।

मा को तृप्ति की यह उच्छखलता अच्छी नही लगी। उसने उसे डांट दिया और उसे चेतावनी दी कि भविष्य में वह इस प्रकार का प्रलाप करेगी तो मार खाएगी।

तृप्ति तिलमिला कर चली गई।

जब वह लौटी तब तक नल पर औरतें इस बात की चर्चा करने लग गई थीं हेडमास्टरनी ने अपने पति को छोड दिया है, वह हमारे बच्चों को क्या पढ़ाएगी ? और कुछ नही तो कम से कम लड़कियों को तलाक देना तो सिखला ही देगी। बड़ी कुलक्षणा है। बाबा रे बाबा कितना पाप धरती पर बढ़ गया है। इस प्रकार की बातों से वहा का वातावरण गर्म था।

सन्ध्या होते होते यह बात मर्दों के कानों तक पहुच गई। विचारणीय प्रश्न हो गया। कुछक ने आकर उसी समय नरोत्तम के कानों में यह अमृत उडेल दिया। नरोत्तम कुछ बोला नहीं। वह चिन्तित हो गया। वह विचारने लगा कि यह बात कौन फैला सकता है ? कभी-कभी अनुमान को प्रमाण बहुत जल्दी मिल जाता है। वह समझ गया कि हो न हो यह बात तृप्ति ने ही फलाई है। उस नादान लडकी के हृदय में इन्दिरा के प्रति घोर घृणा है, गहरा द्वेष है एक प्रतिद्वन्द्विता है।

खाना ठडा हो रहा था इसलिए वह खाना खाने बैठ गया।

भोजन से निवृत्त हुआ ही था कि तृप्ति स्वय आ गई। उसके हाथ में लिफाफा था। आकर बोली नरोत्तम दादा आपकी यह चिट्ठी !

ला।

किसके यहां स आई है ?

'घर से मां की है।

दोनों चुप हो गए। नरोत्तम चिट्ठी पढ़ने लगा । विशेष समाचार नहीं था। मा ने आशीर्वाद लिखा था तथा भाभी के लिए कुछ साड़िया भजने का अनुरोध किया था। तृप्ति वहीं खडी थी।

'तू अब यहा क्या खडी है ? उसन जरा तेज स्वर में पूछा।

यो ही। वह क्षण भर बाद बोली इन्दिरा दीदी के बारे म यहां बडी खराब चर्चा फली हुई है। लोग कहत है कि उसन अपन स्वामी को छोड दिया है।

'हां पर उसके स्वामी न भी उसपर कम अत्याचार नही किए। एक स्त्री कहा तक वे अत्याचार सहती ?' उसन पात्र का ध्यान बिना रख ही अपनी वकालत प्रारभ कर दी।

तृप्ति ने नाक भौं सिकोड़ी। आश्चर्यमिश्रित स्वर में बोली यहां के मनुष्य भी बड़ विचित्र है। कह रहे है कि एसी मास्टरनी स लड़किया पढ़कर अपने स्वामियो को केवल तलाक देना ही सीखेंगी।

खाक में जाए यहां की लड़कियां। जब उन्हें पढ़ना ही नहीं है, तब वह यहां क्यों रहेगी ?

तप्ति को मन ही मन बहुत आनन्द हुआ पर ऊपर से सन्तप्त स्वर में बोली इसका मतलब है कि इन्दिरा दीदी यहां से चली जाएगी ?

नरोत्तम न उत्तप्त स्वर म कहा और क्या ? इन मूर्खों क साथ भला कोई क्या रह सकता है ? खुद पाप के पुतल हैं और दूसरों में दोष ढूढते ह, छि ।

तप्ति न मन हा मन इमली के गाछ के देवता को प्रार्थना की और उसके पाच पैसा का प्रसाद भी बोल दिया।

नरोतम दा म चली। तृप्ति आखें मटकाकर बोली।

वह निरुत्तर रहा। तृप्ति चली गई—आनन्द का अतीव स्रोत अपन अन्तर में छिपाए कि इन्दिरा चली जाएगी तब वह और नरोत्तम दा

नरोत्तम सीधा इन्दिरा के यहां गया। इन्दिरा उद्विग्न-सी कमरे में टहल रही थी। उसके लोचनो में अश्रु थे। नरोत्तम के पांवों की आहट सुनते ही वह

बोली सुन ली यहां के सब मनुष्यों की बातें। वे मुझे कुलटा चरित्रहीन और निलज्ज कहते हैं। कहते हैं कि मैंने अपने स्वामी को छोड़ दिया।

मैं स्वयं चिंतित हूं इन्दिरा। वह दुख से बोला।

आप चिंतित रहिए, मैं अब एक पल भी यहां नहीं ठहर सकती। इन असभ्य अशिष्ट लोगों के बीच मेरी सांस घुट जाएगी। वह उत्तेजना से कांप रही थी।

इसमें इतना उत्तेजित होने की क्या बात है? नासमझ लोगों के बीच स्वयं को नासमझ नहीं बनना चाहिए। माना कि उन्होंने तुम्हें भला-बुरा कहा पर इससे तुरन्त ऐसा निर्णय कर बैठना जिससे समस्त जीवन अस्त-व्यस्त हो जाए कहां तक उचित है? नरोत्तम का स्वर भी तेज हो गया।

'उचित और अनुचित के विवेचन से कभी-कभी मनुष्य को तुरन्त छुटकारा पा जाना चाहिए। फिर हर बात में गंभीरतापूर्वक सोचना मुझे रुचिकर नहीं लगता।' वह पूर्ववत् स्वर में बोली 'परिणाम के सत्य से परिचित होकर मनुष्य को नेत्र बन्द करके नहीं बढ़ना चाहिए। यदि मैं अधिक देर तक यहां रुकूंगी तो तुम समझ लेना कि एक नई यूनियन मुझे पदच्युत करने के लिए बन जाएगी।

नरोत्तम परिणाम के भावी विस्फोट से परिचित था। वह अच्छी तरह समझता था कि अशिक्षा और धर्म के खूंखार पंजों में दबोचे हुए ये मजदूर व्यर्थ ही बवाल उत्पन्न करेंगे। फिर भी उसके मन की एक इच्छा उसे इसके लिए विवश कर रही थी कि वह इन्दिरा को रोके। इधर उसके और इन्दिरा के विचारों और बातचीत में भी काफी व्यवधान और कटुता उत्पन्न हो गई थी। इन्दिरा का उत्तेजित स्वभाव उसे कतई पसन्द नहीं था। लेकिन सामीप्य-सुख की एक स्पष्ट इच्छा उसमें अति सम्मोहन की भावना जगा रही थी।

आप चुप क्यों हैं? इन्दिरा ने उसकी विचारधारा को तोड़ा।

मैं चाहता हूं कि तुम दो दिन के लिए और ठहर जाओ। क्या पता ये लोग वास्तविक तथ्यों से परिचित होने पर शांत हो जाएं। अधिक अधीरता से सुफल की प्राप्ति नहीं होती।

मन को कभी भी दबाया दिया जा सकता है। इन्दिरा विगलित स्वर में बोली 'पर सत्य स्वयं कांटों की भांति चुभन पैदा करके अपना वास्तविक निष्कर्ष बतला

हो जाता है। उसकी मास्रें भर माइ हमार हिन्दू समाज का कसा विधान है? इस विधान में केवल नारीमात्र होना ही अभिशाप है। उसमें नारी की अत्याचार से मुक्ति का कोई अभिप्राय नही। मन अपने पति को छोड दिया, इसलिए मभ्रसे प्रत्यक व्यक्ति घृणा करता है। तुम्हे नही पता कि पति ने मुझे कितनी अमानुषिक यत्रणा दी थी? आखिर म आत्मघात करने के लिए तयार हो गई। लेकिन म आत्मघात नहीं कर सकी और मन मुक्ति का आह्वान कर लिया। यह मुक्ति अब मेरे भविष्य को नारकीय अधकार में बदल रही है। क्या यह अन्याय नही? यहां के मनुष्यों की सोचन की यह एकागी प्रवृति क्यो है?

नरोत्तम सभलकर बोला हम इस प्रवति को पलायन द्वारा परिवर्तित नहीं कर सकते। जिस वस्तु का आधार जड की तरह पृथ्वी के अन्तराल म समाहित हो जाता है उस हम एक झटके से निमूल नही कर सकते। वह समय मागता है। वह थूक गटककर उपदेशक की तरह बोला रही घृणा की बात म कहता हू घृणा मनुष्य क लिए सच्ची चेतावनी है। घृणा का पात्र ही बाद में सबसे प्रिय बनता है।

लकिन म घृणा को सह नही सकती। वह उतावली होकर बोली।

सहन का साहस उत्पन्न करना पडेगा। बिना इसके तुम्हारा जीवन नारकीय हो जाएगा। और उसने मन ही मन कहा म किसी भी तरह इसे यहां रखन की कोशिश करूगा।

उत्तर में इन्दिरा सिसक पडी।

नरोत्तम ने उसे सात्वना न देकर अपना निणय सुनाया तुम्हें दो दिन और रुकना पडगा इसपर यदि स्थिति विपाक्त रही तब तुम जो भी चाहो कर सना। वह बिलकुल उदास हो गया सुनन्दा का भविष्य अब तुम्हारे हाथ में है।

इन्दिरा का सिसकना बन्द नही हुआ। नरोत्तम चला आया।

क्वाटर में घुसने के पूव उस वही सगीतभरा मधुर स्वर तीखे व्यग्य के रूप में सुनाई पड़ा— आपनार माया पोका खयच!

उसन दृष्टि घुमाकर देखा अधकार के धुधलक में तृप्ति अपन ग्ना घुटनो पर सिर रखे बठी है।

दूसरे दिन स्कूल में अजीव मौन वातावरण की सृष्टि हो गई। छोटे-छोटे बच्चे इंदिरा को इतने कौतूहल से देखते थे जैसे वह किसी परियों के देश की परी हो और उसके सुनहले पंख हों। इन्दिरा ने गप्पू से पूछा, महात्मा गांधी कौन हैं?

गप्पू के अन्तस् की घृणा बोल उठी मानुस!

सब बच्चे खिलखिलाकर हँस पड़े। इन्दिरा का सम्मान तिलमिला उठा। वह झपटकर गप्पू के समीप आई और तड़तड़ाकर गप्पू के मुख पर दो-चार चाँटे जमा दिए।

कक्षा में घोर सन्नाटा छा गया। गप्पू के नेत्रों में सवा सेर आँसू भर आए। तभी उसे पीछे की पंक्ति में बैठे दो किशोर बालकों की बातचीत सुनाई पड़ी, 'बहुत निर्दय है।

गप्पू तो बड़ा अच्छा छोरा है।

इंदिरा ने तुरन्त दूसरे लड़के से यही प्रश्न किया। चूँकि गप्पू के गालों पर अंकित इन्दिरा की लाल अंगुलियाँ सभी को दिखाई पड़ रही थीं इसलिए वह लड़का बोला हमारे राष्ट्रपिता।

तुरन्त उसने गप्पू की ओर देखा। भोला और मासूम चेहरा। फूले हुए लाल गाल और उसपर चमकते हुए अश्रु बिंदु! इन्दिरा को लगा कि उसकी भयभीत दृष्टि कह रही है कि जिसने अपने पति को त्याग दिया है जिसका अपना कोई बच्चा नहीं है वह भला दूसरों के बच्चों को क्या प्यार करेगी?

इंदिरा वहाँ से आकर कुर्सी पर सिर पकड़कर बैठ गई। उसने विवश होकर एक बार उन बच्चों को देखा जो कल तक उसे स्नेह और ममता की देवी समझकर उसके आँचल से क्षणभर भी दूर होना नहीं चाहते थे पर आज वे उसे घृणा की गहरी भावना से देख रहे हैं। कुछ बच्चियों के मन में और आँखों में भय साकार होकर नाच उठा हो ऐसा उनके जड़ हुए शरीरों से लगता था।

विचारों के संघर्ष में अब उसका अधिक देर तक रुकना असम्भव-सा हो गया

था। उस नगा कि केवल ये बच्चे ही नहीं अपितु यहा क जड़-चेतन सभी पदार्थ उससे घृणा करते हैं। वह बच्चो को बिना कुछ कहे, कक्षा से बाहर हो गई। उसका बाहर जाना था कि बच्चो न ज़ोर ज़ोर से हो हो करके चिल्लाना शुरू कर दिया। कुछेक कुर्सियो पर नाचने भी लगे। उनकी यह भावना इन्दिरा को इस रूप म समझ में आई कि उसक बाहर निकलते ही उनकी घृणा विजयोल्लास के रूप में प्रकट हो गई है।

वह पराजित व्यक्ति को भाति तड़प उठी। उसी पाव भीतर लौटी। चुप रहो, चुप रहो वह ने वार मार्मिक स्वर में चीखी। बच्चे तुरन्त अपने अपने स्थान पर व्यवस्थित बठ गए। इस तरह का गहरा मौन उन सबने धारण किया जस उनकी कक्षा में कोई है ही नहीं। वे बहुत ही सरल और सीधे बच्चे हैं।

उसने एक वार भूखी दृष्टि से उन तमाम बच्चो को देखा। कुछ बच्चे अब तक स्लेटें निकाल निकालकर लिखने भी लग गए थ, कुछ उसे कौतूहल भरी दृष्टि स देख रहे थे और कुछक की आखो में वही घृणा की भावना थी जो इन्दिरा को मर्मान्तिक व्यथा पहुचा रही थी।

वह विक्षुब्ध-सी बाहर निकली। इस बार बच्चे शात रहे। वह सीधे अपने कमरे में आ गई। आकर उसने इस्तीफा लिखा और मनजर साहब को पहुचा आई।

नरोत्तम इन्दिरा की प्रतीक्षा कर रहा था।

इन्दिरा के आते ही नरोत्तम न कहा घृणा की भावना सबसे गहरी भावना होती है। इससे मुक्ति सहज रूप से नहीं मिल सकती।

म त्याग-पत्र दे आई हू। इन्दिरा न उसकी ओर बिना देखे ही कहा म आपसे पहले ही कह चुकी थी कि वातावरण विषाक्त होगा मुझे पीड़ा देगा, मुझे उलाहना देगा पर आप नहीं मान।

नरोत्तम का उन्मन आनन राहु-ग्रस्त सूर्य की भाति निस्तेज हो गया।

यहा के बड़े-बड़े तो क्या बच्चे भी मुझसे घृणा करने लग हैं। वे मुझे जू में से आई हुई कोई विचित्र चिड़िया समझते हैं। नरोत्तम बाबू मैं आज हा चली

जाऊंगी। अब मेरा यहां पर एक पल भी ठहरना पीड़ादायक हो रहा है।'

जसी तुम्हारी मर्जी। पर मन यहां के लोगों को इतना वाहियात नहीं समझा था कि वे सत्य को भी अस्वीकार करेंगे। जिनके प्रति मेरी गहरी आत्मीयता जीवन में सम्बल के रूप में रही वे ही व्यक्ति मुझे स्पष्ट शब्दों में यह कहेंगे कि देखिए नरोत्तम बाबू इस प्रकार की एक मास्टरनी का इन बच्चों के मस्तिष्क पर क्या प्रभाव पड़गा ' क्या उनमें भी सहज नारी स्वभाव के प्रतिकूल एक उद्दडता एव उच्छखलता नही जन्मेगी ? फिर इन बच्चों को भी चन कहां ? वे दिन भर इस मास्टरनी को चर्चा करत रहते ह। उन्हें इस नारी के प्रति अपार कौतूहल है कि वह अपने पति को छोडकर कितनी शात और आनदित है।

नरोत्तम ने एक सास लकर कहा मन उन्ह समझाया कि इसमें इन्दिरा देवी का कोई दोष नही है। उनके पति ने स्वय उन्हें छोड़ा है। पर ये कहा मानन वाल ह ? कह उठे कि आप न्यय की वकालत कर रहे ह। एक वेद्र्दे न मुझे यहा तक कह दिया कि हम किसी भी शर्त में उसे यहा रखने को तयार नही है। हम चाहते हैं कि हमारी बटिया सावित्री और सीता बनें न कि तलाक देने वाली पश्चिमी तितलिया। और तो और वह गुण्डा सानिग है न उसने कहा कि भला नरोत्तम बाबू उसे क्याकर हटाएगे। वे भी रात के म घरे तक वहां रहत ह न ? अब तुम्हीं बताओ म तुम्हें एसी विषम परिस्थिति में यहां रहने के लिए कसे कह सकता हू ? नरोत्तम न अपराधी की तरह सिर झुका लिया।

मन इसलिए आपको पहले ही कहा था कि मुझे जान दीजिए। आप नहीं माने। आप मुझ एक बदनाम स्त्री के रूप में देखना चाहते थे सो देख लिया।

आक्षप स्पष्ट शब्दो में था। नरोत्तम के हृदय पर उससे आघात लगा। वह बोला यदि सुनन्दा का स्थान' ।

आप बार-बार सुनदा का नाम लकर मुझे पीडा क्यों पहुचा रहे ह ? समझ में नही आता कि आप किस मिट्टी के गढ़ हुए ह। मुझपर तरह-तरह के आरोप और लाछन लगने पर भी आप मुझे स्पष्ट शब्दों में यह नही कहत कि म यहां से चली जाऊ। अब भी आप अगर-मगर और किंतु-परन्तु में लग हुए ह। पता नहीं आपका मरे यहां रहन में कौन-सा स्वार्थ सिद्ध होगा ? वह नागिन की तरह

भड़क उठी।

म केवल तुम लागों की मार्थिक स्थिति का सुधारने के लिए ।

बीच में बोल पड़ी इन्दिरा परमाथ कर रहे है पर मुझे उस परमाथ की जरा भी चाह नहीं जा मुझे असामाजिक अकुलीनता के लाख तीरा स बध कर माहत कर द और बाद में कह कि ने अब स्वादिष्ट भोजन खा अब इस प्रतिष्ठा के पद पर आसीन हो।

म कभी-कभी यह सोचता हू कि आखिर यह रहस्य प्रकट कस हो गया ? अपनी दृष्टि को दूसरी ओर घुमाते हुए उसन कहा।

आपन ही कहा होगा। वह चीखकर बोली।

तुम अपन आप से बाहर हो रही हो। मेरा इस प्रकटीकरण पर कौन-सा स्वाथ सिद्ध हो सकता है। वह गुस्से में भर उठा।

अपन महत्त्व को मुझपर और अधिक आरोपित करन के लिए तुम मुझ हीन साबित करना चाहत हो ? उसन जलती आंखा से उस दखा।

'तुम बड़ी । वह एकदम गुस्से में भरकर चुप हो गया। उसका बदन कापने लगा।

म शाम की गाड़ी से जा रही हू। उसन निर्णीत स्वर में कहा।

ठीक है। उसने लापरवाही से उत्तर दिया।

नरात्तम वहा से लौट आया। अपन क्वाटर में आकर वह उद्विग्न-सा चहल कदमी करन लगा। एकाएक उसे तृप्ति' की स्मृति हो आई। वह क्या बार-बार यह पूछा करती है कि मास्टरजी यहां स कब तक जाएगो ?

तब वह छाया ? नदी के किनारे की छाया ! ओह ! तप्ति न नारी की ईर्ष्या स जलकर यह सब अनिष्ट कर दिया है। तप्ति तृप्ति तृप्ति ! यह शब्द उसके मस्तिष्क में भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रकट होकर छाने लगा। वह विचित्र अनुभूतियाँ स सिहरनमय होकर बिस्तरे पर पड़ गया।

पड़ा सो पडा ही रहा।

नरोत्तम बाबू ! बाहर स इ दिरा की आवाज आई।

उसन उठकर द्वार खोला।

इन्दिरा के चेहरे पर आवेगपूर्ण रेखाएं थीं। उसने माणाभरे स्वर में दृढ़ता से कहा मुझे कुछ रुपए चाहिए बाद म लौटा दूगी।

नरोत्तम ने उसकी आज्ञा का पालन किया। उसन कुछ रुपए निकालकर उसके सामने रख दिए। इन्दिरा न उसमें से कुछ उठाकर कहा पचास ल रही हूं। जरूरत हो तो और ल लो।

बस। वह शान्तिपूर्वक वहा बठ गई आज ही म जा रही हू।

स्थिति एसी बदल चुकी है कि अब म आग्रह करते हुए भी डर रहा हूं। लकिन सुनदा का ख्याल मुझे बार-बार आता है। मैं उसके भोले मुख को कदापि नही भूल सकता। न मालूम उसे याद करके म क्यों करुणा से आप्लावित हो जाता हूं।

वह करुणा की पात्रा ही है। अभावों ने उसके मुख के ओज को छीनकर उस पर करुणा के अमिट भाव अंकित कर दिए ह। फिर एक गरीब की बिटिया पर दया के सिवाय और प्रकट भी क्या किया जा सकता है? कोई उसका सम्मान थोड़े ही करेगा?

नहीं एसी बात नही है। स्नेह में सदा करुणा का समावेश रहता है और अपने से छोटे सदा स्नेह के भाजन ही होते है।

अच्छा अब म चली। उसने बात के सिलसिले को तोड़ दिया।

इन्दिरा मुझे पत्र लिखा करोगी?

क्यों नहीं यदि आपने भी मुझे इस प्रकार ग़लत नही समझा है, तो!

क्या?

कि मने अपने पति के साथ कठोरता का व्यवहार किया।

नहीं म तुम्हें एसा नहीं समझूगा। फिर भी तुम्ह यदि सुबोध मिल जाए तो उसे अपनाने का।

उसने घृणा से थूक दिया म उस नारकीय मनुष्य का स्पर्श भी पसन्द नहीं करती और तुम स्वयं कितने निर्दयी हो कि बार-बार उस प्राणी का नाम लेते हो जिसके कारण मेरा यह महान जीवन कटकमय हो गया है। मेरी सभी अभिलाषाओं को जिसने प्रतारणाओं की प्राचीर में अवरुद्ध कर दिया है म उसके साथ कदापि समझौता नहीं कर सकती। यदि अब की बार तुमने उसकी चर्चा चलाई

तो मेरा तुमसे भी सम्बन्ध समाप्त हो जाएगा। सुबोध के नाम के स्मरण मात्र से मरा अग अग जल उठता है। ओह कितना निदय मनुष्य है! अच्छा नमस्कार। वह रुपया सभालती हुई बाहर चली गई।

नरोत्तम खड़ा-खड़ा सोचता रहा। आज उसके समीप के बन्धन टूट रहे हैं पर मन के बन्धन कसे टूटेंग? क्या यह इन्हे तोडन में सफल हो सकेगा? आज इन्दिरा जा रही है उससे दूर न जाने वह कितनी दूर जाएगी? कदाचित वह कहीं किसी एसी अनाव जगह चली जाएगी जहा उसके मन को सम्पूण रूप स तप्ति मिले पर जहां दूसरा न पहुच सके। सुबोध माता-पिता भाई-बन्धु कुटुम्ब सभी को वह छोड सकती है? कितनी घातक और भयानक प्रवृत्ति है उसकी! नारी की कोम लता और गम्भीरता उसमें निचितमात्र भी नही। मन के पर्दे एकाएक उड चले। वह सोच बठा यह राजिया की भाभी से क्या कम है? उसने अपन दवर को मरवा दिया और इसन अपन पति को मृतक समान कर दिया। पर एक दिन म उस घटना स आतकित होकर घर छोड आया था। सभी औरतों के बारे में मेरे मन में अजीब ख्याल उत्पन्न हो गए थ पर आज इस इन्दिरा से मेरे मन के बन्धन अटूटता की ओर क्यों बढ़ रहे हैं? कहीं मेरे अवचेतन मानस में प्यार। वह इस तरह चौंका जसे उसने बहुत बड़ी गलती कर दी हो। उसने अपना सिर पकड लिया। वह इन्दिरा जैसी स्त्री से कभी भी प्यार नही कर सकता। कभी प्यार नहीं कर सकता। क्योकि यह दुष्ट और अस्थिर चित्त की स्त्री कभी भी किसीको सुख नही दे सकती। फिर वह उससे अपन सारे सम्बन्ध तोड़ क्यों नहीं देता। कहीं भावुकता के बहाव में उसने उससे कुछ आतरिक या बाह्य अनुबन्ध करा लिए तो? मनुष्य की जघन्यता जाग रही है। तब वह भय क मारे उसे नही भी न कर सकेगा।—उसन एक पल रुककर दृढ़ता से अपन आपस कहा अब भय कसा उस समय मुझे सासारिक ज्ञान बहुत कम था इसलिए म घर से भाग आया वर्ना आज म राजिया की भाभी को पुलिस के हवाले नहीं करवा देता? तब बचारी तारणी? पर यह क्यों मुझे आज एकाएक याद हो आई? उसन अपन आपको डाटा। न सूरत का पता न स्वभाव की पहचान न मालूम कसी होगी? पर है जरूर पतिव्रता अभी स अखड कौमार्य व्रत धारण कर रखा है उसने। कहती है—यदि

वह बच्चो को सुधार देती ।

छि छि छि ! वह बच्चो को खाक सुधार देती ? मैं कहती हूं कि पति को छोड़ने वाली कुलक्षणा स्त्री सब छोकरियो को तलाक देना सिखला देती । उसके स्वर में घृणा थी ।

तू उससे बहुत जलता है ।

हा नहीं-नहीं म भला उसस क्या जलती ? वह संभलकर वाली वह सच मुच दया की पात्रा थी आपको उस रोकना चाहिए था ।

ठीक है । वह बिगड़कर बोला म मुनीम जी के घर खाना खाने जाऊगा ।

तृप्ति वहां स उछलती-कूदती भाग खडी हुई ।

नरोत्तम के मन में साया हुआ प्यार तृप्ति और इन्दिरा के चारो ओर चक्कर लगाने लगा ।

क्वाटर के सामन आते ही उसने दखा कि तृप्ति ने अपने घर के आगे कूड़ा का ढेर कर रखा है ।

उसन रोहिणी को पुकारा ।

रोहिणी घूघट सरकाती हुई बाहर आई क्या बात है नरोत्तम दा इन्दिरा दीदी को अपप ही जाना पडा । यहां के लोग बड बोके (मूर्ख) है ।

जो हाना था वह हो गया । उसने बात को वहीं खत्म करन के ख्याल स कहा बच्चाव तप्ति कहां है ?

भीतर ।'

पुकारा तो ?

'तप्ति ! ओ तृप्ति ।

क्या है भाभी ? तप्ति न आकर पूछा ।

यह म बताता हू यह कूड़ा यहा पर क्यो फेंका ? तुम अपना शरारत से बाज़ नहीं आओगी ?

इसमें शरारत की क्या बात है, एसे सफाई पसद हैं तो एक डम यहां भी रखवा दीजिए । मुझस वहा नहीं ले जाया जाता ।

क्यों तू कौन-सी राजा का पुत्री है ?

'म ? वह हस पडी म सम्राट-सुपुत्री हू ।

बडी ढीठ है । रोहिणी न मुस्कराकर कहा ।

तुम तो ऐसा ही कहोगी !

क्यों ?

तुम्हारे दादा है न ? तुम्हें साडी लाकर देते है न ?

बीच में बोल पडा नरोत्तम तुममें जलन बहुत है तृप्ति।

म बताऊ आपको इन्दिरा दीदी के जाने की खुशी सबसे अधिक इसे ही है या नही क्या ? रोहिणी कह उठी ।

नरोत्तम न इस बातो का उत्तर जानते हुए भी नहीं दिया । उसे एकाएक तृप्ति पर गुस्सा आ गया । लकिन उसे गुस्से को पी जाना पडा ।

वह हठात् वहां स चल पडा यह कहते हुए, 'तृप्ति के कारण उस बचारी को घर स जाना पड़ा ।

रोहिणी यह सुनकर स्तब्ध रह गई ।

दूसरे दिन एक युवक तृप्ति को देखने आया । तृप्ति उसे पसद आ गई । उसने तृप्ति को अच्छी उपमाओं से विभूषित भी किया । लकिन दहेज को लकर बात आगे नही बढ़ी ।

तृप्ति को इससे रज हुआ ।

वह नरोत्तम से बोली जब वह चला गया तब बाबा रो पड़ थ ।

जवान बेटी जब घर में होती है तो हरएक पिता का ऐसी ही हालत हो जाती है । नरोत्तम ने दार्शनिक सहज में कहा ।

नरोत्तम दा तुमसे एक बात पूछू ?

' हा !

तुम्हारा खाना म बना दिया करू ?

क्या ?

यो ही ?

'नहीं भाई नहीं ! मुझे यहां अब कुछ दिन ही रहना है।

तृप्ति चुप हो गई। एकाएक वह विगलित स्वर में फिर बोली नरोत्तम दा तुमने विवाह कर लिया ?

'नहीं।

फिर करते क्या नहीं ?

योंही।

क्या तुम भी दहेज लोगे ?

नहीं।

तुम बड़े अच्छे हो और तुम्हारे यहां की लड़कियां भी बड़ी सौभाग्यशालिनी हैं कि उनका विवाह तुरन्त हो जाता है। उसका स्वर आर्द्र था।

फिर वह उदास हो गई।

नरोत्तम ने कहा एक बात पूछूं।

तृप्ति ने अपनी दृष्टि उसपर जमा दी।

इन्दिरा के बारे में तुमने ऐसी चर्चा क्यों फैलाई ?

तब कहूं नरोत्तम दा यह मुझे जरा भी अच्छी नहीं लगती थी। मुझे लगता था कि वह मुझसे और हमारे परिवार से हमारे नरोत्तम दा को छीन रही है। बाप भी सुबह शाम उसके पास ही रहते थे। इसलिए मैंने काली मां से और इमली के गाछ पर बसने वाले देवता से प्रार्थना की थी कि उसे यहां से जल्दी से रवाना कर दे। उन्होंने उसे भगाने में मेरा भी योग चाहा। मैंने यह बात सबको कह दी।

उसका सिर अपराधी की भांति झुका हुआ था।

किसीका अपकार नहीं करना चाहिए तृप्ति।

मैं कहां करती हूं ? मैं हरएक को पूजना चाहती हूं। पर दुर्भाग्य मेरा भी साथ नहीं छोड़ता। उसने स्वर को दबाकर कहा।

अब तुम जाओ।

'मैं थोड़ी देर और बैठूंगी।

क्यों ?

तृप्ति ने प्यार से भीगी हुई दृष्टि नरोत्तम पर डाली। नरोत्तम को उस दृष्टि

में अमृत की वे बूदें दृष्टिगोचर हुई जिनमे यौवन मधुर स्वप्न और अनत अभि नापाए कृतार्थ भर रहे हो और वे जो बूदें युग-युगान्तर नारी के नत्रो से छलकती रहेंगी छलकती रहगी।

१७

दो मास के बाद।

मन के बन्धन का तन से क्या वास्ता ?

इन्दिरा के प्रति नरोत्तम का जिज्ञासाभरा मन कम्प उठा। तृप्ति की भावनाओं में जो मौन प्रम निमत्रण था वह नरोत्तम के मन में बार-बार करुणा का उद्रक बनकर प्रस्फुटित होता था। कभी-कभी वह सोचता जरूर था कि तृप्ति उसे प्यार करती है उसके परिचितो में सबस निर्दोष युवती भी वही है पर उसका बाप ! तब वह अपने आपपर झुझला उठता था कि उस प्रत्यक्ष सम्बन्ध को इसी दृष्टिकोण से नही सोचना चाहिए।

इधर तृप्ति उसका घर साफ करने लगी थी। उसकी प्रत्येक गड़बड़ी को मिटा रही थी। उसके सुख को अपना सुख और उसके दुख को अपना दुख मान रही थी पर यह सब मौन बनकर। जहातक बातचीत का सिलसिला है वही नपी-तुली बातें ! आप चाय पीएग ? आपको वह चीज ला दू ? नरोत्तम दा आप विवाह क्यों नहीं करते ? कोई अच्छी लड़की ढूढिए न म बताऊ नरोत्तम दा आप कृष्णा दीदी से ब्याह कर लीजिए। बचारी ३५ वष की हो रही है कोई भी उसस शादी नही करता। वह आपको खूब प्यार करेगी।

उपहास हसी और खिलखिलाहट।

इस बीच नरोत्तम दो बार कलकत्ता हो आया था।

मुनवा की शादी की बातचीत आग नही बढ़ी। चक्रवर्ती बड़ा परेशान था। कुछ दिना बाद ही इन्दिरा रामी के साथ रहन लगी थी। उसन रोमी को राम बना लिया था। और बचारा रोमी ?

इंदिरा न नरोत्तम को बताया था—जब म पहली बार उस दीन मनुष्य से

मिली तब वह मलरिया का रोगी था। वह इतना थक गया था कि उसका भारपद तन केवल कङ्काल मात्र रह गया था। उसके गालों की हड्डियां उभर आई थीं। उसके नत्र गहरे गड्ढे मात्र बन गए थे। आंखों में तृष्णा की अजीब ललक थी। मनुष्य की इस दशा पर इन्दिरा का हृदय पसीज गया।—

मने रुद्ध कठ स कहा रोमी तुम्हे क्या हो गया ?

रोमी कुछ देर तक मेरे हाथ को अपने हाथ में लेकर जड-सा उस अनत अम्बर की ओर देखता रहा जहा एक अदृश्य शक्ति वास करती है। तब वह धीरे-धीरे बोला म जानता हू कि ईसा प्रभु पतित से पतित प्राणी को अपनी शरण में ल लता है पर मुझे नहीं लगा। वह मुझे अपने बुरे कर्मों का दण्ड दे रहा है। देखो न इन्दिरा इतनी दीन अवस्था में कौन प्राणी जीने की लालसा रखगा ? इस पर कभी-कभी मुझपर कोई जबरन दया कर देता है तो वह दया और पीडाजनक हो जाती है। एक कुत्ता है बीमार है दद के मारे चिल्ला रहा है एक आदमी सोचता है कि निरीह जीव तड़प रहा है इसका उपचार कर दूं और वह इच्छा रहित होकर भी उसकी सेवा करता है। लकिन उस सेवा का क्या अर्थ हो सकता है। सिफ इतना ही कि बचारा तडप रहा है। इस बीच मुझे एक पादरी मिला। उसने भी मेरे स्वास्थ्य की कामना प्रभु से की थी पर इन सभी कामो मे मुझे आदमी की आत्मा का सत्य नहीं मिला। वह एक विवशताजनित कतव्य था जिसे वह पादरी पूरा करता था और हम सब करते रहते ह। कहा आदमी को करुणा महम् स रहित करके सर्वोपरि बनाती थी और कहा कतव्य बचारे को विवश कर कुछ कराता है।

इन्दिरा न उसे बताया मुझ रोमी ने दुख में बड़ा सम्बल दिया था। मेरे दुख को उसने अपना दुख समझा था। मुझ लगा कि इस व्यक्ति को किसीकी सच्ची सहानुभूति चाहिए और मन उसे दी। उपकार का बदला प्रत्युपकार में हो जाएगा। देखो न वह मेरी सहानुभूति स राम की भाति तेजस्वी हो गया है।

और सुनदा ? नरोत्तम न प्रश्न किया था।

उसके लिए म प्राणप्रण स प्रयत्न करूंगी। सम्पत्ति एकत्र करके उसका विवाह कराऊंगी।

पर इससे तुम्हारी सामाजिक प्रतिष्ठा पर आघात लगगा।

यह समाज सुख को सहन नहीं कर सकता। नारी यहां दीपक की वाती है। जल तो लोग जब चाहे स्नेह से वंचित कर दें और न जाने ता निकालकर फेंक द। मने सोचा था कि अब म सात्विक जीवन व्यतीत करूंगी पर इस समाज न कहां करन दिया। तब म उस व्यक्ति की चाह पूर्ण क्यों न करूं, जो मेरे बिना अपने आपको अपूर्ण समझता है।

विचारों के मारे वह उद्भ्रान्त हो गया। उसके ललाट पर कई स्वेद कण उभर आए।

जीवन बड़ा विचित्र है। कभी-कभी यहां का सत्य कल्पना स भी आगे बढ़ जाता है। मानव सहजता स उसपर विश्वास नहीं करता। नरोत्तम न अपने आप स कहा।

तभी उसन एकदम निश्चय किया कि वह कलकत्ता जाएगा। इन्दिरा से मिले हुए उसे काफी दिन हो गए हैं। अभी दस दिन पूर्व उसका पत्र आया था कि रोगी अब पूर्ण स्वस्थ है। अब उसका भविष्य स्वर्णिम किरणों की तरह मनोहर और निरभ्र नभ की तरह दिन प्रति दिन सुषमामय होगा।

मनुष्य कितना स्वप्नशील होता है। आकाश-कुसुम की कामना की स्वप्निल मादकता में वह जीवन के शीर्ण पक्षों को अनंत की ओर उड़ाता ही चलता है।

उड़ और खूब उड़। उड़ना ही उसकी सार्थकता है।

इंदिरा इस उड़न की क्रिया पर ही विश्वास रखती है।

पर नरोत्तम जसे-जसे इन्दिरा से विमुख विलग होन की कोशिश करता जा रहा था वसे-वसे वह उसके बंधन में और बंध रहा था। आदमी अपनी मानसिक क्रियाओं का कितना दास है! अंतस्तल के गुह्य प्रदेश में प्रश्रय पाने वाली इच्छाएं धीरे-धीरे मनुष्य की निर्देशिका बन जाती ह। नरोत्तम का इधर इन्दिरा के प्रति कोई विशेष आकर्षण नहीं था। लकिन उसका रोमी स सम्बन्ध हो जाना नरोत्तम के लिए एक पराजयजनित अटूट घृणित सम्बन्ध बन गया था। नरोत्तम बार-बार इन्दिरा स मिलन के लिए विवश हो जाता था। अपन मन की कोई योजना कोई प्रसन्नता और कोई मन्तव्य उसे इन्दिरा को सुनाए बिना अपूर्ण और निरुद्देश्य लगता था। चाह व इन्दिरा को दुख ही क्यों न पहुंचाते हों?

अन्त में वह तीसरी बार कलकत्ता आया।

जब वह आ रहा था तब तृप्ति ने बड़ी चपलता से उसे कहा था नरोत्तम दा आप वापस आए न तब मेरे लिए एक साडी लाना ठीक वसी हो जसी उस दिन वह नूतन वधू पहन हुए थी।

और पसे ? उसन उपहास से पूछा।

य रहे। उसन अपनी मुट्ठी के लगभग दस रुपए उसके सामने फला दिए।

नरोत्तम न कोमल स्वर म कहा अच्छा म तुम्हारे लिए साड़ी ले आऊगा, इन पैसों को सभाल कर रखना तुम्हारे विवाह में काम आएगे।

वह शर्मा गई। कुछ बोली नही। पर उसकी पलका की ओट में जो अदम्य अतृप्ति करुणा के रूप में झलक रही थी उसे नरोत्तम पल भर के लिए भी नही भूल सका।

कलकत्ता आकर वह सीधा वलेजली स्क्वायर की ओर रवाना हुआ। इन्दिरा वहीं रहती थी।

जब वह अटची लकर टक्सी स वहां उतरा तब रोमी हाथ में एक थला लिए हुए बाहर जा रहा था। बीमारी के कारण वह काफी दुबल हो गया था। उसके वस्त्र भी अत्यन्त साधारण थे। बिना क्रीज की खाकी पट और सफद कमीज जो गदन की कॉलर स भरा हो गया था। जूता की हालत स भली भांति जाना जा सकता था कि यदि बरसात हो जाए तो पानी उसके तलुवा के बांध को तोड़कर अवश्य भीतर आ जाए। उसने तुरन्त उड़ती दृष्टि स उसे देखा। मन ही मन कह उठा हमारा भविष्य दिन प्रति दिन स्वर्णिम और सुखमामय होगा। रोमी न उत्साह से कहा हलो मिस्टर नरोत्तम ?

हलो हम आए और आप जा रहे हैं गया भी क्या है ?

बिजनस इज बिजनस। उसने अपने थल की ओर सकेत किया म बारह एक बज तक लौट आऊगा।

अच्छा गुडलक!

थक्यू। रोमी चला गया।

इन्दिरा न उसकी भावाज को पहचान लिया था । भगवानी के लिए नीचे भाई। उसे देखकर नरोत्तम को धक्का-सा लगा । बदली स घिरा हुआ सूर्य जिस तरह निस्तेज हो जाता है, उसी तरह इन्दिरा का मुख इधर मलीन हो गया था । फिर भी वह उत्साह से बोली कब भाए नरोत्तम बाबू ?

अभी ही।

आइए।

वे दोनों ऊपर चल आए। नरोत्तम चाय पीकर दनिक कायक्रम स निवृत्त होने चला गया। वहा से आकर वह कुछ देर तक मौन ही रहा क्योंकि इन्दिरा न किसी प्रकार की चर्चा नहीं चलाई। अंत में नरोत्तम को ही मौन भग करना पड़ा रोमी आजकल विजनेस में बड़ा व्यस्त है।

'हा जीवन निर्वाह के लिए कुछ न कुछ करना ही पड़ता है। हम लोग निठल्ल बठ भी कैसे सकते है ?

'तुमने भी कहीं सर्विस ज्वाइन कर ली क्या ?

नहीं कई जगह अप्लाई कर रखी है।'

वसे रोमी न विजनस किस वस्तु का किया है ?

स्याही का। उसने एक ऐसी स्याही का अन्वेषण किया है जिसे आप किसी भी तरह मिटा नहीं सकते और न उसपर पानी का कोई प्रभाव ही होता है।

तब तो खूब चलता होगा तुम्हारा विजनस ?'

कहा ?

क्यों ?

बचारा रोमी घर घर घूमकर अपनी स्याही का प्रचार करता है। शाम तक तीन चार रुपए कमा लाता है। वह स्नहसिक्त स्वर में बोली यदि इस बार म नहीं होती तो वह इस असार संसार से चला जाता।

नरोत्तम उस वक्रोक्ति कहना नहीं चाहता था पर उससे कहे बिना रहा भी नहीं गया। मिथ्या की तीव्र उत्कंठा के साथ-साथ इन्दिरा का रक्तमत्त्व द्वारा पीड़ा पहचान में उस बड़ा आनन्द आता था। वह उसी उदासी म साथ बोल पड़ा तुम्ह भी प्रीति दूसरे के लिए पावक हो गई। बचारा सुनन्द !

अन्त में वह तीसरी बार कलकत्ता आया।

जब वह आ रहा था तब तृप्ति ने बड़ी चचलता से उसे कहा था नरोत्तम दा आप वापस आए न तब मेरे लिए एक साड़ी लाना ठीक वैसी हो जैसी उस दिन वह नूतन वधू पहन हुए थी।

और पैसे? उसने उपहास से पूछा।

य रहे। उसने अपनी मुट्ठी के लगभग दस रुपए उसके सामने फैला दिए।

नरोत्तम न कोमल स्वर म कहा अच्छा म तुम्हारे लिए साड़ी ले आऊंगा इन पैसों को सभाल कर रखना तुम्हारे विवाह में काम आएग।

वह शर्मा गई। कुछ बोली नहीं। पर उसकी पलकों की ओट में जो अदम्य अतृप्ति करुणा के रूप में झाक रही थी उसे नरोत्तम पल भर के लिए भी नहीं भूल सका।

कलकत्ता आकर वह सीधा वलेजली स्क्वायर की ओर रवाना हुआ। इंदिरा वहीं रहती थी।

जब वह खटवी लम्बर टक्सी से वहां उतरा तब रोमी हाथ में एक थला लिए हुए बाहर जा रहा था। बीमारी के कारण वह काफी दुबल हो गया था। उसके वस्त्र भी अत्यन्त साधारण थ। बिना क्रीज की खाकी पट और सफद कमीज जो गदन की कॉलर से मला हो गया था। जूतों की हालत स भली भांति जाना जा सकता था कि यदि बरसात हो जाए तो पानी उसके तलुवों के बांध को तोड़कर अवश्य भीतर आ जाए। उसने तुरन्त उड़ती दृष्टि स उसे देखा। मन ही मन कह उठा हमारा भविष्य दिन प्रति दिन स्वर्णिम और सुखमामय होगा। रोमी न उत्साह से कहा हलो मिस्टर नरोत्तम?

हलो हम आए और आप जा रहे हैं ऐसा भी क्या है?

बिजनस इज बिजनस। उसन अपने थैले की ओर सकेत किया 'म बारह एक बजे तक लौट आऊंगा।

अच्छा गुडलक!

थक्यू। रोमी चला गया।

इन्दिरा ने उसकी आवाज़ को पहचान लिया था। अगवानी के लिए नीचे आई। उसे देखकर नरोत्तम को धक्का-सा लगा। बदली से घिरा हुआ सूर्य जिस तरह निस्तेज हो जाता है वैसे तरह इन्दिरा का मुख इधर मलीन हो गया था। फिर भी वह उत्साह से बोली 'कब आए नरोत्तम बाबू ?'

अभी ही।

आइए।

वे दोनों ऊपर चले आए। नरोत्तम चाय पीकर दैनिक कार्यक्रम से निवृत्त होने चला गया। वहां से आकर वह कुछ देर तक मौन ही रहा क्योंकि इन्दिरा ने किसी प्रकार की चर्चा नहीं चलाई। अंत में नरोत्तम को ही मौन भंग करना पड़ा रोमी आजकल बिजनेस में बड़ा व्यस्त है।

'हां, जीवन निर्वाह के लिए कुछ न कुछ करना ही पड़ता है। हम लोग निठल्ले बैठ भी कैसे सकते हैं ?

'तुमने भी कहीं सर्विस ज्वाइन कर ली क्या ?

नहीं कई जगह अप्लाई कर रखी है।

वैसे रोमी ने बिजनेस किस वस्तु का किया है ?

स्याही का। उसने एक ऐसी स्याही का अन्वेषण किया है जिसे आप किसी भी तरह मिटा नहीं सकते और न उसपर पानी का कोई प्रभाव ही होता है।

तब तो खूब चलता होगा तुम्हारा बिजनेस ?'

कहां ?

क्यों ?

बेचारा रोमी घर घर घूमकर अपनी स्याही का प्रचार करता है। शाम तक तीन चार रुपए कमा लाता है। वह स्नेहसिक्त स्वर में बोली यदि इस बार मैं नहीं होती तो वह इस असार संसार से चला जाता।

नरोत्तम उन कटूक्ति कहना नहीं चाहता था पर उससे कहे बिना रहा भी नहीं गया। मिलन की तीव्र उत्कंठा के साथ-साथ इंदिरा का कटु सत्य द्वारा पीड़ा पहुंचाने में उसे बड़ा आनंद आता था। वह उसी तल्खी के साथ बोल पड़ा एक की प्रीति दूसरे के लिए घातक हो गई। बेचारी सुनन्दा !

इसो नरोत्तम, तुम यदि मुझे जलाने के उद्देश्य से यहां आते हो तब यहां मत आया करो। उसने कठोरता से कहा 'मुझे लोग चरित्रहीन कहें या कुलटा मुझे किसीकी भी चिंता नहीं। मैं यह जानती हूं कि रोमी के साथ मुझे सुख है और उन भी। फिर कष्ट किसे नहीं आते ? इस संसार में चन्द्र की शुभ्र स्निग्ध ज्योत्स्ना के साथ सूरज की तप्त आग्नेय किरणें भी तो हैं।

फिर वह उपेक्षित स्वर में बोली कौन किसीके दुख में सगा बनकर आता है ? हर मनुष्य स्वार्थ के वशीभूत हो सम्बन्धों को चिरस्थायी बनाए हुए है। मेरी मां है मेरे बाबा है मेरी सुनदा है सभी मुझसे घृणा करने लगे हैं। तुम यह सुनकर आश्चर्य करोगे कि सुनदा ने मुझे कितनी कड़वी बातें कहीं ? वह ना समझ लड़की जिसे हम नादान और अबोध समझे हुए थे फूट-फूटकर रो पड़ी और अपने हाथों में मुखको छुपाकर रोती हुई बोली—दीदी तुमने यह क्या किया ? एक विजातीय से नाता जोड़कर तुमने हमारे कुटुम्ब पर कलंक लगा दिया और गरिमा को एकदम कलुषित कर दिया। अब हमें कौन आदर की दृष्टि से देखेगा ? अच्छा होता कि अपने इस कुकर्म के पहले ही तू मर जाती !—नरोत्तम मरण की दुष्कामना सभी करते हैं। जिस पति को मैंने ईश्वर की भांति मानकर अपने नारीत्व का अर्घ्य अर्पण किया था उसी पति को कल तक यही लोग बड़ा दुष्ट और आवारा कहते थे और आज मुझे नीच कहते हैं। अब उनमें नया विश्वास जन्मा है कि मैंने ही उसे छोड़ा है यदि ऐसी बात नहीं थी तो मैं परित्यक्ता का सादा और सात्त्विक जीवन यापन करके एक सुंदर आदर्श की स्थापना करती।—क्या अर्थहीन अहम् की अग्नि में जलकर आत्मा के समस्त रसों का हनन ही मेरी जैसी युवती का जीवन है ? बोलो तुम चुप क्यों हो ?

नरोत्तम ने कहा 'शायद तुम नहीं भूली हो। मैंने एक बार कहा भी था कि इस प्रकार का कोई भी कदम सामाजिक परिधि के बाहर नहीं होना चाहिए। तुम किसी बंगाली से ही नाता जोड़ लेतीं तब भी अपनों की घृणा कम हो जाती। तुमने एक ईसाई से सम्बन्ध कर लिया इसलिए तुम क्षम्य भी नहीं हो। पुनर्भू की प्रतिष्ठा हमारे समाज में कहां ?

समाज और हृदय प्रेम और धर्म इनके बीच कभी समझौता नहीं हुआ है।

हृदय और प्रम का ससार निर्द्वंद्व और निश्शक है। समाज और धम जहां मानवीय बधनो को खडित करते है वहा हृदय और प्रम उन्हे एक एसी भावना में बाघ देते हैं, जो चिर है, अटूट है। तुमने मुझे पुनभू कहा कस कहा? तुम कसे जान गए कि मन सिविल मैरिज कर ली है?

विवाह तुमने कब किया यह मुझे नहीं मालूम पर इस तरह रात दिन का साथ-साथ रहना खाना और सुख-दुख में हिस्सा बटाने का तात्पय यही हो सकता है कि तुम इसकी वधू हो या भविष्य म होगी।

वह निश्चयात्मक स्वर में बोली मन उससे विवाह कर भी लिया है। आज से एक मास पहल की बात है। रोमी पूणरूप स स्वस्थ नहीं हुआ था। म दोपहर को कभी-कभी बाहर चली जाती थी। एक दिन आकर देखती हू कि रोमी बिस्तरे पर औंधा लटा हुआ सिसक रहा है। म भौंचक्की-सी उसे देखती रही। मुझे एकदम धाचका हुई कि कहीं इसके नया रोग तो खडा नहीं हो गया है पर ईश्वर की कृपा समझो एस। कोई बात नहीं थी। मन उस कई बार पूछा पर वह निरुत्तर रहा। वह अपनी अस्थिरता और अशात चित्त के कारण उन्मत्त-सा हो रहा था। लगता था वह किसी आन्तरिक व्यथा स छलनी-सा हो रहा है। मुझे उसका वह रूप नहीं देखा गया। मन कोमलता स उसके सिर को सहलाया। प्रथम बार वह मुझसे भयभीत शिशु की भांति निश्छलता स लिपटने का प्रयास करने लगा जसे कोई उसे मुझसे विलग करना चाहता हो। वह मेरे चरणा पर लोटकर भर्राए स्वर में बोला इन्दिरा इन्दिरा मुझे इस भय स मुक्त करो कि तुम मुझे छोडकर नहीं जाओगी।

मन उसे प्रश्नवाचक दृष्टि स देखा। उसके निर्लेप मुखपर कितना सारल्य था। मन उस वात्सल्य की भावना स पुचकारा। वह पुन उत्तजित हो गया। आकुलता स बोला इन्दिरा म तुम्हे फलो की शय्या पर सुलाऊगा तुम्हारे लिए इस ससार की सारी निधियां इकट्ठी कर दूगा पर तुम मुझे छोड़कर कहीं दूर मत चली जाना। मैं तुम्हारे बिना पखहीन पछी की भांति तड़प-तड़पकर मर जाऊगा। तुम यह भली भांति जानती हो फूल का सौन्दय उसका सौरभ है तारों का रूप उनका झिलमिलाना है, बिजली का महत्त्व उसका दमकना है, इनके बिना ये सारहीन हैं और म

तुम्हारे बिना आत्महीन हूं। इसलिए मुझे वचन दो कि तुम मुझे छोड़कर नहीं जाओगी। उसने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

मैंने सुखी मंद मुस्कान से कहा जहां अग्नि का पवित्र अनुष्ठान श्रेयहीन हो जाता है वहां वचन अपना क्या मूल्य रखेंगे? हृदय का मिलन बाह्य रूढ़ियों की चरमराती परम्पराओं का विश्वास नहीं करते। क्या तुम्हें मुझपर विश्वास नहीं? वह चुप हो गया। मैं हंसकर बोली तुम ऐसे अविश्वसनीय विचार अपने मन में क्यों ले आते हो?

वह अस्पष्टता से बोला अभाव मनुष्य को सब कुछ करा देते हैं।

यह रोमी का उत्तर था पर मुझे इस उत्तर से परितोष कहां? मैं समझ गई कि उसके गहराई में निहित उसका यह भय सही था। सुबोध को मैंने स्वीकार नहीं किया क्या यह मेरे मनोभावों का प्रमाण नहीं कि मैं कल किसी वस्तु को लेकर इससे भी विलग हो सकती हूं? अतः मैंने उसे भय-मुक्त करने के लिए विवाह कर लिया और मैं पुनर्भू हो गई। विवाह करने बाद मैंने उससे एक बात कही 'रोमी विवाह तुम्हारे आत्मसंतोष के लिए है तुम यह समझो कि मैंने इन्दिरा को एक सामाजिक नाता बन्धन से बांध रखा है लेकिन मेरे लिए इन सबका कोई महत्व नहीं है। सुबोध को मैंने इसलिए छोड़ा कि उसने मेरे अन्तस्तल के विश्वास को खंडित कर दिया। विश्वासघात मेरे लिए असह्य है। तुम इस बात का स्मरण रखना। रोमी के नेत्रों में अश्रु भर आए।

मतलब यह है कि अब तुम्हारा लौट आना असम्भव है। नरोत्तम ने एक बजग की तरह पूछा।

'हां मां और बाबा स्नेह करेंगे तो उत्तम है, अन्यथा मैं रोमी के साथ साथ जीवन गुजार दूंगी। मेरा ऐसा विश्वास है कि तरुण होने पर एक युवती के लिए पति नामक पुरुष अधिक उपादेय सिद्ध हो सकता है।

अब भी तुम्हें सुबोध की याद आती है?' नरोत्तम ने नया प्रश्न किया।

तुम तो मुझसे ऐसे प्रश्न करने लगे हो जैसे कोई इन्टरव्यू लेने आए हो पर मैं तुम्हें सच ही बताऊंगी कि मैं उसे कभी भी याद नहीं करती मुझे उससे घृणा है। फिर रोमी की दृष्टि में ममत्व की जो अजस्र पावन धारा है, उसके

समस्त संसार का प्रत्येक रूढ़िगत बन्धन टूटकर अस्तित्वहीन हो सकता है। उसके स्वर में दृढ़ता स्पष्ट झलक रही थी।

सन्ध्या का भोजन तुम्हारा और रोमी का मेरे साथ रहा। नरोत्तम उठ गया न मालूम मुझे तुम्हारे यह सब काम आन्तरिक रूप से अच्छे क्यों नहीं लगते ? हृदय में तुम्हारे प्रति घृणा का कुहासा-सा छाया रहता है कि तुम अच्छी होते हुए भी अच्छी नहीं हो। एक अजीब-से चरित्र का सम्मिश्रण है तुममें।

वह तपाक से बोली उसका दावा मैं भी नहीं करती। मैं कहा कहती हूं कि मैं सती-साध्वी हूं। रही तुम्हें अच्छी लगने की बात वह तभी संभव है जब मैं तुम्हारे मस्तिष्क में बनी प्रतिमा के सांचे में ढल जाती या मैं अपने जीवन को एक विधवा की तरह दुत्कार-फटकार सहकर भिन्न भिन्न व्यक्तियों के आश्रय में रहकर गुजारती। लेकिन मेरा स्वप्न नये सूरज की किरणों से उद्भासित वह लोक है जहां मुझे संसार के सुख नहीं, आत्मा का आनंद मिलता और मेरी आत्मा का आनंद अब रोमी के साथ है। वह दीर्घ सांस लेकर बोली मनुष्य को चैतन्य होकर अपने आपको व्यर्थ के मुद्दों में नहीं जलाना चाहिए।

नरोत्तम निस्तब्ध-सा चलने को उद्यत हुआ। उसने मन ही मन विचारा यह रोमी के अलावा किसी को कुछ नहीं समझती फिर भला मैं यहां बार-बार क्यों आता हूं ? प्रकट बोला, यदि मैं तुम्हारे यहां आना छोड़ दूं तो क्या तुम्हें दुख नहीं होगा ?

'दुख किस बात का ? पथ का आश्रय एक होता है। वह मन सदा के लिए बना लिया है। अब कोई आए और जाए दुख नहीं। आएंगे तो पलकों में बिठाऊंगी जाएंगे तो कोई बाधा नहीं बनूंगी।

नरोत्तम ने अपने आपसे कहा अब मैं यहां कदापि नहीं आऊंगा। इस मेरी जरा भी जरूरत नहीं है पर मन ?

तभी इन्दिरा खिलखिलाकर बोली रात का भोजन हम दोनों तुम्हारे साथ करेंगे न ?

हां ! नरोत्तम सीढ़ियां उतर गया।

रात को उन तीनों ने एक साथ भोजन किया। कलकत्ता के साधारण होटल

में सबन अपनी अपनी पसद का खाना खाया। खाते-खाते रोमी बोला आज का दिन बडा बुरा रहा। एक पसा भी पदा नही हुआ।

दिन भर के गहरे आन्दोलन के बाद नरोत्तम की घृणा गहरी हो गई थी। वह मन ही मन चीखा कि म प्रभु से प्रायना करता हू कि तुम भूखों मरो ताकि इन्दिरा का दाघ स्वप्न नय अपवार की दानवी भुजाओ में पिसकर रह जाए।

वह जोर-जोर स कौर खान लगा।

यह तुमन अच्छा समाचार नहीं सुनाया रोमी? चितत होकर इन्दिरा न कहा आज कोई बडा सौदा होने वाला था न!'

नही हुआ परसा का तारीख मिली है।

फिर?

तुम रोमी का गोद में लकर जाओ और रोमी तुम्हू सिर पर रखकर बन्दर की तरह उछल। नरोतम न बड कौर को हलक स उतारकर स्वगत कहा "प्यार पट को कस भरेगा यही मुझ देखना है।

इंदिरा उदास होकर बोली फिर उस मकान-मालिक का क्या कहग? वह बड़ा दुष्ट ठहरा।

दुष्ट नही शतान कहो गन्दी गालियां बकन लगता है।

नरोत्तम की घृणा खिल्ला उठी म उस कहूगा कि वह तुम्हारा सारा सामान बाहर फेंक दे ताकि इस अभिमान की पुतली का यह मालूम पड़ जाए कि अहसान करन वालों को कभी नही भूलना चाहिए।

'नरोत्तम बाबू! इन्दिरा न सहृद-स मीठ स्वर में कहा।

नरोत्तम की स्वप्नमयी घृणा टूट गई। वह घबड़ा उठा। तपाक स बाला हा-हा तुम कुछ कह रही थी न?

नहीं तो मैंन आपको पुकारा था।

'देखो। कहन में चाह वह कितना ही कट सत्य क्या न हो तुम्हें नहीं घबड़ाना चाहिए।

कुछ रुपय चाहिए। वह गर्दन नीची करके बाली।

कितन। यार की तरह भकटकर नरोत्तम बोला।

'सौ।

ग्रभी ?

'जी।

द दूगा। उसके स्वर म लापरवाही थी।

दुखी मन से नही। इन्दिरा न अपनी दृष्टि उसपर जमा दी।

यह क्या कहती हो इन्दिरा तुम नही समझती कि तुम्हारी सहायता में मुझ कितना आंतरिक सुख मिलता है।

'म य रुपय आपको शीघ्र ही लौटा दूगी।

लौटाने की क्या बात है ?

ऋण आखिर ऋण है।

नरोत्तम न हाथ धोकर तुरन्त उस सौ रुपय दे दिए। रोमी आर्द्रस्वर में बोला आपने हमारी भारी मदद की है, नही तो हम बड़ सकट में पड जाते। हम शीघ्र ही आपका रुपया लौटा देंग मेरा बिजनस बस चमकन ही वाला है।

रामी ने सजल आखो स इन्दिरा की ओर देखा। कृतज्ञता से भरी वे आखें कितनी भली लगती थी ?

जब वे लोग खाना खाकर विदा होन लग तब नरोत्तम को सम्बोधित करके इन्दिरा बोली यह ससार अनत अवसादो का आश्रय है और हम उन अवसादो पर विभिन्न आवरण डालकर सुखी बनने का प्रयास करते ह। पर वह सुख सुख थोड़ ही होता है वह तो छल है जो हमें क्षण भर में छल कर छाया की तरह अदृश्य हो जाता है। फिर भी मनुष्य कितना विवश है कि उन छलो मे इस तरह लिपटता रहता है जिस तरह अनत अनुराग की तृष्णा लिए लता वृक्ष स लिपटती है। तूफान आता है वृक्ष गिरकर धराशायी हो जाता है और बचारी लता बस नारी का यही जीवन है ? दुख अनत व्यथाए, असीम घृणा। फिर भी उसे लता की तरह लिपटकर चलना पड़ता है और जब तक उसमें लिपटन की शक्ति है वह इससे वचित नहीं रह सकती ! यदि वृक्ष अपन सवनाश क साथ लता के उद्गम को बजर कर दे तब बचारी लता सिवाय धरा स कुचल जान के अलावा क्या कर सकती है ?

म इस नारी का पतन कहता हूं। जिस युवती के विचारो में साम्य नहीं हो

वह जीवन में सामंजस्य कैसे ला सकती है ?

जब दापनाग की याती पर आरूढ़ यह संसार ही सामंजस्य के सिद्धान्त के विरुद्ध है तब हम कैसे सिद्धान्तवद्ध हो सकते हैं। अच्छा इन रुपयों के लिए धन्यवाद शीघ्र लौटा दूंगी। वे दोनों विदा हो गए।

नरोत्तम को उनके जाने के बाद लगा कि वह फिर पराजित हो गया है।

१८

रेल के डिब्बे में नरोत्तम एक कोने में बैठा था। उसे बार-बार इन्दिरा के वे शब्द याद आ रहे थे जो उसने विदा के समय कहे थे। नरोत्तम को लगा कि इन्दिरा उसे बिलकुल बुद्धू समझती है, तभी तो उसने वाक्य समाप्त करके व्यंगभरी हंसी से उसे देखा था जैसे वह अभी बच्चा है और उसे अभी बहुत समझना और देखना है।

उसके ठीक सामने एक साधू बैठा था। वह तरुण था। उसके चेहरे पर ओज झलक रहा था। वह उसे गौर से देखता रहा\देखता रहा। उसे लगा कि हो न हो यह सुबोध ही है। उत्सुकता पट के दर्द की भांति जब ऐंठन देने लगी तब उसने बात का सिलसिला जारी करने लिए कुछ देर तक विचारा। उसने देखा कि जगह की कमी के कारण वह तेजस्वी संन्यासी सिमट सिकुड़कर बैठा है। उसने आदर पूर्वक कहा आप इधर आ जाइए।

नहीं।

नहीं क्यों आप आराम से बैठिए न ?

नहीं संसार पर कृपादृष्टि रखने वाले कृपापात्र कैसे बन सकते हैं। जब कटकाकीर्ण मार्ग ही अपना लिया है तब इस प्रकार की अभिलाषा हमें अपने कर्तव्य से विमुख कर देती है। वह तरुण सन्यासी रूखी मुस्कान के साथ मधुर स्वर में बोला मनुष्य सुख का सम्मोह स्वेच्छा से नहीं त्यागता तभी वह झंझटों में फंसा रहता है।

इस प्रकार बात का सिलसिला बढ़ता गया। विचार-विमर्श में कभी कभी नरोत्तम उत्तेजित हो उठता था जिससे वह सारे डिब्बे का केन्द्रबिंदु बन जाता था।

ग्रत में उस तरुण सन्यासी न गमीरता स कहा नारी महान है ग्रौर उसका मालौ-किक सौन्दय नर के ग्रवरुद्ध पथो का निर्देशक। उसका ग्रतुल्य सौन्दय हमें सहस्र व्याधियो से विमुक्त करता है। लकिन मनुष्य में उसके उस ग्रदभुत सौन्दय को परखने वाली दिव्य दृष्टि नही है।

तरुण सन्यासी के मुख पर भावुकता चमकने लगी। वह कुछ देर तक रुककर बोला म तुम्हें एक कहानी सुनाता हू। शाही लकडहारा जसा भाग्यशाली नहा, पर वह भायावत का एक राजकुमार था। नाम याद नही पडता। लकिन वह ग्रपन पिता का ग्रत्यन्त लाडला बटा था। ग्रतुल सम्पत्ति का स्वामी होन के कारण उसकी प्रवत्तिया वभव स ग्राच्छन्न होकर हिरन की तरह चौकडिया भरन लगीं।

एक दिन वह घोर ग्ररण्य में ग्राखट हेतु गया। वहां उसने कुसुम-लताग्रो के बीच एक सुकुमार वनकन्या को दखा। वह उसके ग्रपरिमित ग्रलौकिक सौन्दय पर पूण रूप स ग्रासक्त हो गया। लकिन उसका साहस पगु होकर रह गया इसलिए उसन वनकन्या से तनिक भी बातचीत नहीं की। वह केवल चक्षु-सचालन करता रहा।

प्रथम भेंट के बाद वह सदा वहां जान लगा।

वह जगली जाति की एक ग्रद्वितीय ग्रनिद्य सुन्दरी थी।

विवाह समय न होने के कारण वह राजकुमार रूठकर कोप भवनमें सो गया। यह समाचार महाराज के पास पहुचा। महाराज स्वय ग्रपन प्रिय पुत्र के पास ग्राए ग्रौर इस प्रकार रूठ जान का कारण पूछा। तब राजकुमार ने दृढ़ता स कहा कि ग्रमुक वन में एक वनकन्या रहती है यदि ग्राप मरा विवाह उसन नहीं कराएग तो म ग्रन्न-जल ग्रहण नहीं करूगा।

महाराज को यह स्वीकार नहीं था। कौटम्बिक मर्यादा ग्रौर ग्रान के विरुद्ध वे कोई भी काय करन को उद्यत नहीं हुए। इधर राजकुमार न ग्रपना हठ नहीं छोडा। धीरे धीरे उसकी स्थिति चिंताजनक होने लगी। रानी ने यह सुना। ममता ग्रपनी सन्तान को कते मिटन देती। वह राजा के पास गई। ग्रनुनयभरे स्वर में बोली महाराज खानदान के दीपक को बचाइए, वह बुझ रहा है।

महाराज दृढ़ता से बोल जो दीपक ग्रन्यग्रवातों से मचलता, उसका फल यही होगा।

रानी को भी गुस्सा आ गया   बुझकर यह दीपक आपके इहलोक-परलोक दोनों को अन्धकारमय कर देगा।

'महाराज उसी कठोरता से बोले म इहलोक बिगाड़कर परलोक सुधारना नहीं चाहता। एसा कुपुत्र क्या हमें मृत्युपर्यन्त सुख द सकता है ?

पर रानी अपनी बात पर अड़ी रही।

तब राजा को उसकी बात स्वीकार करनी पड़ी।

विवाहोपरान्त राजकुमार उस वनकन्या को सात समुद्र पार सिंहलद्वीप ले गया। सिंहल द्वीप की सुन्दरियां बहुप्रशंसित थीं। वहां राजकुमार प्रथम दृष्टि जनित प्रम का उल्लंघन नहीं कर सका। वह सिंहल-सुन्दरी पर मुग्ध हो गया।

वनकन्या उसकी उपेक्षा को महसूस करने लगी। राजकुमार की आसक्ति एकाएक कसे मंद पड़ गई ? एक रात उसने उसके रहस्य को जान लिया। यह वनकन्या थी जंगली स्वभाव की दृढ़ और कठोर। एक रात वह सिंहलद्वीप के किसी कुमार के साथ भाग गई।

कहानी यहां समाप्त हो जाती है।

लकिन इस कहानी में दोषी कौन है ? प्रश्न बड़ा गम्भीर है। साधारण लोग उस नारी को ही दोषी बताएंगे पर दोषी वह पुरुष है जिसने नारी के पावन सौन्दर्य स जीवन-ज्योति का दान न लेकर उसके सौन्दर्य को कलंकित करके तृप्ति का साधन मात्र बनाना चाहा। यह न्याय का प्रतिक्रमण है अतः उस नारी न अपना पाथेय दूसरा बना लिया। इसी प्रकार हमारा समाज और प्रकृति नारी की भावना से छलती आई है। म दिव्य पुरुष नहीं हूं और न ही मेरे पास सन्त महात्माओं जैसी दिव्य दृष्टि ही है पर म कठोर तपस्या के बल पर इतना कह सकता हूं—ज्ञान और सत्य के संसार म विराग नहीं और भी शक्ति है—वह है साधना और वह भावना है। नारी प्रत नारी को गऊ की भांति पूजो।'

वह तरुण स यासी "मक बा" एसा चुप हुआ कि फिर बोला ही नहीं। नरोत्तम का साहस भी नहीं हुआ। वह कुछ देर तक उस सन्यासी को देखता रहा। उसे लगा कि यह सुबोध है बचारा सुबोध ! पत्नी का सताया और तिरस्कृत !

लकिन नरोत्तम न आगे दर बाद बोला एक बात बता सकते हैं आप ?

कहिए। सन्यासी ने शांति से उत्तर दिया।

पहले भारतीय नारी पातिव्रत्य धर्म को सर्वस्व मानकर जीवन यापन करती थी और आज वह पति को छोड़कर दूसरा विवाह कर लेती है और उसे दूसरे व्यक्ति के साथ भी उतना ही सुख और संतोष प्राप्त होता है जितना पहले पति के साथ। क्या यह कुरीति हमारे धर्म और संस्कृति के लिए घातक सिद्ध नहीं होगी? नरोत्तम प्रश्न करके उस सन्यासी की ओर देखने लगा।

तरुण के अधरों पर सौजन्यपूर्ण शांति मुखरित हो उठी। वह एक उपदेशक की मुद्रा में बोला 'युग के प्रचण्ड प्रभंजन को कौन रोक सका है? सदा समाज और धर्म के मापदण्ड बदलते आए हैं। मेरा ऐसा विचार है कि युग के मानव पुनः प्राचीनता की ओर अग्रसर हो रहे हैं। वही मुक्त हास्य वही मुक्त सम्बन्ध और वही मुक्त नाते रिश्ते! न अनुचित हस्तक्षेप और न अनुचित प्रतिबन्ध। नये युग के नये प्रतिमान! मैं कहता हूं कि ऐसा समय आने वाला है जब हम सुख और स्वतंत्रता की सांस ले सकेंगे।

अब नरोत्तम से रहा नहीं गया। उसके अन्तस्तल में बैठा कोई बार बार कह रहा था—हो न हो यह सुबोध ही है। उसने इसी आशय को ध्यान में रखकर कहा मेरी एक मित्र है इन्दिरा उसने अपने पति को छोड़ दिया है। उसका स्वभाव बड़ा विचित्र है। इसलिए उसने अपने समाज के नियमों का अतिक्रमण करके एक ईसाई से ब्याह किया है।

हम इतने संकुचित होकर सोचते ही क्यों हैं? वह संयत स्वर में बोला, आज के युग में एक विचित्र बात और देखने में आती है कि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का नारा बुलन्द करने वाले व्यक्ति अपने अपने धर्म के प्रचार प्रसार में सम्पत्ति को पानी की तरह बहा रहे हैं। फिर मानव धर्म की स्थापना कब होगी? कथनी और करनी में बड़ा अन्तर है। हिंसा मत करो कहकर अपनी पत्नी को मांस पकाने के लिए आज्ञा देना ही आज की नीति है। बंगाली समाज गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के विश्वास को कितनी बड़ी ठेस पहुंचा रहा है जिनमें पूर्व-पश्चिम के भेद के मिटाने का दृढ़ संकल्प है? वे सभी संस्कृतियों का संगम देखना चाहते थे और हम अब भी ईसाई और बंगाली बंगाली और हिन्दुस्तानी का प्रश्न खड़ा कर देते हैं।

ग्रापकी मित्र इन्दिरा ने अपने पति को छोड़कर दूसरे के साथ शादी कर ली पर क्यों ? अवश्य पति ने उसके मन और तन का ध्यान नहीं रखा होगा अथवा उसकी नारी को मर्मान्तिक यत्रणा दी होगी। उसे विवश किया होगा कि वह विद्रोह करे, वह सभी बन्धनों से मुक्त हो जाए ताकि उसे कोई पीड़ा देकर सताए नहीं। मैंने पहले कहा था कि नारी भावना है। उसकी भावना को ठेस पहुंचाकर कोई व्यक्ति नारी का वास्तविक सामीप्य नहीं भोग सकता।

उस तरुण की आंखें सजल हो उठीं। नरोत्तम के मन में कई बार उस तरुण को पूछने की इच्छा होती थी कि आप साधु क्यों बने पर उसके तेजस्वी मुखमंडल पर दृष्टि पड़ते ही उसका इरादा कच्चे धागे की भांति टूट जाता था।

स्टेशन आ गया था। संशय औत्सुक्य सन्देह की भावना लिए नरोत्तम उस तरुण संन्यासी को देखता हुआ उतर गया।

१९

दूसरे दिन नरोत्तम अपने कार्यालय के काम में व्यस्त रहा। संध्या के समय वह अपने बिस्तरे पर आकर पड़ गया। पर उसे नींद नहीं आई। उस तरुण का उज्ज्वलमुख उसके समक्ष बार-बार नाच उठता था। धारत्य की प्रतिमूर्ति शांत और गंभीर। आंखों में अव्यक्त व्यथा की जलती दिखाए!

नरोत्तम को लग रहा था कि हो न हो वह सुबोध ही है। नारी से विरक्त होने के बाद नर में दो ही प्रतिक्रियाएं हो सकती हैं—विरक्ति की ओर उन्मुख होकर एकदम व्यक्तिवादी हो जाना या समष्टि में अपने आपका विलय कर लेना। समष्टि में तुष्टि के अभाव में उसने दूसरे पथ का अनुसरण किया। वह अब जीवन के सभी तत्त्वों से समझौता करके अपने व्यक्तित्व का पूर्ण विकास कर रहा है। उपदेश दे रहा है। उस उपदेश द्वारा मानो वह अपने अन्तर में छिपाए विचारों के तूफानों को संसार के समक्ष रखता है। उसने अपनी कहानी किस रूप से मुझे सुनाई! एक राजकुमार और वनकन्या। वनकन्या और राजकुमार!

नरोत्तम दा ! तृप्ति न पुकारा।

अरे तू इतनी रात गए क्यो आई ? उसने विस्मय से पूछा।

मेरा मन नहीं लगा। उसन भालपन स कहा।

क्यों ?

म क्या जानू ? अरे हां म तो भूल गई मा ने पूछा है कि आप चाय पीएगे।

इतनी रात गए !

रात कहां गई है नरोत्तम दा अभी साढ आठ बज ह।

बस !

और क्या आपकी भाति सभी थोड ही है कि रात पडा कि नई दुल्हिन की भाति घूघट निकालकर ।

आजकल तू कवियित्री हान लगी है। बीच में ही नरोत्तम बोला।

तृप्ति न एक बार उसे स्नहभरी दृष्टि से देखा। नरोत्तम को उसकी आखों की गहराई में अपनत्व झाकता हुआ दिखलाई पडा। वह उसे देखता [illegible] रहा। सयासी क शब्द एकाएक याद हो आए— नारी का अलौकिक [illegible] म जीवन का सचार करता है। नरोत्तम लज्जा से नत तृप्ति क [illegible] मुख को देखता रहा। सचरण और कम्पन कम्पन और सचरण ! [illegible] उठा। उसने तुरन्त अपना सूटकेस खोला। मन पल भर क [illegible] से। उसन सूटकेस में स एक साडी निकालकर तृप्ति क [illegible]।

देख म तेरे लिए क्या लाया हू।

साडी ?

तूने कहा था न ?

हा ठीक वसी है जसी उस वधू ने पहन रखी थी।

तू इसे कब पहनगी ?

म इसे कल पहनूगी।

पहनकर आएगी यहां ?

विस्मय से पूछा। उसकी आँखें स्थिर थीं।

और कहाँ जाऊ ?' वह उदास होकर बोली 'क्या आप मुझे अपने साथ ले जाएंगे ? म आपके साथ हाट चलना चाहती हू।

'म ? नही नहीं तू मेरे साथ कहां चलगी ? अपन बाबा क साथ जा।

तभी श्रीमती सेन ने पुकारा तप्ति श्रो तृप्ति !

तप्ति चिड़िया की तरह फक से नरोत्तम की आंखो से ओझल हो गई।

'इतनी देर कहां लगा दी थी ? श्रीमती सेन ने मुसक्कर पूछा।

नरोत्तम दा इन्दिरा दीदी की बातें बतान लग थे देखी मेर लिए कितनी अच्छी साड़ी लाए हैं नरोत्तम दा ! देख तो माँ ! भाभी तू भी देखना !

मां न साड़ी को बड़ गौर से देखा। लगभग चालीस रुपयों की साड़ी थी। मां न एक बार फिर सन्देह भरी दृष्टि से उस साड़ी को और तृप्ति के मुख को देखा—दोनों नूतन थे दोनो स्वच्छ थ। फिर भी यह अट कुछ मतलब रखती थी। यौवन की अमराई में चहकती बुलबुल की ओर सबकी दृष्टि उठ ही जाती है। अत उसने तृप्ति को मधुर स्वर में इतना ही कहा तृप्ति नरोत्तम बाबू से अधिक मिलना जुलना अब तरे लिए अच्छा नहीं।

क्यो ?

'तू अब बच्ची नही है।

उस दिन तृप्ति ने यह जाना कि वह बच्ची नही है। इस छोटे-से वाक्य न उसक मानस-लोक में तूफान उठा दिया। प्रतिक्रियाओं क उतार चढ़ाव में वह डूब सी गई। उसने एक बार फिर अपन आप दोहराया म बच्ची नहीं हू।'

हालांकि इसक पहल वह एक कई बार सुन चुकी थी पर उसन आज तक इतना गौर नहीं किया था कि उसमें कई परिवतन आ गए हैं। वह अपन तन में सिहरन सवर दर्पण के सम्मुख गई, अपन आपको उसन अपने तन दर्पण में उतारा और फिर स्वयं के सौन्दय पर मुग्ध हो गई।

इसके बाद जब वह चाय दने गई, तब नरोत्तम छत पर चला गया था। तृप्ति न सकोच करता हुए उस पुकारा नरोत्तम दा !

आया। नरोत्तम नीचे आया। उसन तुरन्त चाय पीकर कप तृप्ति का वापस

लौटा दिया।

आज बड़ी गर्मी पड़ रही है। नरोत्तम ने कुछ क्षण मौन रहकर कहा।

हां। आज तृप्ति की आंख झुकी हुई थी।

यदि अब बरसात नहीं हुई तो कालरा शुरू हो जाएगा।

होने दो अच्छा मैं चली।

अरे क्यों तू तो ऐसे जा रही है जैसे मैं कोई सांप हूं और थोड़ी देर में काट लूंगा। नरोत्तम यह सब कहकर शर्मा गया।

नहीं मां ने कहा है कि अब तू बच्ची नहीं है। कहते-कहते तृप्ति की आंखें सजल हो उठी। लज्जा उसके सौन्दर्य को बढ़ा गई। उसकी दृष्टि पूर्ववत् थी।

ओह ! नरोत्तम एकाएक व्यथा में डूब गया।

तृप्ति चली गई। उसके नयनों में संकोच का सागर लहरें मार रहा था।

नरोत्तम तारों की आंखमिचौनी के नीचे स्वप्नाविष्ट-सा पड़ा था। अब तृप्ति बच्ची नहीं है। युवा है। तभी तो उसकी मुक्ति पर प्रतिबन्ध लगाया जा रहा है। इस मिट्टी के व्यक्तियों का यह कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि व्यक्तित्व के विकास के समय उसे प्रतिबन्धों में जकड़ना पड़ता है।

तब वह घंटों तृप्ति के बारे में विचारता रहा। तृप्ति के साथ उसे इन्दिरा की भी याद आई। अस्थिर विचारों ने इन्दिरा का व्यक्तित्व भिन्न भिन्न समय में उसने नये-नये रूपों में देखा।

तृप्ति इन्दिरा तारिणी राजिया की भाभी और कितनी ही युवतियां !

उलझनें भय घृणा और निन्द्रा गहरी निद्रा।

सवेरा होने के पहले ही रोहिणी की तबीयत अस्वस्थ हो गई थी। भ्रभ्रटरके (राजस्थानी में लगभग सवेरे के पांच-छः बजे) उसे एक साथ के और टट्टियां लगने लगी थीं। सवेरा होते-होते यह बात सारे एरिया में फैल गई।

कालरा हैजा घातक रोग !

सारी की सारी आबादी आतंकित हो उठी।

नरोत्तम को खबर लगते ही वह उसे अस्पताल ले गया। मिल और अस्पताल के बीच एक नदी पड़ती थी। पुल का रास्ता लगभग डेढ़ मील के चक्कर का पड़ता --

था। अत एक नाव पर रोहिणी को बैठाकर अस्पताल ले जाया गया। वहां उसकी स्थिति ठीक होने लगी।

इसके बाद स्वय नरोत्तम सभी खाद्य पदार्थों को देख-भालकर खाने लगा, तथा उसकी ओर से स्वच्छता की ओर विशेष ध्यान रखने की हिदायत सबको दे दी गई। कुछ बजट तुरन्त उसने नींबू डाब आदि पीने के अन्तर्गत गरीब मजदूरों एव मजदूरों के परिवारों के लिए पारित करा दिया। अब वह दिन-दिन भर हैजे के रोकने के प्रयास में लगा रहता था।

लेकिन रोहिणी के घर लौटकर आने के पूर्व ही तृप्ति इस रोग का शिकार हो गई। उसे भी वह अस्पताल में दाखिल करा आया। जब नरोत्तम ने अपनी गोद में उसे उठाया उस समय तृप्ति के चेहरे पर अतप्तियों व दुखों के सातों सागर लहरा रहे थे। वह तड़प रही थी लेकिन उसने उस तड़प को अधरों तक रहने दिया। वेदना के तिमिर को भेदता हुआ उसका वही शाश्वत संगीत मृत्यु-दूत—कॉलरा के अकपाश में ही गूंज उठा आपनार माथा पोका खायचे। पहली बार नरोत्तम की आंखों में अश्रु छलछला आए। जैसे उसके हृदय के कोने में वर्षों से दबा हुआ प्यार का स्रोत आज एकाएक फूट पड़ा हो। वह स्नेह से पिघलकर अबोध तृप्ति के गालों पर पवित्र चुम्बनों की वर्षा कर देना चाहता था। पर वह अपनी इस पवित्र भावना को दबाकर रह गया बस उसके अश्रु बहते रहे। उसे याद आता रहा आपनार माथा पोका खायचे। इस वाक्य में छिपी नारी के प्रेम की याचना! नरोत्तम भाव विह्वल हो उठा।

तृप्ति को पानी चढ़ाया गया।

दूसरे दिन उसकी स्थिति सुधरने लगी। रोहिणी वापस घर आ गई थी। वही दुबल और पीली होकर। उसकी सूरत से ऐसा लगता था कि जैसे वह महीनों से बीमार है।

नरोत्तम बार-बार अस्पताल जाता था। वैसे सबर आफिसर होने के कारण उसका कर्तव्य भी था लेकिन वहां के लोगों ने इसका कोई दूसरा ही अर्थ लगाया। विशेषकर अनुपमा दादी कहने लगी कि वह तृप्ति की क्स सेवा नहीं करेगा इतने दिन से जो प्रेम का व्यापार चल रहा है? सेन बाबू और श्रीमती सेन का

इन बातों से बड़ी तकलीफ होती थी। वे सोचते थे कि यह उनकी लड़की के हक में बुरा ही हो रहा है। फिर भी वे चुप थे क्योंकि बीमारी में अधिक खर्च हो रहा था और इतना खर्च वे वहन नहीं कर सकते थे। इसलिए वे चोट खाकर भी चुप थे। आदमी अर्थ के सामने एक असहाय गुलाम है।

तीसरे दिन तृप्ति की दशा काफी सुधर गई। नरोत्तम उससे मिलने के लिए गया था। वह बैठी-बैठी बंगला की पत्रिका प्रवासी पढ़ रही थी। नरोत्तम ने मुस्कराकर उसकी ओर देखा। आज सवेरे-सवेरे वह सोच रहा था कि तृप्ति की सेवा में उसे असीम सुख क्यों मिला? प्रश्न करना आसान था पर उसका उत्तर उसे खोजे नहीं मिल रहा था। तभी उसे नल पर अनुपमा दीदी और शेफाली बुआ की बात सुनाई पड़ी। शेफाली अहसानभरे स्वर में कह रही थी "देखो अनुपमा ऐसा आफिसर ही हम गरीबों का दुख दूर कर सकता है।"

"बुआ यह आफिसर का कर्तव्य नहीं यह प्यार के करतब हैं।" उसने अपना स्वर धीमा कर लिया "नरोत्तम बाबू तृप्ति से प्यार करता है। अरी तुमने देखा नहीं नरोत्तम बाबू का मुंह चिंताओं के कारण सूख गया है।"

"तुम सदा उल्टा ही सोचती हो।" शेफाली ने अनुपमा से शिकायत की।

"तब वह दौड़-दौड़कर तुम्हारे घर तो नहीं आता।" अनुपमा ने नल बन्द करते हुए कहा "पर ऐसी बात अधिक दिन तक नहीं छिपती है। देखती रहियो यह भांडा थोड़े दिनों में फूट ही जाएगा।"

नरोत्तम अनुपमा को जाते हुए देखता रहा। उसे तृप्ति की सेवा में असीम सुख इसलिए ही मिलता है कि वह तृप्ति को प्यार करता है। अनुपमा दीदी ने सच कहा कि वह तृप्ति को चाहता है। तब तृप्ति की एक-एक बात सुगन्ध की तरह उसके मन में बस गई। वह सोचने लगा कि तृप्ति उसे बहुत चाहती है तभी वह उसका इतना ख्याल रखती है खाने-पीने और उठने-बैठने तक का। तभी उसने उस दिन वर-वधू को देखकर कहा था कि नरोत्तम बाबू यह वधू अपने स्वामी के साथ कितनी भली लग रही है? और नरोत्तम के मस्तिष्क में प्यार के कुनहले बादल छाते गए।

तृप्ति ने पत्रिका को एक किनारे रखकर उच्छ्वसित स्वर में कहा "नरोत्तम दा डाक्टर ने कहा है कि अब तुम जल्दी ही अच्छी हो जाओगी खतरा टल गया है।

भगवान का धन्यवाद दो।

नहीं। वही बचपन का हठ भरा स्वर।

मेरी पगली भगवान से नहीं डरोगी तो ।

देखो नरोत्तम बाबू म धन्यवाद आपको दूंगी। सिस्टर सरोज कह रही थी कि आपने मेरी बहुत मदद की है।

बाबू ! नरोत्तम ने अपने आपसे कहा और फिर उस प्रेम भरी दृष्टि से देखा। तृप्ति भी सहम गई। वे दोनों चुप हो गए। नरोत्तम ने आज तृप्ति को लेकर बहुत सोचा था। उसने यह भी निश्चय किया था कि वह तृप्ति से पूछेगा कि वह भी उससे प्यार करती है कि नहीं पर उसके कायर मन ने उसे इस बार भी धोखा दे दिया। वह अपने आप रोमांचित हो गया। उत्तेजित होकर बोला आज म कलकत्ता जा रहा हूं बोलो तुम्हारे लिए क्या लाऊं ?

उसने तुरन्त कहा स्वर का मकबरा।

नरोत्तम चुप हो गया। थोड़ी देर बाद बोला उसका क्या करोगी ?

एक बार मैंने किसी साप्ताहिक पत्र में एक कहानी पढ़ी थी उसमें एक मित्र अपने निकटतम मित्र की पत्नी को यही तोहफा देता है।

अच्छा। कहकर नरोत्तम लौट आया। कलकत्ता जाना था इसलिए मनेजर से कुछ आवश्यक वार्तालाप करके वह वहां के लिए रवाना हो गया।

२०

सेठजी एक नयी मिल खरीदने के चक्कर म थे। किसी बंगाली जमींदार की वह मिल थी। अच्छी चलती थी। लेकिन धीरे धीरे उसके मालिक की दिलचस्पी घटती गई। मालिक को सुरा और सुन्दरी में बेहोश देखकर नौकरों ने मनमानी करनी शुरू कर दी। परिणाम जो निकलना था वह निकलकर रहा यानी घाटा घाटा घाटा। उधर मजदूरों ने हड़ताल कर रखी थी। तनख्वाह का वितरण ठीक नहीं हो रहा था। लेकिन करोड़ों की मिल तालों में बन्द पड़ी थी।

नरोत्तम न कहा, 'देखिए सेठजी मुझे इस प्रकार के व्यापार का अधिक ज्ञान नहीं है।

ज्ञान का क्या लेना-देना है बस तुमको यह सौदा जचता है कि नहीं ? यह म भोली तरह जानता हू कि जस ही वह मिल अपन हाथ में आएगी वस ही चादी की खेती शुरू हो जाएगी।

फिर ल डालिए।

ल तो डालूगा पर तुम्ह वहा जाना पडगा। देखो न तुमने जब से अपनी मिल का काम सभाला है तब से कभी कोई गडबड नहीं हुई।

यह ठीक है पर वहा की स्थिति काफी बिगडी हुई है। वहा के मजदूरों में भय कर असताप है।

लकिन तुम सबको ठीक कर दोग। यही गुण तुममें बहुत बडा है। तुम ही जानत हो कि यह मजदूर लोग कैसे होत हैं। ट्रेडयूनियनो में कहा पोल होती है। मजदूरों का दमन कस किया जाता है। उनसे समझौते का उपाय क्या है। उन्हें काबू में कस लाया जा सकता है।'

परिस्थिति स समझौता करक चलना ही इस युग की सफलता है। अच्छा, मुझ कब तक जाना पड़गा।

यही पाच-सात दिन में। अभी तो लन-दन की बातचीत चल ही रही है।

अच्छा चला जाऊगा।

दखो तुम्हें सेठानी जी न बुलाया है।

सेठानी से मिलकर उसन गहरा सास लिया। अब उस इन्दिरा की याद सतान लगी। इन्दिरा का ध्यान आत ही वह सीधा चक्रवर्ती के घर गया। चक्रवर्ती को दो तीन दिन स बुखार आ रहा था। उसकी बीवी बडी चिंतित थी। सुनन्दा आजकल घर पर ही रहती थी। जिस दिन इन्दिरा न रामा स अपना सबध स्थापित किया उसी दिन स चक्रवर्ती क्षुब्ध-सा रहन लगा। उस आज की सोसायटी और शिक्षा परस विश्वास उठ गया और उसन सुनन्दा को उसी दिन धनबाद स यहां पर बुला लिया। उसकी पढ़ाई-लिखाई समाप्त कर दी।

सुनदा न कोई विरोध नहीं किया। उसन भी दीदा के इस काय को निंदनीय

एव घृणित ही समझा। अब उसकी श्रद्धय दीदी उसके लिए चरित्रहीन के अलावा कुछ नहीं थी।

नरोत्तम को देखते ही चक्रवर्ती की बहू गद्गद हो उठी। शिकायत भरे स्वर में बोली आप तो हमें भूल ही गए नरोत्तम बाबू इसीलिए कहन वालो न ठीक कहा है कि परदसिया की प्रीत बरसात की तरह होती है बरसी और चली गई।

नहीं नहीं इधर काम बहुत रहा। मिल का चक्कर ही कुछ विचित्र है एक मिनट का अवकाश नही मिलता। चक्रवर्ती बाबू कहां है। उसन भीतर इधर उधर देखकर कहा।

तभी सुनदा आ गई। प्रणाम करके बोली नरोत्तम दा आप कब आए?

आज सुबह।

चक्रवर्ती की पत्नी न इस बार फिर शिकायत की तुम्हारे नरोत्तम दा बड़ मानुस हैं हम गरीबो को याद थोड़ ही करेंग?

नरोत्तम मुस्करा दिया।

चक्रवर्ती ऊपर के कमरे में सोया हुआ था। उसके पास रखी शीशी में लाल रग का मिक्स्चर पड़ा था। नरोत्तम को देखत ही चक्रवर्ती बोला नमस्कार नरोत्तम बाबू!

आप सोइए-सोइए म अभी बठ जाता हूं।

चक्रवर्ती दीवार के सहारे बठ गया। उसकी आखों में दुख झलक रहा था। उसकी आन्तरिक वदना को जानकर नरोत्तम बिलकुल चुप रहा। पुन ः न आकर कहा आपके लिए चाय बनाऊं?

'चाय के लिए भी पूछती हो? इस परोपकारी पुरुष न बड़ी कोशिश की थी कि हम सुखी हो जाएं पर भाग्य में विधाता न जो दुर्भाग्य की अमिट रेखाएं अंकित कर दी हैं उन्हें हम कैसे मिटा सकते हैं? चक्रवर्ती निराशा स बोला।

नरोत्तम इसपर भी चुप रहा।

देखिए नरोत्तम बाबू मुझ कितना दुखी बना दिया है मेरी सन्तान न। क्या प्रत्यक बाप अपनी सन्तान को इसलिए ही अपना रुधिर पिलाता है कि वह उसकी कांति और सुदिन का भागी न बनकर उसक अरमानो स खलें? मन सुनदा को

घर बुला लिया है। न म इसे शिक्षित करूगा और न गुणी। जसी उसकी मा है वसी ही इस बनाऊगा ताकि इसमें विद्रोह क बीज अकुरित न हो। मन देखा है और तथ्य भी निकाला है कि मनुष्य के व्यक्तित्व को स्वतत्र करना भी खतरनाक है। वह स्वतत्र होकर रूढ़ियो को तोड़ता है सा तोड़ता ही है साथ में वह परिवार व समाज की सहज सहानुभूति और उसके अनुराग के वक्ष पर भी छुरा भोंक देता है। आज इन्दिरा हमारे बीच आ नहीं सकती। हम उसे बडी अजीब दृष्टि से देखत है। इन छोट-छोट बच्चो को उससे घृणा है। क्यो? पहल उसने अपने पति को छोडा। इसके बाद एक ईसाई से विवाह किया। आप नहीं जानते कि मनुष्य का मनुष्य से प्रम करना चाहिए' कहने वाल प्रयाग में कितन सकीण और सकुचित होत हैं। घृणा की भावना दिन प्रति दिन हममें तेज होती जा रही है। म कहूगा कि एक दिन यही भावना घृणा को तीव्र कर देगी और आदमी उतना ही नृशस हो जाएगा जितना वह युद्ध भूमि में होता है।

चक्रवर्ती जब चुप हो गया तब नरोत्तम दुख स बोला आपकी धारणा गलत है। मानवीय प्रम का रूप कल स आज अधिक व्यापक है। हम एक दूसरे क अधिक निकट हैं। हममें घृणा की मात्रा कम हो गई है।

आप क्या कहते है नरोत्तम बाबू! चक्रवर्ती मुह बिचकाकर रूक्ष स्वर में बोला घृणा की भावना कल स आज अधिक है। कल भारत में लोग मानवता का मूल्याकन व्यापक धरातल पर करते थे। पुरु न सिकन्दर को छोड दिया युद्धक्षेत्र में उसे मारा नहीं क्योकि उसने उसकी प्रयसि से राखी बधवाली थी। चन्द्रगुप्त ने हेलन से ब्याह किया पर उसे हिंदू धर्म अगीकार कराके नहीं। महान अकबर न मानसिंह की बहिन से विवाह किया पर उसे मुसलमान बनाकर नहीं। पर आज हममें यह सकीण मनोवृत्ति आ गई है। हमारे एक बगाली लड़के का प्यार एक क्रिश्चियन लड़की स हो गया। विवाह तभी हुआ जब उस लड़के ने क्रिश्चियन बनना स्वीकार किया। बताइए हमारी बधुत्व की भावना व्यापक हुई या घृणा की? केवल आपको का बधुत्व' प्रयोग में खरा क्या उतर सकता है? वह कुछ देर तक मौन रहा जसे वह गभीरता में डूब गया हो फिर धीरे-धीरे क्रमश स्वर को ऊचा करता हुआ बोला इन्दिरा न रोमी के साथ विवाह कर लिया। वह युवा

से है। लकिन मन एक दिन सुबोध को देखा। लपककर उस पकड़ा। पूछा कि तुम कम हो? वह बोला कि मोशाय आपको पहचानन में गलती हुई है। म सुबोध नहीं हूं और उसन मुझ एक प्राचीन कहानी सुनाकर यह साबित कर दिया कि एक चेहरे क कई व्यक्ति हो सकते हैं। मन सोच लिया कि यह अपन आपको छुपा रहा है। इसीलिए मने उसे बातों ही बातों में तीख सत्य से अवगत करा दिया कि इन्दिरा न रोमी नामक क्रिश्चियन से विवाह कर लिया है।

वह बनी शांति से बोला लता में जब तक लिपटन की शक्ति होगी तब तक वह अपन समीप की वस्तु स लिपटगी ही।

हां वही बिल्कुल वही चक्रवर्ती बाबू म भी उस सन्यासी से मिला था। मुझ भी उसन अपनी कहानी सुनाई थी। सच है उसके तारुण्य को देखकर मन तरस से भर आया। नरोत्तम व्यग्रता स बोला।

एस पति को त्याग कर इन्दिरा न उस स्याही बचन वाल से नाता जोड़ा। छि! छि! पतन हो गया है इस इन्दिरा का।

म इन्दिरा से मिला था।

सुनदा चाय लकर आ गई थी। बोली आप इन्दिरा दीदी से मिले थ? कब? वह कसी है? उसका स्वर एकाएक निश्छल हो गया और फिर उसकी मुद्रा कठोर हो गई जस उसे किसी घृणित बात का ध्यान हो आया हो।

'अच्छी है।

'पर बाबा दिन प्रतिदिन उसके कारण क्षीण होते जा रहे हैं। य पल भर भी अपन अशांत मन को धय नहीं देत। डाक्टरों का कहना है कि यह अशांति बड़ा भयानक है।

चाय का घूट लकर नरोत्तम बोला 'होनी होकर ही रहती है। इन्दिरा का जीवन उसके साथ सुखी है, ठीक है। अब हमें यही सोचकर धय धारण कर लना चाहिए कि इन्दिरा हमारी बिटिया थी ही नहीं।

मनुष्य अपन आपसे इतना बड़ा छल कसे कर सकता है? सत्य असुन्दर होकर भी दृश्य है। दृश्य को हम कस झुठला सकते हैं? चक्रवर्ती बोला।

'लकिन अब उस दृश्य को देखकर अपन आपको पीड़ा पहुंचाना भी उचित नहीं।

सोचता हू कि नही पहुचाऊ पर मन नहीं मानता। आप नही जानते कि इन्दिरा की घृणा अब मेरी घृणा हो गई है। लोग मुझसे घृणा करते है कि इसने अपनी बेटी को बिगाडा।

लोगो की जबान आप नहीं रोक सकते पर आपको इससे उद्विग्न नही होना चाहिए। देखिए, अभी आपके सिर पर बडी जिम्मेदारी है। सुनन्दा और आपका बच्चा '

मुझपर कोई जिम्मेदारी नहीं है। सुनन्दा के लिए एक लड़का ठीक कर लिया है। रेल्वे में फोर्थ क्लास का कर्मचारी—बंगाली है। चरित्र का अच्छा और मेहनती। आगामी सर्दी में विवाह हो जाएगा।

चाय खत्म हो गई थी।

चक्रवर्ती की पत्नी इन बातो से ऊबी हुई प्रतीत हुई। उसकी भाव भगिमा से लगता था कि वह इन बातो को टालना चाहती है। बीच में ही प्रभावशाली ढग से बोली नरोत्तम बाबू आपने विवाह किया या नही ?

नहीं। लजाकर नरोत्तम बोला जैसे उसे अब इस उम्र में कुवारा नहीं रहना चाहिए।

क्यो आपको कौन-सी दिक्कत है ?

कोई नहीं।

या लव-मरिज के चक्कर में हैं क्यो दादा ? सुनदा ने बीच में ही कहा। उसके होंठो पर कुटिल हास्य था।

लव-मरिज !' चक्रवर्ती पुलिस की भाति भारी स्वर में बोला लव-मरिज कभी मत कीजिएगा नरोत्तम बाबू इन्दिरा का परिणाम आप देख हो चुके हैं। मुझे अब प्रेम-परिणय से चिढ़ हो गई है। सोचता हू यह सब बकवास है।

नरोत्तम कुछ नहीं बोला। उस समय उसे तप्ति की स्मृति हो आई। फिर इधर-उधर की बातें होती रही। चक्रवर्ती घृणा पर ही बार बार जोर देता था। उसकी बीवी और सुनन्दा नरोत्तम के विवाह के बारे में मजेदार प्रश्न पूछते जा रहे थे।

लगभग दो घटे के बाद नरोत्तम वहा से चला। इन्दिरा के प्रति उसके मन में घृणा भर आई थी। उसने सोच लिया था कि वह इन्दिरा के यहां कभी नही जाएगा।

उसने अपने इरादे को एक बार फिर दोहराया और चौरंगी पर चल पड़ा। वहां उसने सनीचर नामक हिंदी पत्र खरीदा और जाकर होटल में बैठ गया। चाय पीते-पीते उसको लगा कि वह इन्दिरा से न मिलकर अच्छा नहीं कर रहा है। आखिर वह उसकी कर्जदार है। उसे चलकर अपने रुपयों का तकाजा ही कर लेना चाहिए। तकाज के लिए जाना भी एक आदमी की अपनी शान होती है। और उसने जल्दी-जल्दी चाय पीकर बिल चुकाया।

ट्राम बेलजली की ओर जा रही थी। वह लपककर उसपर चढ़ गया। उतरा और इन्दिरा की कोठी की ओर गया। रोमी तुरन्त नीचे उतरा। सम्मान सहित ऊपर ले जाकर बोला मुझे अब छुट्टी दीजिए, मैं शाम तक आऊंगा।

नरोत्तम ने उसपर तुरन्त चोट की क्यों कोई बड़ा सौन्दा होने वाला है मिस्टर रोमी ? वह हंस पड़ा। रोमी उस हंसी से उदास हो गया। तभी इन्दिरा आ गई। रोमी पर व्यंग हुआ सुनकर वह ठिठक गई। फिर वह सव्यंग मुस्कराकर बोली 'रोमी तुम्हें उदास नहीं होना चाहिए, भरा पेट सदा खाली पेट पर हंसता ही है।'

रोमी ने कोई उत्तर नहीं दिया वह चला गया।

उसके जाते ही इन्दिरा बोली, नरोत्तम तुमने यह अच्छा नहीं किया। वह बेचारा भय की खुशी के कारण बहुत परेशान रहता है।

मुझे यह मालूम नहीं था कि वह इतना गंभीर हो जाएगा।'

अच्छा पहले तुम यह बताओ कि कब आए। अरे मैं भी कैसी पगली हूं। तुम्हारे लिए चाय बनाना भी भूल गई। नरोत्तम बोलने को उद्यत हुआ पर इन्दिरा ने उसे रोक दिया तुम्हें चाय पीनी ही होगी। सच नरोत्तम तुम्हें देखकर मैं ऐसा अनुभव करती हूं कि जैसे खुशी का आलोक मेरे चारों ओर बिखर गया है। उसने अपने भीतर फूटती हुई हंसी को बड़ी सावधानी से रोक लिया।

लेकिन मैं चाय पीकर आया हूं।

'तब शाम का खाना हमारे यहां रहा आज मेरी सालगिरह है। तुम्हारे लिए स्पेशल खाना पकाऊंगी।

लेकिन मुझे पांच बजे वाली गाड़ी से जाना है।

आज तुम नहीं जा सकते।

क्यों ?

म जो कहती हू ।

पर वहां भी तो तृप्ति बीमार है।

तृप्ति ! इन्दिरा कुछ देर तक चुप रही फिर बोली क्यों नरोत्तम क्या तृप्ति तुम्हारे बिना ठीक नही हो सकती ?

/ तुम गधी हो। नरोत्तम ने चिढ़कर कहा, हर बात गलत तरीके से ही सोचती हो। वास्तव में तुममें बहुत बडा परिवतन आ गया है। तुम पहले वाली इन्दिरा नहीं रही। |

इन्दिरा ने उसका कर-स्पश करके कहा 'पर आज तुम वहा नहीं जा सकते। और हां, में तुम्हारे रुपए नहीं लौटा सकी। इसके लिए क्षमा मांगती हू।

इन्दिरा कुछ रुककर बोली आज शाम का खाना तुम यहीं खाओग। आज मेरा ज म दिन है। ससार में यदि प्रेम नाम की कोई वस्तु है तब तुम यहां से नहीं जाओग। देखो रोमी कुछ सामान खरीदन के लिए गया है।

इस बार नरोत्तम को लगा कि इन्दिरा क स्वर में अपनत्व का अभाव है। उसका पूर्ण अभिनय व्यग स परिपूण है।

'इन्दिरा मैं जा रहा हूं।

नहीं रुकोगे ?

नही। वह उठ खडा हुआ।

तब फिर जाओ तृप्ति अच्छी लडकी है। तुम्हे सुख ही देगी। वह सीढ़ियां उतरन लगा, इन्दिरा पीछे स बोली म तुम्हारे रुपए शीघ्र लौटा दूगी।

✓ और नरोत्तम सोच रहा था—रोमी के साथ रहते रहते इन्दिरा में गहरा परिवर्तन आ गया है। उसकी भावुकता सिक्कों की टक्कर में बुझ-सी रही है। वह जान गई है कि ससार में रुपयों के बिना कुछ नहीं होता। कुछ नहीं होता। |

२१

इन्दिरा के प्रति नरोत्तम के मन में फिर घृणा की लहरें उठने लगीं। वह घृणा उसके मानस-मन्दिर में धूम्र की उठती हुई लपटों की भांति प्राच्छन्न होने लगी। उसे महसूस हुआ कि उसके अन्तर में घृणा के सिवाय और कुछ भी नहीं है।

इन्दिरा जो पहले अपनी मान के लिए बड़े से बड़ा दुख झेल सकती थी वह रोमा की होकर कितनी दुर्बल हो गई है। वह गहरी आत्मीयता स्नेह प्यार का ढोंग करके उसे बनाती है। तब उसे लगा कि आपसी बन्धन मनुष्य को कमजोर कर देते हैं। वह भी कितना मूर्ख है। उसे दृढ़ होकर इन्दिरा से अपने रुपए मांगने चाहिए थे पर वह न जाने कैसे अपनी इस दुर्बलता को त्याग पाएगा। वह उसके सामने जाकर क्यों दुर्बल बन जाता है?

रेल अपनी रफ्तार से खटाक खटाक करती जा रही थी। नरोत्तम के हाथ में एक डिब्बा था उस डिब्बे में एक बबुआ था रबर का बबुआ। जिसे हिलाया जाता तो वह अपनी मधुर आवाज में कहता— मां!

तृप्ति ने वह बबुआ मंगवाया था। क्यों? वह मुस्करा उठा।

नरोत्तम को उसकी पुनः याद आई। एक दिन एक युवक उसे देखने आया था। उसे तृप्ति पसन्द आ गई थी पर दहेज को लेकर सारा मामला बिगड़ गया। यह भी कैसा समाज है। उसे समाज पर बड़ा ही रोष आया। उसका वश चलता तो वह इस अवस्था का आमूलचूल परिवर्तन कर देता।

विचारों की उथल-पुथल में वह वापस मिल पहुंचा। क्वार्टर में कदम रखते ही मोना ने प्रवेश किया।

नरोत्तम दा दीदी आपको खूब याद कर रही है।

क्यों?

मैं क्या जानूं? उसने बाल स्वभाव से मुस्कराकर कहा।

तू कुछ भी नहीं जानती?

नहीं तो पर अनुपमा दीदी कहती थी कि आप तृप्ति दीदी से प्यार करते हैं।

छि छि छि! वह बिल्कुल मिथ्या भाषण करती है। उपेक्षा के भाव का

प्रदान करके नरोत्तम मन ही मन न जाने क्यों पुलकित हो गया।

फिर आप वहां चले जाइएगा।

ठीक है।

नरोत्तम जब आफिस पहुंचा तब मनजर गुलाटी सेठजी के पत्र पर मुनीम हरप्रसाद से बातचीत कर रहा था। नरोत्तम को देखते ही वे दोनों इस तरह उचककर खड़े हुए जैसे वे इस बात के प्रयास में हैं कि वे दोनों एक दूसरे से अधिक उसके शुभ चिन्तक हैं। गुलाटी ने तपाक से कहा सेठजी का पत्र आया है उन्होंने लिखा है कि नरोत्तम बाबू जिसे उचित समझेंगे एक दफा भेज देंगे।

नरोत्तम ने मुंह पर हाथ फेरकर कहा 'ठीक है लेकिन इसपर इतनी जल्दी निर्णय कैसे किया जा सकता है'

मुनीम तुरन्त अपने कान में कलम खोंसता हुआ बोला आप ठीक कह रहे हैं यह मामूली बात थोड़ ही है।

लेकिन मैं कल शाम तक यह निर्णय कर लूंगा कि एक बार कलकत्ता किसे भेजा जाए? पद भी तो साधारण नहीं है। नरोत्तम ने कहा।

'ठीक है। गुलाटी ने कहा जब आप अपने कार्य से निवृत्त हो जाएं तो मुझसे मिलते जाइएगा। कुछ विशेष व्यक्तिगत बातें करनी हैं।

नरोत्तम ने स्वीकृति दे दी। तभी मुनीम बोला आज सन्ध्या को आपको मेरे यहां ही खाना खाने आना पड़ेगा। दाल की पूरियां और पकौड़े बनेंगे उन्हें गर्मागर्म खाया जाए तभी मजा रहेगा।

मैं आऊंगा। नरोत्तम ने मंद मुस्कान से कहा।

उनकी स्वीकृति पाकर मुनीम ने गर्व भरी दृष्टि से मनजर की ओर देखा जैसे वह आंखों की भाषा में कह रहा हो कि मैं भी आपसे कम नहीं। कम नहीं।

लगभग तीन घंटे पश्चात नरोत्तम गुलाटी से मिला।

गुलाटी ने सिगरेट का कश खींचकर कहा आपके क्वार्टर के सम्मुख कोई तृप्ति नाम की छोकरी रहती है?

क्यों?

'उसको लेकर यहां भिन्न भिन्न चर्चाएं उठ रही हैं?

मतलब ? नरोत्तम एकदम गंभीर हो गया।

आप यह भलीभांति जानते है कि प्रत्येक समाज में कुछ बुरे तत्त्व होते हैं जिनका काम सिर्फ एक ही है कि लोगों की कमज़ोर भावना को उभाड़कर उनसे अपनी अपराधी वृत्ति का शमन करना। मेरा मतलब यह है कि कल वे लोग कह रहे थे कि आफ़िसर होकर कामगरों की बहू-बेटियों पर कुदृष्टि नहीं रख सकता। और वह बुड्ढा खोतन यहां तक कह बैठा कि थोड़े दिन पहले मन उस खोखी (लड़की) तृप्ति को नरोत्तम बाबू के कमरे में लगभग ९ १० बजे खिलखिला कर हंसते हुए देखा था। इस प्रकार का भ्रष्टाचार यहां नहीं चल सकता। ये सब बातें आपके वातावरण को दूषित कर सकती हैं।

नरोत्तम धैर्य से सुनता रहा।

गुलाटी ने आगे कहा आप जानते हैं कि ये लोग निकृष्ट वृत्ति के होते हैं दया नाम की वस्तु इनके दिमाग में बहुत कम होती है। कहीं अकेले देखकर छुरा-चुरा भोंक दिया तो अनर्थ हो जाएगा।

(नरोत्तम ने संयत होकर कहा मूर्ख लोग हर हंसी में पाप और हर सम्बन्ध में वासना की दुर्गन्ध देखते हैं। लेकिन हमें इससे भयभीत होकर कर्तव्य विमुख नहीं होना चाहिए।)

वह तो ठीक है। पर कहीं चोट-चोट कर दें तो ?

नरोत्तम के तन में चोट की भयानक पीड़ा की काल्पनिक अनुभूति से सिहरन उत्पन्न हो गई। उसे अचानक राजिया का क्षत विक्षत शव स्मरण हो आया। वह कांप उठा। उसे लगा कि ठीक उसी प्रकार उसे भी लोग एक नारी के कारण छुरों से छलनी कर रहे हैं और वह निढाल हुआ सड़क पर पड़ा है।

नरोत्तम सम्भलकर बोला आपकी राय ठीक है। मैं तो विशुद्ध मन से इनकी सेवा कर रहा हूं। कालरा के कारण बेचारे मज़दूर भयभीत हैं। प्राणों का सम्मोह सबको है। इसपर भी यदि कोई मेरी सेवाओं का गलत अर्थ लगाता है, तो मैं कुछ नहीं कर सकता। जैसा एक आफ़िसर सेवा करता है, वैसी मैं भी कर दूंगा। मुझे भी ऐसे परमार्थ से क्या लेना है जो कि मेरे प्राणों का ग्राहक हो जाए।

तभी गुलाटी ने प्रसंग को न समझते हुए अधिकारपूर्ण स्वर में कहा 'तभी

समझदारों ने कहा है कि मजदूरों को जागने मत दें उन्हें सोचने मत दें उन्हें स्वतंत्र न होने दें। यदि इनमें ये तीन गुण आ जाएंगे तो ये मालिकों की दुनिया अपने अधिकार में कर लेंगे।

नरोत्तम इस दकियानूसी दलील का कोई उत्तर देना नहीं चाहता था पर बात को स्पष्ट करने के ख्याल से कहा मजदूरों का जागना कोई नहीं रोक सकता परंतु गुण्डागर्दी भी नहीं सही जाएगी।

वह उठकर वहां से चला आया।

क्वाटर में आकर वह उन्मन-सा पड़ा रहा। एकाएक उसकी दृष्टि तृप्ति के तोहफे पर पड़ी। तोहफे को देखते ही उसके मन में तृप्ति को लेकर कई भाव आए गए।

वह सोचने लगा कि वह तृप्ति को अवश्य प्यार करता है। उसे उसके समक्ष इस सत्य को स्वीकार कर लेना चाहिए। लेकिन उसकी आत्मा सदा उसे धोखा देती आई है। वह बहुत कमजोर और कायर है। वह कुछ भी नहीं कह सकता।

दरवाजा खटखटाने की आवाज सुनकर उसका ध्यान भंग हुआ। वह उठा और द्वार खोल दिए।

मोना खड़ी थी गुमसुम सी।

क्या मोना कैसे आई हो?

मां पूछ रही है कि आप हस्पताल जाएंगे? मोना का स्वर उदास था और आंखों में सजलता थी।

क्या क्या बात है?

बात कुछ नहीं है दीदी का हृदय उदास है। मां पूछती है कि कुछ फल लेकर आप वहां जाएंगे क्या?

नरोत्तम कलकत्ता से फल लाया था। उन्हें मोना को देकर कह उठा मेरी तबीयत खराब है इसलिए आज मैं वहां नहीं जा सकूंगा तू ही चली जा।

'मैं अकेली?

अरी डरती क्यों है?'

मैं अकेली नहीं जाऊंगी मुझे डर लगता है। उसने रोनी सूरत बनाकर बड़े

ही कोमल स्वर म कहा।

फिर ऐसा कर किसीको साथ ल जा।

हा ज्योत्स्ना चल तो म भी चली जाऊ।

तू उसे ही साथ ले जा और सुन। कहकर नरोत्तम वह डिब्बा उठा लाया और यह डिब्बा अपनी तृप्ति दीदी को दे देना उसे किसी नर्स को देना है।

ठीक है।

मोना और ज्योत्स्ना दोनों हस्पताल पहुची। तृप्ति न जाते ही पूछा मापनार माया पोका खयच--कहां है ?

मोना ने विहसकर कहा उन्होंने यह भजा है। उसने वह डिब्बा तृप्ति के हाथ म थमा दिया।

नरोत्तम दा खद क्या नही आए ? तृप्ति न बबुए को बाहर निकालकर पूछा।

उनकी तबियत अच्छी नही है। वे कह रहे थ कि मेरे सिर में दद है।

उनके सिर में दद है ? देखो माना तू जरा उन्हे एनासिन दे देना। नरोत्तम दा बड लापरवाह ह और अभी मौसम जरा भी अच्छा नहीं है। फिर उन्हें कालरा की रोकथाम भी करनी है। तृप्ति का कठ भर माया मोना अपन दादा की देख भाल करेगी न ?

हां।

तभी उसन उस बबुआ को उठाया और नाच किया। बबुआ बाल उठा मां !

मोना किलक उठी मरी दीदी यह तो बालता भी है--मा ! कितना सुन्दर है यह ! दीदी यह मुझे दे न ?

ज्योत्स्ना अपन हृदय क भावों को नहीं रोक सकी। हाथ बढ़ाकर बाली 'दीदी एक बार मुझ द न म भी इसे बुलाऊगी।

तृप्ति न उसे दे दिया। बबुआ बोल उठा मा !

मा मा मा !

तृप्ति को लगा कि कण-कण में अणु अणु में एक ही शब्द गूज रहा है--मा !

भावोद्रेक के कारण तृप्ति की आंखों में आंसू आ गए। वह बोली मोना नरोत्तम दा को कहना कि वे एक बार जरूर आकर मुझसे मिल जाएं।

म कह दूंगी। कहकर मोना वहां चुपचाप बैठ गई। तप्ति उस बबुए को देखने लगी। मोना और ज्योत्स्ना स्टूलों पर बैठी थी। वे आपस में पुन मिलकर बातें करने लगीं।

मोना आहिस्ते से बोली 'म नरोत्तम दादा को कहूंगी कि वे मुझे भी एक छोटा बबुआ ला दें।

ज्योत्स्ना ने भी अत्यन्त भोलेपन से कहा म भी दादा से कहूंगी कि वे मुझे भी एक बबुआ ला दें।

मोना ने विस्मय से ज्योत्स्ना से पूछा तू उस बबुए का क्या करेगी? मेरे वाले से ही खेल लेना।

क्यों? तू बात-बात पर कुट्टी करके बैठ जो जाती है?

तभी तृप्ति ने कहा अब तुम दोनों जाओ और नरोत्तम बाबू को भेज देना। हां मां से कहना कि दीदी का दिल डूब-सा रहा है।

इस बार मोना ने देखा कि दीदी का चेहरा एकदम उदास हो गया है। वह झटपट उठकर भागी। उसने घर जाकर मां को सारा हाल कहा। मां ने तुरन्त नरोत्तम को कहा। नरोत्तम ने लाख चाहा पर इस बार वह अपने को नहीं रोक सका। उसने कपड़े बदले और हस्पताल की ओर चल पड़ा।

सन्ध्या का धानी आंचल क्षितिज की शोभा-श्री को बढ़ा रहा था। नदी का जल किरणों के कारण इस तरह चमक रहा था जैसे प्रकाश के छोटे-छोटे टुकड़े जल राशि में तैर रहे हों। डूबते सूरज की हल्की रोशनी के आगे उड़ती हुई चील को देखकर दो-तीन बच्चे आपस में बातचीत कर रहे थे कि देखो वह चील सूरज देवता के पास जा रही है।

नदी में चल रही नाव पर बैठा एक मल्लाह चिउड़ा खा रहा था और दूसरा मूढ़ी के फांके मार रहा था। नरोत्तम नितांत मौन बैठा बबुए के बारे में सोच रहा था। उसके विचार बदल गए और किनारा आ गया।

वह शीघ्र कदम उठाता हुआ अस्पताल में दाखिल हुआ। तृप्ति के पास गया।

तृप्ति बबुए को पास में बठाए बुझा-बुझी आशा से द्वार की ओर देख रही थी।

नरोत्तम को देखकर उसके अधरों पर सूखी मुस्कान नाच उठी।

कसी हो ?

तृप्ति न अत्यन्त हल्के स्वर म कहा नरोत्तम बाबू दिल डूबा जा रहा है, सारे सीने में आग-सी लग रही है।

नरोत्तम तुरन्त डाक्टर के पास गया। उसे सारा हाल कहा। डाक्टर उसे सान्त्वना देते हुए बोला घबरान की कोई बात नहीं है। दवा मन दे दी है। आकुलता ठीक हो जाएगी।

नरोत्तम ने आकर तृप्ति को जैसा डाक्टर न कहा था वसा कह दिया। वह वहां बैठ गया—तृप्ति के ठीक सामन। तृप्ति कहन लगी नरोत्तम बाबू क्यों मुझे बार बार लगता है कि म यहां स वापस नहीं जा सकूगी।

धत् पगली हम तुझे एक-दो दिन में यहां स ले जाएगे। रोहिणी तुझे खूब याद करती है। कहती थी कि इस बार तृप्ति का विवाह कर देंगे—यह भी खूब धूमधाम स।

तृप्ति न कहा कल रात मन एक स्वप्न देखा था। घोर मरुस्थल आग की भांति दहकती बालू और उस बालू में अन्तहीन तृष्णा लिए पवन-वेग से भागता हुआ एक मृग। मृग क्या था—स्वर्ण-मृग ! वह भागता रहा। उसे बार-बार अनत सागर दीख जाता था पर बार-बार उस निराश ही होना पड़ता था। अचानक वह मृग अन्तहीन तृष्णा लिए उस चिलचिलाती धूप में मरन लगा। मुझे लगा कि वह बचारा अवश्य प्यासा होगा इसलिए म जल लेकर उस ओर भागी लकिन व्यथ सब व्यर्थ ! वह बचारा मर गया। तृप्ति कुछ दर तक अपलक नरोत्तम की ओर देखती रही 'इस स्वप्न के बाद मरा मन घबराता हो जा रहा है।'

तुम्हें वहम हो गया है। नरोत्तम ने गदन का झटका देकर कहा प्राय स्वप्न का प्रभाव उल्टा ही होता है। मै कहता हू कि इस स्वप्न के बाद तुम्हें तुरन्त स्वस्थ हो जाना चाहिए। इस प्रकार क स्वप्न का आना अत्यन्त शुभ है। उसने उस सान्त्वना दी।

तृप्ति अपन दिल पर बार-बार हाथ फर रही थी। एसा लगता था कि उसक

हृदय में दर्द है। उसकी आंख झलमलाकर धुंधली हो गई। नरोत्तम उसे धुंधला धुंधला-सा दीखने लगा। उसने आंचल से अपने अश्रु पोंछकर विनीत स्वर में कहा ~~मेरी एक अभिलाषा पूर्ण करेंगे नरोत्तम बाबू ?

तुम आज्ञा करो न ? नरोत्तम ने शीघ्रता से कहा।

'देखिए, यदि मैं मर जाऊं तो आप मुझे वही साड़ी पहना देना जो आप कलकत्ता से लाए थे और आप मुझे जलाने जरूर चलना।' तृप्ति की आंखों से अश्रु ऐसे बह रहे थे जैसे कोई निर्बाध धारा बह रही हो। उसके स्वर में गहरी आत्मीयता छलक रही थी।

फिर वही पागलपन। नरोत्तम ने चिढ़कर कहा रोहिणी कहती थी कि तृप्ति को इस बार मैं कलकत्ता ले जाऊंगी। वहां के अजायबघर में एक अजीब जन्तु आया है।

वह भी पागल है ? तृप्ति ने टूटते स्वर में कहा।

तभी डाक्टर दास ने आकर कहा, मरीज को आराम की जरूरत है। उसे चुप रहने दीजिए।

नरोत्तम ने उठकर डाक्टर दास से पूछा क्या डाक्टर साहब कुछ खतरा तो नहीं है ?

नहीं नहीं खतरा कुछ भी नहीं है। यह लड़की बहुत जल्दी घबरा जाती है। स्वभावतः बड़ी कोमल है।

नरोत्तम चला आया।

२२

निशा का तिमिर नदी के उस पार से इस तरह फैल रहा था जैसे कोई दैत्य काले पर्वत को कंधे पर उठाए चला आ रहा हो। मजदूरों के घरों से निकलती हुई नागिन-सी बल खाती धुएं की लपटें ऊर्ध्व पथ की ओर जा रही थीं। नल पर अनुपमा दादी और सेफाली बुआ बैठी-बैठी बाल्टियां मांज रही थीं। कुछ लड़के

सब्जियां के थल लिए हुए घरों की ओर लपक रहे थे।

नरोत्तम मुनीम के घर से अभी अभी खाना खाकर आया था। वह सामरसेट माम का उपन्यास ह्यूमन बौंडज अपने विचारों के आन्दोलन को रोकने के लिए पढ़ने लगा। उसने गहरे आत्मसंयम के पश्चात् अपने विचारों पर अपने आप पर विजय पाई और उसने आगे की पंक्तियां पढ़ीं—हेवर्ड के आगमन से फिलिप को अत्यन्त लाभ हुआ। हर दिन उसके विचार मिल्ड्रेड पर कम से कम केन्द्रित रहने लगे। अतीत की ओर वह घृणा से देखने लगा। उसकी समझ में न आ सका कि उस प्रेम के असम्मान के सम्मुख वह कैसे झुक गया था और जब वह मिल्ड्रेड के बारे में सोचता तो क्रोधपूर्ण घृणा के साथ ही क्योंकि उसीके सम्मुख उसे अपनी हीनता प्रदर्शित करनी पड़ी फिलीप को लगा—उसका पुनर्जन्म हो रहा है। वह अपने को घेरने वाली हवा में इस तरह सांस लेने लगा जैसे उसने उसमें कभी सांस न ली हो और दुनिया की हर बात में उसे बच्चों का-सा आनन्द आने लगा।

लेकिन नरोत्तम को लगता है कि उसे भी अपने अतीत के प्रति घृणा है।' इन्दिरा को वह इस तरह भुला देना चाहता है जिस तरह वह उसके जीवन में आई ही नहीं। लेकिन वह चालबाज और प्रभावशाली इन्दिरा हर बार उसे पराजित कर मुस्कराती रहती है। उसे उससे घृणा है। पर उससे भेंट करना नहीं चाहता उसे अब उसका स्वभाव भी गड्ढे के रुके हुए गन्दले पानी की तरह दुर्गन्धमय लगता है। लेकिन फिर भी वह उसकी ओर लोहे की तरह खिंचा चला जाता है जैसे वह चुम्बक है।

जैसे उसके विचारों के ऊपर कोई अन्य शक्तिशाली भावना अपना काम कर रही है जो उसके चाहने पर भी उसे विपरीत दिशा की ओर चलने को विवश करती है। वह उसके निर्देश पर विवश वाहन की तरह चलता है। ठीक उसी तरह अवश कर वह बीच-बीच में रुकता अवश्य है किन्तु फिर उसे कोई आज्ञा देता है 'चल' और वह चल पड़ता है। सचमुच मनुष्य अपनी कई अज्ञात आंतरिक भावनाओं का गुलाम है।

नरोत्तम ने पुस्तक एक कोने में रख दी। अतीत की स्मृतियां आज उसे उप हास भरी लगीं। वह कितना कायर था? एक घटना से आतंकित होकर घर से

भाग आया और फिर कभी लौटकर गया ही नहीं। वह कैसा पुंसत्वहीन प्रतीत है। वह उसे भूल जाएगा। वह अब नए सिरे से अपने जीवन को ढालेगा। कायाकल्प करेगा। वह अब तृप्ति को स्पष्ट कहेगा कि वह उसे प्यार करता है। वह इन्दिरा को भी सावधान करेगा कि वह शीघ्र ही अपने सारे सम्बन्ध व बन्धन उससे तोड़ेगा। उसे उससे जरा भी मोह नहीं जरा भी लगाव नहीं। वह उससे घृणा करता है घृणा।!

इस प्रकार वह विचारों के सीमाहीन लोक में अदृश्य पवन-सा उड़ता रहा। न कोई उसका रुकाव था और न कोई उसका विश्राम!

लगभग रात के दस बजे उसे ऐसी अनुभूति हुई जैसे वह बिलकुल स्वस्थ हो गया है। चंद घड़ी की घोर निद्रा ने उसकी पुंसत्वहीन पुरातनता को नष्ट कर डाला है और उसे नवीन बना दिया है। उसे लगा कि उसकी समस्त भावनाएं बदल गई हैं। वह स्वस्थ है काफी स्वस्थ और एकदम बदल गया है।

उसने उसी समय इन्दिरा को एक पत्र लिखा। उसे विश्वास था कि अन्तर में आए नूतन उद्गारों को यदि ठोस आधार भूमि देकर परिपक्व नहीं किया गया तो वे बदल भी सकते हैं। अत उसने बड़ी शान्ति और विद्वत्ता से पत्र लिखा—

इन्दिरा

एक दिन रेल में मुझे सुबोध मिल गया था। गरुए वस्त्र पहने हुए वह ओजस्वी युवक तुम्हारे साथ अन्याय करने के बाद कितना बदल गया है! तुम्हारी उपेक्षा और तुमसे त्यक्त होने के बाद उसकी अन्तरात्मा में पावन आलोक की सृष्टि हो गई है और वह नारी जाति का अपूर्व सम्मान करने लगा है। उसने मुझे जीवन के कई सूत्र बताए। उनमें एक यह भी है कि मनुष्य नारी के अन्त करण के असीम लोक के एक छोर को भी पूर्ण रूप से नहीं समझ सकता। उसका यह कथन वास्तव में बड़ा ही विचारणीय है। मैं तुमसे पहले पहल मिला। रवीन्द्र संगीत की पुनीत स्वर-लहरियों के महासागर में तन्मय तुम मुझे मीरा-सी महान और शुचि-शुभ्र लगीं। मैं तुम्हारी ओर आकर्षित हुआ। मैंने तुम्हारे ही कारण तुम्हारे परिवार से अपने आत्मीय सम्बन्ध स्थापित किए। फिर हमारा और तुम्हारा यहां साथ हुआ। तब मैंने जाना कि तुमने अपने पति का त्याग कर दिया है। क्या नारी की उस उत्तुंग

जोड़ी का वर देखना।

और बाबा मेन विहसकर कहता है—इस खेल बाबा की बटी मने तेरे लिए गुलाब का फूल देख लिया है।

लकिन तृप्ति को चान्द-सा वर चाहिए। उसे इतने-से सतोष कहां?

कह उठती है—

कालो मत हेरो बाबा जी
कुल न लजावे
गोरो मत हेरो बाबा जी
ग्रग पसीजे
लाबो मत हेरो बाबा जी
सागर चूट
माछो मत हेरो बाबा जी
धन्नू बतावे

नरोत्तम ग्रात्मसात कर लता—न उसे काला चाहिए क्योंकि वह कुल को लजाता है, गोरे की भी उस जरूरत नहीं है, क्योंकि वह ग्रधिक श्रम नहीं कर सकता। वह बार-बार पसीन से तर हो जाएगा। न ग्रधिक लबा कि सेजड़े से फलिया तोड़ सके ग्रौर न बौना ही।

फिर?

तृप्ति उस सत्तभकर कहती है—मुझे तेरे जसा वर चाहिए, तेरे जसा। नरोत्तम क ग्रधरों पर हसी बिखर जाती है।

कल्पना मधुर होती ही जाती है—

विवाह हो जाता है।

बगास की वसुन्धरा महक उठती है।

वर-वधू!

राधा कृष्ण!!

नरोत्तम ग्रौर तृप्ति!!!

जमा! पारों की क्रीडा।

नर्तकियों का समवेत मधुर स्वर—

राधा कृष्ण खले पाशा आनद अपार
पाशाय यदि हार भगवान
मोहन बशी करबे दान
राधा हरल दिबे मुक्ताहार
राधा कृष्ण खले पाशा आनद अपार।

वर अंत में पराजित हो जाता है।

वधू की सखिया प्रमोद और उल्लास में झूम जाती हैं।

फिर स्मृति-पटल पर चिर पुरातन और चिर नवीन चित्र शन शन मुखरित होता है।

तृप्ति दुल्हिन बन जाती है। वधू झिलमिल घूघट की ओट में चिरन्तन नारी सुलभ लज्जा की अजली अपनी मादक अखिया में भरे हुए आई है। अन्तरिक्ष में धूमकेतु की भाति दीप्त उसकी आनन श्री पर आवरण देखकर नरोत्तम मन ही मन कह उठा, अरे अपने प्रभु से यह आवरण कसा ? हम और तुम एक प्राण दो तन हैं।

तृप्ति अपने में और सिमट जाती है।

देखो तृप्ति म तुम्हारी पगध्वनि सुनने के लिए युग-युगान्तर से आकुल आतुर हूं। तुम अपने स्वर्गीय घुघरुओं की अलौकिक ठुमक-ठुमक सुनाकर मुझे मुग्ध करो।

देखो तृप्ति, मेरे ये भटकते नत्र इस असीम शून्य में निरन्तर ज्वलित उस दीपक को ढूढ़ रहे हैं जिसके दर्शन मात्र से नत्रों का भ्रम दूर हो जाता है और व अपने अपराध का दर्शन तुरन्त कर लेते हैं। तुम पूछोगी कि वह दीपक कहा है और मैं कहूगा तेरा मुख !

तृप्ति अपने मंगल मुख से आवरण हटा लेती है। शुभ्र ज्योत्स्ना से कक्ष प्रकाशित हो जाता है।

वह नाटकीय प्रयसि की तरह भावाद्रलन को अपने सौन्दर्याभिमुख आनन पर लिए नरोत्तम के समीप आती है। कहती है— प्राण ! स्तब्ध रात्रि के मौन क्षणों

में नीरव तारागण की मन्द ज्योत्स्ना के अंचल के नीचे म तुम्हारी निर्निमेष दृष्टि से प्रतीक्षा करती रहा हू। धरित्रा क कम्पन के साथ मुझे प्रतीत होता था कि किसी के चरण मेरी ओर बढ़ रहे ह । म वियोगिनी की तरह यन्त्रवत् मदिर नयन में शाश्वत व्यथा बसाए उस देखती थी । लकिन मुझे हताश होना पड़ता था। वे चरण तुम्हारे नही थे वे चरण थ मलय के जो पर्वतों के शृंग से प्रकृति को नुभात विश्व के इस अनंत पथ पर विचरण कर रहे थ । पर म तो तुम्हारे लिए पागल थी । और आज यह दिन आ गया जब मैं तुम्हें अपना महासमर्पण करूंगी। अकिंचन हू विराट में मिल जाऊंगी। ससीम हू—असीम में विलीन हो जाऊंगी।

प्रभु ! मुझे स्पर्श कर !

'प्रियतम मुझे अपन आलिंगन में आबद्ध कर !

अपन पीयूषवर्षक चुम्बनो द्वारा मेरे तीन लोक को जगमगा द।

मरे शत-शत वन्दनों को कृतार्थ कर।

ए मरे प्रियतम म अब पूर्ण रूप स तेरी हू।

नरोत्तम ने तृप्ति की ठोडी उठाकर कहा, तुम जानती हो कि म बहुत भय-भीत और चचल हूं। युगा की मेरी साध आज पूर्ण हुई है। मेरे अन्तराल के विचारो की अनुगामिनी तू है। इसलिए मने तुम्ह अपने सुषुप्त व डरपोक मानस का जाग्रत निर्भय प्रभु मान लिया है।

आ महामिलन के पवित्र क्षणो से जीवन की सार्थकता को पूरा करें।

कल्पनाओं क वितान बुनते गए।

स्वर्णिम व अलौकिक !

प्रिय मिलन क इन आतुर क्षणों की समाप्ति के पूर्व यह झंझा कैसा ? आह मेर और तेर ये अटूट बंधन खड-खड हो रहे है। नरोत्तम कांपने लगा।

झंझा पूर्ण वेग से उठन लगा।

देखत-देखते उस झंझावात के अंधड़ में नरोत्तम स तृप्ति दूर बहुत दूर हो गई। वह उसे पुकारता रहा।

पर कहां ?

वह अन्धकार अमर हो गया।

नरोत्तम मूच्छित होकर गिर पडा।

जब वह चैतन्य हुआ तब उसके सम्मुख उसकी प्रतिकाय खडी थी । वह प्रतिकाय बडी बलिष्ठ थी। उसने अट्टहास करके कहा अरे वह मिलन स्वप्निल था। वास्तविकता यह है कि तुम्हारी कायरता के कारण उस आराधिका को प्राण देने पडे।

देख वह क्या ?

नरोत्तम की कल्पना वीभत्स हो गई।

उसने देखा कि उसके सम्मुख तप्ति का निर्जीव निश्चल शरीर पडा है। उसका मन हाहाकार कर उठा।

सिसकियो की धीमी ध्वनि ने नरोत्तम को भावलोक से कठोर प्रस्तर पर ला पटका।

उसने सोचा कि वह भी अपराधी है जिसके कारण तृप्ति अपने मधुर स्वप्न लेकर मर गई।

लाश उसके समक्ष पड़ी थी।

श्रीमती सेन अब भी सिसक-सिसककर निद्रा की गोद में सोई रो रही थी। सेन साहब एक कोने में अभी अश्रुपूर्ण नेत्रो से समाधिस्थ नरोत्तम को देख रहे थे। मोना कमर के बल लेटी सिसक रही थी।

जो होना था वह तो गया नरोत्तम बाबू !

मरण पर किसीका अधिकार नहीं है।

कल हस-हसकर सबको प्रसन्न करती थी और आज ।

नरोत्तम चुप रहा। उसकी भारी पलकों से फिर अश्रुस्राव होने लगा। सेन साहब नभ की ओर दृष्टि किए बैठ गए।

तृप्ति को देखकर वह अपने आपसे कह उठा तृप्ति, तुम मुझे क्षमा करना। सदा तुमसे यह कहना चाहता था कि मै तुम्हे हृदय से प्यार करता हू पर तुम्हारे सम्मुख आते ही मेरा साहस न जाने कहा लुप्त हो जाता था। मै सदा यह विचारता था कि अपने मन मन्दिर की कल्पना की प्रतिमा तुम्हे बनाऊगा और यही सोचकर मै अर्चन और समर्पण की भावना लिए तुम्हारे पास आता, पर न जाने

मेरी वाणी को क्या हो जाता था ? यह समाज यह उसकी सड़ांद, यह उसकी सकीर्ण भावना म प्राफिसर और तुम मजदूर की बटी ! सम्बन्ध पाप म हार गया। मेरे मन की मेरे मन में ही रह गई तृप्ति !

प्राकाश-गगा की ज्योतित धारा में मयूर रूपी तरणी पर बठी हुई तृप्ति चली गई। नरोत्तम ने देखा कि वह परियो-सी कोमल और सुन्दर है। उसके मुख पर सहस्र-सूर्यो-सा प्रकाश और तेज है।

पर यह लाश ?

उफ़ ! वह बार बार क्यो सुखदायी कल्पनाम्रा में विचरण कर अपने को मर्मान्तक पीड़ा पहुचा रहा है ?

वह तो मर गई है। उसके प्राण-पखेरू उड़ गए हैं। यह मिट्टी है मिट्टी। पचतत्त्व की भौतिक काया पुन पचतत्त्व में विलीन हो गई।

मरण मरण !

उसकी वेदना विश्व कवि की अमरवाणी म फूट पड़ी—

वरणमाला गाथा आछ
आमार चित्तमाझे
कब नीरव हास्य मुखे
आसबे वरेर साजे।
सेदिन आमार रबे ना घर
केह वा आपन केह वा अपर
विजन राते पतिर साथ
मिलबे पतिव्रता।
मरण, आमार मरण तुमि
कओ अमारे कथा।

—मने अपने अन्तर में वरमाला गूथ रखी है उसे स्वीकार करने के लिए तुम किस समय अपने मुख पर नीरव मुस्कान लिए आओगे ? उस दिन मेरा घर नहीं रहेगा तथा यह पतिव्रता उस निर्जन रात्रि में अपने पति क साथ मिल जाएगी। हे मरण हे मेरे मरण तुम मुझसे बातें करो।

वह धीरे धीरे गुनगुनाता रहा गुनगुनाता रहा सिसकता रहा। घप रात उन सबकी सिसकियां में डूबी और बीत गई।

२४

तृप्ति की मृत्यु के उपरान्त नरोत्तम के मन में एक गहरी प्रतिक्रिया हुई कि वह बिलकुल मौन रहन लगा। यह मूकता मरघट से लौट आने के बाद उसम और भी गहरी हो गई थी। आजकल वह न किसीस बोलता था और न किसीसे विचार विमर्श ही करता था। मोना यदा-कदा तृप्ति का नाम ले लिया करती तो वह उसे दुख से अभिभूत होकर डाट दिया करता था। वह बचारी डरकर चुप हो जाती थी। श्रीमती सन इस चुप्पी को घातक समझती थी। मुनीम और मनजर दोनो अलग परेशान थ। और यह बात निर्विवाद रूप से सारे क्षत्र में फल गई कि नरोत्तम बाबू और तप्ति का प्रणय-सम्बन्ध था। उदाहरण के लिए इतना ही काफी था कि जितनी चिंता और दुख उसकी मृत्यु पर उसके मा-बाप को नहा है उतना नरोत्तम बाबू को है।

नरोत्तम यह सब सुनकर चुप था। चुप क्या था अपितु यह समझिए कि उसकी आत्मा को यह सब सुनकर अव्यक्त परम सुख मिलता था।

एक रात जब चांद की मधुरिम चादनी में समस्त ससृति डूबी हुई थी तब एक चीख नरोत्तम क कमरे से आई। सन बाबू और उनके दूसरे पडोसी अमिय बाबू दोनों एक साथ बाहर आए और लग एक दूसरे को दखन!

क्या बात है सन बाबू चीख तो मरे कानों में भी आई थी?

अमिय हालदार चादनी में अपनी बिल्लौरी-सी आख चमकात हुए घबराए स्वर में बोले 'म कहता हू कि बडी भयानक चीख थी।

नरोत्तम बाबू के कमरे स आई है। सन बाबू न अपना अनुमान शीघ्र दौडाया।

चलो। अमिय न कहा।

द्वार बार-बार खटखटाया गया पर किसी प्रकार का उत्तर नहीं मिला।

उनके सन्देह को सत्य का आधार मिलने लगा।

अमिय अधिक चपल और चुस्त था। वह तुरन्त दीवार फांदकर भीतर गया। दरवाज़ा खोलकर सेन बाबू को साथ लिया।

दोनों शंकित हृदय से भीतर गए।

प्रकाश किया।

देखा—नरोत्तम बाबू गाढ़ी निद्रा में निमग्न है।

सेन ने कहा नरोत्तम बाबू नरोत्तम बाबू।

फिर उन्हें हिलाया गया। उनके हाथ-पावों को देखा गया। वे गर्म थे। नाड़ी कुछ अधिक गति में चल रही थी। वे समझ नहीं पाए कि उन्हें क्या हो गया है? अमिय ने जल भी उनके मुंह पर छिड़का पर व्यर्थ!

लाचार अमिय भागता हुआ मनेजर साहब के पास गया। उन्हें खबर दी। वे भी भागते भागते आए। सारी रात उन सबने आशा में बिताई।

सवेरा हुआ।

सेन बाबू मैनेजर और अमिय!

कोई निर्णय नहीं! आखिर इन्हें क्या हो गया है?

एकाएक उन्हें ऐसा लगा कि नरोत्तम बाबू के अधर फड़क रहे हैं। वे कुछ अस्पष्ट शब्दों में कह रहे हैं। सेन बाबू ने उसपर झुककर पूछा क्या है नरोत्तम बाबू!

वही अस्पष्ट बड़बड़ाना।

मैनेजर ने आगे बढ़कर नरोत्तम को बिठाते हुए पूछा क्या बात है नरोत्तम बाबू?

मुझे इसने मारा है और मैं इसे बहुत कष्ट दूंगी। नरोत्तम एकाएक चीखकर भड़क उठा। मैनेजर कांपकर रह गया। सेन बाबू के ललाट पर पसीना आ गया पर अमिय अमिय ही था। पहलवाननुमा नास्तिक।

नरोत्तम भड़ककर बोला, आप हट जाइए मनेजर साहब!

मैनेजर साहब के प्राणों पर क्षण भर के लिए आ बनी। भीगी बिल्ली की भांति वे सहमकर एक कोने में दुबक गए। उनका चेहरा पीला पड़ गया।

अमिय भड़ककर बोला तुम्हें किसने मारा बता ?

नरोत्तम चीखकर बोला 'नरोत्तम बाबू ने वे मुझे प्यार करते थे मुझसे विवाह करना चाहते थे पर उस निष्ठुर ने सदा मुझे छला। वह छलिया है। धोखे बाज है।

तू कौन है ? अमिय ने डांटकर पूछा।

तृप्ति सेन बाबू की बेटी !

सब निश्चल और जड़।

तू क्या चाहती है। अमिय ने पूछा।

विवाह ?

किससे ?

नरोत्तम बाबू से !

'यह कैसे हो सकता है ?

मैं नहीं जानती।

अच्छा कर देंगे। पर तेरी मुक्ति करा दें।

नहीं पहले मेरी शादी कराइए। वह गरज पड़ी।

नरोत्तम पुन बेहोश हो गया।

उस दिन यह बात सारे क्षेत्र में इस तरह फैल गई जैसे अंधेरे पर सूर्य प्रकाश।

सबकी जबान पर एक ही बात थी तृप्ति प्रेतनी हो गई।

तृप्ति भूतनी हो गई।

वह नरोत्तम बाबू को लग गई है।

आतंक, भय और प्रभु प्रार्थना।

उस समय के चेतन हुए नरोत्तम बाबू लगभग दो बजे फिर अचेत हुए। इस बीच वे किसी से बोले नहीं। उनकी भंगिमा विचित्र और भयानक थी। अचेतावस्था में रो रोकर उन्होंने आकाश अपने सिर पर उठा लिया। अमिय की ड्यूटी मैनेजर साहब ने वहीं लगा दी। अमिय ने पूछा 'तू क्या चाहती है ?

'मुझे भूख लगी है।

क्या खाओगी ?

मिठाई।

तुरन्त मिठाई मगवाई गई। कई आदमी तुरन्त एकत्र हो गए।

नरोत्तम की प्रतनी न सारी मिठाई खा ली। सब ऐसत रहे। बाबा रे बाबा! दो सेर मिठाई एकसाथ खा गई।

मनजर साहब डाक्टर को बुलाकर लाए। उन्होंने सारे केस का अध्ययन करके बताया कि इन्ह फिट का रोग हो गया है। व्यथा के आघात ने इनकी चतना पर विस्मृति का क्षणिक आवरण डाल दिया है। तृप्ति के स्वर में बोलना आज के युग में कोई आश्चय की बात नहीं रही है। मनोवज्ञानिकों न इस प्रमाणित कर दिया कि एक दूसरे में कभी-कभी गहरे साम्य सस्कार होत है और उसकी प्रतिक्रिया कभी इस रूप म भी प्रकट होती है। उन्होन यह भी साबित कर दिया है कि हमारे अचतन मन के कूप में बहुत-सी स्मृतियाँ दबी पड़ी रहती हैं। वे स्मृतियाँ परिस्थितिवश प्रकट होती हैं तब एसा ही होता है।

उन्होने दवा दे दी अब इनको होश काफी देर के बाद आएगा।' जाते-जाते, उन्होंने कहा।

मनजर साहब को इसस सात्वना नही मिली।

और डाक्टर साहब ? हम लोग बहुत घबरा गए है।

अच्छा यह होगा कि आप इन्ह यहाँ स कलकत्ता भज दीजिए। प्रत-प्रतनी के चक्कर में फसकर आप खामखा ही नरोत्तम बाबू का कष्ट देंगे।

दूसरे दिन नरोत्तम बाबू की चतना लौटी। इसके बीच कई बार तृप्ति बोली थी। अंत में तृप्ति न यह भी कहा था कि अभी म दो दिन के लिए जाती हूं।

नरोत्तम की चतना लौटने पर भी उसे इस रहस्य म अनभिज्ञ रखा गया। उसे बताया गया कि उसे फिट आने लग हैं। लकिन नरोत्तम ने स्वय बताया कि उसे तृप्ति रात-दिन दीखती रहती है। वह उसके पास बठी थी, उसने उसस बहुत-सी बातें की थीं।

लोगो के विश्वास को बल मिला— तृप्ति निस्सन्देह प्रतनी बन गई है।

वृद्ध पुरुष एव अधविश्वासी व्यक्तियों न झूठ-मूठ ही यह कहना प्रारम्भ कर दिया कि उन्होंने कच्चा आम के पास के नाच तृप्ति को आम खात देखा था।

एक न कहा कल दोपहर को बारह वजे तृप्ति नदी में तर रही थी। उसन अपन साथ में एक मगरमच्छ पकड रखा था।

मनुपमा दादी न कहा कल मुझे सपने म तृप्ति कहने लगी कि दादी अब तू पुनर्विवाह कर ल। तरा मन पाप और असयम से भरा हुआ है। यदि तू एसा नही करेगी तो म तुम्हें एक दिन जान स मार दूगी।

कृष्णा दीदी कापते स्वर में बोली मुझ उसन वह वह डाट पिलाई कि म रातभर सो नही सकी। कहने लगी कि तू कुवारी रहकर पाप करती है। देख तेरी दशा बहुत खराब होगी।

भूत के आतक न पापात्माओं के पाप प्रकट कर दिए।

मनुष्य का भूत स्वयं उसमें होता है। उसकी भावना इन सभी अधविश्वासा की सजक है।

कहन का तात्पय यह है कि मिल-एरिया में उन दिनो तृप्ति प्राय सबको किसी न किसी रूप में दीखने लगी।

नरोत्तम को कलकत्ता भज दिया गया।

वहां उसे एक अत्यन्त प्रवीण मनोवैनानिक डाक्टर को दिखलाया गया। उसने उस केस का बहुत गम्भीर रूप से अध्ययन किया।

पहले ही दिन जब डाक्टर ब्लड टस्ट करन के लिए तयार हुआ वस ही नरोत्तम ने इनकार कर दिया।

दो अन्य व्यक्तियो न आगे बढ़कर उसके हाथो को पकडा। उसकी भगिमा में परिवतन आन लगा। दखते-देखते उसका सारा शरीर तन गया। पुतलिया विचित्र तरह से धीरे धीरे ऊपर की ओर उठ गई। डाक्टर ध्यानपूर्वक उसे दखन लगा। उसन दखा नरोत्तम की समाम नस तन गई है। वक्ष फूल रहा है। सास अत्यत तीव्र गति से चलन लगी है। हर सास के साथ अधर फड़क कर 'फू' की आवाज कर दत हैं। अत्यत क्रोध की मुद्रा में वह चीखकर बोला 'मुझ छोड़ दो छोड दो मुझ, वर्ना म सबको मिटा दूगी।

डाक्टर न उस मुक्त कर दिया।

अत्यत कोमल स्वर।

विस्मय घोर विस्मय।

सभी आखें फाड़-फाड़कर जिज्ञासु की भांति देखने लगे। नरोत्तम बोला, म बीमार नही हू जो मुझे सताएगा उस मैं कभी भी सुख से नही रहने दूगी।

इस वाक्य को सुनते ही सेठ न सठानी की ओर भीत दृष्टि से देखा, जसे वे नेत्रा की भाषा में कह रहे हो कि कहीं यह डायन हमारा अनिष्ट न कर दे। सेठानी न कुछ उत्तर नही दिया। वह जसे अपने पति के नत्रो की भाषा समझ गई हो अत भयमिश्रित दभ के साथ रुकते रुकते बोली आप चिंता न कीजिए, जादूगर मिया अब्दुला जी से घर को खीला* कर रखा है। अपना कोई कुछ नहीं बिगाड सकता।

नरोत्तम भडककर बोला मै बीमार नहीं हू इस डाक्टर को यहा से ले जाओ वर्ना म इसको कभी भी चैन नही लने दूगी। उसन शब्दो पर जोर देकर कहा, मने कह दिया न कि म रुग्ण नही हू मुझे कोई बीमारी नहीं है। मै नरोत्तम बाबू को लने आई हू मैं इसे लकर जाऊंगी इसने मुझे बहुत सताया है मुझसे प्यार नहीं किया मुझे दुल्हन नही बनने दिया है, यह बड़ा निष्ठुर है निष्ठुर मै इसे ले जाऊगी ले जाऊगी। कहकर नरोत्तम न एक जोर की चीख मारी और अचेत हो गया।

डाक्टर सुन्न-सा बठा रहा। सब कुछ जानते हुए भी वह युगो से चल आ रहे अन्धविश्वासों के प्रति पूर्ण रूप से स्वतन्त्र नही हो सका था। उसके बदन में जड़ता सी आ गई।

सेठानी ने आकुल होकर पूछा अब क्या होगा डाक्टर सा नरोत्तम कैसे बचेगा ?

आप निश्चिन्त रहिए, चिंता की कोई बात नही। यह सब मन के रोग हैं, तन के नहीं। जीवन की अनुप्तिया सस्कारों का साम्य उनकी प्रतिक्रियाएं और कुछ नहीं नयिग ।

थोड़ी देर बाद नरोत्तम स्वस्थ हो गया।

डाक्टर ने पूछा कसी तबीयत है ?

---

* खीला कर रखा है—मत्रों से घर को सुरक्षित करा लिया है।

ठीक है सिर अवश्य भारी है।

'और कुछ ?'

कुछ नहीं, कुछ नहीं। सब ठीक है। अरे आप सब लोग मुझे इस तरह क्यों देख रहे हैं ?

नहीं तो ? डाक्टर न कहा आपकी तबीयत एकाएक खराब हो जाने के कारण ये सब घबरा गए हैं। आप सब चलिए म नरोत्तम बाबू से कुछ बातें करना चाहता हूं।

कमरा खाली हो गया। डाक्टर न व्यर्थ ही अपनी घड़ी को देखा। गभीर मुद्रा को और गभीर बनाकर बोल नरोत्तम बाबू थोडी देर पहले आपको कुछ ।

क्या कुछ ? वह हठात् बीच म बोला।

तृप्ति दिखलाई पड़ी थी।

नहीं तो।

याद कीजिए।

म आपको अपन बारे में इतना ही कह सकता हू कि मेरा सिर भारी है। अग अग में पीड़ा है बस।

डाक्टर खामोश हो गया।

बाहर की ऋतु में परिवतन दिखने लगा। थोडी देर पहल जो स्वच्छ निमन आकाश था वह काली-पीली आधी से दानवी प्रकोप-सा भयकर दीखने लगा।

घटाटोप अन्धकार। खें ख की ककश आवाज !

पक्षियों की चिघाड और मकानों की छतों पर बनी छोटी-छोटी रसोइयों व कोठरियों के टिनों की धड़धड़ाहट।

डाक्टर न लपककर चौक के दरवाज खिड़कियां पर चढ़ा दिए। कमरे में उमस उत्पन्न हो गई। पखा खोल दिया गया।

डाक्टर न कहा तृप्ति की मृत्यु के बाद वह आपको दीखी या नहीं। जैसा आपका-उसका सम्बन्ध था उसस ?

नरोत्तम सजग होकर बोला वह मुझे रात को स्वप्न में दीखती है।

स्वप्न में ?'

हा मुझे ऐसा लगता है ।

हा-हा ! मुझसे छिपाकर रखन की कोई जरूरत नहीं नरोत्तम बाबू, मैं डाक्टर हूं भयानक से भयानक और मधुर से मधुर सत्य को म सुनता हू । सौन्दर्य की पावनता से लकर रूप की वीभत्सता तक को म गहरी आत्मीयता स ग्रहण करता हूं । मुझस कुछ भी नही छपाइए । निस्सकोच होकर कहिए कहिए न ?'

वह मुझे प्राय रात को दीखती है । प्यार की बातें करती है । और तो और वह मुझ अपनी गोद में । कहते-कहते वह भयभीत हो गया । उसकी मुख-मुद्रा बदल गई । तनिक रोष भरे स्वर में बोला मने कह दिया न, यह सब म आपको नहीं बता सकता । उसने मुझ मना कर रखा है । डाक्टर साहब आप विश्वास कीजिए यदि म आपको उसके बारे म सब कुछ बता दूगा तो वह मेरा गला दबा देगी । वह मुझसे सख्त नाराज है । उसका कहना है कि मने उसे बहुत पीडा पहुंचाया है । नरोत्तम के नत्र भर आए ।

डाक्टर उसे आराम करन को कहकर चल गए ।

उस रात डाक्टर नरोत्तम के कमरे के समीप वाले बरामदे में ही लेटे रहे । उनका सारा ध्यान नरोत्तम पर केंद्रित था ।

लगभग एक बज नरोत्तम निद्रा में उठ बैठा । उसका मुख फूल-सा खिला हुआ था । उसके चहरे पर मुस्कानों के सहस्र सूरज दीप्त हो उठे थ । मुदित स्वर में बोला, तुम आ गई तृप्ति देखो आज म तुम्हारी बड़ी देर स प्रतीक्षा कर रहा हूं ।

कुछ देर वह शात रहा । उसके हाथों की हरकत से स्पष्ट जाना जा सकता था कि वह तृप्ति के हाथों को अपन हाथों में ले रहा है । उसने अपने पलग पर एक बार हाथ मा सकेत किया जसे वह तृप्ति क बठने क लिए जगह बना रहा हो ।

तुम चिंता न करो, अब मैं तुम्हें कभी भी छोड़कर नहीं जाऊगा । आपप से कहता हू कि मे तुम्हें सच्च मन से प्यार करता हू । कह नहीं सका, यह मेरी कायरता थी ।

इतना कहकर नरोत्तम बिस्तर पर अर्द्ध शायित हो गया ।

अपन सिर पर उसने हाथ रखकर कहा तुम्हारा हाथ कितना कोमल है तृप्ति, बस इसी तरह तुम मरा सिर सहलाया करो तुम्हारे स्पर्श में कितना सुख है ?

हो मुझे नीद आ रही है। तुम पास में हो फिर स्वप्नों के संसार में न खाऊं यह कैसे हो सकता है! देखो मुझे नींद आ रही है एक बार कह दो—आपनार माथा ओका खेयच !

डाक्टर ने देखा नरोत्तम सो गया है। गहरी और प्रगाढ़ निद्रा में।

चौथे दिन उस हरकत के साथ दुलहिन की बात चल पड़ी थी। निद्रा की बेहोशी में ही नरोत्तम ने कहा, अब मैं तुम्हें जल्दी ही दुलहिन बनाऊंगा। अब मैं स्वयं अपने एकांत से घबरा गया हूं। तुम दृष्टि से जैसे ही ओझल होती हो वैसे ही मन उदास हो जाता है कुछ भी अच्छा नहीं लगता। तुम सदा पास रहा करो।

डाक्टर के दिमाग में कुछ बातें उठीं—नरोत्तम को व्यस्त रखा जाए सेक्स को लेकर जो अघात कुठाएं उसके अचेतन मन में घर कर चुकी हैं उनको दूर किया जाए।

उसके लिए उसका विवाह हो जाना अत्यन्त आवश्यक है। दुलहिन की आकांक्षा के साथ एकांत की समाप्ति!

नारी से भय पलायन प्रेम आसक्ति और अतृप्ति!

सबकी समाप्ति!

फिर इनका विवाह कर ही दिया जाए। डाक्टर ने यह तय किया।

एक माह के कठिन प्रयोग के बाद नरोत्तम की हालत काफी सुधर गई। आज कल रात को वह कम हरकत करने लग गया था।

उसके मां-बाप भी आ गए थे। पुत्र का सम्मोह उन्हें खींच लाया था। वे उसके सम्मुख बार-बार एक ही प्रस्ताव रखते थे तू विवाह कर ले तेरे सारे रोग दूर हो जाएंगे। उन्होंने यह भी बताया कि तेरी मंगेतर कितने वर्षों से प्रतीक्षा कर रही है।

कई बार नरोत्तम मां की इन बातों की उपेक्षा कर दिया करता था। वह जानता था कि उसे मानसिक रोग है और कोई भी मानसिक रोग आगे चलकर जीवन के लिए खतरनाक सिद्ध हो सकता है। ऐसी हालत में किसी से भी विवाह करके वह अपने साथ किसी दूसरे की जिन्दगी को एक जलती हुई लकड़ी नहीं बना सकता। जीवन के इस दुर्गम पथ पर भला कौन प्राणी किसी पागल या रोगी के साथ जान

बूझकर बधकर चलना चाहेगा ?

उस दिन उषा के प्रागमन से प्राची दिशा सतरंगी प्राभा से उद्भासित थी। धीरे धीरे फैलता हुआ प्रकाश ऐसा लगता था जैसे किसीन प्रकाश-पुंज को एक विशाल घेरे में बन्द कर दिया हो। समीर शीतल था। वातावरण में हल्का-हल्का प्रारभि कोलाहल उठ रहा था।

सेठजी अपने मुंह में दातुन डाले हुए मोटर से उतरे और उसके साथ नरोत्तम भी। प्रायः वह सदा उनके साथ विक्टोरिया मेमोरियल घूमने आया करता था।

आज भी सेठजी ने सदा की भांति नरोत्तम को विवाह के लिए कहा।

उसने वही आपत्तियां सेठजी के सम्मुख रखीं।

सेठजी ने गंभीरतापूर्वक कहा तू नहीं जानता यह लक्ष्मी होती है, उसके पांव बड़े शुभ होते हैं। तू हां करले। देख न बेचारी तारिणी कितने वर्ष से तेरी हां का इन्तजार कर रही है।

सेठजी यदि उसे यह मालूम हो गया कि मैं पागल हूं तो वह इस नाते को कभी भी स्वीकार नहीं करेगी।

सेठजी ने विस्मय भरे स्वर में कहा वाह भाई वाह! हम उसे पता भी नहीं चलने देंगे ऐसे बुद्धू हम थोड़े ही हैं।

'ऐसा अन्याय मैं नहीं कर सकता।

बात वहीं रुक जाती पर सेठानी के तीव्र आग्रह के कारण आज सेठजी इस बात पर तुल ही गए। नरोत्तम हजार बहाने करता रहा पर सेठजी ने आज उसकी एक भी नहीं चलने दी।

नरोत्तम को हां भरा कर दम लूंगा। अब वे सीधे उसके साथ ही नरोत्तम के कमरे में आए।

नरोत्तम की मां उसके लिए चाय बना रही थी।

तुरन्त उनके बैठने का प्रबन्ध किया गया।

वे नरोत्तम की मां को सम्बोधित करके बोले देखो बाई नरोत्तम मेरी बात नहीं मान रहा है। मैं समझा-समझाकर हार गया हूं। भला कोई लड़की यह जान

कर इससे शादी कैसे करेगी कि यह थोड़ा-बहुत पागल है।

'यह सोलह आने ठीक है।' नरोत्तम का बाप गोपाल प्रसाद बोला।

फिर मैं किसीके जीवन के सवनाश का कारण क्यों बनूं ? उसकी बद्दुआएं क्यों लू ? नरोत्तम ने सीधा उत्तर दिया आज मां सवेरे-सवेरे कह रही थी कि तुम रात को उठ गए थे। किससे बातें कर रहे थे। शादी की विवाह की। रात की दिन की। फिर बताइए न कि इस हालत में मैं विवाह करके क्यों किसीकी जिन्दगी बरबाद करूं।

पर डाक्टर साहब यह कहते थे कि विवाह से इनका ध्यान बंट जाएगा और इनकी हालत सुधर जाएगी।

यदि आपको मेरे सुधर जाने की आशा है तब आप किसी लड़की को मेरी हालत के बारे में सब कुछ बताकर विवाह के लिए रजामंद कीजिए, उसे अंधेरे में मत रखिए।

लेकिन ।

और यह लेकिन' हमेशा काफी विवाद का विषय बन जाता था। परन्तु आज इस बात ने नई करवट ली। तारिणी के दोनों पत्र पढ़ गए। उनमें निर्णय किया गया कि उसे यहां बुला लिया जाए। यहां बुलाकर उसे सारी परिस्थिति से अवगत कर दिया जाएगा।

मां ने भी विश्वास के साथ कहा 'वह कहना मान ही लेगी। वह बड़ी सुशील और सुशिक्षित है। फिर उसने यह भी प्रण कर रखा है कि वह विवाह करेगी तो केवल नरोत्तम से।'

सेठजी आह छोड़कर बोले छोकरी बहुत पढ़ी-लिखी है। डाक्टर साहब कह रहे थे कि ऐसी लड़की मिल जाए तो बेड़ा पार हो समझो।

तारिणी हंसमुख आई।

वह भी सेठ जी के यहां ही ठहरी। सेठानी का विचित्र स्वभाव था।

भी पराया ग्रादमी उसे विशेष ग्रपना लगता था। उसका ममत्व उस व्यक्ति का ग्रोर इतनी तीव्रता से लिपटने लगता था जैसे वह ममता का ग्रजस्र स्रोत है और वं फूटकर तुरन्त बंजर भूमि को लहलहा देगा।

सेठानी को तारिणी बहुत भा गई। प्रफुल्ल रक्ताभ कमल-सा मुख वाली तारिणी उसे परियों की रानी लगी।

सेठानी ने एक बार पुन देखा—साक्षात् लक्ष्मी !

बेटी तू लक्ष्मी है। वह विह्वल स्वर म बोली म तुझे अपनी बहू बनाऊंगी ही।

तारिणी का मुख लज्जा से आरक्त हो गया।

लोग भी कैसे नीच होते हैं। मिल के पास कोई लड़की मर गई थी। उससे नरोत्तम डर गया था बस लोगों ने ग्रच्छे भले को पागल कहना शुरू कर दिया। पर वह पागल नहीं है भयभीत है। बस तेरा सहारा पाकर वह बिलकुल ही अच्छा हो जाएगा। स्त्री अपने पति के रोगों की सच्ची दवा होती है बेटी। सेठानी ग्रर्थ भरी हंसी हंस पड़ी।

फिर न जाने क्या-क्या उपदेश देती रही सेठानी। तारिणी धैर्यपूर्वक उसकी बातें सुनती रही। क्या उत्तर देती ? प्रसन्नता व ममत्व में वह रही थी।

भोजन करके वह नरोत्तम से मिली।

ग्रचानक ग्रद्वितीय सौन्दय देखकर नरोत्तम निर्वाक हो गया।

एकांत एकाकी ग्रौर सौन्दय !

ग्रपलक-ग्रचल पक्ष्मों की बातें।

नमस्कार !

नरोत्तम ने उसकी ग्रोर देखकर मुस्करा भर दिया। हाथ स्वत ही कुर्सी की ग्रोर उठ गए। उसे पहले ही मालूम हो गया था कि तारिणी ग्राई है। उसने ग्रपनी मा से यह भी सुना था कि वह बहुत रूपवती है। नम्र है। शीलवती है।

तारिणी बैठ गई।

नरोत्तम उसे देखता रहा।

वही मुग्धा—नवीन से विपरीत ग्रनजान हृदयों वाली।

नरोत्तम कुछ देर तक उसे देखता रहा फिर मुस्कराकर बोला 'आपका इरादा अब भी पूर्ववत् है ?

जी।

लेकिन आपने यह भी सुन लिया होगा कि आजकल मैं मानसिक रोग से पीड़ित हूं।

जी नहीं। इतना जरूर सुना है कि इधर आप अस्वस्थ हैं। और वह होना भी चाहिए।

क्यों ?

यह आयु ही ऐसी है। कहकर वह तनिक हंसी और तुरन्त गंभीर हो गई। उसकी प्रश्नमयी अंखियों में रहस्य-सा उमड़ पड़ा।

मैं आपका मतलब नहीं समझा।

यह मेरे हृदय का पाप भी हो सकता है। क्या आपने मुझे नहीं सताया ? इसलिए, मैं आपकी अभी तक प्रतीक्षा कर रही हूं।

ठीक है कदाचित् जीवन भर संयोग नहीं होता लेकिन अब स्थिति बदल गई है। अब मैं वह नरोत्तम नहीं हूं जो पहले था।

क्यों ?

मुझे हर घड़ी ऐसा लगता है कि कोई मेरे पीछे-पीछे चलता रहता है। कोई मेरा हाथ पकड़े रहता है। रात्रि के नीरव क्षणों में कोई मेरे पांव दबाकर अपने जीवन को धन्य करता हुआ मिलता है। मैं उससे बातें करता हूं। जानती हैं आप वह कौन है ? तृप्ति !

तारिणी जरा सावधान होकर बैठ गई।

वह सांस लेकर बोला 'यह तृप्ति मुझे बहुत सताती है। पल भर भी सुख और सन्तोष नहीं लेने देती। हरदम कहती रहती है कि तुमने मुझे बहुत सताया दुख दे-देकर मारा है।

तारिणी कुछ अधिक न कहकर इतना ही कह पाई आप अकेले हैं न इसलिए वह आपका साथ नहीं छोड़ती। जहां आप एक से दो हुए, सब ठीक हो जाएगा।

सुनिए, अभी कोई आपको दीख रहा है ? नहीं फिर जब आप अपने सन्देह

भौर उन सस्कारों को भ्रपन मन से हटा दगे जो तप्ति के सस्कारा से समानता रखत है, तब सब ठीक हो जाएगा। न कोई भ्रापका पीछा करेगा भौर न भ्राप किसी के पीछ भागगे।'

'तब ? नादान बालक की तरह वह जिज्ञासा भरा प्रश्न कर उठा।

तारिणी बोली मने पहल ही भ्रापको लिख दिया था कि म विवाह करूंगी तो केवल भ्रापसे भ्रन्यथा भ्राजन्म कुवारी रहूगी। भ्राज वह दिन भ्रा गया है जब मरी सीमन्त में सिन्दूर लगगा। मैं सब कुछ जानती हू भौर एक मनोविज्ञान की छात्रा रहन के कारण म भ्रापस यह भी कह सकती हू कि भ्रापको कोई रोग नही है। भ्रापको स्वप्न भ्राते हैं भौर सदा एक-सा ही स्वप्न भ्राते हैं। क्योकि भ्राप सदा एक को केन्द्र बिंदु बनाकर सोचा करत थ भौर तृप्ति का लकर की गई कल्पनाए भ्रापक भ्रचेतन मन में सोई पडी हैं जो समय पर स्वत हा कार्यान्वित होती है।

नरोत्तम कुछ नही बोला। वह तारिणी के मुख को देखता रहा, देखता रहा।

उसे लगा कि वास्तव में यह तारिणी बड़ी दृढ़ प्रतिज्ञ है। यह उससे विवाह करके ही दम लगी। फिर भी उसने एक बार उससे प्राथना भरी स्पष्टोक्ति कही लोग मुझ पागल कहते हैं।

भ्राप किसीकी जबान नही रोक सकते।

फिर ?

भ्राप बताइए कि भ्रापको तो इस विवाह स किसी प्रकार की भ्रापत्ति नही है ? कहिए।

इसके बार में म भ्रापस इतना हा कह सकता हूं कि भ्राप स्थिति बिगडन पर मुझ दोष न दीजिएगा तथा पीडा देकर मुझे मत जलाइएगा।

तारिणी के चहरे पर भ्रदम्य उत्साह क साथ-साथ पूण नारीत्व का भाव जग मगा उठा नारी केवल श्रद्धा है। वह त्याग पर सम्पूण विसजन कर सकती है। इतना कहकर वह उठ गई।

शहनाई के मधुर स्वरों के साथ नवीन जीवन की मन्दाकिनी प्रवाहित हुई। अत्यन्त सादगी से विवाह सम्पन्न हुआ। न तड़क भड़क और न व्यर्थ का बोझ। केवल एक दिन थोड़ी-सी चाय-पार्टी। सेठानी केवल प्रसन्न ही नहीं थी बल्कि वह प्रसन्नता में इतनी भाव विभोर हो गई थी कि उसने तारिणी के मुंह को नारियों की भारी उपस्थिति के बीच चूम लिया। तारिणी संकोच से लाल हो गई और अन्य युवतियां संगीत की मादक झंकार की भांति हंस पड़ी।

नरोत्तम के माता-पिता के जीवन की पवित्र साध पूरी हो गई।

वे बार-बार अश्रुप्लावित हो उठते थे जैसे प्रसन्नता के ये अश्रु उन्होंने वर्षों से इसी दिन के लिए छिपा रखे हों।

और नरोत्तम?

वह बार-बार शंकित होकर पीछे देखता था जैसे उसके पीछे कोई दुलहिन बनी आ रही है। उस दुलहिन ने वही धोती पहन रखी है, जो एक बार वह तृप्ति के कहने पर खरीदकर लाया था।

संदेह भय और आशंकित होकर वह घूम घूमकर पीछे देखता था।

छम् छम छम्!

घुंघरू की ध्वनि!

वह क्या करे? नरोत्तम को लगा कि इतने गंभीर कोलाहल में भी तृप्ति का स्वर तीव्र चीख की भांति गूंज रहा है, 'मैं तुम्हें प्यार करती हूं मैं तुमसे विवाह करूंगी, तुम मेरे हो।'

जैसे-तैसे वह अपने कमरे में पहुंचा।

वहां पहुंचते-पहुंचते वह काफी बेचैन हो गया।

सुहाग रात की मधुर-मधुर बेला में तारिणी नरोत्तम के चरणों में बैठी थी। वह रही थी—कल्पनान्मुख आपका मन क्षण-क्षण इसपर केन्द्रित होता है कि तृप्ति मेरे पास है। क्या आप इन पुनीत और प्रणय से उच्छवसित क्षणों में मुझे तृप्ति के बारे में कुछ बता सकेंगे? नरोत्तम ने हाथ से अपनी डायरी की ओर संकेत

कर दिया।

तारिणी नरोत्तम को आराम से लिटाकर डायरी पढ़ने लगी। धीरे धीरे उसे महसूस हुआ कि तन्द्रित नरोत्तम किसी अज्ञात भय से जकड़कर उसके पाँव को बड़े जोर से पकड़ रहा है। उसकी भयभीत मुद्रा से पता लगता है कि जैसे उसे कोई स्वप्न में जबरदस्ती छीन रहा है।

वह डायरी को एक ओर रखकर उसे गौर से देखने लगी।

नरोत्तम बड़बड़ाने लगा मैं सच कहता हूँ कि मैंने तुम्हें धोखा नहीं दिया मैं सदा से कमजोर मन का रहा हूँ मुझमें संघर्ष की शक्ति नहीं मैं सदा तुम्हें अपनाना चाहता था पर मेरा साहस ही मुझसे सदा छल कर जाता था। विवाह विवाह मैंने कहाँ किया? यह तो मैंने सबकी आज्ञा का पालन किया है। मैंने कहा न कि मैं बहुत दुर्बल हूँ। सबने अधिक दबाया और मैंने हाँ कर ली। हाँ, सचमुच मैं तुम्हें अन्तर से प्यार करता हूँ। अब भी तुम कहती हो कि मुझे स्पर्श करते हुए झिझकते क्यों हो? न मालूम कौन-सी अज्ञात शक्ति मुझे कह रही है कि रुक जाओ रुक जाओ। फिर भी तृप्ति मैं तुम्हें कभी नहीं भूल सकता। आपनार माया पाका खयचे तुम्हारा यह वेदमंत्र जिसमें प्रणय का वारिधि आलोडित हो रहा है वह हृदय से कब भुलाया जा सकता है? यह असम्भव है बिलकुल असम्भव!

क्षण भर गहरी शून्यता छा गई!

वह काली का मन्दिर!

वह हरी युग-युग की साथ तुमने ही कहा था कि चलो नरोत्तम दा मैं आपके लिए खाना बना दूँगी। पर तुम तो मुझे हठात् छोड़कर चली गई? यह तुम्हारा अन्याय नहीं? बोलो चुप क्यों हो?

तारिणी ने देखा नरोत्तम बिस्तरे पर बैठ गया है। उसके नेत्र खुले हैं पर वह जाग्रत नहीं है। वह वहाँ से उठकर एक ओर खड़ी हो गई।

नरोत्तम ने कहा यहाँ बैठो नहीं तो बैठो न यहाँ कोई नहीं है। यहाँ हम और तुम और तुम और हम! फिर तुम जान गयी! मैं डंके की चोट कह सकता हूँ कि तुम मेरी हो। तुम मेरी हो। मैं तुम्हें अपनी बनाऊँगा चाहे विश्व की समस्त

नक्तियां मेरा विरोध करती रहें । फिर कब आओगी ? कल कल जरूर आओगी न ? अब म किसीसे नहीं डरूगा, हा सच बिलकुल सच !

नरोत्तम मत्रचालित-सा पुन विस्तरे पर सो गया ।

तारिणी विचारों में तन्मय नरोत्तम को देखती रही देखती रही ।

फिर वह डायरी सम्पूर्ण पढ़ कर सो गई ।

२७

कई दिना बाद ।

नई दुलहिन न अपन हाथा स चाय और नाश्ता बनाया था । नरोत्तम स्नान करके आया । सेठजी की सबसे छोटी लड़की लक्ष्मी आ गई थी । लक्ष्मी की आयु ...न वष की थी । नई दुलहिन के प्रति उसकी बनी जिज्ञासा थी ।

लक्ष्मी को नरोत्तम न गोदी में उठाकर मेज पर बिठा लिया । लक्ष्मी चाह भरी दृष्टि से हलुए को देखन लगी ।

खाओ बिटिया ।

लक्ष्मी न नहीं खाया । वह उन दोनों की प्रतीक्षा करन लगी । तारिणी हस कर बोली पहले आप खाइए बाद में यह खाएगा ।

क्यों ?

लीजिए ।

नरोत्तम न जसे ही कौर लिए, वस ही लक्ष्मी खान लगी । नरोत्तम न कहा तुम्हें तो इस मन साइकालाजी का बड़ा ज्ञान है !

उसन है तो सही इस शब्द को अपन मन ही मन दोहराया । फिर वह गभीर हो गई ।

तुम गभीर कैसे हो गई ? नरोत्तम न तल हुए आलू को चखते हुए कहा जल्दी विवाह न करन का एक यह भी दुष्परिणाम उठाना पड़ता है कि व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ बच्चों की तरह खिलखिला नहीं सकता ।

म यह सोच रही हू कि आप जसे विद्वान पुरुष किस तरह प्रेत-योनि के चक्कर में पड गए। उसन नरोत्तम की बात पर ध्यान न देकर कहा।

नरोत्तम की आखो में व्यथा झलक उठी कल मुझे फिर तप्ति दिखाई दी थी। वह सचमुच प्रतनी है। वह मेरे पीछे-पीछे घूमती रहती है। एक बार डरकर मन उसस पूछा भी था कि क्या तुम मेरा जीवन लोगी ? जानती हो कि उसन क्या उत्तर दिया ? कहन लगी कि नही रे तू मेरा सच्चा प्रीतम है। म तुम्हे सदा जीवन दूगी। तारिणी इन भूत प्रतों क बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है ?

तारिणी गभीर हो गई।

लक्ष्मी हनुमा खाती-खाती बाहर चली गई।

नरोत्तम चाय का एक प्याला समाप्त कर चुका था। तारिणी न दूसरा प्याला बनाकर उसे दते हुए कहा यह मनुष्यो का आदिम युग का सस्कार है। भूत प्रत हमारी प्राचीन शब्दावली मात्र है। आप देखेंग कि आदिम युग में मनुष्य का ज्ञान पूर्ण रूप स जाग्रत नही हुआ था। वह जगली पशुओं की भाति रहता था। फिर भी उनमें कई वस्तुओं क प्रति गहरी जिज्ञासा थी जस सूरज वर्षा और बच्चा !

वह आज के अबोध बालक की भाति सोचा करता था कि यह सूरज क्या है ? यह वर्षा कस होती है ? यह बच्चा कसे पदा होता है ?।

मनुष्य चतुर है। इसलिए उसकी जिज्ञासा तीव्रतम होकर इस निर्णय पर पहुची कि सूरज कोई आग का गोला है जो लुढ़कता हुआ पश्चिम की ओर जाता है, वहा उस गोल को एक भयानक अजगर निगल जाता है। कदाचित् पश्चिम स फलता हुआ अधकार उन्हे सापो और अजगरो के अलावा अधिक कुछ नहीं लगा होगा ?

साथ ही साथ उन्होन यह भी निर्णय किया कि यह आग का गोला इतना भयानक और शक्तिवान है कि वह सदा उस अजगर को जलाकर उसके पेट को फाड़कर पुन बाहर निकल आता है। इस तरह उन्होन सूरज के अस्त और उदय की विधि की स्थापना की।

इसी प्रकार बरसात के बारे में उन्होन अपनी अजीब मान्यताए बनाइ। जब वर्षा क पूव आधी तूफान और बिजलिया का कड़कना और बरसना ! क्योंकि वर्षा

की उपादेयता के बारे में उनकी सुपुप्त प्रज्ञा एक अरसा तक सोचन लगी थी, इस लिए उन्होंने यह निश्चय किया कि अवश्य इस नील निलय के पीछे कोई ऐसा व्यक्ति अथवा कोई ऐसी शक्ति है जिसका यह प्रताप है।

यहां उनको सवप्रथम एक महाशक्ति का आभास होता है।

मनुष्य के बारे में उनमें कई जिज्ञासाएं और भ्रांतियां थी।

जसे जब मनुष्य चलता था तब उसका छाया उसके साथ साथ चलती थी। यह छाया भी उन आदि पुरुषो के लिए अत्यन्त कौतूहलपूर्ण प्रश्न उत्पन्न करती थी। वे समझते थे कि यह छाया मनुष्य के अंग का एक भाग है।

आपको विश्वास नहीं होगा। आज भी गावो में ही नहीं शहरो तक में छोटे छोटे बच्चे यह कहते हुए आपको मिल जाएंगे कि छाया पर पांव मत रखना। और तो और कभी-कभी कोई दुबल लड़का जब सबल से पराजित हो जाता है तब वह तिलमिलाकर उसकी छाया पर पांव पटकने लगता है। उसे इससे भी संतोष का अनुभव होता है कि चलो, मन उसे खुद नहीं उसकी छाया को ही पीट तो दिया।

तब हम इस निर्णय पर बिना किसी हिचकिचाहट के पहुंच जाते है कि इन छाया में मनुष्य की आत्मा या आत्मा के अंग की स्थापना समझी गई है। तब उस समय उन व्यक्तियों में इस छाया का बहुत भारी महत्त्व भी रहा होगा।

बाद में उन्हें यह भी पता चला कि यह छाया मनुष्य के मरने के बाद समाप्त हो जाती है इसलिए उस छाया के प्रति उनकी आस्था और गहरी हो गई। वे इस निर्णय पर पहुंच गए कि इस छाया का मनुष्य की देह से अत्यन्त गहरा सम्बन्ध है।

'तब उनके इस विश्वास ने अंधविश्वास का रूप धारण कर लिया।

हो सकता है किसीकी मृत्यु के बाद किसीको वह छाया दीखी हो जिस तरह आज यह आपको दिखलाई पड़ती है। क्योंकि अक्सर यह देखा गया है कि इस प्रकार की घटनाएं इसी सिद्धांत पर फलीभूत होती हुई देखी गई है कि एक प्रेत प्राय अपने निकटतम मित्र को ही दीखता है।

'युग का विकास हुआ। मनुष्य के प्रज्ञा चक्षु जसे-जसे खुलते गए, उनकी मान्यताओं और धारणाओं ने नई स्थापनाएं की। क्योंकि इन भूत प्रेतो के मनो

विधान से सपनों का बहुत गहरा सम्बन्ध है। अत सभव है किसी व्यक्ति को कभी स्वप्न में विचित्र आकृति का व्यक्ति दीखा हो और उसने तुरन्त भूत प्रेतों की एक विशेष आकृति को जन्म दे दिया हो। धीरे धीरे कल्पनामयी ये आकृतियां जन-साधारण में प्रचलित होती गई।

क्योकि हम कभी-कभी प्रतीकात्मक और अपनी इच्छा के प्रतिकूल भावना के दृश्य स्वप्न में दीखते हैं। जैसे हमने किसी सुन्दरी की कल्पना की है और इसके विपरीत हमें अत्यन्त कुरूप युवती के दर्शन हो गए। यही बात इस छाया की आकृति रूप मन में रही होगी। यह भी सत्य है कि हम इतिहास की महान् वीर विभूतियों और धार्मिक नेताओं की आकृतियां के बारे में भी कोई प्रामाणिक धारणा नहीं बना सकते। तब हम कल्पना-लोक की मिथ्या धारणा के बारे में विशेष अद्वितीय कल्पना कैसे कर सकते हैं? इसपर ये भूत प्रेत हमारे मन में अच्छी भावना के प्रतीक नहीं माने गए हैं। आरम्भ से ही मृतक व्यक्ति की छाया देखकर मनुष्य के मन में भय का उद्रेक हुआ होगा। इसलिए ऐसी कल्पना कर ली गई है कि भूत के सींग होते हैं उनके पांव उल्टे होते हैं इत्यादि। ऐसा भी हो सकता है कि किसीने प्रतीकात्मक स्वप्न देख लिया हो और ऐसी धारणा का प्रचलन कर दिया हो।

कुछ भी हो लेकिन यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि इस योनि का कोई अस्तित्व नहीं। यह केवल मन की उपज है आत्मा का भ्रम है।

'धीरे धीरे मनोवैज्ञानिकों ने इस बारे में अनेक प्रयोग किए। उन्हें पता चला कि यह योनि हमारे संस्कारों से सम्बन्धित है क्योंकि संस्कारों का जन्म किसी वस्तु को बार-बार देखने से अथवा सुनने से होता है। आप तब्ति को लेकर सदा कुछ न कुछ देखते और सुनते रहते हैं। अत यह आश्चर्य की वस्तु नहीं कि आप इस प्रकार की हरकतें करने लग जाएं। मनोवैज्ञानिकों ने इस इस तरह स्पष्ट किया है कि मनुष्य के मन और तन के बीच प्राणों का सम्बन्ध है, प्राण ही तन और मन के सम्बन्ध को समाप्त कर देते हैं। और हमारा यह मन तन से सम्बन्ध रहित होकर, एक सामूहिक मन में मिल जाता है।

'पाश्चात्य विद्वानों की ऐसी भी धारणा है कि हम सबका एक सामूहिक मन होता है तब यह तो निर्विवाद रूप से मान लेना पड़ता है कि जब हम सबका एक

सामूहिक मन है तो हमारे सस्कार एक सीमा तक परस्पर सामजस्य की भावना जरूर रखते ह। तब हमारे सवग उद्वग विचार भी एक हद म साम्यता रखा एसा मान लना पडता है।

अब म आपको जरा और स्पष्ट कर दू कि य भूत प्रत सिवाय मन के भ्रम क कुछ भी नही हैं। उनका सम्बन्ध सामूहिक सस्कारों का परस्पर मिलना ही है। जब व्यक्ति की अपनी चेतना हाश खो देती है तब दूसरों क सस्कार उसमें समाहित होकर बोलने लगते ह।

म आपको कभी कुछ उदाहरण लकर इसे और स्पष्ट करूंगो।

२८

इन्दिरा ने हुष स प्रफुल्लित हाकर कहा रोमी!'

रोमी ने गर्दन उठाकर गम्भीर दृष्टि स इंदिरा को ओर दखा। इन्दिरा की मुख-श्री प्रसन्नता स दीप्त थी। भाग्य अभी तक उनक साथ नहीं हुआ था। इधर आर्थिक विषमताओं के कारण उन दोना के बीच मौन दुराव उत्पन्न हो गया था। यह मौन दुराव उनमें कुठाओं का जन्म द रहा था।

क्या है? कुछ क्षण क उपरान्त रोमी न पूछा। उसके स्वर में उसक अन्तर् की अनिच्छा स्पष्ट रूप से झलक रही था।

देखो मैं तुम्हारे लिए क्या लाई हू?

मैं क्या जानू? उसन तनिक भी उत्सुकता नहीं दिखाई।

यह रहो। कहकर उसन अपन आचल के नाच से एक नमप्लट निकाला। उसपर मिस्टर रामा की जगह थी राम' लिखा था।

यह क्या? उसन विस्मय स पूछा।

आज से तुम राम हो गए। एकपत्नी-निष्ठ राम सीता के लिए वनकी खाक छानने वाले राम।

तुम्हारी यह मनोवृत्ति अच्छी नहा है।

क्यों ? इन्दिरा की मुद्रा एकदम बदल गई।

देखो मैंने तुम्हारे कहने से अपनी पुरानी बाड़ी छोड़ी वेश भूषा और भाषा सभी को छोड़ा। किन्तु मैं इसे उचित नहीं समझता। तुम मेरी विवशता का अनुचित लाभ क्या उठाती हो ?

इन्दिरा की भृकुटियां देखते-देखते तन गई।

मैं अनुचित लाभ उठा रही हूं ? देखो रोमी यह लांछन मुझे अच्छा नहीं लगता। उसने नाराजगी के स्वर में कहा।

रोमी पुनः गम्भीर हो गया।

आसमान बिलकुल साफ था। पड़ोसी का बच्चा जोर-जोर से चांय चांय कर रहा था।

मैं लांछन की बात नहीं करता हूं। फिर भी यह विचारणीय है कि हम एक दूसरे पर पूर्ण रूप से विश्वास क्यों नहीं करते ?

इन्दिरा की भौंहें किंचित वक्र हो गईं। वह लम्बे स्वर में बोली मैं तुमपर पूर्ण विश्वास नहीं करती ऐसा तुम्हें नहीं कहना चाहिए। ऐसा कहकर तुमने मेरे अनुराग और स्नेह को बड़ी ठेस पहुंचाई है।

रोमी से राम बनाने की क्या आवश्यकता पड़ी ?

राम मुझे प्रिय लगता है। प्रिय को अपनाने में विश्वास खंडित नहीं होता। तुम्हारी यह धारणा कि मैं तुम्हें ईसाई से हिन्दू बना रही हूं सर्वथा मिथ्या है। मैं तुम्हें प्यार करती हूं मन तुमपर सर्वस्व विसर्जन किया है क्या मेरा इतना भी अधिकार नहीं कि मैं तुम्हें रोमी से राम बना दूं। इन्दिरा की आंखों में सजलता चमक उठी।

ऐसा किसने कहा ? वह अन्दर ही अन्दर भयभीत हो उठा।

तुमने ! तुम ईसाइयों से घृणा करते थे। तुममें जरा भी असहिष्णुता नहीं थी तुम अत्यन्त उदार थे। मुझे स्वप्न में भी यह ध्यान नहीं था कि तुम इन छोटी छोटी बातों को लेकर मुझे पीड़ा पहुंचाओगे। इन्दिरा के नेत्रों में अश्रु छलछला आए।

मैं ईसाइयों से घृणा करता हूं यह तुमने कब जान लिया ? मैं उन ईसाइयों

से घृणा करता हूँ जो मानवीय भावनाओं से परे प्रभु योशु के नाम पर धब्बा लगाते हैं। देखा न मिस्टर बोस ने ।

इसपर भी तुम उन निम्न कोटि के व्यक्तियों में रहना चाहते हो ? आज तो केवल उन्होंने धार्मिक भावना के अन्धे प्रवाह में तुम्हारी रोटी रोजी छीनी है, कल वे तुम्हारा जीवन भी छीन लेंगे।

आदमी क्या इतना क्रूर बन सकता है ? वह विस्मय भरे स्वर में इस तरह बोला जिस तरह उसने यह प्रश्न मुख्यतः इन्दिरा से नहीं अपने आपसे किया हो।

'ज़रूर बन सकता है। धर्म की पुस्तकों में जितने व्यापक रूप से दया और करुणा के गीत गाए गए हैं आदमी उतने ही भयकर रूप से हृदयहीन और कठोर है। जरूसलम के धर्मयुद्ध क्या इसके प्रमाण नहीं जहाँ ईसाइयों ने धर्मयुद्ध का नारा बुलन्द करके सारे यूरोप को मृत्यु की आग में झोंक दिया था ? ईसाइयों द्वारा यहूदियों को जीवित जला देना उस राक्षसी प्रवृत्ति का द्योतक नहीं जो उनके मन में धर्म के कारण ही उत्पन्न हुई थी ? उसने एक दीर्घ निश्वास लिया और शांति से बोली 'हम परमात्मा का नाम लेकर मनुष्य को इतना बड़ा अवश्य बना देते हैं कि वह सूरज की भांति निःस्वार्थ होकर सबकी सेवा करे किन्तु वह गन्दे नाले के पानी-सा भी उदार नहीं होता है जो जंगल के व्यर्थ वृक्षों को सींचकर उन्हें हरा बनाता है।

रोमी उसकी ओर एकटक देखता रहा।

इन्दिरा चाय का पानी चढ़ाने लगी। चाय का पानी चढ़ाते चढ़ाते वह बोली, 'तुम्हारे समाज में अहंकार भरा पड़ा है। तुम्हारे ईसाई भाई कानून द्वारा सत्य का गला घोंटना खूब जानते हैं। उनकी नैतिकता इतने नीचे गिर गई है कि वे अपनी युवा लड़कियों को भी अपने सुख के दाव पर लगा देते हैं। तुम कदाचित भूल गए हो कि मिखारो थामस' की हत्या में क्या दैवी चमत्कार था ? उसे तुम्हारे फ्रांसीसी मारक्विस ने मारा था। जादू से किसीकी भी हत्या नहीं होती। बेचारा थामस उस गौरांग प्रभु शांति दे कितनी पीड़ाजनक मृत्यु से परलोक गया होगा ?

मारक्विस अवैध रूप से अफीम-गांजा बेचता है। उन अवैध पैसों से वह अपने जीवन का वैभव विलास एकत्र करता है। अपने समाज में सबसे प्रतिष्ठित व्यक्ति

वह अपने अभावों का रोना उसके आगे नहीं रोएगा। चाहे उसके पास पीने को सिगरेट भी न रहे।

२९

नरोत्तम की दशा पहले से काफी सुधर गई थी। तारिणी के द्वारा नरोत्तम का मानसिक उपचार चल रहा था। सेक्स की अतृप्ति नारी-संसर्ग और समर्पण पाकर एक ही केन्द्र पर केन्द्रीभूत हो गई। दौरे कम पड़ने लगे। मन का भय भी आटे में आई नमी के जल की भांति क्रमशः घटने लगा। सेठजी और सेठानी इससे बड़े प्रसन्न थे।

इन एकांत क्षणों में कभी-कभी नरोत्तम को इन्दिरा की याद हो आया करती थी। वह कहां है? क्या करती है इन्हीं सब बातों में कभी-कभी उलझ जाता था। उस उदासी को लखकर तारिणी लापरवाही से कहा करती थी तुम व्यर्थ में परेशान हो जाया करते हो। कह दिया न कि भूत प्रेत कुछ नहीं है। वह कहने लगती और नरोत्तम सुनता—

मेरे एक बहुत ही परिचित मित्र हैं। वे साहित्यिक हैं। हिंदी में उनको यथेष्ट प्रतिष्ठा प्राप्त है। उनकी पत्नी है। बौद्धिक धरातल का गहरा अंतर होने के कारण व पति-पत्नी के रिश्ते के अलावा दोनों एक दूसरे से बहुत असंतुष्ट रहते हैं। इसपर संयुक्त परिवार में पनपती हुई अपात्मक अधिकार की लड़ाई। उसके महोदय का अजीब हाल रहता है। पत्नी को कहें तो बुरा और घर वालों को कहें तो बुरा! फिर भी उनका मन पत्नी का ही भला-बुरा कहता है। उनके महान् आदर्श परिवार के सम्मुख खंडित रहते हैं और पत्नी के सम्मुख वे विकराल से विकराल और भद्दे से भद्दे रूप से प्रकट होते हैं। धीरे धीरे उनकी पत्नी के अचेतन मन में अपने प्रति अपने पति के प्रति और अपने परिवार के प्रति विद्रोहात्मक घृणा उत्पन्न होती गई। लाचार एक दिन वह बेहोश हो गई। अनुमान क्या? प्रमाणित कर दिया गया कि इसे कोई भूतनी लग गई है। तंत्र-मंत्र वाले आए।

अब मैं आपको क्या बताऊं? उस समय खुद खड़ी थी। एक मन्त्रवाले ने अपनी जब में हाथ डालकर अजली में पानी लकर उनकी पत्नी की आखों पर छिड़का। वह क्षण भर में मरी आखें जल रही हैं मेरी आखें जल रही है कहकर पुन सो गई।

उस झाड़ागर न तुरन्त दुबारा अपनी जेब में हाथ डाला और कड़ककर कहा तेरी आखें क्या म खुद तुझ जलाकर भस्म कर दूगा या सच-सच बता कि तू कौन है?

फिर उन्होंने पानी छिड़का और वह उसी प्रकार कहकर अचेत हो गई। अब लेखक महोदय न झाड़ागर के समीप बठकर उनकी जब को टटाला। उनकी जब में काली मिच व नीम्बू का सूखा हुआ 'सत' निकला।

झाड़ागर जी झाड़ू खाए हुए-सा मुह बनाकर चल गए।

रूढ़िवादी नवीनता का विरोध करते ही है।

एक और योगी महाराज आए। उन्होंने अपनी हथली म त्रिशूल बनाकर यह सिद्ध किया कि इह माता देवी का दोष है। उसका रहस्य भी बताऊ आपको राजस्थान में आक नामक वृक्ष होता है। उसकी डठल को तोड़न से उसम स दूध निकलता है। उस दूध से पहल ही हथली में वह त्रिशूल बना लिया जाता है। सूखन पर वह दूध सरलता से साफ नहीं होता। फिर उस पर कुकुम को गीला करक लगान स वसी ही शक्ल उभर आएगी जसी आपन उसपर अकित की है। वे भी कुछ भेंट पूजा लकर चल गए।

पर चौबीस घटों की बहोशी के बाद उनकी पत्नी रोन लगी और रोती रोती जब वह थक गई तब उछल-कूद करन लगी। इस बीच कभी-कभी विध्वसात्मक प्रवृत्तियों क सूचक शब्द बोल जाती थी। बाद में डाक्टरों न हिस्टीरिया रोग कायम कर दिया।

इसके बाद धीरे धीरे पति की अधिक देखभाल और अपनत्व के कारण वह रोग स्वत ही कम होता गया। उसक लक्षण, उसका जोश और उसकी उछल-कूद धीरे मिट गई।

उनकी पत्नी क साथ एक और विलक्षण घटना थी। उसका एक छोटा भाई

लगभग दस साल की उम्र में मर गया था। वह देवयोनि में चला गया ऐसा सुनते हैं। अषाढ़ माह में उनकी पत्नी दो घड़े पानी उसके निमित्त किसी पंडित को दे दिया करती थी। इस अचेतन अवस्था में यदि वह उसी विशेष माह में पानी के घड़े नहीं देती थी तो उसका भाई भी उसके मुंह से बोलने लगता था कि मैं प्यासा हूं। पानी के घड़े स्वयं उनकी पत्नी द्वारा सिर पर उठाकर डाल आने पर इस प्रकार की घटनाएं कभी नहीं होती थीं। अब आप ही बताइए कि इसे हम अपने अचेतन मन की प्रतिक्रिया नहीं कहेंगे तो और क्या कहेंगे ?

' तारिणी कुछ देर तक रुकी और फिर बोली आजकल लेखक और उनकी पत्नी बड़े प्रसन्न हैं। संयुक्त परिवार के द्वंद्वात्मक वातावरण से मुक्त होते ही उनकी आत्मीयता बढ़ी और उनकी पत्नी बिल्कुल स्वस्थ हो गई। यह संयुक्त परिवार इस अर्थ-व्यवस्था की अत्यन्त दूषित प्रणाली है।'

नरोत्तम कुछ नयापन अनुभव करता हुआ मुस्कराकर बोला, देखो तुम्हारी चाय ठंडी हो गई है।

३०

उस दिन चौरंगी के एक रेस्तरां में सुबोध ने रामी को देखा। रामी उसे नहीं जानता था पर सुबोध उससे भली भांति परिचित था। संन्यासी जीवन में वह कई बार इन्दिरा को देखने गया था। उसकी दुर्दशा से उसकी आत्मा को बहुत कष्ट होते थे किंतु वह नहीं चाहता था कि वह इन्दिरा के व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप करे। उसका अपना विचार बन गया था कि व्यक्ति स्वतंत्र है। फिर इन्दिरा को बांधकर रखना भी मति दुर्लभ था।

उसने रोमी से पास बैठने की इजाजत मांगी। रामी ने उसे दे दी। सुबोध ने बैरे को काफी लाने के लिए कहा। रोमी एक कप काफी पी चुका था। उसने अपनी जेब में हाथ डालकर पैसों को देखा। फिर एक हल्की आह छोड़ी।

सुबोध उसके मन को जान गया।

धीरे से काफी का घूट लेता हुआ बोला मैंने आपको कहीं देखा है ? एक क्षण रुककर वह पुनः बोला, क्या आप इंक का बिजनेस करते हैं ?

जी हां ! उसने अनिच्छा से कहा ।

तब तो मैंने आपको पहचानने में गलती नहीं की । आप ईसाई हैं न ?

'जी !

आपका व्यापार कैसा चलता है ?

रामी को यह सब अच्छा नहीं लगा । परेशानी की हालत में वह बिलकुल मौन रहना चाहता था । अभावों में कुछ भी अच्छा नहीं लगता है । इसपर एक अपरिचित व्यक्ति ! वह सुबोध को घूर घूरकर देखने लगा ।

सुबोध उसके अन्तर्मन की बात समझ गया । तुरन्त उसके स्वार्थ को स्पष्ट करता हुआ बोला मैं तो केवल आपकी ही स्याही प्रयोग में लाता हूं । इधर आपको मैंने नहीं देखा । आप स्वस्थ तो हैं ? उसने पैनी दृष्टि से रामी को घूरा लेकिन यह मैं दावे से कह सकता हूं कि आपकी स्याही तमाम स्याहियों से अच्छी है । साहब इसपर पानी का भी असर नहीं होता ।

अपनी प्रशंसा में कहे गए इस वाक्य को सुनकर रामी को सुबोध में तनिक दिलचस्पी हुई । सुबोध को उसने ऐसे देखा जैसे वह उसका गंभीरतापूर्वक अध्ययन कर रहा हो । फिर बोला आप बिजनेस करते हैं ?

नहीं तो !

फिर ?

छोटी-सी जमींदारी है ।

ओह आप मकान-मालिक हैं ।

जी ज़रा एक कप काफी और ।

सुबोध ने बात का सिलसिला जोड़ा फिर आपका बिजनेस कैसा चल रहा है ? मेरे विचार से अब तो आपका व्यापार खूब चल पड़ा होगा ।

नहीं चल पड़ा है । हमारे एक पड़ोसी सज्जन मिस्टर बोस ने धार्मिक घृणा का रूप देकर उस फार्मूले को जन साधारण को बता दिया । अब इस स्याही के तीन कारखाने हैं ।

सुबोध ने अपनी दृष्टि रोमी से हटाकर दीवार पर लगे जनसम दर्पण पर जमा दी। दर्पण में किसी युवती का चेहरा स्पष्टतया झलक रहा था उसे देखकर उसकी दृष्टि चंद क्षणों के लिए अटक गई।

बेरा यदि काफी लाने की सूचना नहीं देता तो न जाने सुबोध कब तक उस अपरिचित युवती के अपरिसीम सौन्दर्य को देखता रहता।

आपको काफी दो। सुबोध ने रोमी की ओर संकेत किया।

लेकिन मन तो

कोई बात नहीं काफी ऐसी चीज नहीं है कि नुकसान पहुंचाए। लीजिए न '

सुबोध ने अपने विचारों को पुन रोमी पर केन्द्रीभूत किया। ललाट पर हाथ फेर कर वह बोला मिस्टर बोस ने आपकी रोजी छीन ली। वास्तव में ये बंगाली लोग ऐसे ही होते हैं। थोड़े-से लोभ-लालच में ये अपने आत्मीय तक का बड़ी से बड़ी हानि पहुंचा सकते हैं।

रोमी को एक झटका-सा लगा। प्याले को रखता हुआ वह व्यग्रता से बोला नहीं-नहीं आप ऐसा न कहिए, वह बंगाली नहीं है वह ईसाई है मेरी अपनी जात का है। उसने धार्मिक द्वेष के कारण ही यह अनर्थ किया है। सोचता हूं कि जिस धर्म के मानने वालों में सहिष्णुता नहीं है क्या वह धर्म चिरायु रह सकता है? मैं आपको सच कहता हूं कि जिस धर्म के अनुयायी अपने धर्म के प्रचार प्रसार के लिए रुपये खर्च करते हैं प्रलोभन देते हैं उस धर्म के अवलंबी कभी उसके मर्म को नहीं समझ सकते।

लेकिन आपने ।

मैंने एक बंगाली युवती से प्यार किया था। मैंने उसे कभी भी ईसाई बनने को नहीं कहा। जबकि हर ईसाई युवती जो अपने सौन्दर्य का सम्मोह किसी युवक पर डाल सकती है अपने प्रेमी को इस बात के लिए अवश्य विवश करती है कि वह ईसाई हो जाए। अथवा एक लड़का जो किसी परिस्थिति-पीड़ित युवती से प्रेम करता है वह प्रेम के प्रचुर प्रदर्शन के साथ-साथ मानसिक रूप से इस बात के लिए पूर्णरूप से सचेष्ट रहता है कि वह उसे ईसाई बनने के लिए तैयार करे। ऐसा करने वाला युवक ही हमारे सम्प्रदाय में एक सच्चा यीशु भक्त कहला सकता है।

रोमी इतना कहकर चुप हो गया। सुबोध भी किसी गहरे विचार में खो गया। दर्पण वाली युवती मेज पर अगुलियां नचा रही थी। उसके चेहरे पर गहरी उदासी छा गई थी। यदा-कदा वह दीर्घ सांस छोड़ देती थी।

आपकी सहिष्णुता अनुकरणीय है। क्या वह भी इतनी ही सहिष्णु है ? सुबोध ने तनिक सहमते हुए यह प्रश्न किया। रामी भाव-लोक में बह गया। कौन बात कहनी चाहिए अथवा नहीं कहनी चाहिए, इसपर बिना सोचे ही वह निरतर बोलने लगा वह मेरे जसी सहिष्णु नहीं है। उसके विचारों में अनेक विचित्र ग्रथियां है। वह मुझे प्रेम भी करती है किंतु उसके साथ वह यह भी चाहती है कि मैं रोमी से राम बन जाऊं। यह मुझे अच्छा नहीं लगता। अपने विचारों को दूसरो पर थोपना अधिक श्रेयस्कर नहीं हो सकता। हालांकि मैंने उसकी इस बात का कड़ा विरोध विरोध के रूप में नहीं किया। सैद्धांतिक रूप से मैंने उसे समझाया कि हम यह प्रयास ही छोड दें कि हम एक दूसरे को अपने अपने धर्म में घसीटेंगे क्योंकि यह धर्म के झगड़े ही पारिवारिक शांति का हरण कर लेते हैं। किंतु वह मुझे राम बनाने पर तुली हुई है और मैं राम बन ही जाऊंगा।

ऐसा क्या ?

उपकार का बदला प्रत्युपकार ही हो सकता है। कुछ ऐसी बातें होती है जिन्हें प्रकट करना स्वयं की निम्नता का प्रदर्शन करना होता है किंतु वे बातें प्राय हमारे मन में सत्य की तरह गूंजती रहती हैं और हमें चिंतित करती रहती हैं। वैसी ही एक बात मैं आपको कहना चाहता हूं—जब हमारा पारिवारिक जीवन भावना के परे यांत्रिक रूप में चलता हो तब हमें एक दूसरे को अधिक से अधिक अहसानों से लादना चाहिए। इन्दिरा का और मेरा नाता करुणा को लेकर जन्मा। उसके मनोविज्ञान की बात मैं नहीं करता, किंतु यह सही है कि उसने मुझपर बहुत बड़ा अहसान किया है। इस अहसान का बदला यही है कि मैं चुप रहूं। उसके निर्देश में चलूं।

सुबोध ने अपने नेत्रों को उठाकर कहा आपके कथनानुसार तो एक व्यक्ति की हत्या होती है पर व्यक्ति को अपनी ही हत्या नहीं करना चाहिए।

व्यक्ति की हत्या इतनी महत्त्वपूर्ण नहीं जितनी परिस्थिति। परिस्थिति को

देखकर यदि म उससे क्षणिक समझौता नहीं करूं तो परिणाम यह होगा कि मुझे अपनी पत्नी से विलग होना पड़ेगा। उसका वियोग मेरे लिए सह्य नहीं। मैं उससे अलग नहीं रह सकता। सचमुच म उसे अंतस् से प्यार करता हूं।

इसका तात्पर्य यह हुआ कि आप सब कुछ सहन करेंगे ?

क्यों नहीं ? यदि एसा नहीं करूंगा तो वह मुझे छोड़कर चली जाएगी। वह बड़ी अस्थिर चित्त वाली है। देखो न आज चार । रोमी हठात् सावधान हो गया। उसका मुख गंभीर हो गया। उन्मन भाव उसके चेहरे पर बरसाती बादलों की तरह छा गए।

आप चुप क्या हो गए ? सुबोध ने अधीरता से पूछा।

मनुष्य बहुत दुर्बल है तभी वह अपनी कमजोरियों को अपने दिल में नहीं छिपा सकता। उसने अत्यंत शांति से कहा। उसके चहरे पर महात्मा-सा शान्त्य था और यह दुख भी क्या है ? हृदय में छप नहीं सकता। देखिए न मन आज आप को पहली बार देखा न जान और न पहचान। प्रथम परिचय के पश्चात् ही ।

सुबोध क्षणिक मंद मुस्कान के साथ बोला 'सम्बंध का गहरा होना समय के दायरे में नहीं बंधा है। आप तीक्ष्ण बुद्धि वाले हैं और इसपर ! सचमुच यदि मैं आपके काम आ सका तो अपना सौभाग्य मानूगा। आप निश्चित रहिए, म आपको कोई हानि नहीं पहुंचाऊंगा। आप यह मानकर चलिए कि म आपका बहुत ही पुराना मित्र हूं। सुख-दुख का साथी और सवस्व !

मेज पर रखे हुए सुबोध के हाथों को मजबूती से पकड़ता हुआ रोमी बोला भूख और अभाव ही मनुष्य की सबसे बड़ी परीक्षा हैं अग्नि-परीक्षा। सच कहता हूं

'प्रमेंद्र' ! सुबोध न अपना नया नाम बताया।

'प्रमेंद्र बाबू एसे दुर्दिन मन नहीं देखे। एसे कष्ट मेरे जीवन में आज तक नहीं आए। सम्पूर्ण रूप से प्रकृति मुझसे रूठी हुई है। मन में शंका-सी उठती है प्रभु ईसा मुझसे बदला ले रहा है।

योशु और बदला ? उसने विस्मय में पूछा।

हां वे धर्म विद्रोहियों अथवा पातकों से बदला भी ले सकते हैं क्योंकि उनके

हाथ में नगी तलवार भी है। हमारी पुस्तको में एक उदाहरण है—एकबार यहूदियों के पुरोहितो और ईसाइयों के पादरियो में विवाद हुआ। अन्त में यहूदियो न कहा अगर तुम्हारा ईसामसीह सचमुच आकाश पर जिन्दा है तो वहां स उतरकर हमें इसी वक्त दिखाई दे हम तुम्हारा धम मान लेंगे। इसपर उसी समय बादल गरज बिजली चमकी और हजरत ईसा दिखाई पड़। उनके सिरपर मकुट और हाथ में नगी तलवार थी। यह नगी तलवार कुछ भी नहीं प्रतिशोध सन को प्रतीक ही है। ईसा प्रभु और नगी तलवार? फिर अभाव सब कुछ सोचन के लिए विवश कर देत हैं।

दो काफी और टोस्ट का आडर दिया गया। समीप की मेज पर एक बगाली योद्धा उन्माद भरी हसी हस रहा था। दपणवाली युवती के उदास मुखपर अब उल्लास की उर्मियां नाच उठी थी। उसके अधरों पर मस्कान थी क्योंकि उसकी ओर एक सुन्दर युवक आ रहा था। दपणवाली युवती न उससे हाथ मिलाया और धीरे धीरे व दोनों बातचीत में सलग्न हो गए।

रोमी और सुबाध न गहरा मौन धारण कर रखा था। काफी और टोस्ट आ गए थ। एक-एक टोस्ट उठात हुए उन्होन एक दूसरे को देखा। सुबोध न मौन तोड़ा आपने प्रसग को छोड़ दिया। चार कहकर ।

रोमी की आखों में सहज मानवीय लज्जा उर उठी। काफी पर दृष्टि जमाता हुआ वह बोला 'चार दिन स हम बड़ कष्ट में है। मरा मन काम करन का नहीं चाह रहा है और इन्दिरा को कोई जाब नहीं मिल रहा है। दनी इतनी है कि किसीस उधार तक नहीं मागती। इस कारण हम दोनों के बीच और मुझ कौन रुपए उधार दे? मरे अपन सम्प्रदाय वाल मुझस रुष्ट ह। धम के विरुद्ध आचरण करन वाल को कौन मदद दे?

सुबोध न अपनी जब स सौ रुपए निकालकर रोमी को द दिए और बोला प्रमाज से मरे और तुम्हार आत्मिक सम्बन्ध सुदृढ होन ह। लकिन एक बात है कि इन्दिरा को कुछ भी मालूम न हो। पुरुष को सदा स्त्रियों के समक्ष सवा सर ही बन कर रहना चाहिए। यदि वह पूछ तो कह देना कि म्याटो बनान के आडर क एडवान्स लाया हू।

रोमी की आखें सजल हो उठीं प्रमेन्द्र बाबू आपन आज मेरी लाज रख ली। म किसी भी शत पर इन्दिरा को सुखी देखना चाहता हूं। आपकी यह मदद

कोई किसीको मदद नहीं करता। कोई करुणा से देता है कोई स्वार्थ से दता है कोई किसीको नीचा दिखाने के लिए देता है, बस ये ही देने के नियम ह। सुबोध बीच में बोल पड़ा और उठ गया में तुम्हें एक सप्ताह के बाद यहीं मिलूंगा लकिन तुम अपनी शत पर अटल रहोगे।

रोमी न उठते हुए हाथ मिलाया।

सुबोध जसे ही दृष्टि से ओझल हुआ वसे ही रोमी ने एक बार उन रुपयों को प्यासी निगाहों से दखा और फिर वह बाजार की ओर चल पड़ा।

३१

दूर दूर तक विस्तृत किल के मदान में अनक नर-नारी घूम रहे थ। एक नीरव छोर पर नरोत्तम तारिणी का हाथ पकड़े खड़ा था। रोग उसका नहीं के बरा बर हो गया था। कितु कभी-कभी वह तृप्ति और इन्दिरा को लकर परेशान हो जाया करता था।

हरीतिमा पर उछलते हुए मेढकों को दखकर तारिणी हस पड़ी। नरोत्तम चौंक गया। तारिणी न मधुर हास्य के साथ उसका हाथ खींचा और हरीतिमा पर लट गई। नरोत्तम उसक पास यत्रवत् लट गया। उसने अखड मौन धारण कर लिया। कुछ बोला नहीं। तारिणी समझ गई कि अभी तक उसके मन का काटा नहीं निकला है। अत वह मुस्कराती हुई बोली तुम अपन आपको व्यर्थ परेशान क्यों करते हो ? दखो तुम अब कितन स्वस्थ हो चुके हो ?

फिर भी ?

म तुम्ह कई बार कह चुकी हूं कि भूत प्रत कुछ भी नहीं हैं। मन का भ्रम बस !

आज म तुम्ह फिर एक विचित्र घटना सुनाती हू—एक सुखी-सम्पन्न परिवार

है। वहां भी संयुक्त परिवार की प्रणाली है। घर का मुखिया आज भी उस परिवार की सर्वोपरि सत्ता का संचालक है। उस संचालक के दो बेटियां थीं। प्रकृति का प्रकोप समझिए—वे दोनों अकालमृत्यु को प्राप्त हो गईं। अकालमृत्यु से मेरा तात्पर्य यह है कि चेचक के भयानक रोग में वे दोनों अपने मन की तमाम इच्छाओं को लेकर चल बसीं।

अशिक्षितों में भूत प्रेतों की कई कथाएं प्रचलित होती ही हैं। उनके आधार भी भिन्न भिन्न होते हैं। भूत प्रेतों की योनि की मान्यताएं भी भिन्न भिन्न होती हैं। उनमें एक यह भी है कि जिस व्यक्ति की लालसाएं, इच्छाएं और स्वप्न अधूरे रह जाते हैं वे भूत बनते हैं। उनकी मुक्ति नहीं होती

इसलिए उनकी दोनों बेटियां भूतनियां हो गईं।

'अब प्रश्न यह उठता है कि वे भूतनियां बनकर किसको दिखलाई पड़ीं ?

गौर कीजिए—एक थी उन दोनों की बहुत गहरी भायली।

एक थी—उनकी समवयस्क परिवार की भाभी !

मैंने उस घटना का बहुत ही गहराई से अध्ययन किया है। वे दोनों हम उम्र थीं। उनके आपसी विचारों में तादात्म्य था। दोनों में घनिष्ठ मैत्री भाव एवं सामीप्य था। हमउम्र होने के कारण यौवन की बहुत-सी बातें परस्पर एक दूसरी युवती में एक-सी मिल ही जाती हैं। वे घंटों में आपस में एक दूसरे को अपने सुख जीवन की बातें बताया करती थीं। वे एक दूसरे की शुभ कामना करती थीं। उनका पारस्परिक सम्बन्ध इतने तक ही सीमित नहीं रहता था बल्कि वे आपस में अपने अपने पतियों के साथ हुई बात तक कर लेती थीं। तीज-त्यौहार मेला मंदिर आदि किसी भी कार्यक्रम में वे दोनों साथ-साथ रहा करती थीं। दोनों ने कई प्रकार की प्रतिज्ञाएं भी की थीं जैसे साथ साथ तीर्थाटन करेंगे साथ-साथ परदेस जाएंगे हमेशा साथ रहेंगे।

इन बातों से एक वस्तु का स्पष्टीकरण हो जाता है कि वे दोनों एक मन दो प्राण थीं। यह मुहावरा भी हमारे उस सामूहिक मन की बात की पुष्टि करता है।

अचानक चेचक की बीमारी फैलती है। चेचक छूत का रोग होता है। वह व्यक्ति को अपने आक्रमण से इतना भयानक बना देता है कि आप पहचान नहीं

सस्त कि रोगी कौन है ? उसकी विभीषिका का चित्रण स्वेन की नोबल पुरस्कार विजयिनी सेल्मा लजर लॉफ न अपने उपन्यास आउट कास्ट' में बहुत ही मार्मिक किया है। वह तो यहा तक लिखती है कि इस रोग के भय से पति न पत्नी को नहीं छुआ।

फिर भी एसे भयानक रोग में एक बहिन ने दूसरी बीमार बहिन की अनथक सेवा की। पर उसकी सेवा व्यर्थ गई। एक बहिन मर गई और दूसरी उसी रोग म जकड़ गई।

'उसके ठीक पाचवें दिन उसकी भी मृत्यु हो गई। वर्षों स अन्धकार में मानव को परिलक्ष करने वाल कह उठ कि बड़ी बहिन छोटी बहिन को ल गई अथवा उसन भूतना बनकर अपनी सगी बहिन का गला दबा दिया।

'मेरी वह राग से है पर फिर भी इस अध्यात्मवाद' की धरित्री की प्रजा विचित्र है। यहा अजीब-सी धारणाएं और मान्यताएं हैं।

कुछक लोगों न इस भा इस तरह का भाषा में कहा एक बहिन दूसरी बहिन को किस तरह छोड़ती ? दोनो में परस्पर गहरा प्रम था दात काटी रोटी थी।

इन दोनों बहिनों की मृत्यु क बाद मृत प्रतों में विश्वास रखन वाली व दोनों पुत्रियां इस घातक स कस बच सकती थीं।

उनके मन में पूर्णरूप स यह बात बठ गई कि अब व दानों उन दोनों को लकर जाएगी। भाव विचार और संस्कार सभी कुछ उन चारों के समान थे ही। धीरे धीरे उनक अवचेतन मन में वही भय दिन प्रति दिन भयकर होता गया। हर क्षण की मत्यु की आशंका उन्हें विक्षिप्त-सी करन लगी।

दोनों एकात में बठकर बातें किया करती थी। व ही बातें और प्रतिज्ञाएं! उनकी निरन्तर पुनरावृत्ति!

साथ रहेंगे साथ मरेंगे।

और एक दिन मन स्वय अपन कानों से सुना—

उनकी भाभी 'दी' अपनी सगि इन्दु स कह रही थी कल रात बड़ी बहिन मुझे दिखाई पड़ी थी।

और छोटी मझ लेगी थी।

क्या कहा तुम्हें ?

कहा तुमने साथ रहने का वायदा किया था अब मुझसे दूर क्यों रहती हो ?

तुमने क्या उत्तर दिया ?

मैं चुप हो गई पर तुम्हें बड़ी ने क्या कहा ?

'बहिन वह चेचक के कारण बड़ी भयानक लगने लगी है। उसका सारा चेहरा दागों से भरा है। बाप रे कहने लगी कि बस अब मैं तुम्हें लेने आने वाली हूं।

इस प्रकार की बातों में हर समय रहते रहते व्यक्ति का क्या हो सकता है ? हमारी भावना ही तो सर्वस्व है। जाकि रही भावना जैसी प्रभु मूरत तिन देखी तैसी वही बात है। जब पत्थर की निष्प्राण प्रतिमा में भी चैतन्य के दर्शन सुलभ हो सकते हैं फिर क्या नहीं किसी आत्मा में अन्य आत्मा का प्रतिबिंब झलक पड़ता है ?

'धीरे धीरे वे दोनों भूतनियां बोलने लगीं।

लेकिन कुछ डाक्टर बड़े विवेक से काम लेते हैं। उन्होंने धन-धन उनके भय को दूर कर दिया। उन संस्कारों की नींव ही खोद डाली जो उनकी जीवात्मा पर छा गए थे। फिर वे एकदम अच्छी हो गईं।

नरोत्तम एक अच्छे छात्र की तरह तारिणी की बातें सुन रहा था।

३२

एक सप्ताह के बाद सुनन्दा की भेंट रोमी से पुनः हुई। इस बार उसके साथ सुनन्दा थी। सुनन्दा अपनी उत्सुकता को नहीं रोक सकी। उसने हठ ही पकड़ लिया कि वह रोमी को देखेगी। वह उस ईसाई को देखेगी जिसने उसकी दोस्ती को धर्मभ्रष्ट किया है।

जल्दी से काफी पीकर वे वहां से उठे।

रोमी ने सबसे पहले पूछा वह कौन है प्रमेन्द्र बाबू ?

सुनन्दा ने भोलेपन से देखा। उसके अधरों पर हल्की-सी मुस्कान नाच उठी। उसका जीजा अभिनय कर रहा है।

यह मेरी साली है। मुझे अधिक चाहती है। नाजवती और गुणवंती! नमस्कार करो इन्हें।

सुनन्दा ने अनिच्छा से नमस्कार कर दिया।

रेस्तरां पीछे छूट गया था।

रोमी कह रहा था मैंने इन्दिरा को आपकी ही बात कही। रुपया देखते ही उसका गुस्सा आधा हो गया और जब मैंने अपने व्यापार की कहानी बढ़ा चढ़ाकर शुरू की तब तो वह फूली न समाई।

समीप से एक भिखारी गुजर रहा था। उसके साथ उसकी बीवी थी। दोनों पागल ईसाई थे। मस्त और स्वयं में तन्मय! दोनों की उम्र होगी पचास के लगभग। अभी भिखारी की पत्नी ने जोर का ठहाका लगाकर अपने पति से कहा डियर! आदमी जिन्दगी में खुश रहा है, अब उसके सुख के दिन कितने रहे हैं?

पति ने अपना झुर्रियोंदार चेहरा यंत्रवत् हिलाया। दन्तहीन सुराख जैसे मुह को खोलकर अस्पष्ट भाषा में बोला अब उसका सुख कभी नहीं मिटेगा?

क्यों?

अब वह सुख और दुख का भेद ही भूल गया है। वाक्य की समाप्ति के साथ उस पागल दम्पति ने फिर जोर का ठहाका लगाया।

रोमी उस पागल दम्पति की बात सुनकर कुछ देर तक गंभीर रहा। उसके चेहरे पर विचित्र भाव आए जैसे उसके मस्तिष्क पर किसी अदृश्य हथौड़ा चला दिया हो।

सुबोध उसके मन की बात जान गया। सुनन्दा उसके साथ ऐसे चल रही थी जैसे वह कोई अपरिचित यात्रिक हो जिसका इन दोनों से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं हो।

सुबोध ने मौन तोड़ा रोमी मैंने तुम्हें पहले भी कहा था कि आदमी कभी भी बिना स्वार्थ के किसी की सहायता नहीं करता। मुझे तुम्हारा व्यापार पसन्द है अतः मैं तुम्हें मुनाफा लेना चाहता हूं। तुम्हारे व्यापार में वृद्धि होगी तो मुझे भी लाभ होगा।

रोमी ने कठिनता से मुस्कराकर कहा इंदिरा रुपए देखकर बहुत खुश हुई। उसकी आंखों में चमक और उत्साह उमड़ आया। वह बीते दिनों का सारा रोग उप

भूलकर मुझसे प्यार करने लगी। उसन उस दिन नई साडी पहनी और कल की चिंता से निश्चित होकर बोली डियर रोमी आज हम पिक्चर देखकर होटल में ही खाना खाएंगे। उस दिन हमन बड़े आनद से रात बिताई। वह बुलबुल की तरह चहकती रही। मुझे लगा कि इन्दिरा के मन की कोई थाह नहीं। निरन्तर कलह करनेवाली वह क्षण भर में बदल गई, भूल गई क्षणभर पहले के बीते हुए पल को।

सुबोध न सुनन्दा की ओर देखकर कहा सुख में प्यार इसी मात्रा म हो उमडता है। इसलिए खूब पैसा कमाओ।'

कोशिश करता हू पर ।

सुनन्दा न कहा घर चलिए जीजा जी देर हो रही है।

हा-हा चलो अच्छा रोमी ?

रामी का मुख हठात् सफेद हो गया।

प्रमेन्द्र बाबू एक बात!'

सुबोध और रामी एक ओर गए। रामी न कहा पचास रुपए दीजिए। म आपको विश्वास दिलाता हू कि समय पर सब लौटा दूगा। पाई-पाई। जीवन म आप अकस्मात् ही मेरे आर्थिक सरक्षक के रूप में आए ह।

सुबोध न उसके विह्वल स्वर और उतरे मुह को देखा। पचास रुपए निकाल कर दे दिए। गुड इवनिंग की ओर चल पड़।

उसके जाते ही सुनन्दा ने कहा आपने इसे रुपए क्या दिए ?

बचारा बड़ी तगी में है।

एक तो आपकी बहू को ले रखा है उसपर आप सौहार्द का स्नेह ले रहे हैं। यह क्या ? सुनन्दा का स्वर तीखा था।

इन्दिरा तुम्हारी दीदी है न बडी दीदी उस आजकल जीवन के अनेक कष्ट घेरे हुए हैं। मन उसस दूर करके उसके जीवन के पथ को ही बदल दिया। यदि परोक्ष रूप में वह मेरे द्वारा सुख पा सके तो क्या बुरा है। अपने पाप का प्रायश्चित्त हो हो जाएगा। यदि म उसके महादान को प्रभु प्रार्थना की भाति ग्रहण करता तो आज उस रोमी स सम्बन्ध नहीं बनाना पड़ता। फिर इन्दिरा स हमारा रक्त सम्बन्ध कैसे टूट सकता है।

यह मेरी साली है। मुझे अधिक चाहती है। लाजवंती और गुणवती ! नमस्कार करो इन्हें।

सुनन्दा ने अनिच्छा से नमस्कार कर दिया।

रेस्तरां पीछे छूट गया था।

रोमी कह रहा था मैंने इन्दिरा को आपकी ही बात कही। रुपया देखते ही उसका गुस्सा आधा हो गया और जब मैंने अपने व्यापार की कहानी बढ़ा चढ़ाकर गुल की तब तो वह फूली न समाई।

समीप से एक भिखारी गुजर रहा था। उसके साथ उसकी बीवी थी। दोनों पागल ईसाई थे। मस्त और स्वयं में तन्मय ! दोनों की उम्र होगी पचास के लग भग। अभी भिखारी की पत्नी ने जोर का ठहाका लगाकर अपने पति से कहा डियर! आदमी जिन्दगी से खत्म रहा है अब उसके सुख के दिन कितने रहे हैं ?

पति ने अपना झुर्रियोंदार चेहरा यन्त्रवत् हिलाया। दन्तहीन सुराख जैसे मुख को खोलकर अस्पष्ट भाषा में बोला, अब उसका सुख कभी नहीं मिटेगा ?

क्यों ?

अब वह सुख और दुख का भेद ही भूल गया है। वाक्य की समाप्ति के साथ उस पागल दम्पति ने फिर जोर का ठहाका लगाया।

रोमी उस पागल दम्पति की बात सुनकर कुछ देर तक गंभीर रहा। उसके चेहरे पर विचित्र भाव आए जैसे उसके मस्तक पर किसी ने अदृश्य हथौड़ा चला दिया हो।

सुबोध उसके मन की बात जान गया। सुनन्दा उसके साथ ऐसे चल रही थी जैसे वह कोई अपरिचित यात्रिक हो जिसका इन दोनों से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं हो।

सुबोध ने मौन तोड़ा रोमी मैंने तुम्हें पहले भी कहा था कि आदमी कभी भी बिना स्वार्थ के किसी की सहायता नहीं करता। मुझे तुम्हारा व्यापार पसन्द है अब मैं तुम्हें सुखी देखना चाहता हूं। तुम्हारे व्यापार में वृद्धि होगी तो मुझे भी लाभ होगा।

रोमी ने कठिनता से मुस्कराकर कहा, इन्दिरा रुपए देखकर बहुत खुश हुई। उसकी आंखों में चमक और उत्साह उमड़ आया। वह बीते दिनों का सारा राग-द्वेष

भूलकर मुझसे प्यार करने लगी। उसने उस दिन नई साड़ी पहनी और कल की चिंता से निश्चिंत होकर बोली डियर रोमी आज हम पिक्चर देखकर होटल में ही खाना खाएंगे। उस दिन हमने बड़े आनंद से रात बिताई। वह बुलबुल की तरह चहकती रही। मुझे लगा कि इन्दिरा के मन की कोई थाह नहीं। निरन्तर कलह करनेवाली वह क्षण भर में बदल गई भूल गई क्षणभर पहले के बीते हुए पल को।

सुबोध ने सुनन्दा की ओर देखकर कहा सुख में प्यार इसी मात्रा में ही रम रहता है। इसलिए खूब पैसा कमाओ।

कोशिश करता हूं पर ।'

सुनन्दा ने कहा 'घर चलिए जीजा जी देर हो रही है।

हां-हां चलो अच्छा रोमी ?

रोमी का मुख हठात् सफेद हो गया।

प्रमेन्द्र बाबू एक बात !'

सुबोध और रोमी एक ओर गए। रोमी ने कहा पचास रुपए दीजिए। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि समय पर सब लौटा दूंगा। पाई-पाई। जीवन में आप अकेले ही मेरे आर्थिक संरक्षक के रूप में आए हैं।

सुबोध ने उसके विह्वल स्वर और उतरे मुंह को देखा। पचास रुपए निकाल कर दे दिए। गुड इवनिंग की और चल पड़े।

उसके जाते ही सुनन्दा ने कहा आपने इसे रुपए क्यों दिए ?

बेचारा बड़ी तंगी में है।

एक तो आपने बहू को ले रखा है उसपर आप सौहार्द्र का स्नेह दे रहे हैं। यह क्यों ? सुनन्दा का स्वर तीखा था।

'इन्दिरा तुम्हारी दोस्त है न बड़ी दादी उसे आजकल जीवन के अनेक कष्ट पर रहे हैं। मैंने उससे दान करके उसके जीवन के पथ को ही बदल दिया। यदि परोक्ष रूप में वह मेरे द्वारा सुख पा सके तो क्या बुरा है। अपने पाप का प्रायश्चित्त हो हो जाएगा। यदि मैं उसके महादान को प्रभु प्रार्थना की भांति ग्रहण करता तो आज उस रोमी से सम्बन्ध नहीं बनाना पड़ता। फिर इन्दिरा से हमारा रक्त सम्बन्ध कैसे टूट सकता है।

में यह प्रश्न प्रोफेसर मगल से कर दिया था। मगल अट्टहास कर उठे। फिर बोले सब बकवास! अरे भाई यह सब मन के भ्रम हैं। और उन्होंने मुझे एक दृष्टान्त देकर काफी बल पहुंचाया। उन्होंने बालों पर हाथ फेरकर कहा—बाहरी वातावरण और अन्तर मन में छिपा आंतरिक भय आदमी में ऐसे भ्रम उत्पन्न कर देता है। किन्तु यह सत्य नहीं होता इन्हें असाध्य नहीं समझा जा सकता इनसे भयभीत नहीं हुआ जाता। ये भूत प्रेत भी अन्य रोग की तरह रोग हैं। उपचार से इनसे भी सरलता से मुक्ति मिल सकती है।

उन्होंने चाय की मांग करके पुनः कहा एक छोटा-सा उदाहरण आपके सामने रखता हूं।

मेरा एक मित्र यहीं रहता था। उसके घर के ठीक सामने एक शराबी रहता था। वह पढ़ा-लिखा था और सरकारी आफिस में एक अच्छे पोस्ट पर काम करता था। लेकिन जब वह शराब पीकर आता तब अपनी पत्नी को बहुत पीटता था। उस पर अमानुषिक अत्याचार करता था। उसकी पत्नी उससे बहुत असन्तुष्ट रहती थी। बाद में वह वेश्यागामी भी बन गया।

एक दिन उस व्यक्ति ने शराब के नशे में अपनी पत्नी को इतने जोर से पीटा कि उसे सख्त आन्तरिक चोट आई। फिर वह धीरे धीरे घुल घुलकर अपने पति परमेश्वर को कोसती हुई अभिशाप देती हुई मृत्यु की ओर दौड़ने लगी।

मृत्यु के कुछ दिन पूर्व उसने अपने पति से सख्त नाराज होकर शाप दिया कि तुम्हें कभी भी पत्नी सुख नहीं मिलेगा।

'कुछ दिन बाद वह मर गई।

वह व्यक्ति किसी दूसरे शहर से नई दुलहिन ले आया।

गृहस्थी चल पड़ी।

इस बीच उस नई दुलहिन ने अपने पति की पिछली जिन्दगी के सारे कारनामे सुन लिए। उसने यह भी अच्छी तरह सुना कि उसके पति ने उसकी सौत बेचारी को तड़पा-तड़पा कर मारा। उसे कभी भी सुख नहीं दिया। वह हमेशा उसके नाम को रोती रही। बिलखती रही।

उस नव विवाहिता को यह भी पता चला कि उस युवती ने अपने पति को

मरते समय यह शाप भी दिया था कि वह उसे कभी भी सुख से नहीं रहने देगी। सदा उसके पीछे छाया-सा लगी रहेगी।

कुछ रोमांटिक स्वभाव वाली औरतों ने उसे यह भी कह दिया कि मकान के पूर्वी कोने में हमने कई बार तुम्हारी सौत को देखा भी है। अन्य पड़ोसी की नई दुलहिन ने उसे घबराकर यह भी कहा कि जब उसका पति उसे प्यार करने लगा तब वह आकर उन दोनों के बीच खड़ी हो गई थी, मुझे यह तावीज इसी लिए ही बनवाकर पहनना पड़ा।

इस प्रकार की बातें उस नई पत्नी के लिए बड़ी हानिकारक सिद्ध हुई। धीरे धीरे वह उस कोने की ओर देखती रही जिसकी ओर सबका संकेत था। विचारों और भावनाओं के लगातार प्रयास पर उसे अपनी सौत उसी कोने में दिखाई पड़ने लगी। भूत प्रेतों के प्रति हमारे संस्कारों में जन्मजात भय रहता ही है।

बस धीरे धीरे उसकी नववधू ने पति के संग को छोड़ दिया। अब यदि उसका पति उसे प्यार करता तो वह चीख पड़ती थी। ठीक वैसे ही जैसे उसने अपनी मृत सौत के बारे में सुना था। वह हरदम यह कहती नजर आती थी कि कोई उसके पीछे खड़ा है, पीछे!

अब एक प्रश्न और हमारे समक्ष प्रस्तुत है कि कभी-कभी कलकत्ते के प्राणी के संस्कार बम्बई वाले से कैसे मिल जाते हैं? हम सब पांच तत्वों से निर्मित हैं। हमें बनाने वाली प्रकृति है। भक्त लोग कहा करते हैं कि आदमी मिट्टी से उत्पन्न होता है और मिट्टी में विलीन हो जाता है। और यही कारण है कि हम कभी कभी बड़ी हैरत में पड़ जाते हैं कि अरे इसकी सूरत हमारे जिगरी दोस्त से मिलती है पर यह वह नहीं है। यह साम्य क्यों है? क्योंकि हम एक ही प्रकृति के फल हैं। बस ही जब एक मन या प्राण की बात करते हैं तब हमें पुनः एक सामूहिक मन की कल्पना होती है। जिसका मैं विराट का एक अकिंचन रूप हूं। असीम का ससीम अंश हूं। ठीक उसी प्रकार उस सामूहिक मन के हमारे मन अलग अलग टुकड़े हैं। जिस प्रकार हमारी सूरतें परस्पर कभी-कभी ही एक दूसरे से मिलती हैं ठीक उसी प्रकार बहुत ही कम रूप में हमारे मन के संस्कारों की भी समता है। तब हम इस नतीजे पर बड़ी आसानी से पहुंच सकते हैं कि एक दूरस्थ व्यक्ति के

संस्कार एक दूसरे अन्य दूरस्थ व्यक्ति के संस्कारों से यथासंभव मेल खा सकते हैं। और हमारे चेतन अवचेतन और संस्कारों की इसी क्रिया प्रक्रिया और प्रतिक्रिया को हम भूत प्रेत देव और न जाने क्या-क्या कहते हैं।

प्रोफेसर ने इतना कहकर गहरी सांस ली और लापरवाही के स्वर में बोला नरोत्तम बाबू प्रेस की गड़गड़ाहट में भूत प्रेतों की काल्पनिक चीखें मत सुना कीजिए। भूत प्रेत कुछ नहीं है। अपने मन को व्यस्त रखिए। इस प्रेस और प्रकाशन को चलाइए।

तारिणी मुझे प्रोफेसर की बात पसंद आई। मैंने अनुभव किया, ये भूत प्रेत सचमुच व्यर्थ हैं।

तारिणी पुन उसका हाथ अपने हाथ में लेती हुए बोली प्रोफेसर की एक बात पर ध्यान दो अपने मन को व्यस्त रखो अपने आपको अपने कामों में तन्मय कर दो बस!

चांद पर बादल का टुकड़ा आ गया। हल्का अन्धकार फैल चुका था।
नरोत्तम ने तारिणी का हाथ बड़ी मजबूती से पकड़ लिया।

३४

सुनंदा ने आखिर सुबोध को पराजित कर ही दिया। उसने सुनन्दा की शपथ खाई कि वह अब भविष्य में रोमी की किसी प्रकार भी मदद नहीं करेगा।

सुबोध के कथन पर सुनन्दा को विश्वास नहीं हुआ। वह भर्राए स्वर में बोली 'मेरी दीदी मर चुकी है और मुझे उस ईसाई-चीट से बड़ी घृणा है। मैं सच कहती हूं कि यदि आप ऐसा करेंगे तो मैं गले में फांसी का फन्दा लगाकर मर जाऊंगी।

पहली बार सुबोध ने सुनन्दा में नारी-हठ पाया। पहली बार सुबोध ने सुनन्दा के नेत्रों में घृणाजनित मोतियों से आंसू देखे।

वह स्वयं पिघल गया।

विगलित स्वर में बोला म पीड़ादायक पुनरावृत्ति नहीं कर सकता। सुनदा तुम्हारा और इस परिवार का स्नह मुझे मिलता रह यह मेरे लिए बहुत है।

सुनन्दा ने अपनी आखों के आसू पोछकर कहा हमारा स्नह आपक आश्रित है सुबोध बाबू आपकी कृपा न होती तो हमारी कैसी दुदशा होती ? हम रोटी क लिए मुहताज हो जात।'

सुबोध इस बार निरुत्तर रहा।

सुनन्दा की मां आ गई थी। दोनो का उन्मन देखकर बोली क्या बात है बटा ?

'कुछ नहीं सुनन्दा पागल है। इन्दिरा का नाम लते ही बिगड़ जाती है।

हां बटा अब तुम्ह उसका नाम नही लना चाहिए। उसन सारे कुटम्ब की मान-मर्यादा मिट्टी म मिला दी है।

और इन्दिरा !

क्रोध में आहत सापिन-सी हुई रोमी से पूछ रही थी आखिर तुम्हारा वह व्यापारी गया कहां ? हजारों का सौदा होने वाला था न ! इन्दिरा म तुम्हें राज रानी बना दूगा। प्रेमेन्द्र बाबू यह है वह हैं भाग्य न साथ दिया तो विलायत भी ल चलूगा। मैं पूछती हूं कि तुम्हारे प्रेमेन्द्र बाबू गए कहा ? कितनी बार कहा मुझे उनसे मिलाओ तो सही। लकिन तुमने मेरा कहना नही माना। रोमी रोमी रोमी आखिर यह तमाशा क्या है ? तुम इतन बदल कसे गए ? तुम मिथ्या भाषण छल और फरेब मुझसे क्या करते हो ?

रोमी पत्थर की भांति अनुभूतिहीन होकर बठा था।

प्रेमेन्द्र उस धोखा दे गया।

वह आखिर क्या कर ? उसका भाग्य ही साथ नहीं देता वह यह सोचकर मन ही मन चिहुंक पडा वह कितना बदल गया है यह कितना कमजोर हो गया भाग्य भगवान नियति नहीं नहीं वह किसीको नही मानता नहीं मानता ?सर्व विश्वास है। आदमी महाबली है। महा शक्तिवान है। सर्वोपरि है। और उसन अपने आपको ल्गा। विडम्बना अट्टहास कर उठी। आदमी दुबल है, दुबल है मिट्टी का पुतला लाचार और दीन !

इन्दिरा न कड़ककर पूछा तुम चुप क्यो हो ?

म अभी बोलना नहीं चाहता। अभी बोलूगा तो झगड़ा हो जाएगा।

झगड़ा क्यो हो जाएगा ? बात-बात में क्या तुम मुझसे झगड़ते रहोग ?

नही फिर भी मैं अभी चुप रहना ही श्रयस्कर समझता हू। उसन बड़ी शांति स कहा स्थिति का देखकर कदम उठाना चाहिए। अभी तुम दुख में पागल हो। तुम्ह सही बात भी कहूगा तो वह तुम्ह सही नही लगगी। बस इतना ही कहना चाहता हू। प्रमेन्द्र बाबू छल नहीं कर सकते। अवश्य कोई दुघटना हो गई होगी।

इन्दिरा इस बार चुप रही। वह अपने दोनो हाथों से मुह ढक कर रोन लगी।

रोमी न उसे समझाया तुम्हार मन को समझना आसान नही है। पता नही कब तुम्हारा कसा मूड हो जाए ? दूसर तम बहुत अस्थिर मन वाली हो। इस अस्थिरता के कारण तुम हर परिस्थिति में वाचाल हो जाती हो।

इ दिरा न रुष्ट रोदन स्वर में कहा अब तुम्ही मुझ ऐसा नही कहोग तो कौन कहगा ? मन तुम्हारे लिए सवस्व !

बीच में ही रोमी बोल पड़ा देख लिया न मन साधारण ढग स एक बात कही और तुम बात का बतगड बना बठी। इसलिए ही म कहता था कि मुझ चुप रहन दो। अच्छा म चला। जब तुम रोकर शांत हो जाओगी और तुम्हारे मन का सारा रोष निकल जाएगा तब म तुमसे बातचीत करूंगा। वह उठा और दर वाज पर खड़ा होकर पुन बोला म दो घटे में आ रहा हू। तुम मुझ यहीं पर मिलना।

रोमी हवा की तरह बाहर निकला। हृदय में विरक्ति क भाव इतनी तजी स उमड़ रहे थ कि उसने वापस मुड़कर हो नहीं देखा। वह सीधा चला आया—किले के मदान में। वह किल के मदान का पार करक जस ही ईडन गाडन की ओर बढ़ा वस ही उसे सुबोध के दशन हो गए। उसमें जिन्दगी लौट आई। वह उत्साह और प्रसन्नता स बोला, 'प्रमेन्द्र बाबू प्रमेन्द्र बाबू !

सुबोध खड़ा हो गया।

प्रमेन्द्र बाबू आप बड़ हृदयहीन ह। मुझे बड़ सकट म डाल दिया। इन्दिरा अभाव क कारण धीरे धीरे मरा विश्वास खो रही है। वह कह रही है कि प्रमेन्द्र

बाहू से मुझ मिलाओ।'

सुबोध एक वृक्ष का सहारा लेकर खड़ा हो गया। अपने हाथों को बगलों में दबाकर बड़ी सहज मुद्रा में बोला रोमी मैं इधर काफी व्यस्त था। तुमसे मिल नहीं सका।

रोमी की आंखें सजल हो उठीं। वह विगलित स्वर में सुबोध के कदमों की ओर देखता हुआ बोला आप नहीं जानते कि आपके दर्शन न होने से मुझे गृह-दाह की पीड़ा में कितना जलना पड़ा। मेरा साहस टूट गया। मुझे लगा कि मैं फिर निस्सहाय हो गया हूं। मेरा अपना कोई नहीं है। वह एक साथ यह सब उगल गया। उसकी सांस तेज हो गई।

मनुष्य को कभी नहीं घबराना चाहिए। उसे श्रम करना चाहिए। सत्य का सहारा नहीं छोड़ना चाहिए। देखो सफलता तुम्हारे चरणों में स्वयं आ जाएगी।

आप जो कह रहे हैं वह सच हो जाए तो मैं इन्दिरा को सुख दे दूं। उसकी अस्थिरता उसके जीवन की महत्त्वाकांक्षाओं की अपूर्णता की वजह से है। उसके पति ने उससे छल किया। स्कूल के बच्चों ने उसे घृणा के सागर में फेंक दिया मैं अभाव के कारण उसे सम्पूर्ण रूप से प्यार नहीं कर सका। मैं ईसाई हूं—इसका उसे दुःख है। यदि उसका पति उससे छल नहीं करता तो वह मुझे अपरिमित करुणा का दान देती। मैं समझता हूं—केवल उसकी करुणा पाकर मैं एक अलौकिक आनन्द पाता। अधिक सुखी होता।

पता नहीं रोमी आदमियों के बीच धर्म ने कैसी विकट घृणा पैदा कर दी है। उस घृणा को हम अपने हृदयों से सम्पूर्ण रूप से निकाल नहीं सकते। मनुष्य एक हैं इसके बारे में सुन्दर भाषण अवश्य दे सकते हैं साथ खा-पीकर के एकता प्रदर्शन भी कर सकते हैं लेकिन अन्दर में गूंजने वाले इस वाक्य का—मैं ईसाई हूं या सनातनी या जैनी।—वे क्या भूल सकते हैं ! तुममें भी अपने धर्म के प्रति सम्मोह है। इन्दिरा में है। मुझमें है। पर हम क्या नहीं यह प्रयास करते कि एक ऐसा धर्म हम मानें जो केवल एक प्रकृति का पूजक हो और मनुष्य को प्राणी मात्र का हित करने वाला बनाता हो।

रोमी ने सुबोध को देखा। उसे उसकी आंखों में समुद्र-सी गहराई नजर आई।

वह उसे देखता रहा। धीरे से बोला इस यान्त्रिक युग में ऐसे धर्म का उदय होना बहुत जरूरी है। तभी आदमी का दुखों से छुटकारा होगा।

सुबोध ने मुसकराते हुए कहा मैं चलूं।

फिर ? उसकी आंखों में जो करुणा भरी याचना थी सुबोध का मन उस याचना से डोल उठा। तभी सुनन्दा द्वारा खाई हुई शपथ उसे याद हो उठी। फिर उसे रोमी का करुणाभरा मुख।

सुनन्दा का हठ रोमी की आवश्यकता !

चन्द क्षण वह उसी पर विचारता रहा। हठ से आवश्यकता बहुत बड़ी है। नैतिक छल इतना पीड़ाजनक नहीं जितना पेट की भूख ! उसने अपनी जेब से एक नोट निकाला और रोमी के हाथ में दे दिया। चलता हुआ बोला दो-चार दिन के बाद मैं तुम्हें वहीं पर उसी रेस्तरां में मिलूंगा।

प्रमेन्द्र बाबू वायदा सच्चा करना।

मैं अवश्य आऊंगा।

सुबोध धीरे-धीरे रोमी की आंखों से ओझल हो गया। दस का नोट रोमी के हाथों में मुड़ा पड़ा था। उसे देखकर एक बार उसके मन में आया कि क्या नहीं, वह अपना सिर फोड़ लेता। आदमी इतना मजबूर क्यों है ? तब उसके सामने वर्तमान सड़ी-गली व्यवस्था और भ्रष्टाचार से भरी राजसत्ता घूम गई। वह सरकार को गाली देता हुआ रेस्तरां की ओर बढ़ने लगा।

सूर्य डूब रहा था।

खून-सी उसकी लाली क्षितिज पर बिखरी हुई थी। चौरंगी का कोलाहल बढ़ रहा था।

विचित्र लोग विचित्र भाषाएं और विचित्र वेश !

पन्द्रह दिन बाद ।

रंग-बिरंगी बिजलियों से चौरंगी जगमगा रही है। बंगाली राजस्थानी गुजराती मद्रासी और पंजाबी सभी जातियों के लोग यहां दिखाई पड़ते हैं। इन सभी कालों के बीच कभी-कभी चुरूट या सिगरेट मुंह में दबाए हुए गोरे अकड़ के साथ चलते हुए भी दिखाई पड़ जाते हैं। वे गोरे अभी तक हम हिंदुस्तानियों के लिए विस्मय की वस्तु बने हुए हैं। छोटे-छोटे शहरों एवं गांवों से आए हुए व्यक्ति उन्हें देखकर स्तब्ध रह जाते हैं। खट खट की ध्वनि करती हुई कोई अंग्रेज या फ्रेंच महिला अर्द्ध नग्न वेश भूषा में चौरंगी पर घूमती है तब ऋषि-मुनियों के इस लोक की आंखें उस ओर जम जाती हैं। भूख और अतृप्ति को आप उन आंखों में अच्छी तरह देख सकते हैं जैसे यह मिट्टी सेक्स की बुभुक्षा लिए हुए है।

कुछ फेरी वाले अजीब मन स्थिति में आपको विभिन्न वस्तुएं बेचते हुए दिखाई पड़ेंगे। जिनपर पुलिस वालों की कृपा है वे घूम घूमकर चौरंगी पर अपना सामान खुल्लमखुल्ला बेच सकते हैं अन्यथा उन्हें लुक-छिपकर सामान बेचना पड़ता है। ये फेरी वाले इन नैतिकता हीन पुलिस वालों को चोर लुटेरे और यमदूत से कम नहीं समझते।

एक अंधा क्रिश्चियन हाथ में बाजा लिए कोई अंग्रेजी धुन बजाता हुआ घूमता रहता है। वह धुन के बदले रोटी और कपड़ा मांगता है। कभी-कभी कोई दुष्ट प्रकृति का व्यक्ति उस अन्ध गायक से भी मजाक कर लेता है यानि गाना सुनकर पैसों के लिए अंगूठा दिखा देता है।

नरोत्तम और तारिणी दोनों चौरंगी से गुजर रहे थे। नरोत्तम इधर अपने आपको काफी स्वस्थ अनुभव कर रहा था। आजकल उन्होंने लेन्सडन एवेन्यू पर अलग मकान ले लिया था। सेठजी से अनुरोध करके तारिणी ने नरोत्तम के लिए जो प्रेम गरीबदाई थी इससे आजकल अत्यन्त सुन्दर प्रकाशन हो रहा था और उसका संचालन भी लाभप्रद था।

नरोत्तम के मां-बाप वापस गांव चले गए थे। नरोत्तम और तारिणी स्वयं

उन्ह छोड़न गाव गए थ। नरोत्तम न गाव में बहुत-से परिवतन देखे। इतने वर्षों के बाद उसन देखा कि नयजागरण के नए देवता जाग रहे हैं। अज्ञान का अधकार पान क महा भारत में लुप्त हो रहा है। प्रतिक्रियावादी शक्तियों के विरोध के बावजूद लोग पुर्ननिर्माण कर रह है। राजिया की भाभी कहीं भाग गई है। उसके बार में भिन्न भिन्न अफवाह हैं। कुछ कहते हैं कि उसन किसी अन्य मित्र मजदूर स नाता कर लिया है तो कुछ यह भी कहते है कि वह वश्या बन गई है। सत्य और तथ्य विवादास्पद हैं।

पर उसकी भाभी और भया उसी मर्यादा की लकीर पर चल रहे हैं। वही घूघट वही पर्दा और वही एक दूसरे के प्रति अपरिसीम श्रद्धा और प्रम।

एक रात गाव में वारिणी न नरोत्तम से बताया था तुम्हारी भाभी देवी है। उसके हृदय में ममत्व और प्यार के अलावा कुछ है ही नहीं। वह मुझे भी बहुत प्यार करता है। मन यों ही मजाक म कह दिया कि भाभी यह घूघट और लज्जा अब कितन वप और चलगी तब वह हसकर कहने लगी कि देवरानी जी आधी उम्र बीत गई है और इसी तरह आधी और बीत जाएगी।

मुझस रहा नहीं गया। नारी अपन महान जीवन को निराशा के इस एक वाक्य में क्या समाप्त कर दती है। इसलिए म गभीर होकर बोली 'तम्हारी अपनी भी कुछ आशाए अपन, इच्छाए होगी ?

बस एक ही है कि जीवन का यह सपना इनके चरणों में ही पूरा हो। म लाल चूनर ओढ़कर इनका कधा नकर चली जाऊ।

तब वह अपना भी औत्सुक्य नहीं दबा सकी। बोल पड़ी देवरानी तुम्हारा स्वप्न क्या है ?

म क्या उत्तर दती ?

सहमकर बोली बस उनकी सवा उनको सतोष उनको सुख देती रहूं। नारी का कतव्य यही तो है कि अनुचित रूढ़ियो और बन्धनों स मुक्त होकर पति के लिए आत्मोत्सग कर दना।

तुम्हारी भाभी भौंचक्की मुझ दखन लगी। बड़प्पन स बोली तुम पढ़-लिख कर भी एसी बातें करती हो ?

म क्या उत्तर देती ! चुप हो गई। मन म यह जरूर ख्याल आया कि नारी आखिर नारी है। नारी पुरुष को समपण करके मा बनती है और पुरुष फिर भी स्वतन्त्र रहता है। पुरुष धरती में बीज डालता है लकिन बीज जब नए वक्ष का रूप धारण करता है तब धरती की छाती विदीर्ण हो जाती है। तब उसकी असीम व्यथा की अनुभूति उस पूर्णत्व की ओर ल जाती है। लकिन पूर्ण होन पर जो रक्त-सबध उत्पन्न होते है उनस नारी दुबल हो जाती है और वह नर का आसरा पकड़ती है।

नरोत्तम की आखो में प्रश्न नाच उठा था।

वह गभीर होकर बोला इसका क्या मतलब ? क्या नारी सदा पुरुष की दासी रहेगी ? य रक्त-सम्बन्ध नारी को दुबल करते हैं ?

हा ? अनुचित हस्तक्षप और अधिकार रहित होकर भी नारी को एक रूप स पुरुष की अधीनता स्वीकार करनी ही पडगी। नारी मा बनती है और मा बनन पर वह कस स्वतन्त्र रह सकती है ? ससार क इतिहास में स्वतन्त्र नारी का चरित्र मानवीय मूल्यो पर उचित नहीं ठहरा है। यह अपवाद रूप में हो सकता है कि कोई नारी मा बनना चाहे ही नहीं। लकिन पूर्ण नारीत्व पुरुष के स्पश स ही उभरता है और पनपता है। मर गाव में जब एक किसान लडकी का विवाह हो रहा था तब एक पढ़ी-लिखी युवती ने कहा था कि अभी लडकी छोटा है। जानते हो, एक किसान बुढ़ा न क्या उत्तर दिया ? सुनोगे तो हसाग।

वह बुढ़ा बोली कि लडकी का क्या छोटा और क्या बडा ? विवाह-यज्ञ का धुआ जस ही उसके बदन स लगगा बस ही वह पूर्ण नारी बन जाएगा।

हालाकि यह कथन अतिशयोक्तिपूर्ण है फिर भी इसमें तथ्य अवश्य है। एक आस्था है और आस्था आधारहीन नहीं होती।

और भी कई उदाहरण दिए जा सकते है। सूपनखा रावण की लका क स्वामी की बहिन थी। क्यो लक्ष्मण पर आसक्त हुई ? आपकी हा इन्दिरा न रोमा को क्यों अपनाया ? मरा यह मतलब नहीं है कि नारी मनुष्य क पांव की जूती बनी रह पर म इतना जरूर चाहती हू कि वे पारस्परिक होड़ न करें और न एक दूसरे के घातक बन। औचित्य पथ क यात्री बनकर व एक दूसर क

पूरा बनें।

नरोत्तम अपनी पत्नी से बहुत प्रसन्न रहता था। तारिणी के भाव बड़े स्पष्ट थे। गाँव की स्मृति उनके मानस-पटलों पर अमर बन गई।

फिर वे दोनों कलकत्ता आ गए।

नए जीवन का आह्वान किया गया।

वे पदल ही घूम रहे थे। न्यू मार्केट और लिंडसे स्ट्रीट पर स्थित एक रेस्तरां में व दोनों चाय पीने के लिए घुसे।

सामने ही रोमी बैठा था।

नरोत्तम उसे नहीं पहचान सका क्योंकि उसके गलों की हड्डियां उभर आई थीं। नेत्र गड्ढों में धंस गए थे। चेहरा इस तरह सूख गया था जैसे वह बहुत दिनों से बीमार हो।

रोमी नरोत्तम और तारिणी को अचरज भरी दृष्टि से देखता रहा। उसका भी साहस नहीं हुआ कि वह नरोत्तम को पुकारे। क्या पता वे अभी एक रूपवती युवती के साथ का पूर्णरूप से आनंद उठाना चाहते हों और इस समय किसी को भी अपना साथी बनाना न चाहते हों। यही सोचकर शायद उन्होंने मुझे न पहचानने का बहाना भी कर लिया हो।

तारिणी और नरोत्तम रोमी के सामने वाली मेज पर बैठ गए। रोमी उन्हें बार-बार घूर रहा था। धीरे धीरे नरोत्तम को भी सन्देह सा होने लगा कि उसने इस व्यक्ति को कहीं न कहीं देखा है।

बैरा चाय ले आया था।

नरोत्तम कटलेट का एक टुकड़ा मुह में डालकर तारिणी से बोला, तारिणी इस व्यक्ति को मैंने कहीं देखा है पर याद नहीं आ रहा है कि इसे कहाँ देखा है?

तारिणी सपाक से बोली जाकर पूछ लीजिए, इसके लिए व्यर्थ अपने दिमाग को क्यों कष्ट देते हैं?

पूछ आऊं? उसने किंचित विस्मय मिश्रित उपहास से कहा।

बड़े पापाचारी हो गए है? उसने मुस्कराकर कहा जाइए।

नरोत्तम ने जाकर रोमी से पूछा। रोमी ने आह भरकर इतना ही कहा ?
"हम गरीबों को कैसे पहचानोगे ?
रोमी। वह किलककर बोला, उठो हमारे साथ चाय पीओ।'
मैं चाय का आर्डर दे चुका हूं।
यहीं आ जाएगी।
दोनों उठकर तारिणी के पास आए। नरोत्तम ने तारिणी से उसका परिचय कराया यह इन्दिरा का पति रोमी है। इन्दिरा आजकल इसे राम' कहती है। दार्शनिक है। और यह है मेरी पत्नी तारिणी देवी। हाल ही में विवाह हुआ है।
नमस्कार भाभी जी।
तारिणी विस्मय से बोल उठी आप पहले क्रिश्चियन मिले हैं जिन्होंने विशुद्ध हिन्दी में नमस्कार किया।
इसकी माया ही विचित्र है। कहता है कि मैं ईसाई धर्म को धर्म न मानकर एक सम्प्रदाय मानता हूं। तारिणी की ओर मुखातिब होकर नरोत्तम बोला यह इन्दिरा को बहुत प्यार करता है और इन्दिरा इसे। पर रोमी तुम इतने कमजोर कैसे हो गए ?
चिंताओं के मारे !
तुम्हारे बिजनस का क्या हाल है ?
चौपट।
क्या कहते हो ?' नरोत्तम ने आंखें फाड़कर कहा।
सच कहता हूं कि भविष्य में यदि पादरी को मुझे अपने गुनाह सुनाने का अवसर मिला तब मैं उससे कहूंगा कि संसार के पापियों के पापों को सुनकर उनका उद्धार करने वाले तू यदि एक पापी का ही वास्तविक उद्धार कर देता तो कितना अच्छा होता ! रोमी की बुझी हुई आंखों में अवसाद की छाया चमक उठी। शरीर में जड़ता आ गई।
बात क्या है ?
मेरे पास मिस्टर थास नामक एक महाशय रहा करते थे। वे भी क्रिश्चियन थे। अपने से खूब मित्रता रखते थे। लेकिन जब मैंने इन्दिरा से बिना धर्म-परि

पूरक बनें।

नरोत्तम अपनी पत्नी से बहुत प्रसन्न रहता था। तारिणी के भाव बड़ स्पष्ट थ। गाव की स्मृति उनके मानस पटल पर अमर बन गई।

फिर वे दोनों कलकत्ता आ गए।

नए जीवन का आह्वान किया गया।

वे पदल ही घूम रहे थे। न्यू मार्केट और लिंडसे स्ट्रीट पर स्थित एक रेस्तरां में व दोनों चाय पीन क लिए घुसे।

सामने ही रामी बठा था।

नरोत्तम उसे नहीं पहचान सका क्योंकि उसके गालों की हड्डिया उभर आई थी। नत्र गड्ढों में धस गए थ। चेहरा इस तरह सूख गया था जस वह बहुत दिनों से बीमार हो।

रोमी नरोत्तम और तारिणी को अचरज भरी दृष्टि से देखता रहा। उसको भी साहस नहीं हुआ कि वह नरोत्तम को पुकारे। क्या पता वे अभी एक रूपवती युवती के साथ का पूर्णरूप से आनद उठाना चाहते हों और इस समय किसीको भी अपना साथी बनाना न चाहते हों। यही सोचकर शायद उन्होंने मुझे न पहचानने का बहाना भी कर लिया हो।

तारिणी और नरोत्तम रोमी के सामने वाली मेज पर बठ गए। रोमी उन्हें बार-बार घूर रहा था। धीरे-धीरे नरोत्तम को भी सन्देह-सा होन लगा कि उसन इस व्यक्ति को कहीं न कहीं देखा है।

बरा चाय ल आया था।

नरोत्तम कटलेट का एक टुकड़ा मुह में डालकर तारिणी से बोला तारिणी इस व्यक्ति को मन कहीं देखा है पर याद नहीं आ रहा है कि इसे कहां देखा है?

तारिणी तपाक से बोली जाकर पूछ लीजिए, इसके लिए व्यर्थ अपने दिमाग को क्यों कष्ट देते हैं?

पूछ आऊं? उसन किंचित विस्मय मिश्रित उपहास से कहा।

बड़ आज्ञाकारी हो गए हैं? उसन मुस्कराकर कहा जाइए।

पूरक बनें।

नरा

य। गफराए विवाह नर लिया और वह भी विना गिर्जे में जाकर, तबसे व मुझ क्षा की दृष्टि से ग्खन लग। इन्दिरा ने रोमी स राम और बनाकर रही-सही कसर पूरी कर दी। उसन मरी नेम-प्लेट को भी बदल दिया। एक दिन उसन गिर्जा जाना भी बन्द करा न्यिा। फिर क्या था ईसा के बन्दे आपे से बाहर हो गए। पादरी को एसा विश्वास था कि म धम का घातक हू। और मन अपन धम को बड़ी ठेस पहुंचाई है।

'जानत हो सहिष्णुता का अतिक्रमण करके बोस ने मेरे साथ क्या धोखा किया? इधर मेरे इक का विजनस प्रगति पर था। इनकम भी ठीक होन लगी थी। लकिन उसी बोस न मेरा फामूला मित्रता मित्रता में पूछकर कई आदमियों को बता न्यिा। धार्मिक द्वप लिए हुए न्ो आदमियों ने उसी स्याही को एकदम सस्ता करक बचना शुरू कर न्यिा। मुझ इस कुकृत्य पर बड़ा रज हुआ और एक दिन म गुस्से म आकर उस बिजनस के सभी सामान को गगा मा की गोद में फक आया, ताकि म आत्मपीडन स बच जाऊ। रोमी की आखें सजल हो गई थी। वह चाय के प्यालो से खनन लगा था।

यह तुमन अच्छा नहीं किया? चाय का घूट लकर नरोत्तम बोला, इस कलकत्ता में कितने दूकानदार हैं। सभी अपनी अपनी मिठाई बचते हैं। सभी अपनी अपनी मेहनत का खाते हैं।

म भी शांति स सोचता हूं तब एसा ही लगता है लकिन मनुष्य की जघन्य मनोवृत्ति से म तत्काल इतना पीड़ित हो गया था कि म अपन आप पर काबू नहीं रख सका। सोचता हूं कि धम-परिवतन करके हिन्दू बन जाऊं। इस प्रकार किसी को अहित करके या उसे मजबूर करके कौन किसको अपने धम में रख सकता है और उस धम का आधार भी कितने दिन तक बुलद रह सकता है? फिर इन्दिरा की आन्तरिक इच्छा भी यही है कि म हिन्दू ही बन जाऊं।

नरोत्तम न महसूस किया कि इस प्रकार की चर्चा से रोमी को कष्ट हो रहा है इसलिए उसन बात का रुख बदल न्यिा इन्दिरा का क्या हालचाल है?

नौकरी की तलाश में घूम रही है।

क्यों अभी तक उसे नौकरी नहीं मिली?

नौकरी मिल जाती तो मेरा हाल यह नहीं होता।

तारिणी ने हठात् कहा आप इन्दु सेठजी से कहकर वहां लगवा दीजिए न ? उनका बड़ा बिजनस है।

तुम मुझसे कल मिल लेना। नरोत्तम ने कहा और पाकेट से पचास रुपए देकर बोला यह मैं तुम्हें उधार दे रहा हूं। जब आए वापस दे देना। इंदिरा को मेरा नमस्कार कहना। कुछ कहे तो कहना कि आजकल मैं पूर्व की अपेक्षा कुछ स्वस्थ हूं। अपनी श्रीमती के कहने पर ही मेरा उठना-बैठना होता है। पूरा पत्नीव्रत धर्म पालन कर रहा हूं। तारिणी ने नरोत्तम को तीखी नजर से देखा। वह चुप हो गया।

रोमी पचास रुपए लेकर चला गया। उसने रुपए लेते समय उचित अनुचित का ख्याल तक नहीं किया। उसे बड़ा अभाव था।

उसके जाने के बाद नरोत्तम ने कहा आज मुझे इन्दिरा को देखने की इच्छा हो गई है। इन्दिरा चक्रवर्ती बाबू का परिवार और बेचारी भोली सुनंदा।

तारिणी ने कहा तुम्हें अधिक से अधिक मित्र बनाने चाहिए। तुम अपने मन को जितना व्यस्त रखोगे उतने ही तुम्हारे संस्कार मिटेंगे।

कल मैं वहां जरूर जाऊंगा। उसने निर्णय करते हुए कहा।

वहां से वे दोनों खाना खाकर लगभग दस बजे लौटे।

३६

उसी दिन तारिणी ने नरोत्तम के रहे-सहे भ्रम का निवारण भी सेन बाबू का पत्र मंगवा कर दिया। सेन बाबू ने अपने पत्र में लिखा था कि हमें तृप्ति कभी भी दिखाई नहीं पड़ी। उन्होंने अपने आखिरी पत्र में लिखा था कि मरने के बाद कौन किसको दिखता है ? वह तो बेचारी दुखी थी जो आई और आकर चली गई।

तारिणी ने कहा क्या मिस्टर जितना पुराना नाटक था वह वहम ही था ?'

नरोत्तम धीरे से हंस पड़ा। वह रात उनके लिए बड़ी मादक रही।

दूसरे दिन हो सवेरे-सवेरे इन्दिरा नरोत्तम के यहा पहुची। नरोत्तम उसे देख कर बहुत प्रसन्न हुआ। तारिणी से उसका परिचय कराया।

परिचय के बाद इन्दिरा ने अपने पर्स से पचास रुपए निकालकर कहा म आपका बहुत कृतज्ञ हू लेकिन अब इनकी जरूरत नहीं है। आपके उपकारों से म पहले ही बहुत दब चुकी हू।

नरोत्तम हतप्रभ हो गया।

तारिणी चाय बनाने के लिए चली गई थी।

इन्दिरा बोली 'हम इतने गए-बीते नहो हैं कि आपकी दया की भीख सदा लेते रहे। हमसे इतनी ही आत्मीयता रखनी थी तब हमें कम से कम अपने विवाह के उत्सव में सम्मिलित करते। हम भी अपनी सामर्थ्य के अनुसार कुछ भेंट देते।

नरोत्तम सफाई देता हुआ बोला इधर म पागल हो गया था। मुझ भूतनी लग गई थी।

इस वैज्ञानिक युग में इस प्रकार की बातें आपके मुह से अच्छी नहीं लगती। भूत प्रतों का युग गया।

लकिन रोमी तो कह रहा था कि आजकल हम बड़ी तंगी में है। दिन ।

हम भूखे मरेंग पर ।

बीच में ही बोल उठा नरोत्तम यह नहीं हो सकता।

क्या ?

म तुम्हें प्यार । आवेश म नरोत्तम कहता-कहता रुक गया।

इन्दिरा की आंखो में बिजलिया चमक उठीं। वह आसू भरकर आहिस्ते से बोली इसलिए तुम मुझे रुपए दिया करते थ इसलिए तुम अपने को पागल कहते हो इसीलिए तुमने मुझे मिल में बदनाम कराया और अब चादी के टुकडे फेंक तुम मुझे मजबूर करते हो कि म तुम्हारे अनौचित्य को भी सहन करूं। पागलपन के ढोंग में सृष्टि की सहानुभूति प्राप्त करना अत्यन्त सहज होता है पर म अच्छा नमस्कार।

इन्दिरा तूफान की तरह बाहर चली गई।

नरोत्तम जड़ हो गया। वह समझ नहीं रहा था कि यह सब कैसे हो गया।

सने ऐसा क्यों कह दिया।

तारिणी जब चाय लकर आई तब आते ही उसन पूछा इन्दिरा दीदी कहां हैं ?

चली गई।

क्यों ?

'वह पचास रुपए वापस करन आई थी।

लकिन चाय तो पीती जाती।

उस जल्दी थी।

मालूम पड़ता है उसकी नस-नस म घमण्ड बसा हुआ है।

तारिणी म अभी बहुत परेशान हू। लगता है कि किसीन मेरे मस्तिष्क पर मन भर का पत्थर रख दिया है।

उसन चाय नरोत्तम को देकर पूछा तुम इतन गभीर क्यों हो गए ? यह बवजह की उदासी कैसी ?

चाय की चुस्की लकर नरोत्तम दार्शनिक क स्वर में कहन लगा, तारिणी ! बात यह है कि आज मन इन्दिरा को भावावश म यह कह दिया कि म तुम्हारी सहायता इसलिए करता हूं क्योंकि मुझ तुमसे अनुराग है। वह बचारी यह सुनकर रो पड़ी। कई मिनट उसन अंशु पर लगा लिए और चली गई।

तारिणी गभीर हो गई इसक पूर्व आप नारियों स भयभीत होकर उनक सम्मुख अपन मन की बातें नहीं रख सकते थे इसी कारण आपको इतन दिन मानसिक यातना भोगनी पड़ी। सच कहा जाए तो आप तृप्ति को बहुत अधिक प्यार करत थ और इन्दिरा को भी। अच्छा किया कि आपने उस काट का आज बाहर निकाल दिया। अन्यथा यह जीवन भर आपको चुभता रहता। आप सदा इस बात को लकर परेशान रहत कि म एक बार इन्दिरा का कहकर तो दखता ?

फिर भी मेरा मन इन्दिरा स सम्बन्ध तोड़ना नहीं चाहता। म चाहता हू कि वह यहां भी रह पर मुझस सम्बन्ध रख। म उसस मिलन जुलन का सिलसिला रखना चाहता हू। यह भी चाहता हू कि रोना स उसका छुटकारा हो जाए।

क्यों ? तारिणी चौंक पड़ी।

रोमी मुझ म—दा नही नगता। न जाने क्या मेरे मन्तस् में इसके प्रति पृ
है। म समझता हू कि इसके साथ इन्दिरा मुखी नही रह सकती। फिर वह ईसा
भी है। उसकी वजह स इन्दिरा के मा-बाप बड दुखी हैं।

माप सरासर गलत कहते हैं।

म ठीक कहता हूं।

मापकी घृणा सत्य है मौर सब झूठ। माप मब भी इन्दिरा पर मधिका
रखना चाहत है खर मब माप स्नान करिए, माफिस का समय हो गया है मौ
माज मापसे सात् नौ बज कोई लेखक भी तो मिलन के लिए मान वाले हैं? तारिण
उद्विग्न हो गई थी।

हा-हा वे हिन्दी के यशस्वी कलाकार हैं। म उनकी कई पुस्तकें छापना चाहत
हू। वह हड़बड़ाकर उठ बठा।

फिर होइए तयार। तारिणी ने मनिन्द्रा से चुटकी बजाई।

नरोत्तम मस्ती में मा गया। मांखो में मादकता भरकर बोला 'तुमने तो मुझ
मपना बन्दर बना लिया है।

तारिणी गुस्से में भौंह टढ़ी करके बोली धत् वह भीतर चली गई।

नरोत्तम मुह से सीटी बजाने लगा—मा दूर जानवाले

३७

तीन माह के बाद एक मादक प्रभात।

नरोत्तम चाय पीकर पुन बिस्तरे पर लट गया। उसने एक दीर्घ सास लिया।

तारिणी बाल उठी लम्बी माहें क्यो भर रहे हो?

सोचता हू कि ईश्वर ने तुम्हारी रचना मवश्य फुरसत से की होगी। मुझे
कालिदास का एक श्लोक याद हो माया है—

मस्या सर्गविधौ प्रजापतिरभूच्चन्द्रो नु कान्तिप्रद।
शृङ्गारकरस स्वय नु मदनो मासो नु पुष्पाकरः॥

वेदाभ्यासजड कथ नु विषयव्यावृत्तकौतूहलो।
निर्मातु प्रभवेन्मनोहरमिदं रूप पुराणो मुनि ॥

जानती हो इसका अथ क्या है—इसकी (उर्वशी की) सृष्टि के लिए कांति प्रदान करनेवाला चन्द्रमा स्वय ब्रह्मा बना होगा या शृङ्गार रस के देवता कामदेव ने इसे बनाया होगा अथवा कुसुमाकर वसन्त ने इसकी रचना की होगी। अन्यथा वेद के अभ्यास से जड़ीभूत तथा विषयोपभोग से दूर रहने वाले वृद्ध ऋषि ऐसा मनोहर रूप क्योंकर उत्पन्न कर सकते हैं ! अर्थात् नहीं कर सकते। इसी प्रकार हे तारिणी सुन्दरी आपका यह रूप अनग द्वारा बनाया हुआ है और मैं उसमें सवस्व विसर्जन कर डूब गया हू।

नरोत्तम का कथन सच था। इधर नरोत्तम तारिणी में इतना डूबा इतना डूबा कि उसका सारा मानसिक रोग दूर हो गया। भारतीय नारी नर की निर्देशिका होती है—इस उक्ति को तारिणी ने पूर्ण रूपेण प्रमाणित कर दिखाया। वह सुन्दर थी ही और उसने सभी प्रकार से नरोत्तम को अपनी ओर इतना तन्मय रखा कि नरोत्तम एक पल भी उसके बिना नहीं रह सकता था। तृप्ति की स्मृति निधूम अग्निशिखा सी होगई। कौन करता बचारी की याद ! फिर तारिणी ने उसके मन को पल भर के लिए भी अपने पर से हटने नहीं दिया। उसपर प्रकाशन-काय और लेखक-वग। बौद्धिक चेतना के नये और वाद-विवाद। सभी बातों ने नरोत्तम को अपने में इतना मग्न कर लिया कि उसे वतमान के अतिरिक्त भूत का ध्यान ही नहीं रहा।

लेकिन इन्दिरा ?

उसे वह नहीं भुला सका। तारिणी को बार-बार वह कहा करता था कि न जाने क्यों वह इन्दिरा से अपने सम्बन्ध बनाए रखना चाहता है। उसकी एक साध भी है कि वह पूर्ण सुखी बने।

और तारिणी उत्तर देती थी 'ये मन के बन्धन हैं, मानवीय नाते हैं, ये बनाए नहीं।' वह विद्रूप भरी हँसी हँसकर कहती 'इन्दिरा को आप नहीं पा सके पर उसे आप थोड़ा पहुँचाकर आनंद लेना चाहते हैं।

तभी नरोत्तम रोमी को छिप-छिपकर सदा आर्थिक सहायता करता रहा। कई बार वह इन्दिरा से मिला भी था लेकिन इन्दिरा ने उसको चाय तक नहीं दी।

३८

दफ्तर म प्रोफसर मगल बडी देर स नरोत्तम की प्रतीक्षा कर रह थ। व किसी स्थानीय कालज में फिलासफी के प्राध्यापक है। प्राजकल नरोत्तम के घनिष्ट मित्रो में है। नरोत्तम शीघ्र ही उनकी एक पुस्तक प्रकाशित करन जा रहा था।

प्रोफेसर का जीवन बिलकुल सादा था। जीवन के प्रति सोचन का तरीका उनका अपना था। प्राय इडिया काफी हाउस में नरोत्तम उनस विभिन्न विषयों पर वाद विवाद किया करता था।

नारी के प्रति प्रोफेसर का इतना ही कहना था कि मनुष्य को किसी सुन्दर गृहस्थ धम म आस्था रखन वाली स्त्री से विवाह कर लना चाहिए और उस ही अपने हृदय का अगाध प्रम और स्नह प्रदान कर दना चाहिए। मैं कहता हू कि एसा करन स मनुष्य की शक्ति का ह्रास केवल प्रणय अन्वषण' में नही होता। उनका यह भी कहना था कि कालिदास की शकुन्तला या राजा शूद्रक की वसन्तसेना अथवा कीटस की मडलाइन' लुई की एफ्रोडाइट' होमर की ट्राय की हेलन सभी समयान्तर अरुचिकर सिद्ध हो जाती ह। मेरा अभिप्राय यह है कि धीरे धीरे जस-जस मनुष्य की विषय लिप्सा का शमन होता रहता है वस-वस उसमें अपनी प्रिय वस्तु क प्रति एक विकषण-सा उत्पन्न हो जाता है। जब यह सत्य है तब क्यो इसके पीछे भटका जाए। दूसरे हमारे यहां सौन्दय-बुभुक्षित लोग बहुत है। कई लोग तो अपनी पत्निया एव मित्रो के प्रतिरूप क कारण परेशान नजर आते हैं। मेरा तात्पय यह नहीं है कि सौन्दय-विमुख आप रह। मेरा कहना है कि आप सबसे पहले नारी के सद्गुण दखें। आप यह देखें कि उसमें यान्त्रिक सभ्यता क कीटाणु तो नहीं है। प्रत्यक नारी में इस मिट्टी' की भावुकता होनी चाहिए कि उसमें समपण क साथ त्याग भी हो।

और यही कारण था कि प्रोफसर साहब न एक अति साधारण परिवार की सद्गृहस्थ महिला से विवाह किया। उन्हें न तो सौन्दय के प्रति आसक्ति थी और न किसी विरूप प्रलोभन क प्रति लालसा ही। दो-तीन बच्च थे। चिन्तन-मनन क क्षणों के अलावा व उन्हीं बच्चों की मधुर किलकारिया और नटखट गतिविधियो

में खोए रहते थे।

दफ्तर का टाइपिस्ट निरन्तर खट-खट करता जा रहा था। उसकी अंगुलियां एक पल के लिए भी विश्राम नहीं ले रही थीं। एक क्लर्क मिस्टर दास हर समय बेचारे चपरासी को डांटता रहता था। दस से लेकर चार बजे तक वह व्यक्ति निरा यन्त्रवत् काम करता था। न बेचारे चपरासी को सांस लेने देता था और न खुद लेता था।

प्रोफेसर मंगल दास को यान्त्रिक मनुष्य कहता था। प्रोफेसर साहब का कहना था कि धीरे धीरे यह दास अपनी सभी मानवीय अनुभूतियों को विस्मृत करके यन्त्र हो जाएगा। इसका समग्र कार्य कलाप यन्त्रनुमा हो जाएगा। यदि उसकी पत्नी उत्पादन– मेरा अभिप्राय काम करने की क्षमता से है–नहीं करेगी तो वह उसपर आग बबूला होगा। क्योंकि वह क्या जितने भी नौकर पेशा लोग हैं वे सब यान्त्रिक बनते जा रहे हैं। वे एक यन्त्र की भांति अपनी दिनचर्या बिताते हैं। यदि उस दिनचर्या में जरा भी व्यवधान उत्पन्न हो जाए तो वे इतने व्यग्र और विक्षिप्त हो जाते हैं जैसे कोई बड़ा अनिष्ट हो गया है।

दास अब भी उस चपरासी को डांट रहा था। वह कठोर स्वर में कह रहा था तुम आदमी नहीं गधे हो यहां से चाय लाने में तीन मिनट से अधिक नहीं लग सकते और तुम पूरे छह मिनट लगाकर आए हो। यह भी कोई काम का तरीका है?

चपरासी गिड़गिड़ाकर बोला, 'मुझे मेरे गांव का एक आदमी मिल गया था मैं उससे जरा अपने घर वालों के बारे में पूछने लगा।

छुट्टी के दिन नहीं पूछ सकते थे? कड़ककर दास बोला, यह प्रवृत्ति बहुत बुरी है। यह दफ्तर है मालिक तुम्हें छह घंटे का पैसा देता है पांच घंटे चौवन मिनट्स का नहीं। समझे!

चपरासी ने स्वीकृतिसूचक सिर हिला दिया।

दास फाइलों में अपने को तल्लीन करते हुए अपने आपसे तीव्र स्वर में कहने लगा कल मैं जब बिल देने बैंटिक स्ट्रीट गया था तब मुझे मेरा लड़का अक्षय मिल गया पर मैंने उससे बात नहीं की। मालिक का समय मालिक के लिए होना

चाहिए। समझे ?

रामप्रसाद ! दास जोर से बोला।

चपरासी हाथ जोड़कर बोला 'जी हुजूर !

एक गिलास जल देना तो।

और प्रोफसर साहब सोच रहे थे कि क्या नही ऐसे मनुष्यों को किसी पाश्चात्य देश में भेज दूं जहां यान्त्रिक सभ्यता मानवी सभ्यता पर लौह आवरण-सी छायी जा रही है। नरोत्तम को कहकर मैं इस दास को समझा दूंगा कि वह कहीं और चला जाए जहां नौकर अपने मालिक के लिए सब कुछ दान कर देता है।

टाइपिस्ट अभी तक खट-खट करता जा रहा था।

प्रोफेसर साहब ने घड़ी की ओर देखकर टाइपिस्ट मगन से पूछा क्यों आज नरोत्तम जी नहीं आएंगे क्या ?

जरूर आएंगे। मलख ने उत्तर दिया।

तभी नरोत्तम ने दफ्तर में प्रवेश किया। मगन को देखकर वह प्रसन्नता से बोला हलो प्रोफेसर देरी के लिए क्षमा !

कोई बात नही। बैठो।

नरोत्तम बैठ गया।

कहो क्या हालचाल है ? आज इतनी देर कहां लगा दी ! प्रोफेसर बोले। उनकी आंखों में उत्सुकता थी।

'आज मैं अपनी पत्नी के साथ सेठजी के यहां खाना खाने गया था।

'पत्नी के साथ क्या मतलब ?

वह मां बनने वाली है।

'बधाई।

क्यों प्रोफेसर यदि यह रफ्तार अभी से शुरू हो गई तो जवानी के ढलते-ढलते दर्जन की टीम तैयार हो जाएगी।

अभी दो-तीन तो होने दो इसके बाद सोचा जाएगा। कहकर प्रोफेसर अपनी बात पर आए। आपने मेरा उपन्यास मष्टि के सहहर' पढ़ लिया ?

हां !

आप उसे छापेंगे ?

निस्सन्देह।

इसमें प्रतिपादित विषय और घटनाएं आपको पसन्द आईं ?

जी पर मुझे आपसे दो-तीन बातों पर ज़रा विचार विमर्श करना है। मेरे ख्याल में नारी इतनी कठोर नहीं हो सकती है कि वह अपने चाहने वाले को अंत समय छन भी न दे। जब उसे यह भी पता है कि अब उसे प्यार करने वाला खुद उसकी भांति विवाहित है।

हां चूंकि मेरी हीरोइन सविता उसके किसी भी सहयोग को एक ही दृष्टिकोण से अपनाती है कि वह उसका अपमान कर रहा है अथवा वह उसपर अहसानों का बोझ लादकर उसे दुर्बल कर रहा है। इसलिए वह जरूरत से अधिक सचेत रहती है। इसी कारण वह आवश्यकता से अधिक कठोर भी है। उसकी घृणा की भावना भी उसी तरह गहरी होती जाती है। प्रोफेसर ने उत्तर दिया।

नरोत्तम ने अपने मुंह को दोनों हाथों से ढक लिया। ललाट पर सलवटें डाल कर बोला फिर पहले सविता किशोर से हंस-हंसकर रुपए क्यों मांगती थी ?

प्रोफेसर सिगरेट का कश खींचकर बोले सविता जानती थी कि किशोर बुद्धू है। उससे उसका अटूट सम्बन्ध केवल नाम मात्र का है। वह उसके हाथ का खिलौना है। जिस तरह एक बच्चा एक खिलौने से अपना मन बहलाव किया करता है उसी प्रकार वह किशोर के रुपए लेकर अपना मन बहलाव किया करती है। पर बाद में जैसे ही उसे यह पता चला कि किशोर बुद्धू नहीं केवल प्यार के वशीभूत होकर ऐसा करता है इतना ही नहीं वह उसपर अधिकार की भावना भी रखता है, तब वह एकाएक अपने को चरित्रहीनता के लांछन से बचाने के लिए ऐसा करने लगती है। यदि वह ऐसा नहीं करती है तब उसका पति उसके मन-बहलावों में पाप की छाया देखने लगेगा। तभी तो वह अपने पति को बार-बार कहती है कि तुम उसके पास मत जाया करो, वह बड़ा पतित है। उसने मेरी मित्रता का गलत अर्थ लगाकर मुझे बहुत दुःख पहुंचाया है।

प्रोफेसर के चुप होते ही नरोत्तम को इन्दिरा का स्मरण हो आया।

सविता और किशोर !

नरोत्तम और इन्दिरा!

यह घटना-साम्य कैसा! वह इस निगूढ़ तत्त्व के सत्य को खोजने लगा।

तुम गम्भीर कैसे हो गए? प्रोफेसर ने पूछा। उनकी आकृति पर जड़ता-सी प्रतीत हो रही थी।

ऐसे ही। नरोत्तम ने अपने भावों को दबाकर झूठ कहा।

और कुछ?

एक बात और है। आपने लिखा है कि हमारा आज का समाज बर्बरता की ओर जा रहा है। साथ ही यहां साम्प्रदायिक भावना दिन प्रतिदिन प्रबल हो रही है? क्या यह सही है जब कि समस्त विश्व यह घोषित कर रहा है कि हम प्रगति कर रहे हैं। वसुधैव कुटम्बकम् की भावना बढ़ रही है।

प्रोफेसर बोलने के लिए उद्यत हुए ही थे कि टेलीफोन की घंटी बजी। नरोत्तम ने रिसीवर उठाकर तहकीकात की और प्रोफेसर से बोले आपका फोन है।

हलो! प्रोफेसर ने कहा क्या कहा कौन? शुक्लजी? मैं अभी आया। नरोत्तम से मधुर स्वर में बोले, आज आप मुझसे काफी हाउस में मिलिए, मुझे अभी जाना है अच्छा ओके !

प्रोफेसर साहब चले गए।

नरोत्तम काफी देर तक विचारमग्न बैठा रहा।

फिर दास से बोला मैं बाहर जा रहा हूं। आऊंगा जरूर पर कह नहीं सकता कब तक लौट पाऊंगा।

नरोत्तम चल पड़ा।

३९

लगभग इधर पन्द्रह दिन से रोमी नहीं मिला था। इन्दिरा की भी कोई खबर नरोत्तम को नहीं मिली थी। चक्रवर्ती के यहां उसने प्राय जाना छोड़ ही दिया था। कुछ वारिणी ने भी उसपर ऐसा सम्मोहन का जादू कर दिया था कि वह अपने मन

को उसके ध्यान से अलग कर नहीं पा रहा था।

आज नरोत्तम खूब सोचकर इन्दिरा की ओर रवाना हुआ।

दोपहर के तीन बज थे।

ट्राम प्राय खाली थी। नरोत्तम ट्राम में बठा हुआ सोच रहा था कि प्राफसर ने अपने उपन्यास में अत्यन्त स्वाभाविक चरित्र का चित्रण किया है। वह चाहे पाठकों के विचार जगत से तनिक दूर भल ही हो पर है वह सत्य।

इन्दिरा उससे सविता की भांति घृणा करती है। वह इन्दिरा को सुखी देखना चाहता है। रोमी उसे कभी सुखी नहीं कर सकता। इसीलिए वह इन्दिरा को बार बार कहता है कि वह कहीं काम कर ले। पर इन्दिरा रोमी से चिपटती ही जाती है।

इन्दिरा भी वाडी आ गई थी।

वह उतरा और सीधा ऊपर चला गया। द्वार खटखटाया। इन्दिरा ने द्वार खोला। नरोत्तम को देखकर वह चौंक पड़ी।

'आज आपका आगमन कैसे हुआ? व्यंग्य से वह बोली।

तुमसे मिलने के लिए आ गया। वह कुर्सी पर बैठता हुआ बोला।

मुझसे क्यों?

मन नहीं माना।

देखो नरोत्तम तुम अपने इस मन को मना लो। कहीं वह मेरा अनिष्ट न कर दे। मन रोमी को सब बता दिया है। मने उसे यह भी कह दिया है कि वह मुझसे प्यार करता है और तुमसे घृणा करता है इसलिए वह मुझे तुमसे छीनना चाहता है। मेरे और तुम्हारे बीच व्यवधान डालना चाहता है। इसलिए मेहरबानी करके नरोत्तम यहाँ मत आया करो।

नरोत्तम कुछ देर तक मौन बठा रहा। फिर आहिस्ता से बोला, सत्य का यह रूप यहाँ न तो प्रियकर है और न रुचिकर। वासना रहित मेरे अपनत्व को तुम ,मर्जी आए वसा आवरण पहनाती हो यह उचित नहीं है इन्दिरा! मैं तुमसे कदापि और किसी भी रूप में सम्बन्ध विच्छेद नहीं करूंगा चाहे तुम्हें मुझसे कितनी ही घृणा क्यों न हो। फिर भी मैं तुम्हारे पास सम्मानहीन होकर भी आऊंगा। न जाने तुम्हारे बिना मुझे एक अभाव-सा क्यों लगता है। फिर मैं तुम्हें

सुखी भी देखना चाहता हू।

म सुखी होना नहीं चाहती। इसपर भी तुम मेरी आत्मा को कष्ट देना चाहते हो तो रहा। यहा हर रोज आओ प्रम का नाटक खेलो उस गरीब प्राणी की आत्मा को दुखाओ मुझे रुलाओ। कहते-कहते वह फफक पड़ी।

'घर की कुछ खबर है ? नरोत्तम न नया प्रश्न किया।

म तुम्हे एक खुशखबरी सुना रही हू। सुबोध वापस आ गया है। एक दुख की खबर सुना रही हूँ—बाबा का देहान्त हो गया है।

चक्रवर्ती । नरोत्तम का गला अवरुद्ध हो गया। वह कुछ दुखित होकर बोला।

मालूम हुआ। उसन रुकते रुकते कहा।

घरवाल अनाथ हो गए।

तुम गई थी ?

हां पर मा न मेरा अपमान करके मुझे दुख पहुचाया।

उसन मुझे कहा कि तुम्हीन अपन बाबा को मारा है। तुम्हीं हमारे घर के सवनाश का कारण हो। इन्दिरा की आंखो में हल्का राग था जिसपर आसुओं की नमी तर रही थी।

तुम्हे रोष आ रहा है ? मा ने तुम्हे सही कहा था। तुमने समाज की तनिक भी परवाह न करके एक ईसाई से नाता जोडा उसका फल तुम्हारे मा-बाप को और क्या मिल सकता है ? अपमान यातना, मृत्यु ! देखा इन्दिरा अब भी यदि तुम्हे सुबोध ग्रहण करने को तयार है तो तुम वहा चली जाओ।""नारी इस द्विविधा में कभी भी सुख और सतोष नही पा सकती कि उसके विचार दो पुरुषा पर केंद्रित हो। मन ही एक से वह घृणा करती हो और एक से प्यार ! पर दो पुरुषों पर केन्द्रित होना ही असन्तोष है।

अभी रोमी आकर यह सब अपने कानों से सुन लेता कितना उत्तम होता। वह जान जाता कि तुम उससे स्नेह करते नही उसकी पत्नी को उसके विरुद्ध वरग लाते आते हो। तब वह तुम्हे धक्के मारकर बाहर निकाल देता।

वह मुझे क्या निकालेगा। वह मेरा मित्र है। मन उसकी सदा आर्थिक सहा

यता की है। भाज स कुछ दिन पूव वह मुझस पचीस रुपए फिर ल गया था। उसन एक खूँटी की ओर सकत करक कहा—

और यह साडी भी मन ही रामी को भेंट की थी।

यह साडी!

हा यही साडी! उसन मुझस कहा था कि इन्दिरा क लिए एक सुन्दर साडी की आवश्यकता है। उसके विना उस अत्यन्त कष्ट होता है।

इन्दिरा की आखा म आसू आ गए। वह भराय स्वर में बोली उसन मर हठ का कोई मूल्य नहीं समझा। मन उसके लिए अपन जन्म दन वाल मा-बाप को छोड दिया और वह तुम्ह भी नहीं छोड पाया। इतना बडा छल? इस म क्या समझू? क्या अभाव आदमी स इतने बड छल करवा सकते हैं?

उसके आसुओं को दखकर नरोत्तम कोमल स्वर में बोला, पर मन किसी अप मित्र भावना म प्ररित होकर एसा नहीं किया। सच कहता हू इन्दिरा अपन जीवन का एक स्वप्न यही है कि तुम सुखी रहो तुम भाग्यशाली होओ तुम अपनी बनो।

तुम्हारा यह एक स्वप्न कभी पूरा नहीं होगा। वह अश्रुओं को पोछती हुई दृढ़ता स बोली।

जरूर होगा। म तुम्ह रामी स मुक्त कराके ही दम लूगा। अच्छा हुआ कि सुबोध आ गया।

गोरा प्रभु स मेरी प्रार्थना है कि वह मुझ तुमस पराजय न दिलाए! और बचारा रामी भी मुझपर सवस्व विसर्जन करता है। न मालूम वह तुम्हारे पान पुत्त की तरह बार-बार क्या जाता है?

नरोत्तम कुर्सी पर हल्के हल्के बजाता हुआ बोला वह भर व्यवहार में सौहार्द क पान करता है। उस मुझस कोई शिकायत नहीं है। हालाकि म तुम्ह उसस अलग कराने की चेष्टा में हू पर फिर भी अन्धविश्वस्त रामी मुझे ही अपना सबस बड़ा हितैषी मानता है।

आज म तुम्हारी इस दुष्ट भावना स प्ररित सभी पतित बातों को रामी के समक्ष रख दूगा। उन्हे कहूगा कि नरोत्तम एक ही भयानक उद्देश्य लेकर यहा आता है कि हमारे तुम्हारे बीच वैमनस्य उत्पन्न हो।

तो भी वह मुझसे विलग नहीं होगा। तो भी वह मुझसे मित्रता नहीं तोड़ेगा। वह विश्वास के साथ बोला।

'क्यों ? जैसे कोई अनहोनी हो रही हो ऐसे भाव इन्दिरा की आखों में उठ उठे।

यही प्रश्न म सदा अपने से किया करता हू कि इन्दिरा से बार-बार अपमानित होने पर भी म उसके पास क्यों जाता हूं तथा घृणा करने पर भी मैं उसके बारे में इतना क्यों सोचता विचारता हू ? क्या उसके मगल की कामना करता हूं और क्यों उसको पूर्ण सुखी देखना चाहता हू ? इन प्रश्नों का उत्तर यही है कि म बस तुम्हें सुखी देखना चाहता हू। मेरा तुमसे आत्मिक अनुराग है और रोमी मझ नहीं छोड सकता—उसका-मेरा आर्थिक सम्बन्ध है। बिना पसे आज साथ रना भी अपराध लगता है। आदमी अपना सवस्व देकर भी पसा उपार्जन करता है और रोमी को तो केवल एक-दो झूठ बोलना पडता है। अभावों को रोना-बताना पडता है। जिस व्यक्ति से इतनी सरलता से रुपए लिए जा सकते ह उससे सम्बध कैसे तोडा जा सकता है ?

नरोतम न इतना कहकर गभीर मौन धारण कर लिया।

इन्दिरा ने उठकर रुखाई से कहा अब तुम जा सकते हो। यदि इसी प्रकार मेरे पीछे पड रहे तो मुझे यहां से जाना पड़गा। म कलकत्ता ही छोड़ दूगी।

'पीछा करने वाल बहुत ढीठ होते हैं। उसने भौहें टढ़ी करके कहा मृत्यु तक पीछा नहीं छोड़ते !

अब तुम जाओ। उसने झुझलाकर कहा।

जाता हू। कहकर नरोतम द्वार की ओर बढ़ा, इन्दिरा, ससार का पथ विकट और अनत है और आदमी जब यौवन काल में भटक जाता है तब बुढ़ापा चारों ओर लगी आग के बीच बिल्ली के बच्चों की भांति निस्सहाय हो जाता है।

'अपने दशन की बातों का एक सकलन क्यों नहीं छपा लते दार्शनिकों में नाम हो जाएगा। इन्दिरा न चिढ़कर कहा।

नरोतम चला आया। उसके जाते ही इन्दिरा न उस साडी को उठाकर कैंची से कतरना प्रारभ कर दिया। उसन उन्मत्त की भांति अपने आपसे कहना शुरू

किया तभी यह साड़ी मुझपर खिलती नहीं थी। तभी किसीने इसकी प्रशंसा नहीं की। तभी यह सब प्रभावहीन रही। और वह उसका ढर बनाकर फूट फूटकर रो पड़ी और यह रोमी उसने मुझसे छल किया। उसने मेरे विश्वासों को बल देने के बजाय आघातों से छलनी कर दिया। आज मैं उससे पूछूंगी कि क्या संसार में तुम एक व्यक्ति के बिना नहीं रह सकते?

४०

नरोत्तम वहां से सीधा चक्रवर्ती के यहां पहुंचा। चक्रवर्ती का परिवार उसी घर में रहता था। उसकी दशा पहले से कुछ अधिक जीर्ण हो गई थी इसलिए नरोत्तम को स्वामी हीन गृह का दृश्य पीड़ाजनक लगा।

उसने द्वार पर खड़े होकर पुकारा सुनंदा!

स्वर धीमा था इसलिए पहुंच नहीं सका। भीतर एक स्त्री पुरुष का कंठ-स्वर आपस में वार्तालाप भी कर रहा था। स्त्री के स्वर को नरोत्तम पहचान गया। वह सुनंदा का था। सुनंदा कह रही थी, सुबोध बाबू मां पार्वती फूफी के यहां गई हुई है। सन्ध्या तक लौटेंगी।

कुछ आवश्यक काम था?

नहीं वह रही थी कंठ-कंठ मन दुर्भावनाओं एवं कल्पनाओं के सहारे उड़ता रहता है जिससे हृदय का क्लेश और कष्ट दोनों बढ़ते हैं, अतः आज मैं तनिक पार्वती फूफी से मिल आती हूं। कुछ उसकी सुन आऊंगी और कुछ अपनी सुना दूंगी। और वह चली गई।

तभी नरोत्तम ने जोर से पुकारा सुनंदा!

सुनंदा ने कहा कौन है?

वह नीचे आई! नरोत्तम को देखकर स्नेहाभिभूत हो उठी। लपककर चरण स्पर्श कर लिए। नरोत्तम ने मन ही मन आशीर्वाद दिया।

उठा सुनदा मां कहां है ?

सुनदा को भाव भर आई। थाली मां बाहर गई है। आप आइए, सुबोध बाबू यही हमारे नरोत्तम दा हैं।

नमस्कार नरोत्तम बाबू। सुबोध न ग्रासीनता स उस ऊपर चढ़न का मक्त करते हुए कहा आइए, म आपके लिए चाय का बंदोबस्त करवाता हूं।

नहीं उसकी कोई आवश्यकता नहीं है।

'एसा कसे हो सकता है। सुबोध ने विस्मय से कहा आप महीनों बाद हमार घर आए और हम आपका सम्मान न करें यह कसे हो सकता है।

बात यह है कि कई महीन स आने की सोच रहा था पर परिस्थितिवश आ नहीं सका। नरोत्तम ने सफाई पश की।

सुनदा अपन दादा के लिए स्पेशल चाय बना कर ला। दादा बिना चाय पिए कसे जा सकते हैं ?

अब तक व दोनो ऊपर तक पहुंच गए थे।

व दोनो एक दूसरे के आमने-सामने बठ थ।

नरोत्तम सोच रहा था कि बात किस तरह शुरू की जाए। सुबोध इस तरह चुप था जस वह भूसाभरा हुआ कृत्रिम मनुष्य हो।

आखिर नरोत्तम बोला आप मुझस एक बार मिले थे न ? याद है आपको रेल में, आपने मुझे कहानी सुनाई थी ?

याद है।

फिर आपने पुन: गृहस्थ धम में कैसे प्रवश कर लिया ?

सूरज पर एक बदली छा गई थी। जिसस कमरे में हल्का अ धकार छा गया था। सुबोध न सुनदा को खिड़की खोलन के लिए कहा। खिड़की खुल जान के बाद हवा भी तेज चलने लगी।

सुबोध ने एक पपड़ी उतरी हुई दीवार पर दृष्टि जमाते हुए कहा एक तो चक्रवर्ती बाबू की मृत्यु हो गई थी और दूसरे स्वय मेरे बाबा की। मेरी मां वैधव्य का एकाकी जीवन कस गुजारती ? वह वेदना के कारण उन्मत्त और उन्मादित होने लगी। एक और बात थी कि मने इन सब लोगों से व्यावहारिक बधन

तोड़ लिए थ पर आन्तरिक बन्धन तोड़न में म सदा असफल रहा। मेरी यह स्नेह नाथी, पुरी और प्रयाग रहती थी पर यह आत्मा सदा स्वजनों के आसपास चक्कर लगाया करती थी। इस दुर्बलता को लकर म कितन दिन अशांति का जीवन यापन करता। और इसी बीच मेरी भट गगा के तीर पर सास स हो गई। सास ने मेरे पाँव पकड़कर कहा कि बटा यदि अब तुम हमारी देखभाल नहीं करोग तो हमारा सवनाश निश्चित समझो। मोह से म भी मुक्त नहीं था। वास्तव में म अपने सन्यासी जीवन से सतुष्ट नहीं था। सास के तनिक हठ न मेरी दुबलता को प्रोत्साहन दिया और म पुन पारिवारिक बन्धन म बध गया। आपको विश्वास नहीं होगा जब मेरी मां को यह सूचना मिली तब उसने सौ रुपए की बधाइयां बांट दी।

सुबोध निश्चल भाव से नरोत्तम को देखन लगा।

नरोत्तम मधुर मृदुल स्वर में बोला इन्दिरा?

सुबोध शून्य हो गया।

सुनदा चाय ले आई थी। दोनों को चाय दकर वह पुन चली गई। नरोत्तम ने अपनी दृष्टि चाय के प्याले पर जमा दी थी जस उसने यह कहकर उचित नहीं किया। उसे स्वय अपने आपपर झुंझलाहट आई कि वह क्यों किसीसे गुह्य से गुह्य प्रश्न पूछ बैठता है। इतनी सावधानी रखन पर भी वह एसी भूलें प्राय कर बठता है।

सुबोध चाय को समाप्त करके बोला इन्दिरा स अब मेरा कोई वास्ता नहीं है।

नरोत्तम पर वज्रपात हो गया। उसक नत्र विस्फारित हो गए। वह एकटक उसे देखता रहा।

सुबोध खिड़की की राह अनत-विस्तीर्ण शून्य की ओर ताकता हुआ बोला 'उसपर अब मेरा कोई अधिकार नहीं है। वह सदा अस्थिर विचारों की रही है। उसकी अन्त चेतना में महत्त्वाकांक्षाओं का बहुत बड़ा स्रोत है। मेरे प्रणय प्रसग में उसे अपने जीवन की सभी महत्त्वाकांक्षाएं फलीभूत होती हुई प्रतीत हुई। उसे यह भी विश्वास था कि म उसक रूप माधुर्य में आत्मविस्मृत-सा हो जाऊंगा पर म उसका होते हो पतन क पथ पर अग्रसर हो गया। निष्कर्ष यह निकला कि इन्दिरा

की छटपटाती महत्त्वाकांक्षाए विद्रोह कर उठी। म भी लापरवाह था। मरी यह भ
धारणा थी कि जहा पसा है वहा सब कुछ है। और यह सही भी है। मन तुरन्
एक भ्र य युवती स प्रम-सम्बन्ध स्थापित कर लिया। लकिन बाद में मुझ यह पत
चला कि जो त्यागमयी भावना से परिपूण निश्छल प्यार सामाजिक अधिकारों
प्राप्त एक पत्नी दे सकती है वह पूजा के बल पर प्राप्त की हुई पत्नी या प्रयसि
नही दे सकती। अत मने पराजित योद्धा की भाति अपना आत्मसमपण इन्दिर
के सम्मुख कर दिया पर इन्दिरा न उसे एकदम अस्वीकार कर दिया। तब अपमा
और लोक-लज्जा से आतंकित होकर मन इस समाज से ही पलायन कर लिया लकि
मुझ उस जीवन में तनिक भी शान्ति नही मिली। जो अतृप्तियां और अभाव मेरे म
में थ वे मुझ सदा कचोट-कचोटकर दुबल कर रहे थे, इसलिए परिस्थिति बदलत
ही मे पुन उसी जीवन में आ गया जिसको मेरा अन्तमन स्वीकार करता था
इससे मुझ एक और लाभ हो गया कि लोगो को कहन के लिए मुझे एक बहान
मिल गया कि सास और मा के परिवार की रक्षा हेतु मुझे पुन अनिच्छापूवक गृहस्
बनना पड़ा।

इसके बाद इधर-उधर का चर्चाए होती रही। एकाएक नरोत्तम न बताया
इंदिरा बड कष्ट में है। पता नही बचारे रोमी को कौन-सा ग्रह लग गया है, ए
पसे की इनकम नही होती। एक रोज मुझ कहने लगा कि मर भाग्य बिलकुल म
पड़ गए ह। कोई अमेन्द्र बाबू नामक मित्र आजकल उसकी मदद कर रहा है।

इंदिरा के बारे में अब म चिन्ता क्या करू ? सुबोध न झूठ कहा।

और यदि वह अब आपके पास आए तो ?

तो ?

एक जलता प्रश्न महाकाल-सा सुबोध के समक्ष खडा हो गया। वह जलत
हुई आखो स उसे देखन लगा और नरोत्तम यत्रवत् कहता गया 'म चाहता हू कि
इन्दिरा रोमी को छोड़कर पुन तुम्हारे पास आ जाए। उसका सुख केवल तुम्हार
साथ है। म इस प्रयत्न में हू कि उसमें और रोमी में द्वन्द्व व सघष उत्पन्न हो
व्यवधान पदा हो घृणा की भावना खडी हो।

लकिन मे आपसे कतई सहमत नहीं हू। मैं उस जितना हो सके सुखी करन की

श्प्टा करूगा। अपनी सम्पत्ति का एक भाग उसके नाम इसलिए कर दूगा कि वह रामी के साथ अपने जीवन को पूर्ण सुखी बना ले। सुबोध काफी गभीर हो गया था। क्षण भर रुककर बोला आप कहते है कि वह उसके साथ सुखी नही हो सकती और मै कहता हू कि उसका वास्तविक सुख ही रोमी के साथ है। क्योंकि रोमी भी उसे बहुत ही चाहता है। वह अपना अस्तित्व मिटाकर इन्दिरा को छोड़ना नहीं चाहता।

नरोत्तम म्राह छोड़कर बोला आप आदर्श की चरम सीमा पर पहुंचकर विचार करते है य विचार बड थोथे है।

सुबोध न दृढ़ता से कहा नही मनुष्य को अत्यन्त उदार होना चाहिए। और मै भी आपसे प्रार्थना करूगा कि आप अपना यह विचार त्याग दे।

४१

प्रोफेसर न काफी का घूट भरकर कहा आपने पूछा कि युग प्राचीनता की ओर क्यो जा रहा है ? आप ध्यान से देखिए और समझिए। अजन्ता और एलोरा की सभ्यता का प्रभाव हमारे रहन-सहन और जीवन पर आने लगा है। भारतीय नारिया जिनका अग भी गत दिनो देखना अति दुर्लभ था आज हम उनका पेट और कमर दोनो देख सकते है। मै इसे पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण मानने को कदापि तैयार नही हू। लेकिन कोई लहर इसमें अवश्य मिल गई होगी। और आप देखेंगे कि थोड़े दिनो में यह प्रगति केवल कुचकी और अलमलात सलमा व सितारो से युक्त लहगों की ओर हमें ले जाएगी जिनके भीत्ति चित्र हम कई प्राचीन स्थापत्य कला पर अकित हुए देख सकते है। और तो और यह सहर के जो ब्लाउज-चीसज आज कल प्रचलित हुए है उन्हें पिछली जातिया बहुत अर्से से पहनती आ रही है। मेरे विचार से वे इन्हें पुराना फैशन समझकर छोड़ेगी और हम सभी इसे नया समझकर अपनाएंगे। और तो और केश विन्यास में भी प्राचीन संस्कृति-सभ्यता का पूर्ण प्रभाव लक्षित हो रहा है। मेरा तो स्वतन्त्रता क्या हमें पश्चिम संस्कृति की स्मरण

नहीं करा देती जब कहीं कहीं आतिथ्य की पूणता के लिए पत्नी तक को दे दिया जाता था ? आज रूप बदल ह तथ्य बदले ह तरीके बदल ह पर मूलोद्देश्य नहं बदला है। आज जब हम एक क्लब में जाते हं और सुरा की मादकता में तन्म होकर झूमते-नाचते और आपस में अनैतिक कृत्य करते ह तब कहां यह ध्यान रख जाता है कि यह मेरी पत्नी है या दूसरे की ? आदिम काल में जब कबीले सुरा क मादकता में मस्त हो जाते थे तब लोग इसी भावना के अभिभूत होकर आनद लूटत थे। रही आतिथ्य के लिए पत्नी तक को दे देना। प्राचीन समय में आतिथ्य सर्वोपरि धम था और आज पसा हमारा इष्टदेव बन चुका है। एक नहीं हजारं एसे आदमी मिल जाएग जो पसों के लिए अपनी पत्नी का एक साधन के रूप उपयोग करते ह। उनकी पत्नी अपने पति के धर्म अर्थात् पसा के लिए विभिन्न अभिनय करके उद्देश्य की पूर्ति करके सुख और संतोष को प्राप्त करती है। मन नह न रूप बदले ह तथ्य बदल हे तरीके बदल ह पर मूलोद्देश्य नहीं बदला है। प्रोफसर इतना कहकर चुप हो गए। सिगरेट सुलगाकर वे पीने लगे। काफी ठंड हो गई थी इसलिए दूसरे कप का आडर दिया गया।

नरोत्तम उनकी बात से धीरे धीरे सहमत हो रहा था।

दूसरी बात है कि देश में साम्प्रदायिकता पनप रही है। यह भी सही है हममें एक दूसरे प्रति कोई स्नेह नहीं, कोई अपनत्व नहीं। बगाली मारवाड़ी को काकू समझता है तो मारवाड़ी बगाली को ढीली धोती वाला मानत है। गुजराती और मराठी के बीच भी यही भावना काम कर रही है। ईसा अधिक स अधिक इसी प्रयास में हैं कि कौन-सा व्यक्ति असन्तुष्ट है जिसे प्रभु यीशु की शरण में ले लें। सिक्ख अपने को अलग समझते हैं और सिर्फ अपने का। सबके अपने अपने समाज और सस्थाए हैं। हिन्दू ने भूल से गिर्जे आगे सभा कर ली तो ईसाई बधु सारी सहिष्णुता का परित्याग करके खून खराबी पर उतर आए। किसी मंदिर में भूल से कोई ईसाई घुस गया तो हि धर्म के ठेकेदारों ने सत्याग्रह करना प्रारम कर दिए। इधर बौद्धों ने पुन जोर पकड़ है। छोटी छोटी सस्थाओं में यह भावना बड़ी तेजी से काम कर रही है। म ना लेना नहीं चाहूगा। एक यूनियन है। उसमें बगाली और हिन्दुस्तानी दो दल हैं

बगाली बगाली को मत देगा और हिन्दुस्तानी हिन्दुस्तानी को। यहा तक कि एक पजाबी पजाबी को और एक गुजराती गुजराती को ही मकान किराए पर दगा। उससे भी आप अधिक गहराई में जाकर देखिए—एक बीकानेरी राजस्थानी का मकान है। दो राजस्थानी मकान किराए पर लने गए तो वह पहले बीकानेरी को ही देगा। अब आप सोचिए कि यह सकीर्ण मनोवृत्ति आगे चलकर क्या रूप ले सकती है। छोटी-छोटी यूनियनों एव देश के चुनावा म भी यही दुर्भावना काम कर रही है। इसीलिए म कहता हू कि हम चाहे स्वीकार न करें पर हममें साम्प्र दायिक भावना ही अधिक पनप रही है। विश्व के प्रागण में रूसी और अमरीकी गुट जो बन रहे हैं वे क्या साम्प्रदायिकता का व्यापक रूप नहीं है? म तो इससे अधिक भयकर और अमानुषिक कल्पनाए नही कर सकता हू। लकिन यह विद्रूप अणु-परमाणु बमो के रूप में जब फूटगा तब यह असभव नहीं कि आदमी आदमी का भक्षण करने लग। इसीलिए मन अपने उपन्यास क अत में लिखा है ओ प्राणियो, हम धार्मिक एकता में अपन आन्तरिक कलुषता और घृणा को भूल रहे हैं। हम यह भूल रहे हैं कि हम मानव एक प्रकृति के पुत्र हैं। जिस प्रकार एक वृक्ष के फलो के आकार में साम्य नही होता उसी प्रकार हममें भी नही हैं पर हमारा उद्गम एक ही शक्ति से हुआ है। जिस प्रकार रग विरगे फूल होत हैं, उसी प्रकार हम सभी प्राणी है। पर जिस प्रकार सभी फूलो की माता धरती है उसी प्रकार हम सब प्रकृति की शक्ति है। हमें भदभाव को विस्मृत करना चाहिए, सम्बधा स ऊपर उठकर सोचना चाहिए तभी हमारा कल्याण है, तभी हमारी विजय है।

प्रोफसर बिलकुल मौन हो गए।

नरोत्तम ने कहा, 'हम आपकी पुस्तक छापेंगे।

४२

रात को नरोत्तम ने तारिणी का सारा किस्सा सुनाया।

तारिणी बोली तुम्हें इन्दिरा के बारे में बिलकुल नहा सोचना चाहिए। जब वह तुमसे सम्बन्ध रखना ही नहीं चाहती फिर तुम उसके पीछे क्यों पड़ते हो?

नरोत्तम न उसका बात को न मानत हुए कहा इन्दिरा को म स्नेह (मन में उसने प्यार ही कहा) करता हूँ और रोमी से घृणा! म चाहता हू कि वह किसी भी तरह सुबोध की हो जाए।

तारिणी ने हसकर कहा इससे किसी सुफल की प्राप्ति नहीं होगी। यह सभी बातें किसी भयक्र दुघटना का सकेत करती हुई जान पड़ती है। म समझती हू कि आप व्यथ किसी दुघटना क क्यों जिम्मेवार बनते है। इन्दिरा बड़ी हठी और मान वाली है। कहीं वह कुछ कर बैठी तो उचित नहीं रहेगा।

नरोत्तम कुछ नहा बोला और न ही उसने कोई प्रतिज्ञा ही की।

सड़क पर कोई शराबी नश में धुत अनर्गल प्रलाप करता हुआ जा रहा था।

४३

इन्दिरा ने उस शाम से रोमी से बोलना बन्द कर दिया। रोमी बेचारा उसको मना-मनाकर थक गया। उसन अपने विश्वास को रखन के लिए जो कुछ कहना था एक पापी की तरह कह दिया—साफ़-साफ़। सुना है कि भगवान से पापी कुछ नहीं छुपाता है और रोमी न भी इन्दिरा से कुछ नहीं छुपाया।

दोपहर का तनिक शात वातावरण।

पड़ोसिन का अपने बच्चे को डाटना। ऊपर रहनेवाली बुढ़िया बोस की बहू की अप्रिय-खोखली हसी।

रोमी उन सबकी सुनता और विचित्र कल्पनाओं में खो जाता। उन कल्पनाओं में कोई तारतम्य नहीं था।

उसके सामने इन्दिरा और उसका चित्र टंगा हुआ हवा के मन्द-मन्द झोंकों से हिल रहा था। कोई चिड़िया उन दोनों की नजर बचाकर उसपर बीट कर गई थी। हैंगर में डाली हुई रोमी की कमीज भी रोमी की विचारधारा का केन्द्र बिन्दु बनी हुई थी। जब में जो स्याही का धब्बा था उसे लेकर वह अजीबोग़रीब व्यर्थ कल्पनाएं कर रहा था।

कहने का तात्पर्य यह है—रोमी के लिए कमरे की प्रत्येक वस्तु सोचने का केन्द्र बिन्दु थी।

और इन्दिरा?

अवसन्न-सी बिस्तरे पर पड़ी थी। न हिलती और न बोलती। खाना उसने छोड़ दिया था। जल वह स्वयं उठकर पी लेती थी। आज का दिन भी इसी तरह बीतने लगा।

बुढ़िया ने आकर पूछा, 'क्यों रे राम, बहू की तबीयत कैसी है?'

'ठीक है।' रोमी ने धीमे से उत्तर दिया।

'अरे जाकर इसे कोई औषधि क्यों नहीं दिला लाता? लोअर चित्तपुर रोड पर एक बहुत बड़े कविराज हैं, उन्हीं के पास बहू को ले जा।'

'मां जी, यह चलती नहीं है।' रोमी ने इस तरह कहा जैसे वास्तव में इन्दिरा बीमार हो।

'अब समझी!' बुढ़िया ने अपनी आंखों को मजाक तरह से मटकाया और बोली, 'कहीं बच्चा...!'

रोमी हठात् बीच में ही बोला, 'ना-ना, ऐसी कोई बात नहीं। बस ही सिर में हल्की-हल्की-सी पीर है।'

'अरे तुम्हारा तो चूल्हा भी नहीं जला!'

'मैं बाजार से सब कुछ ले आया था।' और रोमी तुरन्त उठकर सन्दूक सभालने लगा। यदि वह ऐसा नहीं करता तो बुढ़िया उसको छोड़ती नहीं।

बुढ़िया के जाते ही रोमी ने इन्दिरा का हाथ अपने हाथ में ले लिया।

लित स्वर में बोला 'प्राखिर तुम मुझपर यकीन क्या नही करती। म सच कहता हूं कि सुबोध ने मुझे सदा धोखे में रखा है।

'उसने तुम्हें धोखा दिया। रोमी तुम बच्चे नहीं हो कि सुबोध तुम्ह बना जाए। वह ईर्ष्या से स्वर को दबाकर बोली। उसने प्रपना हाथ छुड़ा लिया।

म प्रभु ईसा की सौगन्ध खाता हू कि इससे पहले म सुबोध को बिलकुल नही जानता था।

तुम नास्तिक हो तुम्हारी सौगन्ध का मै तनिक भी विश्वास नहीं करती। रोमी सच कहती हू कि यह धोखा म नही सह सकती। जिन व्यक्तियों न मेरा सवनाश करना चाहा उन्हीं व्यक्तियों के प्राश्रय में तुम छि छि मनुष्य का क्या इतना पतन हो सकता है ? सुबोध के सामने तुम हाथ फलाते रहे नरोत्तम तुम्ह भिक्षुक समझकर पसे फेंकता रहा। और तुम तुम उन रुपयों स मेरा पोषण करते रहे। इससे तो म भूखा मर जाना उत्तम समझती। वह सिसक पड़ी।

रोमी ने उसका हाथ अपने हाथ में पुन लना चाहा पर इन्दिरा ने ऐसा नहीं होने दिया तुम मुझ छूमो मत म तुमसे भी घृणा करती हू। भगवान मुझे अब इतना बल दे कि हमारा सम्बन्ध सृष्टि के समक्ष मधुर अभिनय करता हुआ सदा बना रहे। तुम सुबोध के समक्ष हाथ फलाना या उस पतित नरोत्तम के सामने गिड़ गिड़ाना, म तुम्हें कुछ नहीं कहूगी।

रोमी का स्वर तेज हो गया तुम्हारा अस्थिरता हमें सुफल नहीं दिखा सकती। कह दिया न प्रेमेन्द्र बाबू के रूप में आए सुबोध से अब म जीवन भर बातचीत नहीं करूंगा और तुम्हारी घृणा का पात्र नरोत्तम जब सामने से गुजरेगा तब मुह घुमाकर चला जाऊगा।

मुझ तुम्हारा विश्वास नहीं होता।

क्या नहीं होता जबकि म तुम्हारा अखड विश्वास करता हूं। गलती इन्सान से होती है।

छल धोखा कपट सभी कुछ इन्सान से ही तो होता है। रोमी मुझे इस सुन्दर शब्दावली से घृणा है।

'घृणा तुम्हें यह घृणा कभी न डूबेगी।

रोमी इस बार ताव में आ गया। अपने हाथों से कुर्सी को मजबूती से पकड़कर बोला, 'मैंने जीवन की रक्षा के लिए नरोत्तम से कुछ कर्ज ले लिया तो बुरा हो गया और जब तुमने उससे रुपए उधार लिए तब ?

तब मैं उसके मन के पाप से परिचित नहीं हुई थी।

और मैं परिचित होकर भी उसे एक अच्छा मनुष्य समझता था क्योंकि तुममें शीघ्र पूर्वाग्रह जाग जाता है। रोमी एक क्षण चुप रहा। उसके नेत्रों में आंसू चमक आए। वह रुआंसे स्वर में बोला फिर भी मैं अपनी गलती स्वीकार करता हूं। मुझे नरोत्तम और सुबोध से नहीं बोलना चाहिए था किंतु परिस्थिति से मैं भी विवश था। आखिर मैं तुम्हें कष्ट में कैसे देख सकता हूं ? इन्दिरा, तुम्हें क्या पता कि मैं तुम्हारे सुख के लिए कितना नीचे गिर सकता हूं। अब मुझपर अविश्वास करके मेरी आत्मा को पीड़ा न पहुंचाओ। भविष्य में मैं सुबोध और नरोत्तम से ही नहीं किसी अन्य पुरुष से भी नहीं बोलूंगा। बस तुम अब खाना खा लो। /

इन्दिरा के नेत्र भर आए।

रोमी पुनः बोला 'मैं चंद घड़ी घूमकर आता हूं तब तक तुम अपना हठ छोड़ दोगी। इन्दिरा सच कहता हूं कि मैं तुम्हें दुखी नहीं देख सकता। यह सही है कि हमारा सम्बन्ध हो जाने के बाद विषमताओं के कारण हम एक दूसरे को अतीव स्नेह नहीं दे पाए हैं। लेकिन भविष्य में हम पूर्ण सुखी हो जाएंगे ऐसा मेरा विश्वास है। मेरा व्यापार भी अब ठीक हो गया है और तुम्हें भी सर्विस मिलने वाली है।

रोमी ने इससे अधिक कुछ नहीं कहा। वह बाड़ी से बाहर आया। उसने ट्राम में कदम रखा और सीधा सुबोध के घर पहुंचा। सुबोध कोई उपन्यास पढ़ रहा था। रोमी को देखकर वह शीघ्रता से बोला 'हलो आज सन्ध्या-वन्दना कैसे आना हुआ।

सुबोध ।

सुबोध ?' चौंक पड़ा सुबोध। वह विस्फारित आंखों से रोमी को देखने लगा।

आपने मुझे धोखा क्यों दिया ? जब कि आप यह अच्छी तरह जानते थे कि

इन्दिरा आपसे सख्त घृणा करती है।

सुबोध चुप रहा।

रोमी ने कहा भविष्य में मेरा-आपका कोई सम्बन्ध नहीं रहेगा। मैं आपसे प्रार्थना करूंगा कि आप मुझसे बातचीत नहीं करेंगे। नमस्कार !

वह पागल की तरह उठा और नरोत्तम के दफ्तर में गया। रास्ते में उसने कुछ भी नहीं देखा। वह भागता रहा भागता रहा। उस से भी उसने यही कहा भविष्य में आप मुझसे कोई सम्बन्ध न रखें। इन्दिरा आपसे घृणा करती है और उसके लिए मुझे भी आपसे घृणा करनी चाहिए।

नरोत्तम जोर से हंस पड़ा।

उसकी हंसी सुनकर रोमी को गुस्सा आ गया। वह चीखकर बोला चुप हो जाओ !

सचमुच नरोत्तम उसकी चीख सुनकर चुप हो गया।

दफ्तर में सन्नाटा छा गया।

रोमी अपनी बांह से आंखों को पोंछता हुआ दफ्तर से बाहर निकला।

आदमी कुत्ते हो गए है। लाचारी पर अट्टहास करते हैं। नीच कमीन कुत्ते ! रोमी निरन्तर बड़बड़ाता जा रहा था।

वह बावला-सा हो रहा था। वह अपने आपसे कह उठा यह कोई जीवन है ! इस जीवन से तो मृत्यु ही अच्छी !

उसकी आंखों में घृणा थी, गुस्सा था, द्वेष था।

वह परेशान इतना था कि उसे कुछ सूझ नहीं रहा था। वह एक शराब की दूकान में गया और थी एक्स का एक पौवा लेकर दवा की तरह उसे पी गया।

कभी-कभी हमारे जीवन में आशा के विपरीत बहुत-सी बातें हो जाती हैं जिसे हम जीवन में अस्वाभाविक और कभी-कभी असम्भव भी मानते हैं। लेकिन वे सभी घटनाएं-दुर्घटनाएं, यदि हम जीवन को पर्यवेक्षण व गहराई से देखें तो साकार नाचती हुई नज़र आएंगी। हम मनुष्य हैं इसलिए हम इस सृष्टि की सुन्दरतम वस्तु की कामना करते हैं मानव-मानवी निरन्तर अनन्त पथ पर चलकर जीवन का महा सुख प्राप्त करने का सतत प्रयास करते हैं किन्तु परिस्थिति तथा युग की विषमताएं हमें मनोवांछित फल प्राप्त नहीं करने देतीं। यह परिस्थिति हम और हमारी बातों को अपने अनुसार ढालती और बड़ी अलौकिक तिलस्मी और न जाने कैसे-कैसे विचित्र रूपों में ढाल देती है कि हम जिज्ञासु बालक की भांति उन्हें टुकुर-टुकुर देखते रहते हैं। तब हम हठात् उन बातों एवं घटनाओं को देखकर कह उठते हैं—यह सम्भव नहीं था फिर भी घटित हो गया ऐसा हो ही नहीं सकता पर हो गया। आदमी नियति का खिलौना है।

आज रोमी ने पहली बार शराब पी। पहली बार वह असीम व्यथा में इतना डूबा कि उसे अपने आपको भुलाना पड़ा। वह शराब पीकर किसी कोने में लुढ़क गया।

ध्वस्त नगर के सभ्य नागरिक उस निरीह-व्यथित प्राणी पर अपनी दृष्टि फेंककर चल पड़ते थे तरुण विचित्र-विचित्र रिमार्क कसकर हंस देते थे।

और इन्दिरा कमरे के घोर अन्धकार में बैठी पागल-सी सोच रही थी कि उसका इस संसार में कोई नहीं है। सभी छल, प्रपंच और धोखे के पुतले हैं। इस अन्धकार की भांति यहां के मनुष्यों के मन काले हैं। सुबोध ने उसे धोखा दिया नरोत्तम ने उसकी आत्मा पर आघात पहुंचाया रोमी ने उसका सर्वस्व लेकर उसको जीते जी मार दिया। यह कैसा संसार है? वह घोर घोर अपने आपको पीड़ा पहुंचाती रही।

घड़ी ने बारह का घंटा बजाया।

उसने अन्धेरे में भयानक आवाज़ करता हुई दीवार घड़ी को देखा। देखते देखते

उसके विचार उग्र हो गए और ?

और उसने भयभीत होकर अपने दोनों हाथों से अपना गला दबा लिया। उसकी आंखें घड़ी पर इस तरह जमी जैसे वह घड़ी घड़ी नहीं मृत्यु हो जो घड़ी की आकृति में दीवार से चिपट गई हो। वह पागल की भांति उन्मत्त होकर मन ही मन चिल्लाई *मैं पागल हो गई हूं क्या? अच्छा होता यदि मैं पागल हो जाती ताकि इस पतित और नीच रोमी का ऐसा नग्न रूप तो नहीं देखती। इस घृणित चेतना का मुझे अनुभव तो नहीं होता। मा काली तू मुझे शीघ्र पागल बना दे ताकि मुझे इस दारुण दुख को वहन करना न पड़े। मैं अपनी चेतना और बुद्धि को इसी क्षण नष्ट करना चाहती हूं।*

घड़ी की भयकर टिक टिक अब भी सुनाई पड़ रही थी। उसने लपककर अपने द्वार खोल दिए। सभी पड़ोसी सो गए थे। पता नहीं, बुढ़िया क्यों खांस रही थी।

अचानक उसे ख्याल आया कि रोमी अभी तक क्यों नहीं आया? एक बार उसने उसका नाम लेकर अनंत निलय की ओर देखा फिर उसने घृणा से थूक दिया।

रोमी कुत्ता है जो हड्डियों के लिए उन दो व्यक्तियों के पीछे पूछ हिलाता हुआ होटलों में घूमता होगा।

सुबोध और नरोत्तम ! वह दोनों का नाम लेकर सांप काटे हुए प्राणी की तरह बेचैन हो गई। उसके अग अग में विष की लहरें उठने लगी। वह क्रोध में पागल हो गई। उसने अपने आप से एक बार फिर कहा मैं पागल हो जाती तो कितना अच्छा होता!

उसने लपककर दीवार पर लगे उस चित्र को खिड़की की राह सड़क पर फेंक दिया जो उसने रोमी के साथ उतरवाया था। उसे फेंककर उसने अपने बालों को खींचा और फिर शरीर पर एक दो बार चुटकी भरकर इस बात का पता लगाया कि वह वास्तव में पागल हो गई है या नहीं?

फिर उसने रोमी का एक दूसरा चित्र सड़क पर फेंक दिया और चित्र फेंककर उसने कहा—मैं पागल हो गई हूं।

वह कुछ देर तक वैसी ही बैठी रही।

फिर उसने उस अंधकार को कमरे से भगाया। प्रकाश होते ही उसे नया-नया
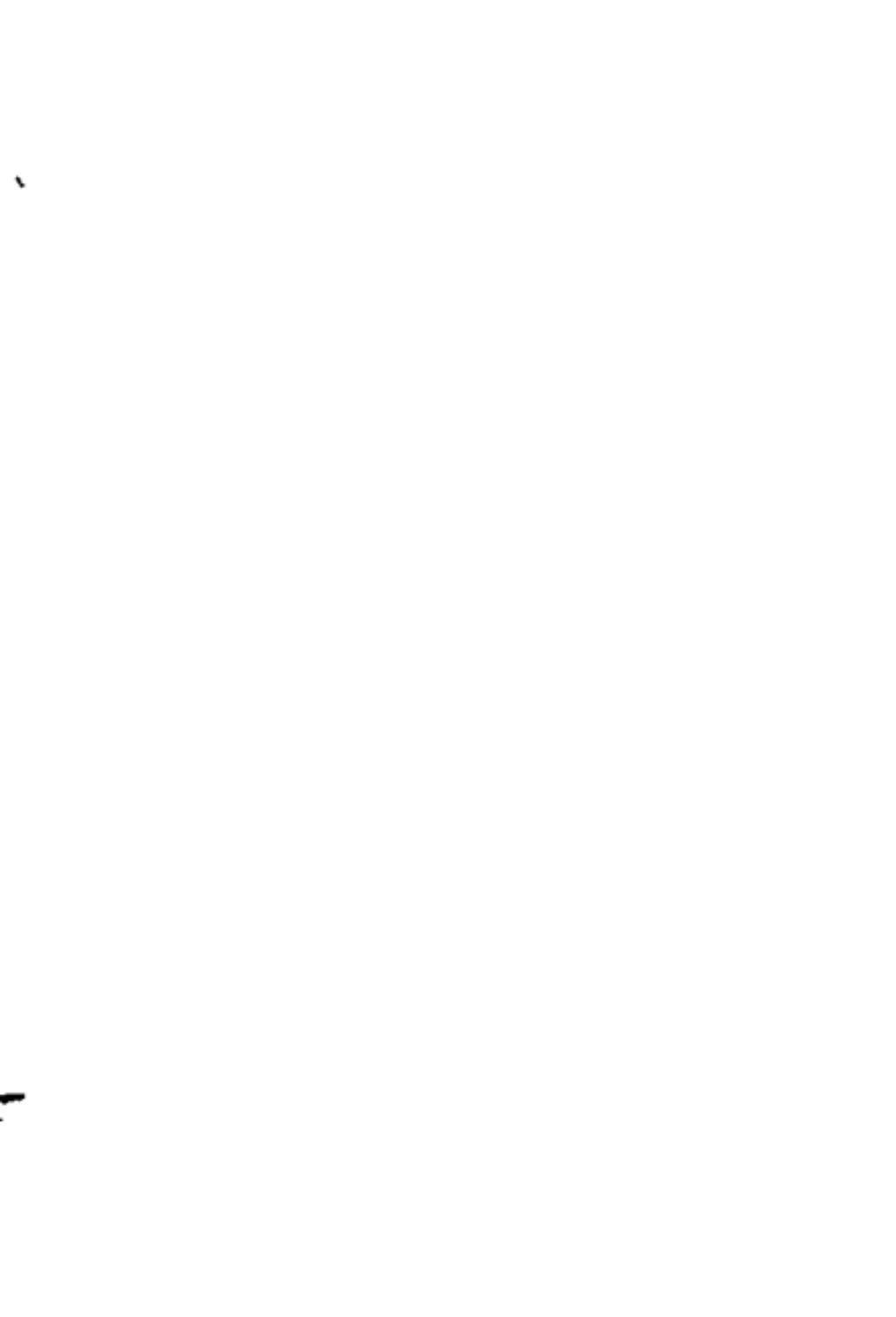
बोता म इनके घर वालो को बुलाकर लाता हू।

नरोत्तम सीधा वहां स चलकर एकान्त में आया। उस कागज को खोलकर पढ़ने लगा—

म अपनी इच्छा म आत्महत्या कर रही हू। आत्महत्या का विचार एकाएक मेरे मन म नही आया। आज नही, वर्षों स यह विचार मेरे मन में चक्कर लगा रहा है। पहली बार मरे प्रथम पति सुबोध ने जब मेरा सवस्व लकर एक पहाड़िन छोकरी के साथ व्यभिचार किया था तब म ग्लानि में इतनी डूबी इतनी डूबी कि मन पहाड स कूदकर जीवन-लीला समाप्त करनी चाही। इसके बाद जब म मिस्ट्रस थी और लड़के तक मुझसे सख्त घृणा करन लग तब मुझे अपना जीवन व्यर्थ लगा और मन अपन आपको मिटाना चाहा था। और अब रोमी न मरे सभी स्वप्नो को खड-खड कर दिया है। म स्वप्न की समाप्ति क बाद जीवित रहना नहीं चाहती। रोमी द्वारा विश्वासघात पाकर मेरा मन सभी अनुभूतियों से हीन हो गया है। अब मेरे मन म घृणा क अलावा कुछ भी नहीं है। घृणा लकर व्यक्ति का जीना दूभर होता है पीड़ाजनक होता है।

आज की रात उतनी ही क्रूर है जितनी एक दुर्भाग्यग्रस्त प्राणी का भाग्य। मे उस कठोर व निदय भाग्य की अनवरत ठोकरें खा रही हू। मुझे विश्वास है—इस दुर्दान्त दुख के कारण म शीघ्र ही पागल हो जाऊगी सभवत म पागल हो भी गई हूं तो कोई आश्चय नहीं। क्योंकि म अपनी स्वाभाविक चेतना और बुद्धि का सवथा खो बठी हू। यह मरा रोमी क्रूर अपराधी है घृणा का देवता है झूठ का सागर है। यह मुझे अन्तिम क्षण तक छलता रहा, मुझे घूमन को कहकर वह फिर सुबोध और नरोत्तम क यहा गया। प्रकृति के इस निदय अभिनय को म अब सहन नही कर सकती। उसकी यह तपती हुई घृणा मेरा अन्तर नहीं सह सकता। उसकी छल नीति मरे कोमल मन को खूखार भेड़िए की तरह नोच रही है। ओ नीच प्राणी! प्रकृति तुम्हें भी कठोर स कठोर दड देगी।

आज का मनुष्य विश्वसनीय नहीं। मुझ लगा कि मनुष्यों के बधनों व रिश्तो के मूल में भयकर स्वाथ काय कर रहा है। जब यह घिनौना चरम सत्य मेरे सामने आया तब मनुष्य मुझे यत्र-सा लगा। उसके भाव-लोक म यत्रों की अप्रिय झकार

ध्वनि सुनाई पड़ी। और रोमी एक यत्र की शक्ल में इधर-उधर भागता हुआ दिखाई पड़ा जैसे यह लोहे का मनुष्य हो।

सचमुच वह लोहे का आदमी है। वह मुझे एक कवि के रूप में मिला और अन्त में एक गवार अनपढ़ फेरीवाले की तरह नीरस बन गया। उसकी भावुकता उसके सद्विचार उसकी पवित्र शब्दावली पता नहीं किस शून्य में विलीन हो गई। मनुष्य के स्वभाव का यह परिवर्तन भी मेरे लिए नया ही था।

एक बार मैं फिर कहूगी कि मैं अपनी इच्छा से आत्महत्या कर रही हू। मुझे अपना जीवन भारस्वरूप लगता है क्योंकि इस ससार में मेरा अपना कोई नही है। मैं अकेली हू नितान्त अकेली!

मैं प्रार्थना करूगी कि मेरी मृत्यु का असर बेचारे उस दीन प्राणी ईसाई रोमी को कोई नहीं सताए, वह ईसाई बना रहे वह मेरे कारण राम बना था और अब मेरी आत्मा से पुन रोमी बन जाए प्रार्थना करे गिर्जे जाए।

हां मेरी लाश को दफनाए नहीं उसे हिन्दू-पद्धति से जलाया जाए।

मैं किसीको न आशीर्वाद नहीं देती और न यह कहने को तैयार हू कि मैं किसीसे प्यार करती हू। मैं सभी मनुष्यों से घृणा करती हू घृणा! हां मैं अब पागल हो चुकी हू!

—इन्दिरा

नरोत्तम ने उस पत्र को अपनी जेब में डाला और सीधा सुबोध के पास गया। उसने सुबोध को सारी बातें बताकर घृणा से कहा इन्दिरा ने एक पत्र लिखा है कि मैंने आत्महत्या अपनी इच्छा से की है किंतु मैं उस ईसाई के बच्चे को इस केस में फसाकर मृत्युदंड दिलाऊंगा क्योंकि यह सत्य है कि इन्दिरा के प्यार में पागल रोमी यह अवश्य कहेगा कि मैंने ही इसे मारा है मैं इसका हत्यारा हूं।

सुबोध पर वज्रपात हो गया। वह व्याकुल स्वर में बोला नरोत्तम बाबू मनुष्य को इतना नीचे नहीं गिरना चाहिए। हमारे बीच यही घृणा दुराव उत्पन्न करके हमें पथ विमुख कर रही है। मनुष्य से मनुष्य का प्यार छीन रही है। जीवन के महाप्रांगण में धनके रूप में सहस्रों सुमन खिले हैं किंतु उनको मां धरती है व सभी उसकी सन्तान हैं और हम भी उसी उस मां के बच्चे हैं।

मनुष्य का मनुष्य से घृणा नहीं करनी चाहिए। क्या वह किसीसे घृणा करके जीवन के सच्चे और सात्विक आनन्द को प्राप्त कर सकता है? ईसाई हिन्दू, मुसलमान हम सभी एक ही हैं किंतु आज हम उस चरम सत्य को भूल बठे हैं। हम भटक गए है। इसलिए म तुमसे प्रार्थना करूंगा कि इस सत्य को पहचानो —हमारे अन्तराल में अपार अगाध और अलौकिक प्रम सागर है। इस सागर की अनत लहरें विश्व मानवों और भारतीयो के हृदय और मस्तिष्क में उज्ज्वल और पवित्र ज्योति को जन्म दे रही हैं, उन लहरो क चिरन्तन स्पर्श के लिए हमें अपने हृदयों की इस कलुषित घृणा को त्यागना होगा तभी हमारा पथ मगलमय, निष्कटक और आनन्ददायक होगा। तभी हम भय युद्ध और द्वप से मुक्त हो सकेंगे।

नरोत्तम निरुत्तर रहा। सुबोध न उसका कन्धा पकडकर स्नेहपूरित स्वर में कहा म समझता हू कि तुम रोमी के विरुद्ध एक शब्द भी नहीं कहोगे। इस पत्र को मुझे दे दो साधनहीन होकर तुम पाप की ओर अग्रसर नहीं होओगे। दे दो न।

नरोत्तम न उस पत्र को एक अपराधी की भांति विवशता से दे दिया।

सुबोध ने पत्र को अपनी जेब में रखकर कहा चलो हमें उसका दाह-संस्कार करना है। सुनदा को भी खबर करनी है।

४६

इंदिरा का शव आंगन में निस्पद पड़ा था। उसकी आंखें फटकर वीभत्स भावना की सजना कर रही थी। समीप रोमी टूट इन्सान-सा बैठा व्यथा भरा करुण क्रन्दन कर रहा था। इन्दिरा का पांडुर मुख अधकार की भांति उसके कासे प्रखर, सीप-सी दीप्त उसकी आखें उसका ठंडा शरीर सभी रोमी को अनन्त पीड़ाओं से बेध रहे थ।

सुबोध जड़वत् खड़ा था।

नरोत्तम और तारिणी निश्चल और मौन खड़े थे।

सुनन्दा रोते रोते थक गई थी।

सुबोध सोच रहा था—इन्दिरा इतनी भाग्यशालिनी है मृत्यु उपरान्त उसने सबका अगाध स्नेह और आदर पा लिया। जो सबसे घृणा करती थी उसने सबका प्यार पा लिया।

आखिर शव मरघट की ओर चला।

रास्ते में एक भिखारी अपने दर्दीले स्वर में गा रहा था—

पेय छि छुटि विदाय दाओ भाई।
सवारे आमि प्रणाम करे जाई।
फिराय दिनू द्वारेर चाबी
राखि ना आर घरेर दाबी
सवार आजि प्रसाद वाणी चाई।
अनेक दिन छिलाम प्रतिवेशी
दियछि जत नियेछि तार वेशी।
प्रभात हये एसे छे राति
निविया गल कोनेर बाति
पड़ेछे डाक चलछि आमि ताई।*

तीनों भुवनों के समस्त दुख अपने स्वर में उड़ेलते हुए भिखारी गा रहा था—मुझे छुट्टी मिल गई, अब विदा दो, हे भाई मैं सबको प्रणाम करके जा रहा हूं।

मैं द्वार की कुंजी लौटा रहा हूं अब इस गृह के द्वार कभी भी बन्द नहीं रखूंगा। आज मैं सबके आशीर्वचन चाहता हूं। बहुत दिनों तक हम पड़ोसी रहे, मैंने जितना दिया उससे अधिक ले चुका हूं। अब रात्रि गुजर गई, प्रभात हो चुका है। दीपक बुझ गया है। बुलावा आ चुका है इसलिए मैं जा रहा हूं।

अर्थी मरघट पर पहुंच गई।

सचमुच इन्दिरा सभी को अन्तिम प्रणाम करके चली गई।

---

* महाकवि रवीन्द्र का गान

मनुष्य को मनुष्य से घृणा नहीं करनी चाहिए। क्या वह किसीसे घृणा करके जीवन के सच्चे और सात्त्विक आनन्द को प्राप्त कर सकता है? ईसाई हिन्दू, मुसलमान हम सभी एक ही हैं किंतु आज हम उस चरम सत्य को भूल बठे हैं। हम भटक गए हैं। इसलिए मैं तुमसे प्रार्थना करूंगा कि इस सत्य को पहचानो—हमारे अन्तराल में अपार अगाध और अलौकिक प्रेम सागर है। इस सागर की अनन्त लहरें विश्व मानवों और भारतीयों के हृदय और मस्तिष्क में उज्ज्वल और पवित्र ज्योति को जन्म दे रही हैं उन लहरों के चिरन्तन स्पर्श के लिए हमें अपने हृदयों की इस कलुषित घृणा को त्यागना होगा तभी हमारा पथ मंगलमय, निष्कंटक और आनन्ददायक होगा। तभी हम भय, युद्ध और द्वेष से मुक्त हो सकेंगे।

नरोत्तम निरुत्तर रहा। सुबोध ने उसका कन्धा पकड़कर स्नेहपूरित स्वर में कहा मैं समझता हूं कि तुम रोमी के विरुद्ध एक शब्द भी नहीं कहोगे। इस पत्र को मुझे दे दो साधनहीन होकर तुम पाप की ओर अग्रसर नहीं होओगे। दे दो न।

नरोत्तम ने उस पत्र को एक अपराधी की भांति विवशता से दे दिया।

सुबोध ने पत्र को अपनी जेब में रखकर कहा चलो हमें उसका दाह-संस्कार करना है। सुनन्दा को भी खबर करनी है।

४६

इन्दिरा का शव आंगन में निस्पंद पड़ा था। उसकी आंखें फटकर वीभत्स भावना की सृजना कर रही थी। समीप रोमी टूटे इन्सान-सा बैठा व्यथा भरा करुण क्रन्दन कर रहा था। इन्दिरा का पांडुर मुख अन्धकार की भांति उसके काले अधर, दीप-सी दीप्त उसकी आंखें उसका ठंडा शरीर सभी रोमी को अनन्त पीड़ाओं से बेध रहे थे।

सुबोध जड़वत् खड़ा था।